पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के सांगीतिक योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन

PADMA VIBHUSHAN PT. CHANNULAL MISHRA JI KE SANGITIK YOGDAN KA VISHLESHANATMAK ADHYAYAN

Thesis Submitted for the Award of the Degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY

in

Performing Arts (Music)

By

Rashmi Shikha

Registration Number: 12208552

Supervised By

Dr. Pratibha Sharma (25754)

(Associate Professor& HOD)

Department of Theatre and Music

Lovely Professional University

Co-Supervised by

LOVELY PROFESSIONAL UNIVERSITY, PUNJAB

2026
DECLARATION

I, hereby declare that the presented work in the thesis entitled **PADMA VIBHUSHAN PT. CHANNULAL MISHRA JI KE SANGITIK YOGDAN KA VISHLESHANATMAK ADHYAYAN** in fulfilment of degree of Doctor of Philosophy (Ph.D.) is outcome of research work carried out by me under the supervision of Dr. Pratibha Sharma, Associate Professor, in the School of Liberal and Creative Arts (Theatre and Music) of Lovely Professional University, Punjab, India. In keeping with general practice of reporting scientific observations, due acknowledgements have been made whenever work described here has been based on findings of other investigators. This work has not been submitted in part or full to any other University or Institute for the award of any degree.

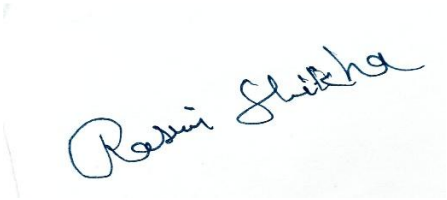

(Signature of Scholar)
Name of the scholar: Rashmi Shikha
Registration No.: 12208552
Department/school: School of Liberal and Creative Arts (Theatre and Music)
Lovely Professional University,
Punjab, India

CERTIFICATE

This is to certify that the work reported in the Ph.D. thesis entitled "**PADMA VIBHUSHAN PT. CHANNULAL MISHRA JI KE SANGITIK YOGDAN KA VISHLESHANATMAK ADHYAYAN**" submitted in fulfillment of the requirement for the reward of degree of Doctor of Philosophy (Ph.D.) in the School of Liberal and Creative Arts (Theatre and Music), is a research work carried out by RASHMI SHIKHA 12208552, is bonafide record of his/her original work carried out under my supervision and that no part of thesis has been submitted for any other degree, diploma or equivalent course.

(Signature of Supervisor)
Name of supervisor: Dr. Pratibha Sharma
Designation: Associate Professor
Department/school: School of Liberal and Creative Arts (Theatre and Music)
University: Lovely Professional University, Punjab, India.

कृतज्ञता ज्ञापन

जब भी कोई शोधार्थी अनुसंधान करता है उस कार्य को सफल बनाने में बहुत सारे विद्वज्जनों तथा ज्ञानियों का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष योगदान होता है। इस शोध कार्य को संपन्न करने में भी उपरोक्त तथ्य पूर्ण रूपेण सत्य हैं।सर्वप्रथम परमपिता परमात्मा,माता-पिता एवं गुरुजनों के चरणों मे नतमस्तक होकर श्रद्धा सुमन अर्पित करती हूं जिनकी अपार अनुकंपा, स्नेह और आशीर्वाद से प्रस्तुत शोध कार्य संपन्न हो सका है। शोधार्थी परम पूजनीय पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी की सहृदय आजीवन आभारी है, जिनकी आशावादी, ओजस्वी एवं सकारात्मक विचारधारा से अनुप्राणित होती रही है। उन्होंने समय-समय पर साक्षात्कार के लिए अपना अमूल्य समय देकर प्रस्तुत शोध कार्य से संबंधित विशेष दत्त सामग्री उपलब्ध करवाई एवं अपने अमूल्य परामर्शों एवं विचार व्याख्या से उपकृत किया। आपके पारिवारिक सदस्यों का भी अंतर हृदय से धन्यवाद करती हूं जिन्होंने मौखिक जानकारी के साथ-साथ शोध संबंधी महत्वपूर्ण एवं दुर्लभ सूचनाओं को प्रदान करके यथासंभव सहयोग दिया उनके सतत सहयोग एवं आशीर्वाद के बिना यह कार्य परिपूर्ण होना असंभव था।

तथा अपनी शोध निर्देशिका डॉ.प्रतिभा शर्मा (Gold Medalist) (विभागाध्यक्षा) तथा (एसोसिएट प्रोफेसर) थिएटर एंड म्यूजिक विभाग लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी फगवाड़ा) के प्रति अपना आभार व्यक्त करती हूं, जिन्होंने अपने अथक परिश्रम से शोध प्रबंध की समुचित रूपरेखा (अध्याय योजना) बनाकर मेरे संपूर्ण शोध कार्य का आधार प्रदान किया। समय-समय पर शोध संबंधी मेरी जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए मेरा संपूर्ण मार्गदर्शन किया तथा अनुसंधान प्रविधि संबंधी मेरी जानकारी का वर्धन किया।

तत्पश्चात मैं अपने गुरु तथा मार्गदर्शक डॉ. इंद्रेश मिश्र (असिस्टेंट प्रो. संगीत विभाग,स्वामी विवेकानंद सुभारती यूनिवर्सिटी मेरठ) के प्रति हार्दिक धन्यवाद प्रकट करती हूं, जिन्होंने भ्राता तुल्य स्नेह से अप्लावित करते हुए मेरी विषम परिस्थितियों में भी इस शोध कार्य को संपन्न करने में मेरा मार्ग प्रशस्त किया।

इसके बाद लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी (थिएटर एंड म्यूजिक विभाग) के सभी माननीय सदस्यों पुस्तकालय स्टाफ के अध्यक्ष मैडम कमल तथा सभी सहयोगी रिसर्च डिपार्टमेंट के अध्यक्ष डॉ. राजन मिगलानी, डॉ गगनप्रीत कौर मरवाहा और उनके सभी सहयोगियों के प्रति आभार प्रकट करती हूं जिन्होंने समय पर वांछित सहयोग देकर मेरे मनोबल को बढ़ाया। तत्पश्चात स्वनामधन्य कलाकारों तथा अध्यापकों के प्रति मैं धन्यवाद ज्ञापित करती हूं, जिन्होंने समय पर साक्षात्कार के लिए समय निकालकर शोध कार्य संबंधी अध्ययन सामग्री को संपोषित किया।
इसके अलावा अपनी संगीत गुरु तथा मार्गदर्शिका डॉक्टर नम्रता मिश्रा (पुत्री पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र, एसोसिएट प्रोफेसर महात्मा गांधी विद्यापीठ यूनिवर्सिटी वाराणसी) तथा राजेंद्र कृष्ण अग्रवाल (संपादक संगीत पत्रिका हाथरस) शिवजी मिश्र (भ्राता) पंडित छन्नूलाल मिश्र, कथक नर्तक नृत्य कला मंदिर पटना के प्रति हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने शोध कार्य को संपन्न करने हेतु आवश्यक पुस्तक संगीत पत्रिकाएं प्राप्त करवाई तथा समय पर शोध संबंधी मेरी जिज्ञासाओं को शमन किया। तदोपरांत अलग-अलग विश्वविद्यालय के पुस्तकालय के स्टाफ के प्रति अपना आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने समय पर पुस्तक शोध प्रबंध, लघु शोध प्रबंध, पत्र -पत्रिकाओं से अध्ययन सामग्री संकलन करने हेतु मुझे वांछित सहयोग प्रदान किया।

इसके बाद मैं अपने पति श्री मनहर चौहान, कला शिक्षक, केंद्रीय विद्यालय कपूरथला कैंट, के प्रति अपना विशेष आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने शोध प्रबंध की कंप्यूटराइज्ड टाइपिंग और सेटिंग में तथा समस्त शोध कार्य में मुझे वांछित सहयोग प्रदान किया। मैं अपना परम कर्तव्य समझती हूं कि मैं धन्यवाद ज्ञापित करूं अपने परिवार के प्रति जिनमे वृद्ध सास -ससुर और मेरे दोनों पुत्र मोहन चौहान तथा गर्व चौहान का जिन्होंने अप्रत्यक्ष तौर पर हमेशा मेरा सहयोग किया।

अंत में, मैं उस सर्वव्यापी, परम शक्ति के प्रति नतमस्तक होती हूं जिन्होंने वह सभी साधन उपलब्ध करवाए जो मेरे समस्त शोध कार्य के लिए सहायक थे।

--रश्मि शिखा

प्रस्तावना

सामान्यतः हर भारतीय परिवारों की तरह पूजा-पाठ, भजन, कीर्तन, लोक संगीत आदि के माध्यम से घर का वातावरण सांगीतिक था। माता-पिता धार्मिक प्रवृत्ति के थे तथा मधुर कंठ से भजन आरती आदि गाया करते थे तथा मधुर कंठित पिताजी लोक संगीत एवं हर प्रकार के स्वाभाविक संगीत को सुंदरता से गाते थे। वर्तमान में 78 वर्ष की वृद्धावस्था में भी गायकी बहुत सुंदर है। घर में दो बहने तथा एक भाई जिन्होंने हर संभव सहायता की। शोधकर्त्री को संगीत से जुड़ने की प्रेरणा घर के सांगीतिक वातावरण के फलस्वरूप प्राप्त हुई।इन सारे प्रस्तुत विवरण का उद्देश्य यह बताना है कि बाल्यावस्था से लेकर युवावस्था तक संगीत कला के साथ जुड़ाव निरंतर बना रहा। विद्यार्थी जीवन में समूह गान, लोकगीत, भजन गायन की प्रतियोगिताओं तथा नृत्य प्रतियोगिता आदि में भाग लेती रही वैसे भी संगीत की परिभाषा त्रि विधाओं से जुड़ी है तथा शोधकर्त्री का जुड़ाव नृत्य क्षेत्र से भी रहा।
इन समस्त क्रियाकलाप के फल स्वरुप शोधकर्त्री की अंतरात्मा का झुकाव आध्यात्मिक संगीत, लोक संगीत ,शास्त्रीय तथा उपशास्त्रीय रचनाओं की ओर विशेष रूप से बना रहा, क्योंकि विद्यालयों तथा महाविद्यालय अथवा परिवार में ऐसी रचनाओं को सुनने और गाने के संस्कार निरंतर प्राप्त होते रहे तथा बाल्यावस्था से ही शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, आध्यात्मिक तथा लोक संगीत के प्रति लगाव बना रहा।

इसी नाते शोधकर्त्री ने 'पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के सांगीतिक योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन' पर शोध कार्य करने की इच्छा व्यक्त की। अद्वितीय कलाकार पंडित छन्नूलाल मिश्र जी ने शोधकर्त्री की जिज्ञासा का उत्साहवर्धन करते हुए जब इस विषय के लिए अपने स्वीकृति प्रदान की तो इस शोध विषय का चयन और शोध कार्य संभव हो सका।

विषय चयन के पश्चात शोधकार्य करते हुए शोधकर्त्री ने संगीत के शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, आध्यात्मिक तथा लोक संगीत आदि का सम्यक अध्ययन किया। पंडित छन्नूलाल मिश्र जी की जीवन गाथा एवं उनसे संबंधित अनेक सामग्रियों का अध्ययन किया। बनारस तथा बनारस के संगीत से संबंधित कलाकारों,तथा क्षेत्र से संबंधित अनेक संगीत विषयक जानकारी प्राप्त की।

पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा भक्ति रचनाएं, लोक रचनाएं,शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय रचनाओं में निहित सांगीतिक तत्वों का सौंदर्यात्मक तथा भावात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया। आधुनिक काल में अनेक ऐसे माध्यम हैं जिससे कला तथा कलाविदों की संगीतात्मकता का परिचय किया जा सकता है। इसके अलावा संगीत के क्षेत्र में दिए गए उनके संरक्षण एवं संवर्धन में जो चमत्कारी भूमिका है इसे सुंदर प्रस्तुतीकरण द्वारा जनसाधारण तक सांगीतिक धारा प्रवाहित की जा सकती है।

पंडित छन्नूलाल मिश्र ने संगीत की हर विधा में अपने सुंदर उपस्थिति दर्ज की है तथा संगीत के संरक्षण संवर्धन एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, शोधकर्त्री के इस प्रयास द्वारा जनसाधारण तक उनके योगदान को दर्शित किया जा सकता है।

शोध प्रबंध को छः अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय

पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के सांगीतिक योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन' के अंतर्गत हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में बनारस घराना, किराना घराना तथा हरिहरपुर घराने के उत्पत्ति, विकास गायन शैली तथा संबंधित कलाकारों का विवेचनात्मक, स्वरूप तथा उनके वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला गया है।

इस अध्याय में घरानों की कला तथा भाव अभिव्यक्ति तथा संगीत कला में उनके कलात्मक सहयोग, समर्पण तथा उनके प्रयोग विधि आदि का विश्लेषण किया गया है।

द्वितीय अध्याय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन एवं अनुसंधान प्रणाली के अंतर्गत अनुसंधान विधि का आंकलन किया गया है इसके साथ ही इस विधि का अनुसरण करते हुए 2.1 संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन एवं शोध प्रविधि 2.2 प्रस्तुत शोध कार्य की प्रासंगिकता एवं अध्ययन का महत्व तथा समस्या का कथन 2.3 शोध प्रविधि 2.4 दत्त संग्रह विधि

2.5 दत्त उपकरण तथा साक्षात्कार 2.6 साक्षात्कार का अभिलेखन 2.7 साक्षात्कार की सीमाएं, दत्त विश्लेषण, शोध का सीमांकन, दत्त स्रोत तथा न्यादर्श आदि बिंदुओं के अंतर्गत अपेक्षित अध्ययन सामग्री संपोषित की गई है।

तृतीय अध्याय

पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के संगीत के योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन के अंतर्गत छन्नूलाल मिश्र जी के जीवनवृत्त, व्यक्तित्व,तथा कृतित्व संबंधी अवयवों पर प्रकाश डाला गया है। पंडित जी के जन्म तथा क्रियात्मक एवं उनके समस्त व्यक्तित्व तथा क्रियाकलाप आदि का गहन अनुसंधान द्वारा उल्लेख किया गया है।

चतुर्थ अध्याय

चतुर्थ अध्याय में पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के बहुमुखी कला का परिचय दिया गया है उनके गायन की समस्त विधा शास्त्रीय,उपशास्त्रीय, भक्ति संगीत, लोक संगीत तथा पार्श्वगायन आदि समस्त शैलीगत विशेषताओं तथा विलक्षणताओं को सम्मिलित किया गया है।

पंचम अध्याय

पंचम अध्याय अंतर्गत पंडित जी का संगीत जगत को योगदान तथा उनके द्वारा गेय एवं रचित रचनाओं जैसे शास्त्रीय,उपशास्त्रीय, होरी, चैती, कजरी, ठुमरी, लोक संगीत, भजन संबंधी रचनाएं एवं स्वरलिपिकरण तथा समीक्षा प्रस्तुत की गई है। इस सूची में पारंपरिक तथा अलभ्य तराना, ख्याल बंदिश आदि को शामिल किया गया है।

षष्ठम अध्याय

षष्ठम अध्याय में समस्त शोध कार्य के अध्ययन का सारांश, विश्लेषण, स्वाक विश्लेषण, अनुसंधान के नवीन संभावनाएं तथा भविष्यमुखी सुझाव आदि प्रस्तुत किए गए हैं। इसके उपरांत विभिन्न परिशिष्टों के माध्यम से शोध संबंधी विभिन्न दस्तावेजों को भी संकलित किया गया है । विशेष रूप से पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के मंचीय कार्यक्रम ऑडियो, वीडियो, डीवीडी आदि को संलग्न किया गया है ताकि भविष्य में संगीत के अध्यापकों एवं छात्रों का मार्ग प्रशस्त किया जा सके।

अंत में संदर्भ सूची का संलग्न करके शोध कार्य को प्रासंगिकता एवं वैज्ञानिकता प्रदान करने का सचेष्ट प्रयास किया गया है।

विषय अनुक्रमणिका

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
प्रथम अध्याय	हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में बनारस एवं किराना घराना	16-45
अध्याय 1.1	बनारस घराना ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	46-58
अध्याय 1.2	बनारस घराना सांगीतिक परंपरा	59-82
अध्याय 1.3	किराना घराना ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	83-102
अध्याय 1.4	किराना घराना सांगीतिक परंपरा	103-119
अध्याय 1.5	बनारस एवं हरिहरपुर क्षेत्र की सांगीतिक स्थिति	120-152
द्वितीयअध्याय	संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन एवं प्रस्तुत शोध कार्य प्रणाली	153
अध्याय 2.1	संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन	--
अध्याय 2.2	शोध प्रविधि	--

अध्याय 2.3	समस्या कथन	--
अध्याय 2.4	अध्ययन के उद्देश्य	--
अध्याय 2.5	दत्त संग्रह विधि, दत्त उपकरण, साक्षात्कार, दत्त स्त्रोत ,न्यादर्श , दत्त विश्लेषण,शोध का परिसीमांकन	165
तृतीय अध्याय	पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र - जीवनवृत्त, व्यक्तित्व, कृतित्व	--
अध्याय 3.1	जीवन वृत्त	166-183
अध्याय 3.2	पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी का व्यक्तित्व एवं चारित्रिक विशेषताएं	184-196
अध्याय 3.3	पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी का गृहस्थ एवं पारिवारिक जीवन	197-204
अध्याय 3.4	पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी का व्यक्तित्व, कृतित्व एवं सम्मान:- विहंगम दृष्टिपात	205-221

अध्याय 3.5	पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी की शिष्य परंपरा एवं एवं गुणी जनों के विचार	222-249
चतुर्थ अध्याय	पंडित पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी एक बहुमुखी कलाकार के रूप मे	250-277
अध्याय4.1	पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी का ख्याल गायन	278-304
अध्याय4.2	पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी का उपशास्त्रीय गायन	305-329
अध्याय 4.3	पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी का भक्ति गायन	330-354
अध्याय 4.4	पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी का पार्श्व गायन एवं लोक गायन	355-376
अध्याय 4.5	पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र एक सृजन धर्मी कलाकार	377-393
पंचम अध्याय	पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र का संगीत जगत में योगदान	394-406

अध्याय 5.1	पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा रचित एवं गेय रचनाएं	407-414
अध्याय 5.2	पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा रचित एवं गेय विलंबित ख्याल	415-417
अध्याय 5.3	3 पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा रचित मध्य एवं द्रुत ख्याल	418-431
अध्याय 5.4	उपशास्त्रीय रचनाएं ठुमरी,चैती, होरी ,कजरी	432-461
अध्याय 5.5	पंडित छन्नूलाल मिश्र जी द्वारा रचित एवं गेय लोक संगीत	462-468
अध्याय 6	अध्ययन का सारांश विश्लेषण एवं निष्कर्ष	469
अध्याय 6.1	अध्ययन का सारांश	469-478
अध्याय 6.2	अध्ययन का स्वाॅक विश्लेषण	479-481
अध्याय 6.3	सुझाव एवं प्रस्तुत शोध की आगामी संभावनाएं	482-483
अध्याय 6.4	निष्कर्ष	484-485
परिशिष्ट सूची		--

परिशिष्ट 1	साक्षात्कार अनुसूची	486-488
परिशिष्ट 2	साक्षात्कृत सूची	489-500
परिशिष्ट 3	छायाचित्र	501-508
परिशिष्ट 4	चित्रावली	509-517
परिशिष्ट 5	समाचार पत्रों से प्राप्त सूचनाएं	518
परिशिष्ट 6	ध्वनि मुद्रिकाओं की सूची	519
परिशिष्ट 7	Audio/ Video Content	520
संदर्भ ग्रंथ सूची		521

अध्याय-1

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में बनारस एवं किराना घराना

भारतीय संगीत केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, अपितु भारतीय ज्ञान-परम्परा, आध्यात्मिक चेतना तथा सांस्कृतिक अस्मिता का सजीव स्वरूप है। भारतीय मनीषा ने संगीत को नाद-ब्रह्म की अनुभूति का साधन माना है। इसी कारण भारतीय परम्परा में संगीत का उद्गम लौकिक नहीं, बल्कि दैवी माना गया है। भारतीय दार्शनिक चिन्तन में नाद को समस्त सृष्टि का मूल तत्त्व स्वीकार किया गया है। यह मान्यता केवल आध्यात्मिक नहीं, अपितु सांगीतिक परम्परा का भी आधार है। इसीलिए संगीत की साधना को आत्मानुभूति, चित्तशुद्धि तथा ब्रह्मानुभव का माध्यम कहा गया है।

भारतीय संगीत को अनादि माना गया है, तथा वेदों के समान उसकी प्रतिष्ठा हुई है।

आदि नाद अनहद भयो, तासे उपजयो वेद।
मुनि पायो या वेद से, सकल सृष्टि को भेद।।

संगीत की दो धाराएं साथ-साथ चलती रही हैं- [1]वैदिक संगीत जो अनादि और पुरुष अत्यंत पवित्र व्यवस्थित नियमबद्ध तथा अपरिवर्तनीय था। वेदों का स्वर पाठ उसका स्पष्ट रूप था यही सस्वर पाठ सामगान कहलाता था।

तथा दूसरी धारा वह थी जो समय अनुरूप मनुष्य द्वारा निर्मित थी इसके नियमों में शिथिलता थी जो लोक रुचि के अनुकूल और परिवर्तनशील था, उसे लौकिक संगीत की संज्ञा प्राप्त थी।संगीत शब्द की व्युत्पत्ति गीत धातु में 'सम' उपसर्ग लगाकर हुई

[1]संगीत स्वरित प्रथम अध्याय पृष्ठ संख्या 1

है 'सम' अर्थात सहित गीत अर्थात गान।वामन शिवराम आप्टे संस्कृत हिंदी कोष के अनुसार --संगीत शब्द की उत्पत्ति सम्+गै+क्त धातु के संयोग द्वारा मानी गई है।[2]मानक हिंदी कोश में भी इसी प्रकार संगीत शब्द की उत्पत्ति बताई गई है। ठीक इसी प्रकार 'वाराहोपनिषद' मैं उल्लिखित है कि--

"संगीत, ताल, लय, वाद्य वंश पियौ लिस्थ कुम्भ परीक्षर्धन ढीव"

व्युत्पत्ति की दृष्टि से सम्यक गीतम् (सम) का बोध होने पर प्रचार के अंतर्गत, संगीत गीत, वाद्य तथा नृत्य के अभिन्न सहचार्य का ज्ञापक रहा है।

संगीत एक ऐसी प्रभावशाली एवं उच्च कोटि की कला है जो ऋषि मुनियों एवं देवी देवताओं को प्रिय रही है। [3]हमारे प्राचीन कालीन वेद पुराणों, उपनिषदों आदि के अध्ययन से ज्ञात होता है, कि यह कला अत्यंत उच्च कोटि की मानी जाती थी। श्री कृष्ण, माता सरस्वती तथा नारद आदि भी अपने संगीत प्रेम के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। पौराणिक पुस्तकों के अध्ययन से हमें यह ज्ञात होता है कि स्वर्ग के गंधर्वों तथा किन्नरों का भी संबंध संगीत से था। कई प्राचीन ग्रंथ भी हमें यह बताते हैं कि भारतीय संगीत शास्त्र में अनेक ज्ञानवान एवं धुरंधर पंडित हुए हैं, जैसे नायक बैजू ,नायक गोपाल, नायक बक्षु ,नायक भिन्नू नायक, सरजू स्वामी हरिदास ,स्वामी सूरदास, स्वामी रामदास ,हाजी सुजान खां, अमीर खुसरो, तानसेन आदि।

प्राचीन काल में संगीत के संबंध में निम्नलिखित मत अधिक प्रचार में थे भरत मत, शिव मत, सोमेश्वर मत, कल्ली नाथ मत, हनुमत मत।

इन सारे मतों के अपनी विभिन्न मान्यताएं थी, यद्यपि प्रसिद्ध गायकों के पृथक-पृथक मत थे और भी अनेक मत प्रचार मे थे परंतु उपरोक्त चार मत अधिक मान्य

---

[2] संगीत स्वरित प्रथम अध्याय पृष्ठ संख्या 1

[3] मानक हिंदी कोष, ले0 रामचंद्र वर्मा, पृष्ठ संख्या 313

थे।19वीं तथा 20वीं शताब्दी में घराना शब्द प्रचार में आने लगा। घरानों की नींव अधिकतर विभिन्न प्रसिद्ध गायको की विशेष प्रकार की गायन शैलियों के आधार पर पड़ी।

घराना अर्थ एवं व्याख्या

जैसा कि सर्वविदित है, भारतीय शास्त्रीय संगीत वह प्राचीन संगीत है, जो अपने अंदर पौराणिक तथा प्राचीनतम तथा विश्व की अनेक संस्कृतियों को अपने अंदर समेटे हुए हैं। कई अनेक रहस्यमई शब्दों का प्रयोग हम भारतीय शास्त्रीय संगीत में सुनते व पढ़ते हैं जिन शब्दों का अर्थ सामान्य जनमानस के समझ के परे है। जैसे श्रुति, नाद, ग्राम मूर्छना आदि इसी तरह के शब्दों में सम्मिलित एक संगीत एक शब्द जो सामान्य जनमानस अनेक बार सुनते हैं किंतु उसका अर्थ व उसकी व्याख्या से परे होते हैं और यह शब्द है 'घराना'। इस शब्द का वास्तविक अर्थ संगीत में किसी विशेष वंश परंपरा या प्रणाली का अनुसरण करने वाला समुदाय या व्यक्ति विशेष उस परंपरा या प्रणाली के घराने का कहलाता है।

भारतीय संगीत के प्रसिद्ध विद्वान वामन हरि देशपांडे जी अपनी पुस्तक "घरानेदार गायकी" में घराने शब्द की व्याख्या करते हुए कहते हैं--

स्वर मानवीय आवाज़ का एक अत्यंत आंतरिक एवं गूढ धर्म है। उसका संगोपान संवर्धन कर उसे पर अलग-अलग अलंकार चढ़ाकर समृद्ध किया गया गला, गुरु अपने शिष्य के गले मे उतारने का प्रयास वर्षों तक करता रहता है। [4]" सांगीतिक भाषा में इसे ही तालीम कहा जाता है। इस प्रक्रिया के द्वारा ही संगीत कला का आदान व प्रदान हो सकता है। इसी कारण स्वर लगाने का तरीका व गायकी के अलग-अलग फायदे शिष्य के गले में सालनकर उतारे जाते हैं इस पद्धति में ही

[4] वामन हरि देशपांडे घरानेदार गायकी (मराठी) 1985 पृष्ठ संख्या 18

उन कायदों में एक न टूटने वाला सिलसिला बन जाता है और यही से घरानों का उद्गम होता है।

श्री वामन हरि जी की व्याख्या से यह बात स्पष्ट होती है कि जब एक महान संगीतकार अपने किसी परम शिष्य को संगीत का मार्गदर्शन देता है तो वह उसमें अपनी कला के सारी बारीकियां को डालने का अथक प्रयास करता है ,[5]और यदि शिष्य अपने गुरु की उन बारीकियों अनुसरण कर उसे अपनी गायकी में उतार ले तो यहीं से एक विशेष गायन प्रणाली की परंपरा प्रारंभ हो जाती है, जिसे सांगीतिक गुणी जनों ने 'घराना' शब्द से संबोधित किया है। इस विषय को अगर हम विस्तार से समझने का प्रयास करें तो हम पाएंगे कि, घराना शब्द में किसी घर परिवार के आचरण, संस्कार, विचार आदि का पर्याय दृष्टिगोचर होता है।

आचार्य मृत्युंजय लिखते हैं कि--

"घराना का आदि स्त्रोत गृह अथवा हिंदी का घर है, घर व्यक्ति तथा कुटुंब का गठबंधन होता है और घराना इसी वैचारिकता का कलात्मक विचार"

किसी विशेष सांगीतिक आचरण, संस्कार, विचार का अनुसरण कर उसे भावी शिष्यों को प्रदान करना एवं उन संस्कारों का पालन अपने शिष्यों से सही तरीके से पालन करवाना भारतीय संगीतिक परंपरा में 'घराना' कहलाता है।[6]

भारतीय शास्त्रीय संगीत में अनेक विख्यात संगीतज्ञ हुए हैं जिन्होंने अपनी गायकी अथवा गायन शैली से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया है। इन्ही अनेक कला साधकों

---

[5] डॉ सुशील कुमार चौबे संगीत में घरानों की चर्चा, पृष्ठ संख्या 12

[6] 15.7.1987 आचार्य मृत्युंजय बहुत पुराना है घरानों का किस्सा जनसत्ता दैनिक समाचार

के विशेष सांगीतिक व्यवहार, विचार, आचरण व प्रणाली के अनुकरण से भारतीय सांगीतिक इतिहास में गायन शैली के अनेक घरानों की उत्पत्ति हुई है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत समस्त विश्व में अपने विविधता रंजकता एवं मौलिकता के दम पर ख्याति लब्ध है। विविधताओं के पीछे कहीं ना कहीं उन्होंने संगीतज्ञों का योगदान है जिन्होंने अपनी अथक परिश्रम व प्रयास से अपनी मूर्धन्य गायकी को दूसरे गायको की गायकी से अलग एवं उत्कृष्ट बनाने का प्रयास किया है।

इन्हीं मूर्धन्य कला साधकों की मेहनत के परिणाम स्वरूप आज सिर्फ भारतीय शास्त्रीय संगीत ही नहीं बल्कि भारतीय उपशास्त्रीय व सुगम संगीत भी अनेक विविधताओं तथा रंजकता से परिपूर्ण है। संपूर्ण भारत वर्ष प्राचीन तथा पौराणिक काल से ही अनेक कलाओं व संस्कृति से परिपूर्ण रहा है और भारत के अनेक सांगीतिक विद्वानों ने इन्हीं कलाओं का सदुपयोग कर भारतीय संगीत को अपनी नवीन विचारधारा व एक निश्चित पारंपरिक गायन शैली से परिष्कृत किया है।

उपरोक्त वाक्य से यह सर्वविदित है कि, यदि प्राचीन भारतीय संगीत कला संगीतज्ञों ने अपनी गायकी अलग व उत्कृष्ट बनाने के प्रयास अगर ना किए होते तो, भारतीय संगीत आज विश्व स्तर तक ख्याति प्राप्त नहीं कर पाता। अतः इन कला सृजन के अलग-अलग गायकी या गायन प्रणाली के अनुसरण से ही घरानों का निर्माण हुआ और इन्हीं विशेषताओं का अनुसरण कर वर्तमान समय मे भी भारतीय संगीत जगत के अनेक ख्याति लब्ध गायक प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहे हैं।

घराना शब्द की व्यवहारिक व्याख्या करने का प्रयास करें तो हम पाएंगे कि किसी प्रणाली या परंपरा की आवश्यकता क्यों हुई ? यह एक सामान्य सा प्रश्न है किंतु इस प्रश्न की गुत्थी को सुलझाने का अगर हम प्रयास करें तो पाएंगे कि जब कोई व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह किसी संस्कार परंपरा प्रणाली को समाज के उत्थान के लिए सही मानता है तो वह प्रणाली या संस्कारों का अनुकरण समाज के लिए आवश्यक या उपयोगी भी मानता है। इसी प्रकार सांगीतिक जगत में भी जब कोई गुणी, कला

साधक अथवा कलाकार किसी सांगीतिक प्रणाली को सांगीतिक दृष्टिकोण से समाज के लिए उपयुक्त व उपयोगी मानते हैं तो ऐसी स्थिति मे अनेक सांगीतिक शिष्य उस प्रणाली का अनुसरण करने लगते हैं इसी के फल स्वरूप घरानों की उत्पत्ति होती है।

संगीत एक कल्पना शक्ति व शारीरिक शक्ति का सम्मिलित स्वरूप होता है। जिस प्रकार ईश्वर सृष्टि में अनेक शारीरिक विभिन्नताओं व विशिष्टताओं के व्यक्तियों को जन्म देता है ठीक उसी प्रकार ईश्वर[7] अनेक प्रकार की कल्पनाओं

से परिपूर्ण विभिन्न प्राणियों को भी जन्म देता है। क्योंकि संगीत कल्पना और शरीर का सम्मिलित स्वरूप है , इसलिए कई बार एक से रंग रूप अथवा शरीर का आकार- प्रकार के व्यक्तियों की गायन शैली भी विभिन्न प्रकार की होती है क्योंकि वह व्यक्ति अपनी शारीरिक क्षमता से भले ही एक हो किंतु उनके मस्तिष्क की कल्पना शक्ति का प्रवाह अलग-अलग स्तर का होता है। यदि उक्त वाक्य के हम समुचित अर्थ को समझें तो हम पाएंगे कि, यदि विभिन्न व्यक्तियों की शारीरिक बनावट आकार प्रकार रंग रूप भले ही अलग-अलग क्यों ना हो किंतु उनकी कल्पना शक्ति के आधार पर उनके गायन शैली एक सी होती है यह वाक्य उपरोक्त वाक्य का विपरीतार्थक है। दूसरे शब्दों में, उन व्यक्तियों की कल्पना शक्ति किसी एक कल्पना शक्ति की उपज व विशेषताओं का अनुसरण करती है और जब कोई व्यक्ति किसी एक कल्पना शक्ति से उत्पन्न हुई विशेष परंपरा प्रणाली अथवा बारीकियों का नियमित अनुसरण करते हुए जब कोई व्यक्ति उस गायन शैली व उस उपज को अपनी आने वाली भावी पीढ़ी को प्रदान करे एवं उसकी भावी पीढ़ी भी निरंतर इस परंपरा का निर्वहन कर अपनी आने वाली पीढियों को सिखाती रहे तो, भारतीय संगीत की भाषा में यही घराना पद्धति है।भारतीय संगीत परंपरा में

[7] प्रो.हरिश्चंद्र श्रीवास्तव संगीत निबंध संग्रह पृष्ठ संख्या 9

घरानेदार गायकी वह घराने दार शिक्षा पद्धति का महत्व इसलिए भी अधिक बढ़ जाता है क्योंकि यह शिक्षा प्रणाली निरंतर कहीं पीढीयों के सतत मेहनत व परिश्रम का परिणाम होती है।

डॉ सुशील कुमार चौबे अपनी पुस्तक संगीत के घरानों चर्चा में कहते हैं कि—

"सच तो यह है कि घरानेदार संगीत को टकसाली संगीत ही मानेंगे। और उसी को पूरी मान्यता देंगे यदि [8]प्रतिष्ठित घरानेदार संगीत की टकसाल माना जाता है तो उसकी प्रामाणिकता पर किसी को संदेह नहीं हो सकता उसके आधिपत्य को सारे संगीतज्ञ, गायक तथा वादक मान्यता देते हैं और उसकी सत्ता वह उसके आधिपत्य का कोई विरोध नहीं करता तो इस घराने दार संगीत का विश्व में वही स्थान व गौरव है जो विज्ञान और साहित्य की किसी प्रतिष्ठित अकादमी का होता है चाहे वह इंग्लैंड, फ्रांस या अमेरिका की ही क्यों ना हो।

उपरोक्त विवरण से यह पूर्णतया स्पष्ट होता है कि, भारतीय पारंपरिक संगीत में व्यवहारिक दृष्टिकोण से घरानों का क्या स्थान है। घरानेदार गायकी, घरानेदार शिक्षा प्रणाली ही भारतीय प्राचीनतम संगीत का वह मूल तत्व है जिसमे भारतीय संगीत की कलात्मकता रंजकता व विभिन्नताएं समाहित है।

इस तथ्य की खोज में यदि हम किसी घराने अथवा घराने से जुड़े संगीतज्ञों के जीवन चरित्र पर अगर अनुसंधान करें अथवा प्रकाश डालें तो हमें यह प्राप्त होगा कि निश्चित ही घरानेदार कला साधकों का जीवन संगीत को पूर्णतया समर्पित रहा है।

श्री मारुलकर के शब्दों में-

"महान अधिकारी तथा श्रेष्ठ व्यक्ति का अनुकरण और सामर्थ्य के प्रभाव से एक परंपरा का निर्माण हुआ, उसी को हम घराना कहने लगे।"

---

[8] डॉ सुशील कुमार चौबे, संगीत के घरानों की चर्चा पृष्ठ संख्या 17

अतः निश्चित तौर पर यह कहां जा सकता है कि, [9] जब कोई व्यक्ति विशेष अथवा समुदाय एक निश्चित विद्या या सांगीतिक लक्ष्य के प्राप्ति के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर देगा, तो वह उस विद्या मे आश्चर्यजनक रूप से पारंगत हो जाएगा।
आज यही कारण है कि भारतीय शास्त्रीय अथवा उप शास्त्रीय संगीत में आज भी कहीं ना कहीं घरानेदार गायकी का एक विशिष्ट स्थान अथवा महत्व है,एवं आज भी भारतीय संगीत के उच्च कोटि के विद्वान संगीतज्ञ अपने नवीन पीढ़ी वह अपने उपयुक्त शिष्यों को घरानेदार शिक्षा पद्धति से ही संगीत की तालीम दे रहे हैं, ताकि इन विद्यार्थियों को उनके घराने की विशेषताएं समझ आए साथ ही वह भविष्य में भारतीय संगीत की पताका को विश्व स्तर तक लहराते हुए उच्च कोटि के संगीतज्ञ बन सके और भारतीय संगीत को नव स्तर तक लेकर जाएं।

"घराने शब्द की व्याख्या करते हुए डॉ0 पूरू दधीचि लिखते हैं कि---जब कोई प्रतिभा संपन्न कलाकार नवोन्मेष शालिनी प्रज्ञा के बल पर किसी नवीन कला शैली की उद्भावना करता है और वह शैली उसके शिष्य- प्रशिषय अथवा कम से कम तीन पीढियां तक यथावत रूप से गतिमान रहती है तो उसे घराना संज्ञा प्राप्त होती है।"

उपरोक्त विवेचना से यह बात और स्पष्ट होती है कि घरानेदार गायकी या घराना शब्द किसी परंपरा के लिए तभी प्रयोग किया जा सकता है जब वह परंपरा कम से कम तीन पीढ़ीयों तक निभाई गई हो या दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि किसी विशेष गायन शैली का अनुसरण आने वाली कम से कम तीन पीढ़ियां करें तभी उसे गायन शैली को भारतीय संगीत में घराना शब्द से विभूषित किया जा सकता है। घरानेदार गायकी भारतीय संगीत के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण तथा निर्णायक विषय

[9] श्री मारुलकर संगीत के घराने पृष्ठ संख्या 47

है यह बात हमने अनेक विद्वानों के साक्षात्कार से प्राप्त किया है एवं घरानेदार गायकी का वर्तमान संगीत में भी बहुत अधिक महत्व है।

भारतीय संस्कृति के विभिन्न उपादानों में संगीत की अपनी विशिष्ट भूमिका रही है, वैदिक ऋचाओं की सस्वर अभिव्यक्ति एवं सामवेद का संगीत प्रधान शास्त्र होना इस तथ्य को संतुष्ट करता है कि [10]मानव के जन्म से जीवन पर्यंत ही नहीं अपितु मृत्यु उपरांत भी संगीत मानव के सहज एवं स्वाभाविक उल्लास, संवेग व संवेदनात्मक विविध भावों एवं अनुभूतियों को लोक संगीत या शास्त्रीय संगीत के माध्यम से व्यक्त करता है।

भारत के घरानेदार गायकी भी इन महत्वपूर्ण तथ्यों में से एक है।

घरानों की उत्पत्ति के कारण व घरानों की अवधारणा

(अ) प्राचीन काल से मध्यकाल के मतानुसार घरानों की उत्पत्ति व इतिहास

(ब) मध्यकाल से आधुनिक काल के मत अनुसार घरानों की उत्पत्ति हुआ इतिहास

(अ) प्राचीन काल से मध्यकाल के मतानुसार घरानों की उत्पत्ति व इतिहास

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में "घराना" शब्द किसी परिवार या वंश का सूचक मात्र नहीं है, बल्कि यह एक विशिष्ट सांगीतिक परम्परा, शैली, सौन्दर्य-बोध तथा गुरु–शिष्य परम्परा का प्रतिनिधित्व करता है।[11]

भारतीय शास्त्रीय संगीत विश्व के प्राचीनतम संगीत में से एक है [12]अतःइससे संबंधित किसी भी विषय पर निश्चित व्याख्या समय के आधार पर करना कठिन है, किंतु

[10]मोहनानंद झा भारत के महान संगीतज्ञ, पृष्ठ संख्या 1

[11] वामन हरि देशपांडे घरानेदार गायकी पृष्ठ संख्या 3- 8

बौद्धिक क्षमता के अनुसार पर तथा प्राचीन शास्त्रों के आधार पर घरानों की उत्पत्ति को मुख्य दो भागों में बांटा गया है जिसके अनुसार हम पहले घरानों की उत्पत्ति के प्राचीन कालीन कारणों व घरानों की ऐतिहासिकता को जानेंगे। भारतीय संगीत के संसार में संगीत चाहे शास्त्रीय, धार्मिक,लोक अथवा चित्रपट मनुष्य के ज्ञानेन्द्रिय मस्तिष्क, गात्र, श्रवण, दृष्टि और ध्वनि के साथ संगीत अपने आकर्षण के कारण उद्भव काल से ही सृष्टि में व्याप्त है।[13] यह सभी साधन ईश्वर प्रदत्त है तथा विकास स्वरूप है। किसी भी अन्वेषण की जड़ तक पहुंचना मानवीय गुण है, संगीत के उद्गम का श्रेय भारतीय वेदांगों में शामिल वेदों को प्राप्त है। भारतीय स्वरों की संख्या 1 से 2, 3,4, 5 और फिर साथ उनका नामकरण एवं तदुपरांत उनका विस्तृत उपयोग हुआ। इस परिदृश्य चमत्कार के निर्मिती में अतीत के वास्तविक इतिहास के पुनर्निर्माण में साहित्य एवं पद रचना में गीत एवं नृत्य संगीत अभिनव युग मे नाटक के रचनात्मक काल्पनिक संदर्भ में अनेक प्रकार की व्यवस्थाएं प्रचलित हुई। प्राचीन कालीन शास्त्रों के अध्ययन से यह विदित होता है कि उस काल मे भी संगीत के क्षेत्र में विभिन्न पृथक पृथक मतों का प्रचलन था।

जिनके नाम प्रमुख रूप से हनुमत मत, ब्रह्म मत, शिव मत, नारद मत इत्यादि।

"उपरोक्त मतों, उत्पत्ति एवं प्रचार प्रथम शताब्दी से 16वीं शताब्दी तक का है उस समय के उपलब्ध ग्रंथों से यह तथ्य प्राप्त होता है"

उपरोक्त विवरण हमें यह स्पष्टतया बताते हैं कि प्राचीन काल में भी शिवमत, ब्रह्म मत जैसे अलग-अलग संप्रदाय थे जिनकी संगीत तथा नाटक के परिवेश में विशिष्ट एवं स्वतंत्र मान्यताएं थी।भारतीय संगीत में गुरु शिष्य प्रणाली के द्वारा विद्या अध्ययन

---

[13] लावण्य कीर्ति सिंह काव्या भारतीय संगीत ग्रंथ वर्ण्य विषय विश्लेषण पृष्ठ संख्या 1

भारतीय संस्कृति की पूर्व परंपरा रही है।ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी अगर [14]संगीत शिक्षण का इतिहास देखा जाए तो प्राचीन काल मे भी संगीत शिक्षा शिष्यों को गुरु मुख के द्वारा ही प्राप्त होती थी।

भरत, नंदीकेश्वर, मतंग तथा नारद यह सभी प्रसिद्ध विद्वान ऋषि रूप में भी थे तथा संगीतकार भी इनकी संगीत कला अपनी विशिष्ठाओं के कारण विभिन्न रूपों में परिलक्षित होती थी। यदि हम वैदिक संगीत पर दृष्टिपात करें तो हम पाते हैं कि सामवेद कालीन संगीत की शैलियां (1) जैमनीय (2) कैथुमीय (3) राणायणीय , यह तीन शाखाएं मानी जाती थी तथा प्रत्येक शाखा का गायन करने वाले गायक अलग-अलग होते थे।

प्राचीन काल में शिक्षा पूर्णतः गुरुओं द्वारा प्रदान की जाती थी, गुरु गृह अथवा आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त की जाती थी। [15]वैदिक काल में कोई निश्चित पाठ्यक्रम नहीं होता था और ना ही संगीत की स्वरलिपियों जैसी कोई व्यवस्था थी, क्योंकि उस समय संगीत की कोई निश्चित स्वरलिपि नहीं बनी थी। वैदिक काल में साम प्रशिक्षण तीन रूपों में दिया जाता था--1 पिता पुत्र के रूप में 2. गुरु शिष्य परंपरा के रूप में 3. गुरुकुल में जाकर शिक्षा प्राप्त करना। शिक्षण की प्रणाली पूर्ण रूपेण मौखिक हुआ करती थी। जिन्हें अलग-अलग कला महर्षियों ने अपने मतों के अनुसार अपने शिष्यों को प्रदान की।

मध्यकाल तक आते-आते उत्तरी भारत में मुसलमान का आगमन हुआ जिस कारण भारतीय संस्कृति पर मुस्लिम संस्कृति का प्रभाव पड़ता चला गया। किंतु इस काल में संगीत का समुचित विकास भी हुआ, इसी काल में अमीर खुसरो से कव्वाली, सुल्तान हुसैन शर्की से ख्याल गायन, मान सिंह तोमर से ध्रुपद तथा वाजिद अली

---

[14] शंभुनाथ मिश्र भारतीय संगीत की घराना परंपरा पृष्ठ संख्या 2

[15] शंभूनाथ मिश्र भारतीय संगीत की घराना परंपरा पृष्ठ संख्या 2

शाह से ठुमरी गायन को प्रोत्साहन मिला। इसी काल में तानसेन तथा बैजू बावरा जैसे श्रेष्ठ गायको ने ध्रुपद जैसी गायन शैली का श्रेष्ठतम प्रदर्शन किया। मध्य युग के ही प्रसिद्ध संगीतज्ञ सदारंग तथा अदारंग नमक दो भाइयों ने लगभग 250 वर्ष पूर्व 1740 ई0 के आसपास ख्याल गायन शैली का प्रचार प्रसार विशेष तौर पर किया। ब्रिटिश काल में संगीत की स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी हालांकि छोटी-छोटी रियासतों और जमींदारों के माध्यम से भारतीय संगीत पुष्पित तथा पल्लवित होता रहा संभवतः घरानों का आविर्भाव इन्हीं कारणों से हुआ।

डॉ सुशील कुमार चौबे अपनी पुस्तक घरानों की चर्चा मे घरानों की ऐतिहासिकता पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि--

"यथार्थ मे [16]घरानों का आरंभ स्वामी हरिदास की संगीत परंपरा के प्रोत्साहन से हुआ है। अकबर के राज्य काल में तानसेन स्वामी हरिदास के सर्वश्रेष्ठ शिष्यों में से एक माने गए हैं तथा स्वामी हरिदास के प्रमुख शिष्यों में ब्रजचंद्र, गोपाल लाल, तथा राजा सम्मोखन सिंह थे। अकबर के कल से ही प्रसिद्ध संगीता क्यों के वंशज तथा उनके शिष्य परंपरा अपनी-अपनी अलग-अलग गायन शैलियां एवं वाणियां स्थापित कर रहे थे।"

डॉक्टर चौबे के उपरोक्त पंक्तियों से यह तथ्य निकाल कर आता है कि भारतीय शास्त्रीय संगीत में घराना का जन्म मध्यकाल में ही हो चुका था जिसके परिणाम स्वरूप तानसेन की मृत्यु के पश्चात सेनिया घराना जो कि तानसेन का घराना कहलाता है, वह मुख्य चार भागों में बंट गया था।

1 गौहार वाणी--

[16] डॉ सुशील कुमार चौबे, संगीत के घरानों की चर्चा पृष्ठ संख्या 17

तानसेन के सबसे छोटे पुत्र विलास का का घराना या गौहार वाणी का सबसे प्रसिद्ध घराना माना गया।

2. डागुर वाणी--

तानसेन के दूसरे पुत्र सूरत सेन जो टैगोर वाणी के प्रसिद्ध गायक माने गए हैं।

3-- खंडार वाणी--

मिस्त्री सिंह का घराना जिसका विवाह तानसेन की सुपुत्री सरस्वती के साथ संपन्न हुआ और आगे चलकर यह खंडार वाणी के प्रसिद्ध गायक हुए।

4-- नौहार वाणी--

तानसेन के वंशजों व शिष्यों में राजपूत श्री चंद का नाम बहुत प्रसिद्ध हुआ क्योंकि वह नौहार नामक स्थान के निवासी थे, अतः इस चौथी वाणी का नाम नौहार वाणी के नाम से प्रसिद्ध हुआ।[17] नौहार वाणी के परंपरा के अनुसार सिंह की गति का बोध होता है, एक स्वर से दो-तीन स्वरों का लंघन करके पर परवर्ती स्वर तक पहुंचना इस वाणी का प्रमुख लक्षण होता है। नौहार वाणी विशेष रूप से किसी एक रस को इंगित नहीं करती किंतु उनके कुछ-कुछ प्रयोग बहुत ही अद्भुत तथा रस से परिपूर्ण है।

उपरोक्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि मध्यकाल में अकबर के शासनकाल में ही घराना परंपरा जो की ध्रुपद की वाणीयो के नाम से जानी जाती थी, का जन्म हो चुका था, किंतु घराना नामक यह शब्द बोलचाल की भाषा में अकबर के शासनकाल के बहुत समय बाद प्रचलित हुआ।

सुलभा ठाकुर के शब्दों में—

---

[17] कला विहार अप्रैल, मई 1990 पृष्ठ संख्या 44 डा सुलभा ठाकुर, ख्याल विशेषांक, संगीत

आज की संगीत की परंपरा 1815 ई के आसपास ग्वालियर के दरबार के राजा जया जी राव शिंदे के दरबार की कही जाती है। इस राज दरबार में गई जाने वाली चीज उसके पूर्व लगभग 100 वर्ष अर्थात 18वीं शताब्दी में सदारंग- अदारंग ने रची थी।"

अतः उपरोक्त वाक्य से या पूर्ण रूप से स्पष्ट होता है कि [18]"घराना शब्द की वास्तविक परंपरा अकबर के शासनकाल के काफी समय पश्चात प्रचलित हुई होगी। क्योंकि मध्यकाल में अधिकतर ध्रुपद गायन शैली का प्रचार प्रसार था ,और ध्रुपद गायन शैली मे उस समय के किसी भी ग्रंथ में घराना शब्द का संबोधन प्राप्त नहीं होता है। अकबर के काल के पश्चात ख्याल गायन का प्रचार प्रसार हुआ, अतः घराना शब्द की उत्पत्ति भी ख्याल गायकी के प्रचार प्रसार के समय हुई।

मध्यकाल से आधुनिक काल के मतानुसार घरानों की उत्पत्ति व इतिहास

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि घराने शब्द की उत्पत्ति अथवा व्याख्या प्राचीन काल से मध्यकाल तक घराना शब्द के पर्यायवाची शब्दों के रूप में होता रहा। किंतु यह जानकारी परम आवश्यक है कि घराना शब्द वास्तविक रूप में भारतीय संगीत जगत मे प्रमुखता से कब से प्रारंभ हुआ? प्राचीन सांगीतिक एवं ऐतिहासिक ग्रंथों अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि घरानेदार संगीत के इतिहास मध्यकाल से प्रयोग मे आया।मुगलकालीन अंतिम शासक 'बहादुर शाह ज़फर, जो की संगीत के बहुत बड़े रसिक व कला के मर्मज्ञ जाने जाते थे।[19] उनके ही पूर्वज औरंगजेब के शासनकाल में भारतीय शास्त्रीय संगीत की अवस्था बहुत बुरी हो चुकी थी

[18] कला विहार अप्रैल, मई 1990 पृष्ठ संख्या 44 डा सुलभा ठाकुर, ख्याल विशेषांक, संगीत

[19] श्री वामन हरि देशपांडे घरानेदार गायकी मराठी 1985 पृष्ठ संख्या 110

औरंगजेब का शासन काल भारतीय संगीत जगत के लिए काल सिद्ध हुआ था। क्योंकि औरंगज़ेब एक कट्टरपंथी शासक था उसके मन में भारतीय मान्यताओं धार्मिकता आदि के आधार पर संगीत तथा संगीत से जुड़ी हुई चीजों के प्रति घृणा के अलावा और कुछ नहीं था, उसकी मान्यता थी, संगीत को सुनने वाला व्यक्ति अथवा संगीत से जुड़ा कोई व्यक्ति समाज के लिए एक कलंक अथवा व्यसन के समान है जो समाज मे अराजकता फैलाकर समाज को किसी घोर अंधकार की ओर धकेलता है। उसकी इस विचारधारा के कारण समाज मे संगीत को गुप्त स्तर पर ले जाया गया तथा औरंगजेब ने अपने शासनकाल में गाने ,बजाने अथवा संगीत से संबंधित किसी भी क्रियाकलापों पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगा दिया था। जिसके कारण राज दरबारों में कार्यरत संगीतज्ञों की अवहेलना हो रही थी और वह राज दरबारों के आश्रय से निकाले जाने के कारण अपने जीवन यापन के लिए भी संघर्ष कर रहे थे।

इस काल में भारतीय शास्त्रीय संगीत के अनेक ख्याति लब्ध कला साधक जिनके पूर्वजों ने जीवन पर्यंत मुगल शासको के दरबार की शोभा को अपने संगीत से बढ़ाया तथा सजाया था, आज औरंगजेब के विचारधाराओं के फलस्वरूप अपने नगरों, राज दरबारों तथा निवास स्थान को त्यागने पर मजबूर हो चुके थे।

किंतु यह अकाट्य सत्य है कि संगीत वह विधा है जो दबाने से दबती नहीं है और छुपाने से छुपती नहीं है। औरंगजेब के दरबार से निकाले गए संगीतज्ञों को भारत की विभिन्न रियासतों ने आश्रय दिया, जो औरंगजेब की कट्टरता के विरोधी थे, और इन्हीं रियासतों तथा छोटे-छोटे राज दरबारों का आश्रय पाकर संगीतज्ञों ने अपनी कला को संरक्षित तथा संदर्भित करने का प्रयास निरंतर जारी रखा। इसके कारण जो संगीतज्ञ जिन छोटे -छोटे राज दरबारों या रियासतों में जाकर रहे उन्हीं रियासतों के नाम पर उन घरानों का निर्माण हुआ।

श्री वामन हरि देशपांडे घराने की व्याख्या करते हुए बताते हैं कि—
संगीत के सारे घरानों का जन्म तथा विस्तार पुरानी सामंत शाही में ही हुआ है। उनमें घरानों मे जयपुर इंदौर, पटियाला, लखनऊ आदि रियासतों के ही नाम हैं। लखनऊ के प्रमुख कव्वाल गायक गुलाम रसूल हुए। उनके शिष्य उस्ताद शक्कर खां, उस्ताद मक्खन खां लखनऊ के प्रसिद्ध गायक रहे। शंकर खान के बड़े पुत्र मोहम्मद का तथा मक्खन खां नत्थन पीर बख्श शैली के कलाकार थे। एक घराने के होते हुए भी दोनों कलाकारों के शैलियों मे भिन्नता थी। ऐसा कहा जाता है [20],कि दोनों शैलियों के सहयोग से ग्वालियर घराने का निर्माण हुआ। इस प्रकार लखनऊ से प्रारंभ होकर गायकी की परंपरा ग्वालियर से आगरा तथा ग्वालियर से जयपुर एवं किराना मे फैली और इन घरानों के जो कलाकार हुए उनके परंपरा निर्वहन के कारण ही विभिन्न घरानों का निर्माण हुआ।

भारतीय शास्त्रीय संगीत गायकी के प्रमुख घराने व वंशावली

- दिल्ली घराना
- ग्वालियर घराना
- जयपुर घराना
- मेवाती घराना
- पटियाला घराना
- लखनऊ घराना
- आगरा घराना
- रामपुर सहसवान घराना

दिल्ली घराना

[20] श्री वामन हरि देशपांडे घरानेदार गायकी मराठी 1985 पृष्ठ संख्या 110

ख्याल गायकी का दिल्ली घराना प्राचीनतम घरानों में से एक है।[21] दिल्ली के "बादशाह मोहम्मद शाह रंगीले" (1719 ई0)के राज दरबार में खयाल गायकी का प्रचार प्रसार आरंभ हुआ। इनके राज दरबार के प्रसिद्ध गायक नियामत खाँ, सदारंग तथा फिरोज खाँ ,अदारंग नामक गायक जो ख्याल के बंदिशों तथा ख्याल गायकी के प्रचारक माने जाते हैं । "मोहम्मद शाह रंगीले" के नाम से जितनी भी ख्याल की बंदिशें पाई जाती हैं वह इन्हीं सदारंग तथा अदारंग की ही कृतियां हैं। दिल्ली घराने में तानरस खाँ, मुजफ्फर खाँ तथा चांद खाँ के घराने शामिल हैं।

तानरस खाँ की गायकी का पंजाब के पटियाला, तलवंडी, जाडला ,हरियाणा तथा श्याम चौरासी आदि घरानों पर इसका विशेष प्रभाव है।

तानरस खाँ के घराने को 'बरसाना का घराना' भी कहते हैं।[22] दिल्ली के अंतिम मुगल सम्राट "बहादुर शाह ज़फर"(18370 ई0)ख्याल गायन शैली के संरक्षक, संवर्धक तथा रचनाकार भी थे। उनकी रचित ख्याल की बंदिश है आज भी 'शोखरंग' के उपनाम, से दिल्ली घराने के संगीतज्ञों की गायकी मे सुरक्षित है। इस घराने के कलाकार अपने आप को 'बादशाह अकबर' के समकालीन 'श्री चंद' के घराने के वंशज मानते थे। कुछ कल के उपरांत तानरस खाँ दिल्ली को छोड़कर ग्वालियर के महाराज "जीवाजी राव" के राज्याश्रय मे चले गए। विख्यात कलाकार आलिया फत्तू जो पटियाला घराने के संस्थापक और विख्यात कलाकार रहे वह इन्हीं के प्रमुख शिष्यों में से थे। [23]दिल्ली घराने के अन्य प्रसिद्ध गायको मे पंचम खाँ तथा मस्सू खाँ जो, बाद में उज्जैन जाकर बस गए थे इन्हीं की शिष्य परंपरा में आते हैं।

---

[21] उस्ताद चांद खाँ, दिल्ली घराने की विशेषताएं, 1968 संगीत पत्रिका, लेख

[22] डॉ. पन्नालाल मदन, संगीत शास्त्र विज्ञान, पृष्ठ संख्या 114

[23] न.रा. मारुलकर संगीत के घराने पृष्ठ संख्या 92

दिल्ली घराने के जो कलाकार दिल्ली में रहकर अपने घराने की परंपरा को आगे बढ़ाते रहे हैं उनमें, मियां अल्लाह बख्श व उनके भाई उमर खान जिन्हें (इला उमरा) की जोड़ी कहते हैं। उस्ताद नन्हे खाँ, उस्ताद संगी खाँ, उस्ताद मम्मन खाँ, प्रसिद्ध (सारंगी वादक) स्व. बूंदू खाँ, आदि कलाकारों के नाम प्रमुखता से लिए जाते हैं।

लखनऊ घराना

ख्याल गायकी के लखनऊ घराने का आरंभ लखनऊ के सुप्रसिद्ध कव्वाली गायक उस्ताद 'गुलाम रसूल' के द्वारा हुआ।[24] प्रपौत्र उस्ताद शक्कर खाँ तथा उस्ताद मक्खन खाँ लखनऊ के प्रख्यात ख्याल गायक के रूप मे प्रसिद्ध रहे। उस्ताद शक्कर खान तथा मक्खन खा के पुत्र बड़े मोहम्मद खाँ तथा नत्थन पीर बख्श खाँ इस घराने की परंपरा के अद्वितीय कलाकार थे। जहां कुछ समय उपरांत इन कलाकारों ने लखनऊ दरबार को छोड़कर ग्वालियर के दरबार मे स्थान पा लिया। यद्यपि दोनों ही कलाकार एक ही घराने की परंपरा का पालन करने वाले थे ,परंतु दोनों की शैलियों में कुछ भिन्नता थी ,अतः इन दोनों के ही परस्पर सहयोग से ग्वालियर घराने का निर्माण हुआ। उस्ताद बड़े मोहम्मद खाँ ने अपने स्वतंत्र गायन शैली का प्रचार-प्रसार अपने पुत्रों तथा शिष्यों के द्वारा देश के अलग-अलग कोने में जाकर किया।

ग्वालियर के उस्ताद हद्दू हस्सू खाँ द्वारा अपनी ही शैली का अनुसरण करते देखकर कुछ समय पश्चात यह रीवा के दरबार में चले गए तथा जीवन पर्यंत निवास किया।

उस्ताद बड़े मोहम्मद खाँ के चार पुत्र थे-

---

[24] रमाकांत द्विवेदी संगीत स्वरित पृष्ठ संख्या 198)

1. मुनव्वर अली

2. कुतुब अली

3. मुबारक अली

4. मुराद अली

इन चारों भाइयों में से मुबारक अली खान जयपुर के महाराज "रामसिंह" के राज दरबार मे दरबारी गायक तथा जयपुर घराने के प्रवर्तक बनकर आजीवन रहे। उपरोक्त विवरण से यह बात पूर्णतया स्पष्ट होती है कि दिल्ली घराने के बाद ख्याल गायकी का पुराना घराना लखनऊ घराने को कहा जा सकता है।

ग्वालियर घराना

इस घराने के प्रवर्तक नत्थन पीर बख्श (1800 ई0) माने जाते हैं। [25]लखनऊ के 'गुलाम रसूल' इस परंपरा के मूल पुरुष माने जाते हैं। नत्थन पीर बख्श गुलाम रसूल के प्रपौत्र थे ,उनकी शिक्षा दीक्षा उनके पिता मक्खन खाँ द्वारा हुई। बड़े मोहम्मद खान के पिता शक्कर खान उनके चाचा थे। लखनऊ में उचित वातावरण ना पाकर नत्थन पीर बख्श ग्वालियर महाराज के राज्याश्रय मे आ गए ग्वालियर नरेश दौलत राव सिंधिया के कारण हस्सू खाँ,हद्दू खान और नत्थू खाँ द्वारा स्थापित ग्वालियर घराने की शिक्षा प्राप्त कर ग्वालियर घराने मे अनेक प्रतिभाशाली शिष्यों का निर्माण हुआ।

उस्ताद निसार हुसैन खाँ, श्री रामकृष्ण बझे, श्री शंकर पंडित , श्री वासुदेव जोशी, बाबा दीक्षित बालकृष्ण बुआ, विष्णु दिगंबर राजा भैया पूंछवाले भाऊ गुरु जी ,कुंडल गुरु , गुणे साहब ,श्री देवघर, गजानन बुआ जोशी, श्री कुमार गंधर्व एवं अन्य कई प्रसिद्ध कलाकार इस घराने की परंपरा में हुए।

---

[25] रमाकांत द्विवेदी संगीत स्वरित पृष्ठ संख्या 198)

श्री आरोलकर, बाला साहब पूंछवाले , विदुषी मालिनी राजूरकर एवं अन्य कई प्रसिद्ध कलाकार इस घराने की श्रृंखला से जुड़े हैं संप्रति श्री गोहदकर , श्री महेश वाजपेई, श्री सज्जन लाल, सुधिरत्तू, श्री चंद्रकांत पंडित, लक्ष्मण पंडित, अरुण बांगरे आदि वर्तमान में इस घराने का प्रचार प्रसार कर रहे हैं। [26]यह घराना जहां एक ओर गायकी के प्राचीनतम घराने में से एक है वही दूसरे तथ्यानुसार ग्वालियर घराने की गायकी मे ध्रुपद गायकी की शैली सहज रूप से देखने को मिलती है।

आगरा घराना

संगीत के क्षेत्र में आगरा घराने का बहुत ही उच्च स्थान है क्योंकि इसमे केवल गायकों का ही योगदान रहा है।[27] यह भारतीय संगीत के प्रसिद्ध घरानों में से एक है, इसकी गायकी पर मूलतः ध्रुपद, धमार आदि गायन शैलियों का विशेष प्रभाव है। बादशाह अकबर के दरबार के महान गायक 'हाजी सुजान खाँ' तथा हाजी सुजान खां तथा उनके चार पुत्रों ने इस घराने की गायकी को प्रफुल्लित किया। इस घराने के प्रतिभाशाली गायक 'श्याम रंग और उनके भाई सरस रंग' (1780 ई0) के लगभग हुए यह दोनो ध्रुपद ,धमार तथा होरी गायन शैली के विशेषज्ञ थे। श्याम रंग के पुत्र घग्घे खुदा बख्श ने अपने घराने के गायकों से ध्रुपद, धमार होरी तथा अन्य पारंपरिक शैलियों की शिक्षा प्राप्त की तथा ग्वालियर के प्रसिद्ध गायक नत्थन खाँ और पीरबख्श से ख्याल गायन के शिक्षा प्राप्त की। इन्होंने आगरा घराने मे ख्याल की नींव डाली।

इस घराने के अन्य धुरंधर तथा प्रसिद्ध संगीतज्ञों मे उस्ताद नत्थन खान उस्ताद फैयाज खाँ,उस्ताद विलायत हुसैन खान, पंडित जगन्नाथ बुआ पुरोहित, पदम् भूषण डॉ0 श्री कृष्ण नारायण राजनगर, उस्ताद शराफत हुसैन ,उस्ताद लताफत हुसैन,

---

[26] श्रीधर परांजपे, संगीत बोध 1980 पृष्ठ संख्या 180

[27] कुमारी अलका अस्टिकर, घराना अंक, 1982 जनवरी फरवरी पृष्ठ संख्या 46

उस्ताद यूनुस हुसैन खान तथा उस्ताद अता हुसैन खान आदि विख्यात कलाकार इस घराने के पहचान हैं। उस्ताद गुलाम अब्बास खान के नाती स्वर्गीय उस्ताद फैयाज खान तथा स्वर्गीय उस्ताद नत्थन खाँ के पुत्र विलायत हुसैन खाँ, इस घराने के प्रतिनिधि कलाकार वह सुयोग्य कलाकार के रूप मे प्रसिद्ध रहे हैं। [28] उस्ताद फैयाज खाँ बड़ौदा दरबार मे रहे 'महाराजा मैसूर' ने इन्हें "अफताबे मौसिकी" की उपाधि से सम्मानित किया था। आगरा घराने में प्रसिद्ध गायकों द्वारा निर्मित रागों की बंदिशों का भी विशेष तौर पर प्रचलन रहा है।

इस घराने मे मुख्य रूप से बंदिश के बोलों के साथ पलटों की बढ़त करना इस घराने की विशेषता है तथा लयकारी के साथ अंग विस्तार करना और नोम तोम का आलाप करना जिससे इस घराने मे ख्याल शैली भी दृष्टिगत होती है।

जयपुर घराना

इस घराने का निर्माण मुबारक अली के द्वारा माना जा सकता है। मुबारक अली ग्वालियर के बड़े मोहम्मद (छोटे खाँ) के छोटे सुपुत्र थे। मोहम्मद अली खान मनरंग घराने की वंश परंपरा मे से थे तथा एक महान गायक थे जिनका उल्लेख पंडित भातखंडे जी ने अपनी रचनाओं में किया है।

जयपुर घराने मे खान साहब 'मुबारक अली' जैसे संगीत रत्न हुए हैं जिनके पिता बड़े मोहम्मद खान ग्वालियर राज दरबार में उच्च रत्नों में से एक थे।[29] प्रसिद्ध ध्रुपद व ख्याल गायक बहराम खान भी जयपुर घराने से संबंधित थे, जिसे पटियाला घराने के संस्थापक मियां कालू ने और बाद में अली बख्श और फतेह अली ने संगीत की शिक्षा प्राप्त की थी। आगे चलकर जयपुर घराने की दो शाखाएं बन गई-

[28] डॉ देवेंद्र कौर, संगीत रूप, भाग 3, 191, 192

[29] डॉ देवेंद्र कौर संगीत रूप भाग 3 पृष्ठ संख्या 189

1. पटियाला घराना.
2. अल्लादिया खाँ का घराना।

पटियाला घराना में यह विशेष स्थान रखता है। इस घराने के संस्थापक मियां कालू थे। मियां कालू ने दिल्ली घराने के उस्ताद तानरस खाँ से, जयपुर घराने की उस्ताद बहराम खाँ और बड़े मोहम्मद खान के सुपुत्र उस्ताद मुबारक अली और ग्वालियर घराने के उस्ताद हद्दू खान साहब से संगीत शिक्षा प्राप्त की थी। इन विभिन्न घराने के सहयोग से इन्होंने अपनी एक नवीन शैली का निर्माण किया, जो पटियाला घराने के नाम से विश्व विख्यात हुई।

जयपुर घराने की ख्याल गायकी को उस्ताद अल्लादिया खाँ साहब ने नया रंग देकर एक निजी और स्वतंत्र गायन शैली का निर्माण किया। [30]अल्लाहदिया खाँ साहब के पिता ख्वाजा अहमद खान भी उच्च कोटि के गायक थे। अल्लाहदिया खाँ के भाई उस्ताद हैदर खान तथा उनके तीनों पुत्र भी बहुत अच्छे कलाकार थे। अल्लादिया खाँ के शिष्यों में पंडित भास्कर राव बखले का नाम वर्णनीय है। इस घराने के प्रतिष्ठित कलाकारों में पंडित दिलीप चंद्र बेदी, भाई लाल पंडित, हरिश्चंद्र बाली, श्रीमती केसरबाई, श्रीमती मोघूबाई कुर्डीकर, श्री शंकर राव सरनाइक, श्री मल्लिकार्जुन मंसूर तथा वर्तमान में पद्म भूषण किशोरी आमोनकर इस घराने की गायकी का प्रतिनिधित्व कर रही हैं।

[30] डॉ दविंदर कौर संगीत रूप पृष्ठ संख्या 191

रामपुर सहसवान घराना

इस घराने की उत्पत्ति भारतीय संगीत के प्रसिद्ध गायक उस्ताद इनायत हुसैन खाँ (1849 -1919) द्वारा बताई जाती है।[31] इनके पिता उस्ताद महबूब खाँ थे जो अपने समय के प्रसिद्ध वीणा वादक तथा गायक थे। आप रामपुर राज दरबार के दरबारी संगीतज्ञ तथा गायको मे से एक थे। आपकी शिक्षा दीक्षा अपने पिता के द्वारा हुई साथ ही साथ उसे दूर के प्रसिद्ध गायक बहादुर हुसैन खान के द्वारा भी आपको संगीत शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला। रामपुर सहसवान घराने के अन्य प्रसिद्ध गायको में उस्ताद 'मुश्ताक हुसैन खाँ तथा उस्ताद हैदर खाँ हुए। इस घराने के प्रसिद्ध गायको में हुसैन खान तथा उस्ताद निसार खान का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। उस्ताद निसार खान ने अपना सर्वस्व जीवन आईटीसी कोलकाता मे समर्पित कर दिया, वहीं उन्होंने अपनी बेटी के पुत्र उस्ताद राशिद खान को भी बुलाया और यही समय था जब रामपुर सहसवान घराने की गायकी नवीन पीढ़ी को भी प्राप्त होने लगी।

किराना घराना

किराना घराना अपनी अत्यंत सुरीली और भावपूर्ण गायकी के कारण भारतीय संगीत में विशेष स्थान रखता है। इस घराने का संबंध प्राचीन काल के गोबरहार वाणी से है। कुछ साहित्यकार इस वाणी का संबंध गायक धोंडू एवं नायक भन्नू से जोड़ते हैं किंतु उस्ताद अब्दुल करीम खान ने बीन वादन के सौंदर्य तत्वों को अपनी गायकी में समाहित कर, अपनी गायकी को मधुर भावपूर्ण तथा हृदय स्पर्शी बनाया। उस्ताद अब्दुल करीम खान की गायकी में बंदे अली खान के वादन के सौंदर्य तत्वों का आधार था, इसी कारण इनकी गायकी बहुत लोकप्रिय हुई।[32] यही कारण है कि

[31] https://share.google/aimode/OviJytEKSIEmT4PPL
[32] डॉ देवेंद्र कौर, संगीत रूप, भाग 3, पृष्ठ संख्या 187

किराना घराने के प्रसिद्ध कलाकारों द्वारा किराना घराने का प्रणेता तथा जनक उस्ताद "अब्दुल करीम खान साहब" को ही माना जाता है। गायकी के क्षेत्र में आज अनेक घराने हैं जिनमे ग्वालियर, आगरा जयपुर आदि नाम से स्पष्ट है की, जो कलाकार जिस स्थान की परंपरा के अनुयाई हैं उनका घराना भी इसी प्रकार प्रचलित हुआ है। मुख्य कला गुरु अथवा संगीतज्ञ जिसने उस घराने के निर्माण के विषय में सोचा या अपनी कलात्मकता से एक रूप प्रदान किया उसके रहने के स्थान के नाम पर, उसके द्वारा निर्मित गायकी को घराने की संज्ञा प्रदान की गई।

किराना घराना के बारे में अनेक प्रकार के कथन हमें विभिन्न साहित्यों में प्राप्त होते हैं---

"किराना के बारे में ऐसा कहा जाता है, कि[33] महाभारत कालीन दानवीर राजा कर्ण की नगरी को कर्ण नगरी कहते थे, उसका अपभ्रंश रूप किराना नामक गांव है।"

“कैराना” यह उत्तर प्रदेश का एक गांव है, जो परिवर्तित रूप में किराना घराना के नाम से जाना जाता है।"

अन्य मतानुसार --जिसको हम कुरुक्षेत्र कहते हैं, उस शहर का नाम किराना है अर्थात वह राजा कर्ण का क्षेत्र था।

अब्दुल करीम खान के तीन भाई और थे -[34]अब्दुल हक, अब्दुल गनी और अब्दुल मजीद उस्ताद अब्दुल करीम खान के शिष्य श्रृंखला बहुत विशाल है जिसमें कुछ नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिन्होंने भारतीय संगीत की पताका को विश्व स्तर तक फहराया है- स्वर्गीय रामभाऊ कुंदोलकर (सवाई गंधर्व), उस्ताद फैज मोहम्मद, उस्ताद वाहिद खाँ उस्ताद,अब्दुल रहमान , उस्ताद रजब अली, देवदास नन्हे खाँ ध्रुपदिया , उस्ताद काले खान, श्री सुरेश बाबू माने , पंडित भीमसेन जोशी

---

[33] श्री शंकर अभ्यंकर, स्वर भास्कर, पृष्ठ संख्या 68

[34] न.रा. मरुलकर, संगीत के घराने, पृष्ठ संख्या 72

तथा प्रसिद्ध महिला शिष्याओं मे विदुषी सरस्वती माने, डॉ प्रभा अत्रे, विदुषी मेनका शिरोडकर' मल्लिका ए मौसिकी रोशन आरा बेगम, श्रीमती कमलेश्वरी तथा, श्रीमती गंगूबाई हंगल। उस्ताद अब्दुल गनी खान जिनके प्रमुख शिष्यों में बनारस के प्रसिद्ध शास्त्रीय तथा उप शास्त्रीय गायक पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र वर्तमान समय में भी इस घराने की शास्त्रीय परंपरा को संरक्षित तथा संदर्भित कर रहे हैं।

निष्कर्षतः अगर इस घराने की सीमा के बारे मे अथवा स्थान के बारे मे अगर बात की जाए तो इस क्षेत्र की सीमा उत्तर प्रदेश, कुरुक्षेत्र, दिल्ली, पानीपत तथा मेरठ से लगी हुई है। आज की भौगोलिक स्थिति के अनुसार यह क्षेत्र उत्तर प्रदेश के जिला मुजफ्फरनगर में है।इस घराने के कलाकारों ने ख्याल गायन के साथ-साथ मराठी भजनों तथा ठुमरी शैली को भी अपनी गायकी में समाहित किया है। इस घराने में स्वर लगाव तथा भाव प्रधान गायकी इस घराने की विशेषता रही है। राग मे एक-एक स्वर की बढ़त कभी आकार द्वारा कभी बहलावे के द्वारा प्रस्तुत की जाती है, सारांशतः यह कहां जा सकता है कि किराना घराने की संपूर्ण गायकी हृदय स्पर्शी है तथा आनंद विभोर करने में सफल होती है।

बनारस घराना

संगीत के अन्य घरानों की भांति [35]'बनारस'जो उत्तर वाहिनी मां गंगा के पवित्र तट पर बसी बाबा विश्वनाथ के नगरी में प्रसारित गायन श्रृंखला को बनारस घराने की उपाधि दी गई। यह नगर प्राचीन काल से ही धार्मिक,सांस्कृतिक, साहित्यिक कला साधक नगरी के रूप में अनेक शताब्दियों पूर्व से अपनी दिव्यता, पांडित्य, विविधता एवं संगीत की उपासना तथा विश्व की पूजनीय आकर्षक स्थली के रूप में विद्यमान रही है।

---

35 https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AC%E0%A4%A8%E0%A4%

संगीत कला साधकों के उच्चतम श्रृंखलाबद्ध परंपरा काशी की महत्ता एवं गौरव का प्रतीक है। गायन वादन एवं नर्तन की विभिन्न शैलियों के प्रणेता विद्वान कलविध के रूप में काशी की सम्मानित विभूतियों ने संगीत जगत में अपनी श्रेष्ठ था तथा लोकप्रियता से अनेक विश्व स्तरीय कीर्तिमान स्थापित कर इस स्थान को गौरवान्वित किया है।

इस साहित्यिक तथा सांस्कृतिक राजधानी ने संगीत साहित्य एवं कला के क्षेत्र में गायन,वादन तथा नृत्य तीनों ही विधाओं को आत्मसात किया है। जिसकी फलस्वरुप भारत के अन्य प्रदेशों से आए विभिन्न शैलियों के सांगीतिक विद्वानों ने भी अपने गोपनीय, आकर्षक तथा पूजनीय संगीत लहरी को काशी के समक्ष सहज हृदय से प्रसारित किया है। शास्त्रीय संगीत की मर्यादित परिधि में स्वयं को प्रतिस्थापित करने का श्रेय बनारस घराना तथा यहां के शैली को प्रदान किया जा सकता है।

काशी की गायन परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है इसकी प्राचीनता ने न केवल ऐतिहासिक ग्रंथों अपितु विविध शास्त्रीय अभिलेख तथा प्रमाणों द्वारा यह तथ्य सत्यापित है।

विश्वनाथ मुखर्जी अपनी पुस्तक "बना रहे बनारस" में लिखते हैं "[36]काशी जितनी महान नगरी है, उतने ही महान यहां के कलाकार हैं, जिस नगरी के बादशाह स्वयं 'शिव'अर्थात 'कलागुरु' हो उस नगरी में कलाकार और कलाकारों की बहुलता कैसे ना हो? काशी एक ऐसी नगरी है जहां प्रत्येक गली में अनेक महान तथा अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार हुए हैं, सभी एक से एक दिग्गज तथा विद्वान हैं, इनका पूर्ण परिचय समाचार पत्रों तथा मकान में लगे 'नेम प्लेटों'तथा 'लेटर पैड' पर छपी उपाधियों से ज्ञात होता है।

---

[36] पंडित विश्वनाथ मुखर्जी, बना रहे बनारस पृष्ठ संख्या 115

बनारस में शास्त्रीय तथा उपशास्त्रीय दोनों प्रकार का संगीत प्रचलित है। शास्त्रीय संगीत में ठुमरी के अनेक प्रकार प्रचलित हैं।यहां की गायकी लोक तत्व एवं शास्त्रीय संगीत तत्वों का मिश्रित स्वरूप है।

रस सिद्ध कलाकारों के अतिरिक्त योग्य शिक्षक, शास्त्र पारंगत, सफल मान्य वाग्यकार, संगीत एवं साहित्य के ज्ञाता एवं अनूठी गायन शैली यह एक लंबी सूची है जो काशी में ही प्राप्य है।

यहां के गायको को चौमुख गायक की संज्ञा प्रदान की गई है[37], यहां के गायको द्वारा संगीत की शास्त्रीय शैलियों को नियमबद्ध स्वरूप के आधार पर सुना जा सकता है, ध्रुपद, धमार, ख्याल, तराना, टप्पा, ठुमरी आदि जैसी शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय गायन जो बनारस घराने के गायको में एक विशिष्ठता प्रवाहित करता है। यह घराना भारत के प्रतिष्ठित घरानों में से एक है तथा यह जयपुर घराने का समकालीन माना जाता है।[38]

इस घराने के प्रतिष्ठित कलाकारों में-- पंडित बड़े रामदास, पंडित भैरव सहाय, शिव सहाय पंडित, पंडित राम सहाय, श्री प्रताप महाराज, , श्री ठाकुर प्रसाद मिश्र, बलदेव सहाय, शिव पशुपति मिश्र, उस्ताद मौजुद्दीन खाँ, पंडित छोटे रामदास, पंडित कंठे महाराज, पंडित हरिशंकर मिश्र ,पंडित रवि शंकर, , पंडित अनोखेलाल मिश्र,पंडित किशन महाराज श्री,गोपाल मिश्रा, श्रीमती सिद्धेश्वरी देवी, श्रीमती गिरिजा देवी, रसूलन बेगम, ,पंडित राजन साजन मिश्रा जैसे अनेक विश्व विख्यात संगीतज्ञ इस घराने ने संगीत जगत को प्रदान किए हैं, जो सांगीतिक इतिहास की गौरव गाथा बन चुके हैं। इस घराने में पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही अनूठी एवं मनमोहक परंपरा एवं असंख्य मूर्धन्य,विश्व प्रसिद्ध, मेधावी साधना की रीत चली आ रही, गुरु

[37] पंडित विश्वनाथ मुखर्जी, बना रहे बनारस पृष्ठ संख्या 115

शिष्य परंपरा की श्रृंखला ने संगीत क्षेत्र राष्ट्र एवं समाज में अनगिनत हस्ताक्षर दिए हैं। इस घराने की विशेषताओं में लयबद्ध गायन, टप्पा और ठुमरी दादरा जैसी उपशास्त्रीय शैली, लोक संगीत का प्रभाव, भावपूर्ण एवं रस पूर्ण गायन जैसी विशेषताओं से यह घराना सुशोभित है।ठुमरी गायन विशेष कर बनारस द्वारा लोक शैली का परिष्कृत रूप माना जाता है। ठुमरी के विषय में दो मत प्रचलित है, एक यह कि इसका जन्म काशी में कथकों द्वारा हुआ एवं दूसरा मत यह है कि वाजिद अली शाह के दरबार में यह उत्पन्न हुई यह निर्विवाद है [39]कि 'वाजिद अली शाह'के पूर्व ठुमरी का नाम कहीं अन्यत्र नहीं मिलता, किंतु भले ही ठुमरी गायन का आरंभ अवध के दरबार में हुआ हो परंतु कालांतर में बनारस की ठुमरी बहुत प्रचलित रही । लखनऊ और बनारस की ठुमरी गाने का अंदाज इतना अलग है की दोनों में अंतर करना बहुत आसान है।

बनारस में आरंभ से ही चौमुखी गायकी की और पूर्व प्रतिष्ठा रही हैं। [40]19वीं शताब्दी तक बनारस में ठुमरी को केवल नृत्य हेतु प्रयुक्त समझा जाता था परंतु शास्त्रीय संगीत के कलाकार, पंडित जगदीप मिश्र ने इसे चुनौती की भांति स्वीकार कर ठुमरी की भावों को स्वरों के द्वारा व्यक्त किया । उनकी गायकी में विशेष भावुकता तथा मिठास थी। जगदीप मिश्र के इन्हीं गुणों के कारण उन्हें 'ठुमरी सम्राट' या 'ठुमरी का बादशाह' कहा जाता है।

संगीत की दुनिया में बनारस घराना अपनी अलग ही पहचान रखता है। बनारस के इर्द-गिर्द फैले क्षेत्र में शताब्दियों से दिन रात और संगीत की राग रागिनी देश ही नहीं,समस्त विश्व को आनंदित कर रही है।गायन वादन तथा नृत्य के लिए भी बनारस

---

[39] डॉ देवेंद्र कौर, संगीत रूप, पृष्ठ संख्या 187 188

[40] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी

घराना प्रसिद्ध है। अगर वादन की बात करें,तो पंडित राम सहाय ने जो बनारस घराने के तबला परंपरा के प्रतिपादक हैं,उन्होंने पिता के संग 5 वर्ष की आयु से ही तबला वादन आरंभ कर दिया था तथा 9 वर्ष की आयु में लखनऊ आ गए और लखनऊ घराने केउस्ताद मोधू खाँ के शिष्य बन गए। [41]राम सहाय जब मात्र 17 वर्ष के थे तब लखनऊ के नवाब ने उनसे पूछा कि रामसहाय उनके लिए क्या प्रदर्शन कर सकते हैं, कहा जाता है कि, पंडित राम सहाय ने लगभग सात रातों तक लगातार तबला वादन किया है जिसकी प्रशंसा पूरे समाज ने की।

सितार वादन के क्षेत्र में भी पंडित रवि शंकर जी ने विशेष स्थान प्राप्त किया तथा तथा सरोद वादन के क्षेत्र में भी पंडित विकास महाराज विशाल महाराज आदि बनारस के अलावा विदेशों तक बनारस घराने के महक को प्रसारित कर रहे हैं।

बनारस के संस्कृत वातावरण के विषय में पद्म विभूषण "पंडित छन्नूलाल मिश्र" जी कहते हैं कि "बनारस घराना कबीर चौरा से रामापुरा की गलियों में बसने वाला वह रस है, जो शताब्दियों से देश ही नहीं विदेश में भी बनारस घराने का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है और संगीत की राग रागिनी बनारस घराने से जुड़े हर कलाकार के अंदर प्रवाहमान है।

निष्कर्ष

यह कहा जा सकता है कि संस्कृत ,साहित्य, संगीत तथा कला धर्म इत्यादि सभी क्षेत्रों में काशी विशेष साधना स्थली के रूप में प्रतिष्ठित है,और यह सर्वविदित है।

41

https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AC%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%B8_%E0%A4%98%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%A8%E0%A4%BE

संगीत के कलाविद तथा विद्वानों ने विशेष रूप से अपनी साधना द्वारा यहां के संस्कृति को पुष्पित एवं पल्लवित किया है। शताब्दियों पूर्व की भारतीय संगीत परंपरा के महत्वपूर्ण अवयव- गायन वादन तथा नृत्य की त्रिभिन्न शैलियों को बनारस के संगीतज्ञों ने मौलिकता आत्मीयता तथा सृजनात्मकता द्वारा प्रतिष्ठित किया है। संगीत जगत के प्रतिष्ठित कलाविदों की श्रेणी में काशी क्षेत्र से संबंधित विश्व प्रसिद्ध संगीतज्ञ अपने कृतित्व एवं साधना के माध्यम से एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में संगीत जगत के गौरव गाथा अपने जीवन काल में ही बन चुके हैं। बनारस की वंश परंपरा एवं संगीत साधकों की सृजनात्मकता ने काशी की प्रतिष्ठा में निरंतर प्रवर्धन करने में अपने विशेष भूमिका निभाई है। बनारस घराने के ख्याल गायन के परंपरा को उन्नतशीलता प्रदान करने में स्वर्गीय बड़े रामदास जी, अमरनाथ -पशुपतिनाथ, पंडित राजन -साजन मिश्रा गोपाल मिश्रा तथा उपशास्त्रीय संगीत के संरक्षण एवं संवर्धन में सिद्धेश्वरी देवी गिरिजा देवी पंडित छन्नूलाल मिश्र आदि कलाकारों ने अपनी अनवरत साधना तथा संगीत के प्रति समर्पण से बनारस की सांस्कृतिक एवं कलात्मक भूमि की वृद्धि में अपना सर्वाधिक योगदान दिया है वही बनारस घराना ऐसे शास्त्रीय तथा उपशास्त्रीय गायको के प्रतिनिधित्व से गौरवान्वित है।

अध्याय 1.1 बनारस घराना: ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

बनारस : भौगोलिक एवं आर्थिक स्थिति

भौगोलिक

पतित पावनी मां गंगा के अर्थ चंद्राकर तट तथा भगवान शिव शंकर के त्रिशूल पर बसी काशी नगरी अत्यंत प्राचीन है। मंदिरों तथा घाटों का इस नगरी में विशेष महत्व है स्कंद पुराण में भी कहा गया है कि काशी सात पुरियों में सबसे प्राचीन तथा पवित्र है। भौगोलिक दृष्टिकोण से वाराणसी गंगा और वरुणा नदी के बीच एक ऊंचे पठार पर बसा है दूसरे शब्दों में वाराणसी दो मुख्य नदियों के मध्य में स्थित है जो वरुण और अस्सी के नाम से भी विख्यात है एवं उत्तर और दक्षिण में जाकर गंगा नदी में मिलती है। यह उत्तर भारत के उत्तर प्रदेश में स्थित है कि जिला है जहां 2011 के जनगणना के अनुसार 3676 841 जनसंख्या है वही इस भूभाग का क्षेत्रफल 1.550 किलोमीटर है। काशी की जलवायु आद्र अर्ध- कटिबंधीय जलवायु है, जिसके कारण सर्दी तथा गर्मी के मौसम में तापमान में काफी अंतर आ जाता है। गर्मी में पर 32 डिग्री से लेकर 46 डिग्री तक जाता है वहीं सर्दियों के मौसम में पर पास से -15 तक गिर जाता है। गर्मियों में इस भाग में तेज गर्म हवाएं चलती हैं जिसे सामान्य जनमानस की भाषा मे 'लू' बोला जाता है। गंगा का आकार यहां दूज के चांद के समान प्रतीत होता है, जो भगवान शिव के ललाट पर सुशोभित है। मुख्यतः यह हिंदी भाषी क्षेत्र है किंतु क्षेत्रीय तौर पर यहां काशिक भोजपुरी बोली जाती है। यह शहर सहस्त्र वर्षों से भारत का विशेष कर 'भोजपुरी क्षेत्र' का सांस्कृतिक एवं धार्मिक केंद्र रहा है।

आर्थिक

काशी में रेशम की बुनाई ,कालीन, शिल्प तथा पर्यटन स्थाई आबादी के एक महत्वपूर्ण हिस्से को रोजगार प्रदान करते हैं। [42]यह स्थान कुटीर उद्योग के लिए सर्वाधिक प्रसिद्ध है,यहां के लघु एवं कुटीर उद्योग में लकड़ी की कारीगरी, लकड़ी के खिलौने, साड़ी पर ज़री का काम, रेशम कपड़े व गलीचा कालीन इत्यादि की कारीगरी मुख्य रूप से देखने को मिलती है। बनारस की साड़ी विश्व प्रसिद्ध है, यहां बनारसी साड़ियों में सोने के तारों से ज़री का काम किया जाता है।

बनारस मिठाईयां, टेक्सटाइल तथा खाद्य पदार्थों के लिए भी अत्यधिक प्रसिद्ध है।

बनारस प्राचीन पृष्ठभूमि

भारत के प्रसिद्ध सांस्कृतिक व ऐतिहासिक केंद्रस्थली बनारस इसकी तुलना विश्व के अन्य प्राचीनतम नगर जैसे- जेरूसलम, रण्थेंस तथा पीकिंग आदि से की जाती है। इतिहास के शास्त्रों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि काशी का महत्व विशेष रूप से व्यापारिक एवं भौगोलिक स्थिति के कारण है।

भारत के प्राचीनतम इतिहास एवं सांस्कृतिक परंपरा पर प्रकाश डालने एवं प्राचीन ग्रंथो के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि प्राचीन काल से लेकर अब तक अविच्छिन्न चली आ रही मान्यताओं के आधार पर बनारस को विश्व की प्रमुख उत्तम धार्मिक एवं सांस्कृतिक नगरी होने का गौरव भी प्राप्त है।

युगों युगों से मनुष्यों ने यहां की पुण्य भूमि की मिट्टी को अपने मस्तक पर लगाकर शत-शत नमन किया है।[43] इस क्षेत्र को हिंदुओं के एक तीर्थ स्थान के रूप में भी जाना जाता है, जहां विश्व भर से लोग मोक्ष, शांति तथा आध्यात्मिक की तलाश में

---

[42] https://ignca.gov.in/coilnet/kv_0001.htm

[43]डॉ बैजनाथ मिश्र (काशी खंड 26 67)

आते हैं। बनारस शहर की स्थापना को लेकर अनेक प्रकार की किवदंतिया प्रचलित हैं।मान्यताओं के आधार पर कहा जाता है -कुछ छोटे कद वाले सांवले लोगों ने इसकी स्थापना की परंतु , बाद में उच्च जाति का बताने वाले आर्यों ने इस नगर को अपने अधीन कर लिया। इसके पश्चात बनारस में चंद्र वंश की स्थापना हुई।

दूसरी मान्यता के अनुसार, भगवान शिव ने 5000 वर्ष पूर्व इस शहर की स्थापना की। बौद्ध साहित्य में भी बनारस के प्राचीनतम होने के सबल प्रमाण प्राप्त होते हैं। पैप्पलाद, शाखा के अंतर्गत अथर्ववेद के एक मंत्र (5-22-14) में काशी (बनारस का प्राचीन नाम) के बहुवचन के अंत रूप में (काशयः) शब्द का प्रयोग किया गया है। जिससे यह सिद्ध होता है कि काशी विधिवत एक प्राचीन नगरी है। वाराणसी शब्द 'वरुणा' और 'असी' दो नदी वाचक शब्दों के योग से बना है। पौराणिक संस्कृतियों के आधार पर वरुणा और असी नाम की नदियों के बीच अवस्थित होने के कारण इस नगर का नाम वाराणसी पड़ा। ऐतिहासिक विकास क्रम में बनारस के भौगोलिक एवं प्राकृतिक संरचना के विषय में प्राचीन साहित्य के अंतर्गत विशेष रूप से वेद तथा पुराणों में अनेक उल्लेख प्राप्त होते हैं।काशी एक बेहतर इकाई के रूप में पंचकोसी परिक्रमा के प्रतीकात्मक परिधि को इंगित करती है जो मूल नगर के पवित्र क्षेत्र से अत्यधिक दर लगभग 10 मील के सीमाओं को स्पर्श करती है। सामान्यतः प्राचीनतम अभिलेखों में काशी शब्द का उल्लेख प्राप्त होता है आज से लगभग 3000 वर्ष पूर्व यह नगर काशी राज्य के राजधानी के रूप में स्थित था महाभारत में इसे काशीपुरी भी कहा गया है।[44]

महाभारत के अनुशासन पर्व के अनुसार "काशी राज दिवोदास के पितामह 'हरयश्य' उनके पुत्र सुदेव हुए ,तत्पश्चात दिवोदास ने काशी के राज सिंहासन को

[44]डॉ बैजनाथ मिश्र (काशी खंड 26 67)

सुशोभित किया। 'राजा दिवोदास' ने काशी के राज्य सिंहासन को सुशोभित किया, राजा दिवोदास ने गोमती नदी के उत्तरी तट पर सभी वर्णों से युक्त वाराणसी नगर की स्थापना की। देवदास के पुत्र रत्न प्रतर्दन ने दुर्दम से नष्ट अपहृत काशी राज्य को पूर्ण रूप से प्राप्त किया, तथा प्रतर्दन के पुत्र अलर्क ने काशी राज्य को संगठित कर पुनः वाराणसी स्थापित किया। हरिवंश पुराण अध्याय (1,29)से ज्ञात होता है कि यह नगर कई बार छिन्न -भिन्न हुआ,और अनेक कुलों ने राज्य सिंहासन पर अपनी सत्ता स्थापित की। वाल्मीकि रामायण में तथापि वाराणसी से संबंधित विवरण कम मिलते हैं। उत्तरकांड में काशी राज पुरुरवा का नाम प्रलेखित है, इसी कांड में यह वर्णित है कि, ययाति का पुत्र पूरू प्रतिष्ठान के साथ ही काशी का भी शासक था।

'जैन साहित्य'में भी वाराणसी के विवरण प्राप्त होते हैं।[45] जैन विविध तीर्थ के अनुसार वाराणसी चार भागों में विभाजित है---

1. देव वाराणसी
2. राजधानी वाराणसी
3. मदन वाराणसी
4. विजय वाराणसी

जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म काशी के राजा अश्वसेन के पुत्र के रूप में चैत्र कृष्ण चतुर्थी को हुआ था। श्री पार्श्वनाथ जी जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर महावीर से 250 वर्ष पूर्व लगभग 777 ईसा पूर्व पैदा हुए थे। जैन आगम ग में वर्तमान सारनाथ सिंह पुर के नाम से विख्यात है, जहां जैन धर्म के 11वें तीर्थंकर श्रेयांश नाथ ने अवतरित होकर यही से अपने अहिंसा धर्म का प्रचार प्रसार संपूर्ण भारत में किया था।

[45]डॉ बैजनाथ मिश्र (काशी खंड 26 67)

ईसा पूर्व पांचवीं शताब्दी में श्रावस्ती, साकेत,चंपा,राजगृह कौशांबी आदि नगरों के साथ बौद्ध कालीन वाराणसी भी उल्लेखनीय नगर में प्रतिष्ठित थी। गौतम बुद्ध ने गया में संबोधि प्राप्त करने के पश्चात वाराणसी के समीप सारनाथ में "धर्म चक्र प्रवर्तन" किया था। इससे यह पूर्ण रूपेण स्पष्ट होता है कि, उस समय वाराणसी नगर आर्यों के सांस्कृतिक क्रियाकलापों का मुख्यतम केंद्र स्थापित हो चुका था, अनेक बौद्ध जातक कथाओं में "काशीराज ब्रह्म दत्त" का उल्लेख प्राप्य है।जातक कथाओं का कल ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी का है। बौद्ध कालीन काशी की महिमा ज्ञात करने में "त्रिपिटक और जातकों" का विशेष महत्व है, जिनके अध्ययन से काशी के राजनीतिक महत्व का सहज अनुमान प्राप्त किया जा सकता है। यह वह काल था जब काशी 16 जनपदों में विभक्त थी, इन महाजनपदों में कौशल तथा मगध की तरह ही काशी भी अत्यंत प्रसिद्ध थी। पाली साहित्य में काशी का वर्णन राज्य के रूप में ही उल्लिखित है।

महाकवि अश्वघोषकृत[46] "बुद्ध चरित"में काशी तथा वाराणसी को एक समान माना गया है। बुद्ध के जन्म 563 ऐसा पर्व के पहले ही काशी आध्यात्मिक एवं धर्म का महत्वपूर्ण केंद्र बन चुकी थी। बौद्ध काल के पश्चात स्थापित मौर्य वंश सम्राट अशोक ने सारनाथ में अनेक बौद्ध स्तूपों की स्थापना की एवं एक शिलालेख का निर्माण कराया, उस काल के बौद्ध- विहार- खंडहर आज भी यह सारनाथ में दृष्टिगत हैं। सम्राट स्कंद गुप्त ने हूणों पराजित करने के लिए काशी की यात्रा की थी, गाजीपुर के 'भितरी'नामक स्थान पर उसका एक शिलालेख प्राप्त होता है जिससे यह ज्ञात होता है कि किस प्रकार स्कंद गुप्त ने अपने अपराजित शौर्य एवं पराक्रम से हूणों को पराजित कर विजय श्री प्राप्त की थी।

[46] डॉ बैजनाथ मिश्र काशी खंड 26 67

गुप्त काल में भी काशी विशेष रूप से महत्वपूर्ण थी। 12वीं शताब्दी अर्थात मध्य युग में गढ़वाल राजाओं ने काशी को अपनी राजधानी बनाया था, उनके द्वारा बनाए गए महलों के अवशेष आज भी खंडहर रूप में है राजघाट गंगा के किनारे दृष्टिगत होते हैं, तथा मुगल काल में भी काशी पर अनेक बार आक्रमण कर यहां साहित्य, संस्कृति तथा उत्कृष्ट शिल्पो को नष्ट किया गया, किंतु बाद में पुनः अनेक सुप्रसिद्ध मंदिरों का पुनर्निर्माण एवं धार्मिक विचारधारा से और भारतीय राजाओं के सहयोग द्वारा हुआ।

काशी नगरी के तीर्थ होने के संबंध में डा. काणे ने लिखा है --"विश्व का ऐसा कोई नगर नहीं है जो वाराणसी से बढ़कर पवित्रता, प्राचीनता, निरंतरता एवं आदर को प्राप्त हो।"

वाल्मीकि रामायण में भी काशी से संबंधित अनेक दृष्टांत प्राप्त होते हैं।[47] चक्रवर्ती सम्राट दशरथ के अश्वमेध यज्ञ में काशीराज को भी आमंत्रित किया गया था।

अयोध्या कांड में कैकई के क्रोध को शांत करने के लिए काशी से उत्पन्न अति विशिष्ट वस्तुओं को प्रस्तुत करने का आदेश राजा दशरथ जी के द्वारा दिया गया था। इसके पश्चात महा ऋषि व्यास के "शत साहस्त्री" संहिता मे काशी का प्रसंग दो बार प्राप्त होता है। प्रथम तीर्थ के रूप में, एवं दूसरा पांडव पक्ष की ओर से, काशी का वर्णन सर्वप्रथम महाभारत में ही हुआ है। महाभारत के वन पर में अज्ञातवास के समय पांडवों के काशी आने का वर्णन प्राप्त होता है।

बनारस मंदिरों का शहर है जहां हर थोड़ी दूरी पर किसी न किसी देवी देवता का मंदिर दृश्य होता है। अनेक देवी देवताओं के मंदिर यहां स्थित है। 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक काशी विश्वनाथ काशी में ही विराजमान है। अतः मूलतः बाबा विश्वनाथ

[47] काशी की संगीत परंपरा भैरव प्रसाद मिश्र पृष्ठ संख्या 371

की नगरी होने के कारण मंदिरों में" हर हर महादेव" का जयकारा हर पल गूंजता है। काशी पूर्ण रूपेण 'ओम'स्वरूप है इसके संदर्भ में जो प्रमाण मिलता है वह इस श्लोक में वर्णित है-

"काशी ब्रह्मोती विख्याता तत् विवर्तो जगत भ्रमः।

अविवर्त तदेबाहु काशिति ब्रह्मवादीनः।।"[48]

काशी के संदर्भ में बताते हुए पद्म भूषण पट्टाभिराम शास्त्री (सन्मार्ग वाराणसी विशेषण का 1986 पृष्ठ 27) ने कहा है कि साथ मोक्ष पुरियों में काशी माला के मेरू (मध्यमणि) के समान प्रकाशमान है। जिस प्रकार मध्यमणि बीच में रहकर दोनों और ही मणियों को प्रकाशित करती है ठीक उसी प्रकार काशी मध्यमणि के समान अपने साथ अन्य पुरियों को भी प्रकाशित करती है।

बनारस में गंगा के किनारे दशाश्व मेघ घाट के निकट एक भव्य शिव मंदिर है, जिसका निर्माण महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने 1780 ईस्वी में हिंदू वास्तु कला के अनुसार करवाया था। सन 1853 में पंजाब के शासक महाराजा रणजीत सिंह ने इस मंदिर के लिए 1000 किलोग्राम सोना देकर मंदिर के शिखर को मढवाया था। इस मंदिर को औरंगजेब जो की एक मुगल शासक था तथा विशुद्ध धर्म विरोधी था द्वारा कई बार ध्वस्त करने का प्रयास किया गया और कई भागों को इस्लामी स्थापत्य का रूप देने का भी प्रयास किया गया परंतु कई आक्रमणों के पश्चात भी यह सांस्कृतिक स्थल विशेष प्रयासों के फलस्वरूप अडिग रही। आई-ने- अकबरी के अनुसार बनारस पुरातन काल से ही भारत वर्ष में विद्या का अधिपति रहा है।

काशी के विभिन्न घाट

पुण्यसलिला गंगा नदी इस नगर में स्वयं पवित्र तीर्थ स्थल के रूप में विद्यमान है।

[48] काशी की संगीत परंपरा भैरव प्रसाद मिश्र पृष्ठ संख्या 371

पर्वतों का मृत्युंजय असंख्य जड़ी बूटियां की अमृतमई औषधि गुणों से संपन्न उत्तर वाहिनी गंगा काशी में असंख्य सनातन भक्तों के मानसपटल में त्रिविध पाप नाशिनी,मोक्षदायिनी गंगा के रूप में प्रतिष्ठित है। [49]पापनाशिनी उत्तर वाहिनी मां गंगा के अवस्थित होने के कारण,काशी नगरी को जीवन के उच्चतम लक्ष्य जीवन मुक्ति अर्थात मोक्ष प्रदान करने वाले भारत की सात आध्यात्मिक नगरी में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

गोमुख से गंगासागर तक गंगा नदी लगभग 2525 किलोमीटर का सफर तय करती है। गंगा का भाग उत्तर से दक्षिण की ओर होता है यही कारण है इस गंगा को उत्तर वाहिनी गंगा की संज्ञा प्रदान की गई है परंतु बनारस में गंगा नदी का बहाव दक्षिण से उत्तर की ओर है। यह नगर पूर्ण रूपेण गंगा के किनारे अवस्थित है, गंगा नदी का तट 65 किलोमीटर लंबा है। यद्यपि नदी के किनारे घाटों की संख्या लगभग 100 है,अधिकतर घाट स्नान पूजा एवं समारोह की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, जबकि कुछ घाट ऐसे भी हैं जिन्हें मात्र अंत्येष्टि तथा क्रिया कर्म की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है।अधिकांश वाराणसी घाटों का पुनर्निर्माण 1700 ई के बाद किया गया था, जब यह नगर मराठा साम्राज्य का हिस्सा था। बनारस के कई घाट किविदंतियों तथा पौराणिक कथाओं से जुड़े हैं ।

काशी बनारस की धार्मिक परंपरा

पौराणिक ग्रंथों भी विशेष कर [50]मध्यकालीन पुराणों में काशी को शैव धर्म का प्रसिद्ध क्षेत्र माना गया है,परंतु वैदिक तथा बौद्ध साहित्य में काशी जनपद तथा वाराणसी का महत्व उसका व्यापार और संस्कृति है, धर्म नहीं, किंतु वेदों पुराणों में

[49] काशी की संगीत परंपरा भैरव प्रसाद मिश्र पृष्ठ संख्या 371

[50] डॉक्टर मोती चंद्र काशी का इतिहास पृष्ठ संख्या 13

काशी को ब्रह्म स्वरूप में प्रमाणित किया गया है। काशी का प्रारंभिक स्वरूप यक्ष, नाग,वृक्ष आदि की पूजा से आरंभ होता है। प्राचीन काल में इस स्थान पर ही यक्षों के पूजन की मान्यता थी, काशी में अनेक ही यक्षों के पूजन स्थल अभी भी परिलक्षित होते हैं, जिन्हें वीर या चौराहा की संज्ञा प्रदान की गई है। इन स्थानों में लहुराबीर और बुल्लावीर प्रसिद्ध है, जो भरहुत से मिली हुई चुल्लकोका और महाकोका यक्षियों के समान छोटे और बड़े वीर संज्ञक देवता थे।

मत्स्यपुराण पुराण की एक कथा के अनुसार [51] काशी के हरिकेश यक्ष ने भगवान शिव की अखंड तपस्या करके काशी में स्थाई रूप से निवास का वरदान मांगा था इस प्रकार यश पूजा के स्थान पर शिव पूजा प्रारंभ हुई। यह स्थान भगवान शिव की नगरी है इस स्थान पर भगवान शिव के असंख्य लिंग स्थापित हैं। काशी खंड के दसवें अध्याय में 64 लिंगो का उल्लेख प्राप्त होता है, काशी शिवनगरी होने के कारण यहां ऐसा कोई भी स्थान नहीं है, जहां शिव का रूप दृष्टिगत ना होता हो। बनारस में सभी धर्मो का वर्चस्व समान रूप से देखने को मिलता है।[52] हिंदुओं का तीर्थ स्थल होने के साथ ही साथ काशी ,जैन तथा बौद्ध धर्म की भी तीर्थ स्थली मानी जाती है। आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व में जहां जैन धर्म के चार तीर्थंकरों का जन्म हुआ था। भेलूपुर के पास 23 में तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म इसी नगर में हुआ और 24 में तीर्थंकर महावीर का जन्म छठी शताब्दी ईसा पूर्व में हुआ। सारनाथ स्थान तीर्थ के रूप में बुद्ध एवं जैन धर्म की भी धर्मस्थली है जिस धर्म चक्र प्रवर्तन के रूप में जाना जाता है। इस प्रकार काशी नगर में 3300 हिंदू मंदिर ,12 गिरजाघर ,जैन व बुद्ध स्थल 3 गुरुद्वारे, 1388 मस्जिद और दरगाहे स्थित हैं।

---

[51] पंडित कुबेर नाथ शुक्ला वाराणसी वैभव पृष्ठ संख्या 22 24

[52] काशी की संगीत परंपरा कामेश्वर नाथ मिश्र पृष्ठ 140

यही काशी की विशेषता है तथा यही काशी का धार्मिक एवं आध्यात्मिक स्वरूप है इसके आकर्षण के फलस्वरुप असंख्य श्रद्धालु ,भक्त एवं विरक्त महापुरुषों द्वारा काशी उपास्य तथा सेव्य है।

काशी के इन्हीं धार्मिक विशेषताओं के कारण अनेक पाश्चात्य विचारकों एवं विद्वान जैसे --हैमिल्टन, हेवेल,हैबर, प्रिंसेप शेरिंग, स्मिथ, ट्रेवरर्नियर वार्ड आदि विद्वानों ने इस नगर को अकाट्य एवं निर्वात रूप से हिंदू भारत का प्रतिनिधि नगर की उपाधि दी है। यह कथन को सच्चरित्र करती है कि[53] "काशी हिंदुत्व के वर्चस्व के साथ ही भारत के समग्र धर्म का प्रतिनिधित्व करती है"। इस संदर्भ में सौंदर्यशास्त्री लिनाय का अभिमत सत्य प्रतीत होता है कि "यह नगर मात्र हिंदुओं का देवस्थान नहीं है, अपितु मुस्लिम,सिख, जैन, बौद्ध एवं ईसाइयों के लिए भी पूजनीय है,अतः यह कहना सत्य एवं तर्कसंगत है कि यह नगर प्रत्येक मानव का है।

काशी का साहित्यिक महत्व

भारतीय संस्कृति साधना एवं साहित्य कि केंद्र स्थल के रूप में परम पावनी काशी नगरी का स्थान मूर्धन्य रहा है, विभिन्न युगों में हमें इसकी गौरव गरिमा के दर्शन भारतीय वांगमय के माध्यम से प्राप्त होते हैं,बल्कि यहां तक कहा जा सकता है,कि नगरी से प्रस्तुत ज्ञान रश्मियों ने समय-समय पर ज्ञान विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में समग्र भारतीय नभ मंडल को प्रोदभासित किया है।

प्राचीन पुराने एवं वेदों के अधीन से यह ज्ञात होता है कि वेदों के अध्यापन एवं अध्ययन के संदर्भ में काशी उत्तम स्थान पर आसीन रहा है।

काशी प्राचीन काल से है वैदिक संस्कृति के प्रचार प्रसार का मुख्य केंद्र रहा है। विभिन्न कालों तथा युगों से हमें इस स्थान की गौरव -गरिमा के दर्शन वैदिक वांगमय

[53] काशी का इतिहास लेखन मोती चंद्र पृष्ठ संख्या 26

शास्त्रों के माध्यम से उपलब्ध होते हैं। प्राचीन कालीन विधाओं के मर्मज्ञ मनीषियों की आश्रयस्थली के रूप में काशी की विलक्षणता तथा परंपरा अति प्राचीन काल से प्रवाहित है। ब्राह्मण उपनिषद संहिता तथा वैदिक साहित्य आदि में काशी तथा यहां संचारित ज्ञान का उल्लेख स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। आचार्य पंडित बलदेव उपाध्याय जी ने अपनी पुस्तक "काशी की पांडित्य परंपरा"में पृष्ठ 21 पर काशी की शिक्षक परंपरा के विशेषता बताते हुए लिखते हैं कि आयुर्वेद के महान विद्वान शुरू के शिक्षा दीक्षा काशी में ही हुई थी,वह काशी के राजा के शिष्य थे।

वेद तथा उपनिषद काल से पांडित्य तथा विद्वत्व की पारम्परिक अविरल धारा जो चली,वह आज भी प्रवाहमान है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक के अनेक विद्वान तथा मर्मज्ञ मनीषियों ने काशी को अपने आश्रय स्थल बनाया,इसलिए यह भी कहा जाता है - [54]संपूर्ण भारत का ज्ञान काशी ने स्वयं में समाहित किया है। आदि शंकराचार्य से लेकर पूज्य स्वामी करपात्री जी ने काशी को सर्व विद्या की राजधानी बनाया।

इसी स्थान पर पाणिनि ने 'अष्टाध्याई' का अवतरण किया तो वहीं संत तुलसीदास जी द्वारा श्री रामचरितमानस का लेखन भी इसी स्थान पर हुआ।

वैष्णव धर्म के आचार्य यमुना आचार्य जी ने काशी को ही केंद्र मानकर धर्म का प्रचार प्रसार किया।

बनारस में संस्कृत विद्वानों के परंपरा में अत्यंत वृहद तथा प्राचीन रही है। [55]संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान श्री हर्ष ने अपने ग्रंथ "नैषधियचरित"की रचना काशी में ही की थी, तथा मनुस्मृति के प्रसिद्ध टिकाकार कुल्लुकभट्ट "त्रियस्थली सेतु"के रचयिता श्री लक्ष्मीधर भट्ट "व्यवहारमयूख" के प्रणेता श्री नीलकंठ तथा कृत्यकल्पतरु के

---

[54] काशी की संगीत परंपरा पारसनाथ सिंह संगीत कला विहार अक्टूबर 1957

[55] काशी की पांडित्य परंपरा आचार्य पंडित बलदेव उपाध्याय पृष्ठ संख्या 21 22

रचयिता श्री लक्ष्मीधर भट्ट काशी के प्रख्यात तथा प्रतिष्ठित विद्वान थे। विभिन्न धर्म दर्शनों के आचार्य जगतगुरु आदि शंकराचार्य,श्री वल्लभाचार्य श्री रामानंदाचार्य, संत तुलसीदास, संत कबीर,तीर्थंकर पार्श्वनाथ, श्रेयांशनाथ महात्मा बुद्ध आदि अनेक मनीषियों ने अपने ज्ञान से काशी को प्रकाशित किया तथा स्वयं काशी के उच्चतम ज्ञान से आलोकित हुए।

काशी प्राचीन कालीन ज्ञान कुंज था।[56] याज्ञवल्क्य ने मिथिला के राजा जनक से तथा बालाकिगार्गय ने काशीराज अजातशत्रु से ब्रह्म विद्या प्राप्त की थी। कोसिय तथा तेतरिया जातकों से ज्ञात होता है कि काशी के यशस्वी आचार्य चार वेद तथा 18 शिल्पो का ज्ञान दिया करते थे, तथा तित्रत जातक से यह ज्ञात होता है कि 16 वर्ष की आयु वाले विद्यार्थी काशी में अधिक संख्या में अध्ययन हेतु आते थे।

सम्राट अशोक के काल में भी सारनाथ बौद्ध विहार शिक्षा का प्रमुख केंद्र था एवं गुप्त शासन काल में काशी मे साहित्य एवं संस्कृत भाषा का अभूतपूर्व अभ्युत्थान हुआ। संस्कृत वांगमय के मूल ग्रंथ वेद ही है, तथा प्रारंभ में वेदाध्ययन ही अध्ययन -अध्यापन का मुख्य विषय हुआ करता था। [57]सारनाथ के उत्खनन से जो मोहरे प्राप्त हुई हैं उन अंकित चित्रों से यह ज्ञात होता है कि काशी ही वेद अध्ययन का प्रमुख केंद्र थी।

काशी के प्राचीनतम इतिहास का अवलोकन करने से यह ज्ञात होता है कि संस्कृति एवं सांगीतिक परंपरा को भी निरंतर बनाए रखने में यहां के संगीतज्ञों ने भी पीढ़ी दर पीढ़ी एक श्रृंखलाबद्ध तरीके से योगदान दिया है।

---

[56] उत्तर प्रदेश के प्राचीनतम नगर पृष्ठ संख्या 42

[57] संगीत पत्रिका स्वर्गीय राय कृष्णा दास सितंबर 2009 पृष्ठ संख्या 49

बौद्ध जातक कथाओं में काशीराज ब्रह्म दत्त के शासनकाल में शासन की ओर से सांगीतिक शिक्षण के लिए संगीत शिक्षालयों के उचित व्यवस्था थी। साधारण जनमानस विभिन्न अवसरों से लेकर मंदिर राज दरबार तथा सामाजिक आदि विशेष उत्सवों पर बौद्ध कालीन नगर वधुओं के रूप में सुलसा, श्यामा चित्रलेखा के नृत्य संगीत आदि कला क्षेत्र में संलंग्नता के उल्लेख प्राप्त होते हैं जो अपने कलात्मक गतिविधियों के द्वारा नगर वासियों का मनोरंजन करने में दक्ष थीं।

संगीत तथा नृत्य ही इनका जीविकोपार्जन का मुख्य साधन तथा उद्देश्य था अतः काशी की संगीत परंपरा का मर्यादित तथा प्राचीनतम स्वरूप भी इन्हीं कलाकारों द्वारा गतिशील होता रहा।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः काशी को परंपरागत तौर पर प्राचीन एवं समृद्ध माना जाता है। यहां के सांस्कृतिक धरोहरों तथाभारतीय संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु अनेक प्रयास किए गये हैं। यहां का मंदिर ,संगीत, तीर्थ अथवा गंगा के घाट आदि ऐसे धरोहर हैं जिसने भारतीय संस्कृति के परंपरा को विश्व स्तर तक प्रोत्साहित किया है।[58] यहां के संगीत विद्यालय, सांगीतिक संस्कृति गुरु शिष्य परंपरा एवं ज्ञान सदियों पुरानी है ,तथा यहां की संस्कृति का संवर्धन करते हुए यहां के सामान्य जनमानस अपने आचार,विचार तथा व्यवहार द्वारा धरोहरों की देखरेख करते हुए परंपरा का निर्वहन सतत निर्वहन करते हैं, यह एक हर्ष का विषय है कि काशी की प्राचीनता एवं समृध्दिता के कारण एवं वैश्विक स्वीकार्यता के कारण ही यूनेस्को द्वारा इस इस नगर की सराहना की गई है।

[58] पूर्व अंग की गायकी एक उत्सव वृतांत संगना मंजरी सिंह पृष्ठ संख्या 135

1.2 बनारस घराना: सांगीतिक परंपरा

काशी की संगीत परंपरा का क्रमबद्ध इतिहास वैसे तो प्रमाणिकता के अभाव में अप्राप्त सा है, किंतु 16 शताब्दी के पूर्व के इतिहास का अवलोकन करने पर किसी घटनाक्रम के उल्लेख से यह तो स्पष्ट है,कि यह नगरी संगीत एवं कला से कभी अछूती नहीं रही है। पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के अनुसार[59] "बनारस की संगीत परंपरा सुनी नहीं जाती बल्कि अनुभव की जाती है।"

"काशी जितनी महानगरी है उतने ही महान यहां के कलाकार हैं जिस नगरी के बादशाह स्वयं कलागुरु अर्थात शिव हो, उस नगरी में कला तथा कलाकार की बहुलता अवश्य होगी। परवर्ती साहित्य के अनुसार भी काशी की नर्तकियों तथा वीरांगनाओं के स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होते हैं तथा काशी के अंतर्गत "गंधर्व"नामक जाति की बस्ती मिलने से इस तथ्य की पुष्टि होती है, कि यहां इस प्रकार के कलाकारों की बस्ती बहुत दिनों से रह रही है तथा इस बस्ती में अनेक गायक-गायिकाएं हुए हैं।इस तथ्य के अंतर्गत, [60] काशी में कथक जाति की एक बस्ती जो काशी के कबीर चौरा मोहल्ले तथा आसपास के गांव में रहते हैं, इस समुदाय को काशी क्षेत्र का प्राचीनतम निवासी माना जाता है तथा इनका मुख्य कार्य गाना बजाना तथा तालीम देना है।

"कथक" शब्द संस्कृत भाषा से उद्धृत है जिसका अर्थ है "कथा कहने वाला" काशी एक तीर्थस्थली है जहां असंख्य मंदिर हैं ऐसे धार्मिक वातावरण में ऐसे जाति अथवा समुदाय का निवास होना स्वाभाविक है।

---

[59] पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी

[60] मिश्र कामेश्वर नाथ, काशी की संगीत परंपरा पृष्ठ संख्या 65

प्रचलित जन श्रुति के अनुसार कहा जाता है कि प्रसिद्ध ख्याल गायक सदारंग तथा अदारंग 'गाजीपुर' अर्थात काशी प्रमंडल के ही थे तथा बाल्यावस्था में दरिद्रता से त्रस्त थे, संभवतः भिक्षावृत्ति से जीवन यापन करते थे,किसी प्रकार बादशाह मोहम्मद शाह तक पहुंचे,वहां बादशाह ने ध्रुपद के आचार्य सैनियों से उन्हें मिलवाया,सैनियों ने उन्हें ध्रुपद की शिक्षा तो नहीं प्रदान की, परंतु जो भी सिखाया उसी का उदात्त रूप उनके ख्यालों में प्राप्त होता है।इस जनश्रुति का कोई प्रमाण नहीं है, परंतु सदारंग और अदारंग के ख्यालों में भोजपुरी शब्द रूप पाए जाते हैं।

बनारस राजवंश में सांगीतिक वातावरण बाहुल्य था। इस प्राचीनतम नगर में मध्य युग के गुप्त काल में महाजन पर्व की जातक कथा के अनुसार काशीराज के राज दरबार में "छत्र मंगल दिवस"के आयोजन पर 1000 नर्तकियों के नृत्य संगीत के प्रदर्शन से संबंधित उल्लेख प्राप्त होते हैं। इसके अतिरिक्त 18 से 19वीं शताब्दी में काशी की सुप्रसिद्ध गायिकाओं में चित्रा इमामवादी, गुलबदन सुखबदन आदि का उल्लेख करम इमाम द्वारा रचित ग्रंथ "मअदन-मौसिकी" में प्राप्त होता है।

ठुमरी के विषय में दो मत हैं -पहले मत में इसका जन्म काशी के कथकों द्वारा उत्पन्न माना जाता है तथा दूसरे मत में लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह के दरबार में परिष्कृत माना जाता है, किंतु यह निर्विवाद सत्य है कि नवाब वाजिद अली शाह के पूर्व ठुमरी का नाम कहीं अन्यत्र प्राप्त नहीं होता।

यह स्वीकार्य है कि 19वीं शताब्दी के मध्य काल से लेकर ठुमरी ने विशेष लोकप्रियता प्राप्त की तथा कई शास्त्रकारो तथा विद्वानों का ऐसा मत है कि[61] बनारस की ठुमरी पंडित "जगदीप मिश्र" द्वारा प्रारंभ हुई।कहा जाता है कि लखनऊ की चपल एवं द्रुत लय युक्त ठुमरी जब गोमती का किनारा छोड़कर काशी आई तो, यहां की शांत सौम्य गंगा का स्नेहिल पवित्र रूप देखकर वह स्वयं सम्मोहित हो

[61] पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से किए गए साक्षात्कार पर आधारित सूचना।

गई तथा लखनवी तहजीब के साथ-साथ बनारस का शालीन स्वरूप एवं धीर गंभीर आवरण ओढ लिया।

श्रुति ज्ञान के आधार पर भले ही ठुमरी का आरंभ अवध दरबार में हुआ हो परंतु कालांतर में बनारस की ठुमरी ही विशेष रूप से प्रचलित है। पंडित जगदीप मिश्र ठुमरी के बहुत ही प्रसिद्ध कलाकार थे तथा "ठुमरी के बादशाह" माने जाते थे। यहां के अन्य प्रसिद्ध कलाकारों में काशीराज विशेष रूप से प्रसिद्ध थे उन्हीं के दरबार में प्रसिद्ध कलाकार वह बीनकार 'मिठाई लाल जी' हुए वहां उच्च कोटि के गायक होने के साथ-साथ बीनकार भी थे कहां जाता है उनके सामान कलाकार बनारस में आज तक नहीं हुआ।

इसके अतिरिक्त इस नगर की सांस्कृतिक महत्व को बढ़ाने में यहां के अनेक पंडित, संत, साधक महात्मा ,आलिया ,फकीर ,साहित्यकार चित्रकार ,कवि ,लेखक एवं गुण ग्राहक राजा एवं संगीतज्ञ की पीढ़ी का योगदान सदैव विशेष रूप से चिर स्मरणीय है। इन्हीं के प्रकांड ज्ञान प्रकाश से समय-समय पर यह नगरी आलोकित होती रही है। भारतीय संगीत की मिठास यहां के वातावरण में घुली मिली रही।[62]मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर के दिल्ली छोड़ने के साथ दिल्ली दरबार से आने वाले संगीत साधकों में वीणा वादक वारसी अली खान, टप्पा गायक अकबर अली खान बनारस आए। यहां आने के बाद बनारस के सांगीतिक वातावरण ने उन पर ऐसा असर डाला कि वह अपने पुराने समय को भूलकर बनारसी वातावरण में रम गए। गुलाम नबी शोरी मियां के पिता गुलाम रसूल एवं मियां जानी दोनों ही अवध के नवाब असुफ़ उद्दौला के दरबारी गायक थे, लेकिन नवाब के वजीर हसन खान से उन्हें उचित सम्मान प्राप्त नहीं हुआ जिससे दुखी होकर उन्होंने पद त्याग कर दिया।उस्ताद गुलाम रसूल एवं उनके पुत्र शोरी मियां ने एक लंबे अरसे तक बनारस

[62] मिश्र कामेश्वर नाथ, काशी की संगीत परंपरा पृष्ठ संख्या 65

में ही निवास किया। टप्पा गायकी के आविष्कारक शोरी मियां की आवाज बहुत पतली थी, जिसके कारण उनके पिता ने उनकी आवाज को ख्याल गायकी के उपयुक्त नहीं समझा। परिणाम स्वरुप शोरी मियां ने अपने अटूट लगन निरंतर साधना तथा साथ ही साथ पंजाबी भाषा शैली का अध्ययन करते हुए इस भाषा में श्रृंगार एवं विरह युक्त प्रेम गीतों की सुंदर रचनाएं की ,और उन प्रेम गीतों की बंदिशों से एक नवीन चमत्कार पूर्ण गायन शैली" टप्पा" को जन्म दिया।[63]

उस्ताद शोरी मियां निःसंतान थे, अतः उनकी टप्पा गायकी को लोकप्रिय बनाने का श्रेय एकमात्र शिष्य गामू मियां खान जी को जाता है, जिनके पुत्र शादी खान काशी नरेश श्री उदित नारायण सिंह जी के दरबार में दरबारी गायक थे। शादी खान ने टप्पा गायन शैली की शिक्षा एवं दीक्षा बनारस की चित्रा और इमामबादी को दी। इनकी गायकी ने पूरे बनारस क्षेत्र में टप्पा गायकी को आश्चर्यजनक स्तर तक प्रसारित किया। टप्पे की गायकी को बनारस ने शीघ्र ही आत्मसात कर लिया। इमामबादी के पुत्र रमजान खान तथा शिष्य नागेंद्र भट्टाचार्य द्वारा 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में नवीन टप्पा गायन शैली बेतिया घराने के कलावंत पंडित कामता प्रसाद मिश्र, पंडित ज्वाला प्रसाद मिश्र, शिव नारायण जी, गुरु प्रसाद जी जैसे कलाकारों तक पहुंची। जिन्होंने अपने ध्रुपद गायकी की परंपरा को बरकरार रखते हुए टप्पा गायकी को लोकप्रियता दिलाने में विशेष स्तर तक योगदान दिया।

काशी के संगीत को संरक्षित तथा संदर्भित करने में महाराष्ट्र समाज ने भी विशेष योगदान दिया, इस समाज में ऐसे कई कलाकार हुए जिनकी साधना उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित थी, उन कलाकारों में पंडित बेनी माधव जी, राम बुआ भावे, गंगाधर बुआ चांद वरकर ,रामभाऊश्री कृष्ण हिरलेकर आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

---

[63] मिश्र कामेश्वर नाथ, काशी की संगीत परंपरा पृष्ठ संख्या 65

प्राचीन काल से वर्तमान काल तक काशी में चारों पट की गायकी की प्रधानता रही है। ठुमरी जैसी गायन शैलीगो शास्त्रीयता का स्पर्श बनारस जाकर ही प्राप्त हुआ। विद्वानों के माता अनुसार बनारस में दो प्रकार के ठुमरियां प्रचलित है- एक मध्यलय या द्रुतलय तथा दूसरी विलंबित लय की जो कि दीपंचदी ताल में होती है।

संगीत, साहित्य तथा कला बनारस का प्राण तत्व है।[64] यहां उत्तर वाहिनी गंगा की आरती के साथ ही संगीत का प्रारंभ होता है, और सूर्यास्त के साथ संध्या आरती मे भी संगीत समाहित होता है। कलाकारों के अनुसार कि यहां विद्वानों का दिन सुबह गंगा स्नान के पश्चात बाबा विश्वनाथ के दरबार मे संगीत हाजिरी लगाने के बाद आरंभ होता है। बनारस के वातावरण में में संगीत समाहित है, सामान्य जनमानस के भी पारिवारिक ,सामाजिक, मांगलिक एवं धार्मिक अवसरों पर संगीत-नृत्य का प्रयोग अवश्य किया जाता है। सांगीतिक प्रदर्शनों मे राम-कृष्ण के लीला पदों का भक्ति पूर्ण प्रदर्शन प्रमुखतम है। समय-समय पर यहां के विभिन्न मंदिरों, देवालयों एवं सांस्कृतिक स्थानो मे

आयोजित झूलन उत्सव, जन्मोत्सव ,वार्षिक एवं विशेष श्रंगार आदि अवसरों पर नृत्य -संगीत का रसास्वादन सामान्य जनमानस को भी सहज प्राप्त होता है।

बनारस घराने की अवधारणा

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में घराना शब्द का उद्भव हिंदी के घर शब्द तथा संस्कृत के गृह के भाववाचक से हुआ है। जिसका संबंध पूर्वजों तथा पीढीयो से चली आ रही वंश परंपरा से है।[65] घराना शब्द का शाब्दिक अर्थ कुटुंब, वंश परंपरा परिवार अथवा वर्ग आदि है। दूसरे शब्दों में ऐसा कहना उचित होगा कि घराने दार शिक्षा वह परंपरा है जो पुत्रों अथवा शिष्यों के द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ती रहती है। घरानो

[64] मिश्र कामेश्वर नाथ, काशी की संगीत परंपरा पृष्ठ संख्या 65
[65] पर्वतकर, डॉ वनमाला संगीतमय बनारस पृष्ठ 26

की अपनी रीति, रिवाज, पद्धति जो भी विशेषताएं हैं परिवार के सदस्यों अथवा शिष्यों को परिश्रम द्वारा प्राप्त करनी होती है। संगीत ,कला एवं साहित्य की अनुपम नगरी काशी ने संगीत के क्षेत्र में गायन ,वादन एवं नर्तन मे, तीनों ही शैलियों को आत्मसात किया है। इसी कारण संगीत कला के उच्चतम कला साधकों की श्रृंखलाबद्ध परंपरा ,काशी की महत्ता सदियों से राष्ट्र गौरव का प्रतीक है। गायन वादन तथा नर्तन की विविध शैलियों के प्रणेता विद्वानों तथा कलाविद के रूप में काशी की सम्मानित विभूतियों ने संगीत जगत मे अपने लोकप्रियता से अनेक कीर्तिमान स्थापित कर इस नगरी को गौरवान्वित किया है। इस नगरी में भारत के अन्य प्रदेशों से आए विभिन्न शैलियों के संगीत विद्वानों ने भी अपनी मनमोहक गोपनीय संगीत लहरी को काशी के कलाकारों के मध्य सहज भाव में खोल दिया जिसके फलस्वरूप शास्त्रीय संगीत की मर्यादित परिधि में प्रतिस्थापित करने का एकमात्र से बनारस घराने के कलाकारों को ही प्रदान किया जा सकता है। रस सिद्ध कलाकारों के अतिरिक्त सुयोग्य शिक्षक, शास्त्र पारंगत, सफल मान्य संगीतज्ञ, साहित्य के ज्ञाता, अनूठी बंदिशों के भिन्न-भिन्न रागों तथा तालों में गाई जाने वाली रचनाओं की लंबी सूची काशी की ही देन है।

काशी के संगीतज्ञ को चौमुखी गायक कहा गया है, यहां के कलाकारों से शास्त्रीय शैलियों को समान नियमबद्ध शास्त्रीयता के आधार पर सुना जा सकता है। जैसे ध्रुपद, धमार, ख्याल, तराना ,टप्पा ,ठुमरी तथा उपशास्त्रीय गायन जो कि बनारस घराने के गायको में एक विशिष्टता को दर्शाता है। काशी की अनूठी एवं मनमोहन संगीत परंपरा के असंख्य मूर्धन्य कलाविदों तथा विश्व प्रसिद्ध कलाकारों ने पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही गुरु शिष्य परंपरा की श्रृंखला ने राष्ट्र समाज तथा संगीत के क्षेत्र को अनगिनत हस्ताक्षर दिए हैं, जिससे काशी नगरी की परंपरा गौरवान्वित है।

बनारस घराने के अंतर्गत विभिन्न घराने

16वीं 17वीं शताब्दी से लेकर आज से 40-50 वर्ष पूर्व तक बनारस के संगीतज्ञो के व्यक्तित्व का जो परिचय प्रस्तुत हुआ है वह बनारस के सभी संगीत विधाओं के गुनी जनों मे समान रूप से बना रहा है।[66] यह परंपरा 3 00-400 वर्ष प्राचीन मानी जाती है। इस परंपरा के संवाहक आज भी इस संगीत की यात्रा को आगे बढ़ा रहे हैं। यहां के अनगिनत संगीत साधकों के कई अलग समूह या परंपराएं बनी जो निम्नलिखित हैं -

1. पियरी घराना
2. पंडित शिवप्रयाग जी घराना
3. श्री जगदीप मिश्र
4. श्री जयकरन मिश्र
5. श्री धन्नु जी -सँवरू जी मिश्र
6. श्री बख्तावर मिश्र
7. श्री दरगाही मिश्र
8. श्री मथुरा जी मिश्र
9. तेलिया नाल घराना

उपरोक्त सभी घरानों मे गीत, वाद्य तथा नृत्य तीनों ही विधाओं के साधन रहे हैं।इन्होंने पीढ़ी दर पीढ़ी वंश परंपरा तथा गुरु शिष्य परंपरा से बनारस तथा यहां की प्राचीनतम संगीत परंपरा को सुरक्षित तथा संदर्भित किया है। [67]यहां के कुछ परिवारों की 7 से 10 पीढ़ी तक की वंशावली के प्रमाण प्राप्त होते

[66] जोहरी डॉ रेनू 2004 भारतीय सांगीतिक जगत मे वाराणसी का योगदान

[67] जोहरी डॉ रेनू 2004 भारतीय सांगीतिक जगत मे वाराणसी का योगदान

हैं। जिससे यह सिद्ध होता है कि इनके पूर्वज भी सदियों से संगीत क्षेत्र में कार्यरत रहे होंगे।

बनारस के अंदर स्थापित इन घरानों में सबसे बाद का घराना शिवाला और तेलिया बाग स्थित घराना है। यह घराना मुगल काल के अवसान काल में शहजादों के साथ बनारस आए दरबारी संगीतज्ञ द्वारा निर्मित है जिसे अभी लगभग 150 वर्ष भी नहीं हुए हैं। इन घरानो से बनारस की पहचान तो बनी, किंतु क्रियात्मक पक्ष में गाने बजाने की अलग सी शैली हो गई है। इनमें रागों के विस्तार तथा प्रस्तुतीकरण का ढंग बदला हुआ है, बोल, बनाव, तान, लय आदि का प्रयोग तथा सम पर आने की क्रिया भी कुछ अलग सी है।

स्वर्गीय पंडित दिलाराम मिश्र जी का उल्लेख प्रथम प्रवर्तक पुरुष के रूप में प्राप्त होता है। इनका सांगीतिक काल 16वीं शताब्दी के आसपास का माना जाता है। इनके पूर्वज गोंडा बलरामपुर के मठाधीश एवं सनातन वैष्णव धर्म के प्रचारक माने जाते थे।

1528 - 29 मे मुगल सम्राट बाबर के विजय सेना ने न केवल पंडित दिलाराम मिश्र जी के मठ को ध्वस्त किया ,बल्कि मठाधिपति को भी मृत्यु शैय्या पर सुला दिया। इसके पश्चात शोक से आकुल परिवार के साथ पंडित दिलाराम मिश्र जी ने वृंदावन आकर बसने का फैसला किया। अपने पांचो भाइयों सहित वृंदावन में राधा वल्लभ संप्रदाय के विद्वान संगीतज्ञ श्री 108 हित हरिवंश जी के सानिध्य में 30 से 35 वर्षों तक संगीत की सेवा में संलग्न रहकर छंद प्रबंध, विष्णु पद , ध्रुपद आदि अनेक शैलियों पर एकाधिकार प्राप्त किया और सेवक उपनाम से सैकड़ो ध्रुपदों की रचना की। प्राचीन पुस्तकों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि पंडित दिलाराम मिश्र जी स्वामी हित हरिवंश जी से संगीत दीक्षित थे, किंतु हित हरिवंश जी और पंडित दिलाराम मिश्र जी के जन्म काल में कई मतभेद हैं जिस कारण दोनों को समकालीन ही माना जाता है।

पंडित दिलाराम मिश्र जी की वर्तमान पीढ़ी से किए गए एक साथ साक्षात्कार के अनुसार कि -[68]दोनो के एक ही मठ मे होने के कारण आपस में संगीत का आदान-प्रदान संभव हुआ और स्वामी हित हरिवंश जी की सांगीतिक रचनाओं को पंडित दिलाराम मिश्र जी ने संगीत बद्ध कर प्रसारित किया। पंडित दिलाराम मिश्र जी तथा उनके भ्राता गण संगीत के उत्थान तथा प्रचार प्रसार के लिए कार्यरत थे, तथा प्रथम भ्राता चिंतामणि मिश्र जी ने दिल्ली के दरबार और पंडित दिलाराम मिश्रा जी ने काशी की ओर प्रस्थान किया। पंडित दिलाराम मिश्र से लेकर पंडित ठाकुर मिश्र तक इस घराने में पूर्वजों से प्राप्त छंद, प्रबंध , विष्णुपद , आदि ध्रुपदों गायन शैलियों की परंपरा प्रचलित थी। प्रसिद्ध संगीतज्ञ मनोहर मिश्र जैसे सुयोग्य वंशजों ने इस घराने को होरी, टप्पा, ख्याल आदि गायन शैलियों से भी समृद्धता प्रदान की।

पंडित शिवदयाल मिश्र जी बिहार बेतिया , ध्रुपद घराने के प्रमुख आधार स्तंभ माने जाते हैं जो मूलत बनारस के ही निवासी थे। सन 1790 ईस्वी में नेपाल से बेतिया राज दरबार में कलावंत होकर आए तथा मृत्यु पर्यंत निवास किया। उनकी एकमात्र कन्या के पुत्र मूर्धन्य ध्रुपदाचार्य श्री जयकरन मिश्र भी बेतिया राज दरबार से काशी के कबीर चौरा मोहल्ले मे आकर बसे और मृत्यु पर्यंत यही रहे। श्री शिवदयाल जी के प्रमुख शिष्यों में बेतिया नरेश राजा आनंद किशोर, राजा नवल किशोर ,तीनों पौत्र ,जयकरन मिश्र, गुरु प्रसाद मिश्र, शिव नारायण मिश्र, बख्तावर मिश्र, सदाशिव और विश्वनाथ राव भट्ट आदि थे। आपकी परंपरा में दामाद पंडित बड़े रामदास मिश्र (1877-1960) शिष्यों में सबसे अधिक प्रसिद्ध ध्रुपद गायक वेणी माधव भट्ट, श्री भोलानाथ भट्ट आदि ने अखिल भारतीय स्तर तक प्रसिद्ध पाई।

ध्रुपद गायन शैली की प्राचीन परंपरा में उद्भव, विकास एवं जनमानस मे इस गायकी को उत्तरोत्तर लोकप्रिय बनाने के लिए संगीत जगत ग्वालियर नरेश मानसिंह तोमर,

[68] जोहरी डॉ रेनू 2004 भारतीय सांगीतिक जगत मे वाराणसी का योगदान

रीवा नरेश श्री विश्वनाथ सिंह, दरबारी नरेश रतन सिंह , नरेश श्री नवल किशोर ,जगत किशोर, आनंद किशोर आदि गुणग्राही राजाओं का सदैव ऋणी रहेगा जिन्होंने ध्रुपद गायकी को उचित सम्मान एवं संरक्षण देकर अनेक घरानों को पुष्पित एवं पल्लवित किया जिससे ध्रुपद गायन शैली की परंपरा के विद्वान मूर्धन्य गायको की अटूट श्रृंखला देश को प्राप्त होती रही है।

घरानेदार संगीतज्ञो के अनेक परिवार बनारस के अलावा बेतिया, पटरौना मंझौली तथा दरभंगा की ओर बढ़े और वही बस गए। किंतु काशी के कलाकारों से उनके आत्मीय संबंध आज भी बने हुए हैं, जिससे कला का आदान-प्रदान निरंतर रूप से बना हुआ है।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में[69] बेतिया घराने के उत्कृष्ट ध्रुपद गायकों मे श्री कामता प्रसाद मिश्र ,ज्वाला प्रसाद मिश्र, गुरु प्रसाद मिश्र ने संपूर्ण बंगाल में अपने उत्कृष्ट ध्रुपद गायिकी से अभूतपूर्व ख्याति अर्जित की। जय करण मिश्र, श्री बख्तावर मिश्र,श्री जी ने ध्रुपद गायक में प्रसिद्धि हासिल की और काशी जाकर बस गए। काशी नरेश के आग्रह करने पर श्री बख्तावर मिश्र ने राजाश्रय किया और रामनगर जाकर बस गए। श्री धन्नु जी सँवरू जी कबीर चौरा के समीप अपना आवास बनाकर जीवन व्यतीत करने लगे और आजीवन काशी में ही रहकर संगीत की सेवा में लीन रहे। इनके भाई पंडित छोटे रामदास मिश्रा ने ध्रुपद गायकी की शिक्षा प्राप्त की थी तथा श्री जयकरण मिश्र भी कालांतर में बनारस ही आकर बस गए। इन्होंने अपने दामाद बड़े रामदास जी वेणी भट्ट को एक विलक्षण गायक के रूप में प्रसारित किया। इस प्रकार बेतिया ध्रुपद घराना एवं बनारस की मिश्रित शिष्य परंपरा से तथा उनकी बेजोड़ सांगीतिक प्रतिभा से निरंतर आलोकित होता रहा है।

---

[69] त्रिपाठी, शिवेंद्र प्रताप (डॉ) तबला विशारद पृष्ठ संख्या 8)

ध्रुपद घराने के अवतारक श्री धन्नु जी सँवरू जी मिश्र मूलतः बेतिया बिहार के निवासी थे, अज्ञात कर्म से काशी आए और कबीर चौराहा मोहल्ले के समीप औघर नाथ तकिया(अघोर पंथ का सिद्ध पीठ) के समीप स्थाई रूप से निवास करने लगे। काशी में अपने समय के अद्भुत टप्पा गायक पंडित छोटे रामदास मिश्र को ध्रुपद की शिक्षा- दीक्षा आप जैसे गुणी लोगों से प्राप्त हुई। आप जैसे कलाकारों के निवास करने से काशी का संगीतमय नभ आलोकित रहा। 1835 में काशी नरेश ईश्वर नारायण सिंह के राज्य काल मे विशेष आग्रह पर श्री बख्तावर मिश्र जी दरबारी गायक के रूप में काशी आए जो बेतिया श्री नरेश नवल किशोर, श्री जगत किशोर तथा श्री आनंद किशोर आदि के राजघराने के दरबारी गायक के रूप में पद स्थापित थे। [70]उस काल में रीवा एवं बेतिया दोनों ही ध्रुपद गायन विधा के प्राचीनतम गढ़ के रूप में जाने जाते थे। रीवा नरेश विश्वनाथ सिंह एवं बेतिया नरेश स्वयं ध्रुपद की रचना मे,पूर्ण ध्रुपद गायन शैली के आश्रय प्रदाता एवं पालक थे। श्री बख्तावर मिश्रा भी अपने गायन शैली के पूर्ण संरक्षित गायक होने के साथ-साथ उत्कृष्ट जल तरंग वादक भी थे। अपने समकालीन संगीतज्ञ जफर खान, प्यार खान , बासत खान आदि के बीच बख्तावर मिश्र उत्कृष्ट कला उपासक नाद ब्रह्म के पुजारी, धार्मिक प्रवृत्ति के अभिमान रहित उत्कृष्ट गायक थे।[71]

पंडित शिवदास प्रज्ञा जी ने काशी नरेश ईश्वर नारायण(1835 - 1881)के दरबारी कलाकार उस्ताद मोहम्मद अली (बड़कू मियां) से भी संगीत सीखने का अवसर प्राप्त हुआ यह बात उस समय की है जब दोनों भाई काशी नरेश के दरबारी गायक एवं नजीर थे। गायन के विभिन्न शैलियों के उत्कृष्ट कलाकार होने के साथ ही श्री शिवदास जी बीन ,सितार सरोद और सुरसिंगार वाद्य यंत्रों का सफल वादन करते

[70] जोहरी डॉ रेनू 2004 भारतीय सांगीतिक जगत मे वाराणसी का योगदान
[71] जोहरी डॉ रेनू 2004 भारतीय सांगीतिक जगत मे वाराणसी का योगदान

थे। प्रयाग जी की अनुपम संगीत शिक्षा से सुपुत्र श्री मिठाई लाल मिश्र जी अपने काल के महान गायक हुए। श्री शिवदास जी एवं प्रयाग जी के वंशज एवं शिष्य की अगली पीढी मे गायन ,सारंगी तथा बीन के अनेक उत्कृष्ट संगीतज्ञ हुए जिन्होने इस घराने को ख्याति प्रदान की।

कबीर चौरा मोहल्ले मे ही शिवदास जी एवं प्रयाग जी क् समकालीन, गायन की सभी शैलियों के ज्ञाता, नृत्य कला के अगद विद्वान श्री जगदीप मिश्र हुए जो की उत्तर प्रदेश जिला आजमगढ़ तथा गांव हरिहरपुर के निवासी थे वह बनारस अंग के ठुमरी गायकी के रस सिद्ध गायक थे तथा वर्तमान में सुप्रसिद्ध ठुमरी गायक पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के परदादा थे। बनारस ,नेपाल तथा कोलकाता जैसी रियासतों में रहकर अपनी गायकी की अनूठी छाप छोड़कर जीवन के अंतिम समय तक काशी मे रहकर अपने शिष्य उस्ताद मौजुददीन खान को अपनी अनुपम ठुमरी गायकी के साकार प्रतिबिंब के रूप में प्रस्तुत किया। मोजुद्दीन खान भी अपने गुरु की अलग चीजों का कठिन अभ्यास कर उनके रस सिद्ध ठुमरी गायकी का प्रतिमान बनकर देश के कोने-कोने में जाकर ठुमरी गायकी प्रचार प्रसार किया तथा अपने घराने को प्रतिष्ठित किया।

बनारस की अप्रतिम संगीत वंशावलियों में गायकी, तंत्र वादन ,तबला ,नृत्य आदि अनेक विषयों के मूर्धन्य विद्वान श्री दरगाही मिश्र की गणना उत्कृष्ट कलाकारों में होती थी। इनके पूर्वज श्री रामकृष्ण मिश्र बनारस के तबला घराने के प्रवर्तक पंडित राम सहाय जी के परम शिष्य थे। आप काशी नरेश ईश्वर नारायण के दरबारी कलाकार थे जहां आपके समकालीन श्री राम गोपाल जी ,रामसेवक जी शिवदास ,प्रयाग जी मिश्र,बड़कू मियां आदि दिग्गज कलाकार काशी नरेश के राज दरबार की शोभा को आलोकित कर रहे थे। इन्हें संगीत की शिक्षा दीक्षा महान विद्वान श्री

शिवदास मिश्र जी के द्वारा प्राप्त हुई तथा तबले कि शिक्षा पिता के द्वारा विरासत में मिली।

श्री शिवदास -प्रयाग मिश्र एवं अपने युग के विख्यात' लयभास्कर' विद्वान श्री ननकू लाल मिश्र आपके अत्यंत नजदीकी रिश्तेदार थे जिनके सानिध्य में आपके बीन, सितार , सारंगी आदि कला द्वारा विभूषित हुए और कालांतर में आप इन वाद्यो के भी मान्य विद्वान के रूप में विभूषित हुए काशी के संगीतज्ञ समाज में आपकी गणना एक महान नायक के रूप में की जाती थी।

श्री मथुरा जी मिश्र ने बनारस घराने की गगनचुंबी पताका को और भी उच्च स्तर तक स्थापित किया। [72]आपके पिता का नाम दरगाही मिश्र एवं दादा का नाम श्री पूदन मिश्र एवं तमाखू मिश्र था। सारंगी के कुशल विद्वान श्री पोद्दन मिश्र जी की आकस्मिक मृत्यु से पिता अत्यंत दुखी हुए जिन्हें ढाढस बांधते छोटे भ्राता तमाखू जी ने कठिन संगीत साधना से आपको मूर्धन्य कलाकार बनाने की शपथ ली और कालांतर में सोहनी राग को सिद्ध कर संगीत जगत में अपना बहुमूल्य स्थान प्राप्त किया। ऐसे घराने के वंश परंपरा में जन्मे श्री मथुरा जी मझौली राज दरबार के दरबारी गायक थे। कालांतर में बनारस आकर बसे और यह विजयनगर राज दरबार के दरबारी कलाकार के रूप में नियुक्त हुए। आप ध्रुपद, धमार, ख्याल ,ठुमरी ,टप्पा आदि सभी विधाओं के सिद्ध हस्त कलाकार एवं निष्ठावान हिंदू थे। आपको राज दरबार में महाराज के साथ बराबर का आसान प्राप्त था तथा महाराज आपकी कला का बहुत सम्मान किया करते थे। आपके पुत्र श्री मनमोहन मिश्र कुशल गायक एवं सारंगी वादक थे जो अल्प आयु में ही मृत्यु को प्राप्त हुए थे।[73]

---

[72] काशी की संगीत परंपरा लेखक कामेश्वर नाथ मिश्र पृष्ठ संख्या

[73] काशी की संगीत परंपरा लेखक कामेश्वर नाथ मिश्र पृष्ठ संख्या

श्री मनमोहन के एकमात्र पुत्र श्री राम प्रसाद मिश्र अपने समय के अप्रतिम ख्याति लब्ध टप्पा ,ठुमरी गायक के रूप में प्रख्यात थे। जिन्हें संगीत की प्रारंभिक शिक्षा अपने दादा श्री मथुरा मिश्र से प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। दादा की मृत्यु के पश्चात रामू मिश्र को अपने पिता से सारंगी की भी शिक्षा प्राप्त हुई थी प्रथमत आप सारंगी वादक ही थे किंतु किसी संगीत सभा के कठोर अनुभव से आपने सारंगी का त्याग कर दिया और गायन कला की ओर उन्मुख हुए। अत्यंत मनमोहक लोकप्रिय गायक के रूप में रामू जी ने स्वयं को स्थापित किया तथा ख्यातिलब्ध कलाकार बने और उच्च कलाकारों श्रेणी में आ गए।

1780-1826 के काल में पंडित राम सहाय के द्वारा 200 वर्षों पूर्व बनारस घराने को मुख्य तौर पर तबले के घराने के रूप में स्थापित किया गया तथा इसे पूर्व बाज या बनारस बाज की संज्ञा दी गई। इस घराने में कई सुप्रसिद्ध तबला वादक हुए । बनारस घराने में कई कलावंत हुए यह घराना अपने शास्त्रीय उपशास्त्रीय गायन के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध है। बनारसी ठुमरी, चैती, दादरा आदि उपशास्त्रीय गायन शैली अपने आप में एक अति विशिष्ट स्थान रखती है। घराने के कलावंतों ने अपनी ठुमरी, चैती, कजरी, दादरा आदि के साथ-साथ ख्याल गायकी को उच्च स्तर प्रदान किया है।

यद्यपि इस कला वर्ग के द्वारा संगीत को अपने आजीविका ,भरण पोषण तथा व्यवसाय बना लेने के कारण संगीत कला को कुछ समय तक समाज से परित्यक्त भी होना पड़ा। किंतु इसी वर्ग के प्रयासों द्वारा संगीत कला जीवित भी रह सकी। काशी नरेश उदित नारायण सिंह शासनकाल सन (1796 - 1865) के समय में संगीत सम्राट तानसेन के वंशीय कलावंत उस्ताद जाफर खाँ, उस्ताद प्यार खाँ, को यहां राज्याश्रय मिला। काशी नरेश बलवंत सिंह के समय मे चतुर बिहारी मिश्र, जगराज शुक्ल,कुशल खान जैसे नामचीन कलाकार राजदरबार मे शोभायमान थे।

सन 1770 ईस्वी में महाराज बलवंत सिंह के मृत्यु के पश्चात पुत्र राजा चेत सिंह (1770 -1781)के शासनकाल में दुलारी कजजन ,किशोरी, रुक्मणी, छित्तन बाई के नृत्य संगीत से दरबार सांगीतिक रस से सराबोर था। [74]काशी नरेश उदित नारायण सिंह के बाद की पीढीयो मे ईश्वरीय नारायण सिंह(1835) के समय मे राज दरबार में उस्ताद जाफर खाँ,प्यार खाँ आसिफ खाँ के पुत्र अली मोहम्मद खाँ, उस्ताद बड़कू मियां थे जो अपने समय के सर्वश्रेष्ठ एवं सुप्रसिद्ध कलाकारों में उन्हें शामिल किया जाता था। इन्हें अपने क्षेत्र का विशेष अनुभव प्राप्त था और यह नेपाल राज दरबार से काशी के दरबार में आए थे। प्रसिद्ध ध्रुपद गायक उस्ताद अली बख्श, उस्ताद दौलत खाँ,मंजर खाँ, (सरोद वादक) रसूल बख्श, तसददुक हुसैन खान, बड़कू मियां के छोटे भाई मोहम्मद अली , उस्ताद सादिक अली (बीनकार)निसार अली , रामपुर घराने के वजीर खान ,मिठाई लाल मिश्र ,दरगाही मिश्र शिवदास प्रयाग मिश्र , राम गोपाल जी , रामसेवक मिश्र आदि बहुत ही प्रसिद्ध कलावंत सांगीतिक विद्वान समय अनुसार काशी के दरबार के अनमोल रतन में शामिल रहे।[75]

सन 1845 के आसपास श्री ठाकुर प्रसाद मिश्र जी जैसे एक और प्रसिद्धी पूर्ण विभूति का इस घराने में जन्म हुआ। इनकी सांगीतिक शिक्षा ख्याति लब्ध संगीतज्ञ ,विद्वान प्रसिद्धू मिश्र जी के बड़े पुत्र श्री शिव सहाय मिश्र जी के कुशल मार्गदर्शन में संपूर्ण हुई तथा उनकी ही निपुणता उनमें प्रदर्शित थी।

गायन में टप्पा गायन शैली के विलक्षण विद्वान ठाकुर दयाल मिश्र वीणा एवं सारंगी के भी ख्याति प्राप्त विद्वान एवं सिद्ध हस्त कलाकार थे। आपने गायन के क्षेत्र में

---

[74] काशी की संगीत परंपरा लेखक कामेश्वर नाथ मिश्र पृष्ठ संख्या

[75] काशी की संगीत परंपरा लेखक कामेश्वर नाथ मिश्र पृष्ठ संख्या

अपने नाती पंडित छोटे रामदास मिश्र ,हुस्नाबाई ,सारंगी में बैजनाथ प्रसाद मिश्र जैसे सरीखे शिष्यों को अपना कर सुयोग्य कलाकार के रूप में प्रतिष्ठित किया। आपके घराने की संगीत परंपरा के सुयोग्य अधिकारी श्री छोटे रामदास मिश्र की विलक्षण ख्याल एवं टप्पा गायकी ने संगीत जगत में विशेष स्थान प्राप्त किया और उन्होंने अनेक शिष्यों को मार्गदर्शन प्रदान किया । उन्होंने काशी नरेश के पारिवारिक राज्य वैद्य के योग्य कुटुंब श्री शिव कुमार शास्त्री को गायन एवं सितार की शिक्षा प्रदान की और उनके पास आज भी ठाकुर प्रसाद मिश्रा के घराने की अमूल्य धरोहर सुरक्षित है।

उपयुक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि [76]बनारस केवल घराने तक ही सीमित नहीं है। इस नगर की सांस्कृतिक विरासत तथा कलात्मक स्वरूप ने देश भर के सभी कलाकारों को युगों -युगों से अपनी ओर आकर्षित किया है। अधिक से अधिक संख्या में संगीतकार तथा तथा गायको ने बनारस मे बसने को अपना सौभाग्य माना है। इसलिए बनारस सभी शैलियो के कलाकारों का गढ़ माना जाता है। बनारस घराना केवल ख्याल गायकी का घराना नहीं कहलाता अपितु इसका संबंध अन्य सांगीतिक शैलियों अथवा घरानो भी रहा है। पारिभाषिक तौर पर संगीत तभी परिपूर्ण होता है जब उसमें गायन, वादन तथा नृत्य जैसी त्रि विधाएं सम्मिलित होती हैं। भारतवर्ष के सांगीतिक घरानो मे बनारस घराना ही एकमात्र ऐसा घराना है जहां संगीत की परिभाषा पूर्ण रूप से प्रकट होती है। इस

घराने मे गायन वादन तथा नृत्य तीनों कलाओं का पूर्ण रूप से समावेश होता है तथा इन तीन विधाओं के अनेक अमूल्य रत्न संगीत की धरोहर के रूप मे प्राप्त हुए हैं। यहां शास्त्रीय गायकी के अतिरिक्त जैसे ख्याल ,ठुमरी, टप्पा ,कजरी चैती दादरा, होरी आदि उपशास्त्रीय शैली भी विधिवत रूप से गायी, बजाई तथा सिखाई

[76] काशी की संगीत परंपरा लेखक कामेश्वर नाथ मिश्र पृष्ठ संख्या

जाती है। एक ओर जहां इसकी उपशास्त्रीय गायन शैली विश्व प्रसिद्ध है वहीं दूसरी ओर ख्याल गायकी का भी केंद्र बनकर उभरा है। इन्हीं विशेषताओं के कारण बनारस को हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के एक आधार स्तंभ तथा महत्वपूर्ण घराने के रूप में देखा जाता है। इस घराने की परंपरा ने समय-समय पर संगीत के नभ मे अनेक दीप्तिमान सूर्य आलोकित किए हैं। जिन कलावंतों ने अपना जीवन संगीत को पूर्णत समर्पित किया है तथा विश्व स्तर पर ख्याति अर्जित कर इस घराने का नाम उच्च स्तर पर स्थापित किया है। यह एक समृद्धि शैली से परिपूर्ण घराना होने के साथ इस घराने के कई अन्य उपघराने भी हैं तथा उनसे संबंधित कलाकारों की कलात्मकता से बनारस घराने के गायन शैली मे प्रभावपूर्ण विकास होता रहा है। इन घरानो का समग्र रूप मे बनारस घराना मानना ही उचित प्रतीत होगा।

बनारस घराने के प्रतिष्ठित गायक वादक तथा नर्तक

बनारस घराने की परंपरा को गतिशील व क्रियात्मक बनाए रखने मे सुप्रसिद्ध गायक गायिकाओं का विशेष तौर पर योगदान रहा है। जिन मे कुछ नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है[77]-

पंडित छोटे रामदास मिश्र, श्री राम सेवक मिश्र, श्री राम प्रसाद मिश्र, श्री दाऊजी मिश्र ,श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, श्री महादेव प्रसाद मिश्र, श्री पंडित श्री चंद मिश्र, श्री हरिशंकर मिश्र, श्री दामोदर मिश्र, श्री कमल मिश्र, श्री जालपा प्रसाद मिश्र, श्री गणेश प्रसाद मिश्र, श्री अमरनाथ, पशुपतिनाथ मिश्र,श्री छन्नूलाल मिश्र, श्री रामेश्वर प्रसाद ,मिश्र ,धर्मनाथ मिश्र , पंडित राजन- साजन मिश्र, श्री गोवर्धन मिश्र तथा श्री सत्यनारायण मिश्र।

[77] बनारस की संगीत परंपरा छायानट पृ संख्या 32

बनारस घराने को प्रतिष्ठित करने में गायिकाओ का भी विशेष योगदान रहा है जैसे - विदुषी बड़ी मैना, विदुषी जद्दन बाई, श्रीमती राजेश्वरी बाई विदुषी, विदुषी बड़ी मोती बाई विदुषी,काशीबाई , श्रीमती सिद्धेश्वरी देवी विदुषी,रसूलन बाई,शिवकुवँर बाई, विद्याधरी बाई, हुस्ना,बाई, शाह जहां बेगम, अनवरी बेगम ,कमलेश्वरी ,ताराबाई ,छोटी मोती बाई ,पन्ना, जूही, रत्ना, श्रीमती गिरिजा देवी ,हीरा देवी, निर्मला अरुण ,सविता देवी ,बागेश्वरी ,कौमुदी मुंशी, श्रीमती मंजू सुंदरम, पूर्णिमा चौधरी, सुचारिता गुप्ता, मालिनी अवस्थी।

वादन के क्षेत्र मे भी यहाँ कलाकार ने विशेष ख्याति अर्जित की जैसे-

पंडित किशन महाराज, पंडित सामता प्रसाद, लच्छू महाराज, (तबला) उस्ताद बिस्मिल्लाह खान (शहनाई) पंडित रवि शंकर (सितार)आदि महान हस्तियों ने बनारस को विशेष सम्मान दिलाया। इसी क्रम में बनारस का कथक घराना भी विशेष रूप से मान्य है। इस घराने के कलाकारों में जानकी प्रसाद, सितारा देवी तारा देवी, अलका देवी जैसी ख्यातिलब्ध कलाकार जो आज भी नृत्य के क्षेत्र में आधार स्तंभ माने जाते हैं।[78]

संगीत सम्मेलन एवं संगीत उत्सव बनारस के कण-कण में कला तथा संस्कृति विद्यमान है। ललित कलाओं से परिचित इस नगर में संगीत प्राण तत्व है। इसलिए वाराणसी के हृदय को आह्लादित रखने में यहां के संगीत उत्सव एवं संगीत सम्मेलनों का महत्वपूर्ण योगदान है, यह संगीत सम्मेलन संगीतज्ञों को ऊर्जावान तथा कला से परिपूर्ण एवं श्रोताओं को आनंदित करते हैं।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर 20वीं शताब्दी के पूर्वर्तक संगीत सम्मेलन आदि का विशेष प्रचलन नहीं था। सामाजिक रीति रिवाज अथवा संस्कारों के अवसर पर परिवार संबंधियों के बीच में सांगीतिक संगोष्ठीयां होती थी, ऐसे छोटी गोष्ठियों अथवा

[78] बनारस की संगीत परंपरा छायानट पृ संख्या 32

अवसरों में कलाकारों को मार्गदर्शन तथा प्रोत्साहन प्राप्त होता था। इसके अतिरिक्त प्रत्येक शुक्रवार को जुमांगी नाम से साप्ताहिक संगति संगोष्ठी आयोजित होती थी, जिसमें स्थानीय तथा बाहर के कलाकारों को भी शामिल किया जाता था।[79]20 में शताब्दी के पूर्वार्ध के कुछ समय पश्चात बदलते सामाजिक राजनीतिक परिवेश के कारण सांगीतिक सम्मेलनों का आरंभ हुआ।

सन 1919 में बनारस में सम्मेलन हुआ तथा सन 1925 में संत बाबू ने संगीत सम्मेलन का आयोजन करवाया जिसमें उस्ताद फैयाज खान साहब ने गायन प्रस्तुत किया,तथा सन 1932 में कॉन्फ्रेंस हुई ,पंडित ओंकार ठाकुर ने सन 1951 में बहुत बड़े सम्मेलन का आयोजन किया तथा 1962 में आकाशवाणी की स्थापना के पश्चात इस क्षेत्र में सांगीतिक सम्मेलनों का क्रमबद्ध आयोजन प्रारंभ हुआ जो अब हर वर्ष होता है।

भारतीय संस्कृति में संगीत के माध्यम से भी श्रद्धा सुमन अर्पित करने की प्रथा प्रचलित है, चाहे वह हरिदास जयंती हो या तानसेन जयंती, भातखंडे,विष्णु दिगंबर अथवा अन्य किसी महान शास्त्रकारअथवा संगीतकार के स्मृति में सांगीतिक संगोष्ठियां आयोजित होती हैं इसी प्रक्रिया में बनारस की सांगीतिक परंपरा अपनी विशेषता के अनुसार सालो भर संगीत के संगोष्ठियां आयोजित की जाती हैं। कीनाराम की समाधि, दशाश्वमेध घाट स्थित काली मंदिर के निकट गायघाट के स्थित नागा बाबा के मंदिर में संगीत की महफिल होती है अथवा बागेश्वरी मंदिर में चैत्र मास में शीतला देवी के मंदिर में ,कार्तिक मास में पंच गंगा घाट के निकट, वैशाख में शुक्ल सप्तमी के घाटों पर गोपाष्टमी के अवसर पर, तथा विश्वेश्वर मंदिर तथा अन्य मेलों में आयोजित सांगीतिक संगोष्ठियों के अतिरिक्त पूरे श्रावण मास

[79] बनारस की संगीत परंपरा छायानट पृ संख्या 32

विभिन्न मंदिरों में विशेष श्रृंगार तथा उसके साथ संगीत के महफिल सजती है एवं नवरात्रि में माता के साथ श्रृंगार के साथ-साथ जागरण आदि कार्यक्रमों में कलाकार स्वेच्छा से आते हैं तथा जनता को निःशुल्क उच्च कोटि का संगीत सुनने का अवसर प्रदान करते हैं।

बनारस में आयोजित होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम

बुढ़वा मंगल

यह काशी का प्रसिद्ध संगीत उत्सव है तथा [80]यह आयोजन गंगा नदी के घाट पर आयोजित होता है या एक प्राचीन परंपरा है जिसे होली के बाद मनाया जाता है ,तथा यह कार्यक्रम समस्त भारत के कोने-कोने से श्रेष्ठतम कलाकारों को आकर्षित करता है। इस कार्यक्रम के द्वारा बनारस घराने का रंग बहुत सुंदर रूप में निखार कर आता है तथा चोटी के अनेक कलाकारों की कला का आनंद प्रसारित होता है तथा रसिक एवं संगीत को पसंद करने वाले लोग इस अनोखी संगीत सम्मेलन की वर्ष भर प्रतीक्षा करते है। यह कार्यक्रम तीन भागों में विभाजित होता है - पहले दिन मंगल दूसरे दिन दंगल तथा तीसरे दिन झिलंग।

इस कार्यक्रम में अनेक प्रकार के झूमर कई प्रकार के शास्त्रीय राग तथा उपशास्त्रीय संगीत के अंतर्गत होरी, चैती, कजरी आदि अनेक मनभावन गायन शैली सुनने को प्राप्त होती है।

गुलाब बाड़ी

यह बनारस का दूसरा संगीत उत्सव है इसे चैती संगीत समारोह भी कहा जाता है। चित्रा नक्षत्र में सूर्यास्त जब क्षितिज पर उगता है, चैत्र मास का आरंभ सुंदर चैती

[80] Varanasi | UNESCO Cities of Music UNESCO Cities of Music https://share.google/x1LqZBaKw8c8h2oAi

गायन तथा नीम के हल्के पीले कसैले फूलों के साथ गुलाबी संध्या में काफी वर्षों से बनारसी संगीत प्रेमी गुलाब बाड़ी चैती गायन के रूप में आयोजित करते हैं।
इस उत्सव में श्वेत वस्त्रों की प्रधानता होती है तथा हफ्ते भर तक गुलाब की सुगंध आती रहती है। रामनगर न्यास द्वारा संचालित तुलसी घाट पर ध्रुपद मेला शिवरात्रि के एक दिन पूर्व शुरू होता है तथा एक दिन बाद तक चलता है।[81]

गंगा महोत्सव

यह आयोजन भी एक महत्वपूर्ण आयोजन है, यह एक वार्षिक पांच दिवसीय उत्सव है जो गंगा नदी के महत्व तथा सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करता है। इस संगीत उत्सव में उच्च कोटि के कलाकार अपनी कला प्रदर्शित करते हैं। कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर तथा संगीत उत्सव दशहरा पर पर रामनगर के रामलीला दर्शनीय होती है।

संकट मोचन संगीत उत्सव

वाराणसी के समस्त सांस्कृतिक कार्यक्रमों में वर्तमान में सर्वाधिक प्रचलित तथा सफल संगीत उत्सव संकट मोचन मंदिर में हनुमत जयंती महोत्सव है। यह संगीत उत्सव संगीतज्ञों के लिए विशेष प्रभाव रखता है,इस उत्सव में कलाकार बिना किसी पारिश्रमिक के भी प्रदर्शन करना अपना सौभाग्य समझते हैं।

बनारस की शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय गायन परंपरा- विशेषताएं एवं विलक्षणताएं -संगीत कला के दो महत्वपूर्ण बिंदु हैं - स्वर तथा लय । इन्हीं दो

[81] Varanasi | UNESCO Cities of Music UNESCO Cities of Music https://share.google/x1LqZBaKw8c8h2oAi

महत्वपूर्ण स्तंभों से ही संगीत रूपी महल स्थापित है। [82]सूक्ष्म दृष्टिपात करने पर यह तथ्य ज्ञात होता है कि स्वर एवं लय इन्हीं दो माध्यमों के बीच भिन्न-भिन्न शैली से एक विभाजन रेखा को खींचकर हर घरानों ने अपनी मौलिकता एवं स्वतंत्र अस्तित्व को अक्षुण बनाए रखा है। किसी घराने ने स्वर को प्राथमिकता दी, तो किसी घराने ने लय को मौलिक रूप माना। किसी घराने ने स्वर तथा लय दोनों को ही समान सम्मान दिया ,तो किसी घराने ने लय की प्रधानता के साथ स्वर को विशेषता प्रदान की। मूलतः सारांश यह है कि कंठ संगीत के शारीरिक अंग- उपांगों के रूप में आलाप स्वर संयोजन, मींड, गमक, मुर्की खनक ,सूत, खटका सरगम एवं बंदिशों के प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण मे सूक्ष्मता, तानों के विभिन्न प्रकारों पर अधिकार बंदिश के बोलो मुखड़े के साथ नवीन ढंग से संपर्क आने का नवीन प्रयोग इत्यादि विभिन्न अवयवों पर प्रवीणता अपना कर प्रत्येक घराने ने अपने तरीके को दूसरे घराने से अलग रूप प्रदान किया है जो विभिन्न नाम तथा शैलियों के रूप में जाना जाता है। उपयुक्त सभी प्रमुख घरानों मे मात्र" बनारस घराना" ही अपवाद स्वरूप है जिसमें छंद, प्रबंध, विष्णुपद, ध्रुपद, धमार, होरी को प्राचीन अवयवों के साथ ,तथा बाद मे विकसित ख्याल टप्पा,ठुमरी, तराना, दादरा,गजल, भजन ,कजरी ,चैती तक की लोकप्रिय गायकी को साधिकार गाने में विशेषता तथा विशिष्टता प्राप्त की है और इन गायकी के अंगों को अपने घराने मे आत्मसात किया है। यही नहीं लोक संगीत के मिठास में डूबी रचना, कजरी बारहमासा ,बधाई आदि लोकरंजन शैली को शास्त्रीय संगीत की परिधि में प्रतिष्ठित कर लोकप्रिय करने का कीर्तिमान बनाया है।

---

[82] डॉ प्रेम नारायण सिंह बनारस अंग की अति महत्वपूर्ण तथा लोकप्रिय गायन शैली ठुमरी चैती एवं होरी पर विश्लेषणात्मक अध्ययन एवं संचयन पृष्ठ संख्या 44 47 48

बनारस के घरानेदार संगीतज्ञों ने एक ओर जहां ख्याल, ध्रुपद, धमार आदि शास्त्रीय अंग की गायकी को सिद्ध किया वहीं ठुमरी, दादरा, चैती, टप्पा आदि उपशास्त्रीय शैलियों को भी रस सिद्ध किया है। यही कारण है कि यहां के कलाकारों को चारों पट की गायकी मे निपुण माना जाता है।[83]

यहां की गायकी में शब्दों को स्वर ताल के साथ बांधना, मींड,कण, गमक ,मुर्की आदि का संतुलित प्रयोग प्रदर्शन अलौकिक आनंद की अनुभूति कराती है। गायन प्रस्तुतीकरण के समय सौंदर्य पक्ष को समझते हुए रचना को स्थापित करने का अद्भुत कलात्मक प्रदर्शन देखने को मिलता है, यह बातें बनारस घराने के किसी भी शास्त्रीय, उपशास्त्रीय गायक को सुनने से स्पष्ट हो जाती हैं। सम प्राकृतिक रागों में आविर्भाव -तिरोभाव जैसी प्रक्रिया का प्रयोग कर राग स्वरूप स्पष्ट करते हुए प्रस्तुतीकरण करना बनारस घराने के कलाकारों के विविधता एवं संस्कारित शिक्षण का प्रमाण है।

स्वरों के प्रभावशाली प्रयोग द्वारा भाव अभिव्यक्ति इस घराने की गायकी को और भी अधिक हृदय स्पर्शी बना देता है। स्वर समुदाय की खंड मेरू अलंकार का प्रयोग, जाति के 10 लक्षणों के आधार पर तथा गमक की आवाज के साथ तानों आदि का प्रयोग विविधता को बखूबी निखारती है, जो श्रोताओं पर अमिट छाप छोड़ती है।

यही खूबियां तथा विशेषताएं इस घराने की विलक्षणता का परिचायक है यहां पर संपूर्ण प्रस्तुति को किसी अनुष्ठान के समान पूर्ण किया जाता है, जो इस घराने को विशेष स्तर प्रदान करती है। शायद इन्हीं विशेषताओं के कारण ही बनारस की

[83] Varanasi | UNESCO Cities of Music UNESCO Cities of Music https://share.google/x1LqZBaKw8c8h2oAi

गायकी में वह रस तथा नवीनता विद्यमान है तथा आने वाले समय मे भी बनारस की गायकी विकास की ओर अग्रसर है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि कला, धर्म, संस्कृति, साहित्य एवं संगीत इत्यादि सभी क्षेत्रों की साधना स्थली के रूप में काशी का विशेष योगदान सर्वविदित है। बनारस के कला मर्मज्ञों, नरेशों, रईसों तथा आम नागरिकों के सहयोग से संगीत साधकों ने अपनी सांगीतिक मौलिकता को अक्षुण्ण बनाए रखा है। दशकों पूर्व की भारतीय संगीत परंपरा के तीनों घटक_ गायन ,वादन एवं नृत्य की विभिन्न विधाऐं बनारस घराने के ख्याति लब्ध कलाकारों की कला को मौलिकता व आत्मीयता प्रदान करती है। कला जगत के महान कलाकारों की श्रेणी में बनारस क्षेत्र से संबंधित विश्व विख्यात संगीतज्ञ अपनी कला साधना व कृतित्व के माध्यम से एक हस्ताक्षर के रूप मे अपने जीवन काल मे ही संगीत समाज के लिए एक गौरव गाथा बन चुके हैं अथवा गौरव गान का पर्याय बन चुके हैं। इन संगीत साधकों की वंश परंपरा ने वाराणसी की प्राचीन कालीन सभ्यता एवं प्रतिष्ठा में निरंतर वृद्धि करने मे अपनी सशक्त भूमिका निभाई है। बनारस घराने के शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय गायन परंपरा के उन्नतशीलता में स्व. बड़े रामदास जी , अमरनाथ पशुपतिनाथ, पंडित राजन साजन मिश्र एवं पंडित छन्नू लाल मिश्र का योगदान प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है। अपने निरंतर साधना के माध्यम से जहां उन्होंने काशी की शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की श्री वृद्धि मे अपना अनुपम योगदान दिया वहीं बनारस के उपशास्त्रीय गायन परंपरा के वर्चस्व को भी विश्व स्तर तक गौरवान्वित किया है।

1.3 किराना घराना: ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

यह सर्वविदित कि[84] भारतीय शास्त्रीय संगीत अत्यंत प्राचीनतम संगीत है जिसने अपने अंदर पौराणिक संस्कृतियों तथा वेद पुराण की गाथाओं को समाहित किया हुआ है। यह प्राचीनतम संगीत अनेक आयामों से गुजरकर साहित्य एवं कला के उद्गम के विकास के कई द्वार खोलती है।यह प्रक्रिया कुछ दिनों या एक व्यक्ति के द्वारा संभव नहीं है,आज जो संभव रूप प्रत्यक्ष है यह कई सदियों तथा अनेक विद्वानों के योगदानों का फल है।

संगीत मानव समाज के कलात्मक उपलब्धियां और संगति सांस्कृतिक परंपराओं का मूर्तिमान प्रतीक है।यह जनजीवन के आत्मिक उल्लास और सुखानुभूतियों के ललित अभिव्यक्ति का माध्यमिक मध्य रहा है ,शास्त्रीय स्थापना के अनुसार

[85]"गीतम वाद्यम तथा नृत्ययम त्रयं संगीत मुच्यते"

अर्थात गायन वादन तथा नर्तन त्रिवेणी संगम ही संगीत है। संगीत के इस त्रिवेणी संगम का विस्तार असीम तथा अविनश्वर है। मानव मात्र में ही नहीं, प्रत्युत समूची सृष्टि तथा प्रकृति के कण-कण में संगीत सरिता का कर्णप्रिय कल -कल निनाद व्याप्त है।

ओमकार स्वरूप सार्वभौम सत्ता को ही "नाद ब्रह्म" की संज्ञा प्रदान की गई है। विश्व की विभिन्न मानव जातियां का अनेक धर्म विविधताओं की पूजा अर्चना और भक्ति साधना का माध्यम गायन तथा संकीर्तन ही रहा है। संगीत की यह भावनात्मक एकता एक सार्वभौमिक सर्वकालिक आत्म्यता तथा बंधुत्व का प्रतीक

---

[84] जोगिंदर सिंह बावरा, भारतीय संगीत के नए आयाम पृष्ठ संख्या 1

[85] प्रो.हरिश्चंद्र श्रीवास्तव संगीत निबंध संग्रह पृष्ठ संख्या 94

है। संगीत एक ऐसा विश्व व्याप्त स्नेह सूत्र है जो हर समय विश्व की प्राकृतिक विधि तथा मानवीय संगति का एक मधुरतम तथा मौलिक एकता की अनुभूति से आबद्ध करता है। हमारे पूर्वजों ने शांत तथा निर्जन वनों में बैठकर अपने मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास के लिए अनेक विधाओं का अनुसंधान किया। अथक परिश्रम तथा गहन मनन -चिंतन के पश्चात उन्होंने यह निश्चित किया कि भौतिक शक्तियों से आध्यात्मिक शक्ति अधिक श्रेष्ठ है, और इसी से मनुष्य मात्र का कल्याण हो सकता है, मोक्ष पाने का माध्यम योग, तप, यज्ञ ,व्रत ही है, यही उन मनीषियों तपस्या का मूल मंत्र था ,तथा उन्होंने एक-एक मंत्र बनाकर संगीत का एक-एक छंद बनाया –

"देवताधीनम जगत सर्वं मंत्राधिनाश्च देवताः"

अर्थात संपूर्ण जगत देवताओं के और देवता मंत्रों के अधीन हैं, तथा मनीषियों ने ऐसे मंत्रों को शाश्वत रूप प्रदान करने के लिए ही संगीत का आधार लिया।
विश्व के कण-कण में संगीत परमात्मा के अंश के समान व्याप्त है।कहीं अव्यक्त मौन तथा कहीं पर मुखर रूप में विद्यमान है। मेघों की मंन्द गंभीर ध्वनि, सागर की उत्ताल तरंगों का गर्जन, निर्झरों का कल कल निनाद तथा वन उपवनों में विहंगों का कलरव यह सब शाश्वत संगीत के प्राकृतिक तथा विविध रूप है।
प्राचीन काल वह काल था जब चलचित्र तथा पुस्तकों आदि अर्वाचीन मनोरंजन के माध्यमों का प्रभाव था, फल स्वरुप संगीत ही मनोविनोद का श्रेष्ठतम साधन था।
संगीत कि इस महान उपलब्धि का मूलाधार प्रकृति तथा संगीत के पारस्परिक रागात्मक संबंधों को मुखरित और आप्लावित करने की साधना थी। पारस्परिक

रागात्मक संबंधों को जाग्रत कर मनुष्य तथा प्रकृति को प्रभावित, परिष्कृत तथा उर्वर बनाया जा सकता है।[86]

संगीत के महत्वपूर्ण स्वीकार करते हुए श्री उपेंद्र चंद्र सिंह ने अपनी कृति"What is Music मे लिखा है--

"The summarise what is music, one can safely say it is a kind of Yogesh system through the medium of sonorous sound which act upon the human organism and awaken and develop their proper function to the extent of self realisation-the ultimate goal of Hindu Philosophy or religion"

यह कथन सिद्ध करता है कि संगीत एक योग विद्या है जिसकी तीव्रतर ध्वनियां मनुष्य के सूक्ष्म स्नायु को झंकरित करे तो सुषुप्त कुंडलियों को जागृत कर देती है तथा मानवता को आत्मोन्नति की चरम सीमा एवं मोक्ष द्वार तक पहुंचा देती है, जो भारतीय जीवन दर्शन का अंतिम लक्ष्य है। संगीत द्वारा मानव उच्च प्रेरणायें ग्रहण करता है। मध्यकालीन दरबारी गायको ने अपने साथ ही अपने आश्रय दाताओं का नाम उज्जवल तथा अमर बनाया, कहते हैं कि बादशाह अकबर के प्रसिद्ध संगीतकार के तानसेन के गायन से वाद्य यंत्र स्वतः बज उठते थे, बुझे हुए दीपक जल उठते थे,तथा आकाश में श्यामल घटाएं घिर आती थी। यह एक संगीत का ही प्रभाव था कि बैजू बावरा ने अपने मधुर आकर्षक गायन द्वारा हाथी जैसे पशु को वश में कर लिया वही पशु जो अन्य के लिए प्राण घाती सिद्ध हो रहा था। संगीत मानवता का पाठ पढ़ाता है असभ्य तथा संकीर्ण हृदय को विश्व बंधुत्व का संदेश प्रवाहित करता है ,शास्त्रों में संगीत के विषय में कहा गया है-

---

[86]जोगिंदर सिंह बावरा, भारतीय संगीत के नए आयाम पृष्ठ संख्या 1

"ज्ञानं कोटि गुणं ध्यानं, कोटि गुणं स्त्रोतं ।
स्त्रोत कोटि गुणों जपं, जपं कोटि गुणं ज्ञानं" ।।

ज्ञान स्त्रोत ध्यान तथा जब इन सभी से बढ़कर गायन है, क्योंकि गायन से परे कुछ भी नहीं। संगीत की महत्व को स्वीकार करते हुए महान कवि एवं नाटककार शेक्सपियर ने भी कहा है -

"The man who hath no music in himself or is not moved by the concord of sweet music is fit for treason, stratagems and spoils, let no such man be trusted."

संक्षिप्ततः कहा जा सकता है कि[87] संगीत साहित्य तथा चित्रकला के ही समान सुखद तथा मंगलकारी है तथा प्राणी मात्र के सुख दुख का साथी, जीवन की अमृत वर्षा, मोक्ष प्राप्ति तथा आत्मिक मिलन का मधुर्तम एवं पवित्रम साधन है।

उपरोक्त विवरण से यह पूर्णत स्पष्ट होता है कि संगीत मे अनेक गूढ तथा रहस्यमई शब्दों का प्रयोग कर जन मानस को रोमांचित किया है। नाद, श्रुति ,ग्राम, मूर्छना शब्द जो सामान्य जनमानस के समझ के परे है।

भारतीय संगीत शिक्षण पद्धति में घरानों की अवधारणा

कठिन शब्दों को शास्त्रीय तथा क्रियात्मक रूप में परिलक्षित करने का कार्य गुरु द्वारा संपन्न किया जाता है। [88]शिक्षा जीवन भर चलने वाली एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है जिसमें, व्यक्ति अपने सार्थक अस्तित्व हेतु निरंतर चलायमान रहता है।

---

[87] संगीत निबंध संग्रह श्री हेमंत कुमार जोशी पृष्ठ संख्या 74

[88] शिक्षा एक विवेचन, चांद किरण सलूजा, पृष्ठ संख्या 34

शिक्षा का सामान्य अर्थ सीखने सिखाने की प्रक्रिया से जुड़ा है, परंतु इस प्रक्रिया का संदर्भ विशेष रूप से व्यापक है, यह एक जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है तथा सीखने वाले में क्षमताएं जैविकीय दृष्टि से प्रारंभ से ही विद्यमान होती है।

शिक्षा की प्रक्रिया का मूल तत्व बुनियादी तौर पर ज्ञान के आदान-प्रदान से ही जुड़ा है। शिक्षा के उद्देश्यों अथवा शैक्षिक वीडियो का मूल्य यही परिभाषित किया गया है कि इनके माध्यमों द्वारा अधिगमकर्ता को ज्ञान से युक्त किया जाए ताकि वह आधारभूत ज्ञान के आधार पर ज्ञान का सर्जक तथा प्रसारक बन सके और विवेकपूर्ण ढंग से अपने ज्ञान का सदुपयोग कर सके।

शिक्षा एक स्वदेशी प्रक्रिया है जिसका लक्षण मानव के समस्त व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास है यह जीवन पर्यंत चलने वाली दीर्घकालीन प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने अस्तित्व के परिमार्जन हेतु चलायमान होता है।

यह प्रक्रिया बहुत ही व्यापक है तथा शिक्षक के माध्यम से छात्र में इस प्रकार परिवेश का निर्माण किया जाता है कि जैविक की है दृष्टि से विद्यमान उसकी प्राकृतिक क्षमताओं को प्राकृत होने की स्थितियां प्राप्त हो सके तथा वह एक विस्तृत रूप ले सके। ज्ञान की प्रति सदैव दो मार्ग द्वारा संभव है-[89] बुद्धि के द्वारा चिंतन के मार्ग से तथा विभिन्न संदर्भों में अनेक प्रकार के अनुभवों के मार्ग से। भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में इन तथ्यों को एक साथ रखने का प्रयास किया गया है।

शिक्षक की तुलना में प्रशिक्षण का क्षेत्र बहुत ही औपचारिक तथा सीमित है, इसके अंतर्गत किसी एक विशिष्ट लक्ष्य को प्रस्तुत रखकर छात्रों को उस क्रिया का जिसमें उसे प्रशिक्षित किया जाना है उसका बारंबार अभ्यास कराया जाता है तथा यही क्रिया उसकी दैनिक प्रक्रिया बन जाती है। भारतीय प्रशिक्षण प्रणाली में "प्रशिक्षण"

[89] शिक्षा एक विवेचन चांद किरण सलूजा पृष्ठ संख्या 34

किसी व्यक्ति को बार-बार अभ्यास के द्वारा विशिष्ट निर्देशों तथा पूर्व निर्धारित एक निश्चित सांचे में डालना होता है।

प्रशिक्षण के लिए कुछ आवश्यक तत्व है जो निम्नलिखित हैं-

1. पूर्व नियोजित लक्ष्य
2. क्रमबद्ध निर्देश
3. प्रशिक्षित एवं अत्यंत कुशल शिक्षक
4. अनुकूल प्रशिक्षण प्रणाली

प्रशिक्षण एक सैद्धांतिक तथा यंत्रवत प्रक्रिया है एक निश्चित समय के पश्चात तथा एक स्तर पर पहुंचने के बाद अभ्यर्थी स्वयं अभ्यास द्वारा कुशलता पाने हेतु अपने प्रशिक्षक से स्वतंत्र हो सकता है।[90]

"मैन पावर सर्विसेज कमिशन यूके ने प्रशिक्षण के विषय में एक विस्तृत परिभाषा द्वारा प्रमाण दिया है- "प्रशिक्षण एक योजनाबद्ध कार्य विधि है, जिसमें प्राप्त अनुभवों के आधार पर कुशलता, मनोवृति, ज्ञान आदि के व्यवहारों में परिवर्तन लाया जा सकता है, ताकि किसी कार्य का अथवा कार्यबद्ध श्रृंखला में प्रभावी ढंग से निष्पादन हो सके"।

यद्यपि अभ्यास पूर्ण प्रणाली प्रशिक्षण को एक मजबूत आधार स्तंभ प्रदान करता है तथा व्यक्ति दिन प्रतिदिन कुशलता की ओर अग्रसर होता है परंतु यह भी पूर्ण रूपेण स्पष्ट है कि व्यक्ति की प्रशिक्षण प्राप्त की एक निश्चित योग्यता, सीमा तथा

[90] भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उसकी वर्तमान स्तर डॉ मधुबाला सक्सेना पृष्ठ संख्या 1

आयु होती है। दूसरे शब्दों में यह वर्णित किया जा सकता है कि प्रशिक्षण तथा भिन्नताओं में बहुत ही प्रगाढ संबंध है। प्रशिक्षण की मूलभूत प्रक्रिया प्रशिक्षक द्वारा निर्धारित होती है परंतु अभ्यर्थी के अनुकरणात्मकता पर भी यह निर्भर करता है जब तक प्रशिक्षार्थी समस्त इंद्रियों का प्रयोग करते हुए निर्दिष्ट कार्य को समाप्त नहीं करता, तब तक वह प्रशिक्षण की प्रक्रिया को आरंभ नहीं कर पाता।

एक प्रशिक्षार्थी की कुशलता का आंकलन केवल अभ्यास द्वारा संभव नहीं है, अपितु उसकी रुचि,क्षमता,अभिवृत्ति, अभिप्रेरणा तथा प्राप्त समय के साथ ही उन उपकरणों पर भी निर्भर करती है जिनकी सहायता द्वारा वह अभ्यास कर रहा है।

भारत की समृद्ध ललित कलाओं में संगीत कला का स्थान प्रथम है। मानव जीवन के आनंदमई क्षण रागों में गूंथे हुए हैं तथा रागों में भरी हुई विभिन्नता कलाकारों के स्वरों में प्राप्त होती है। इन विविधताओं का आंकलन विशिष्ट प्रणालिकाओं द्वारा संभव है, तथा प्रणालिका शिक्षण से संबंधित प्रश्न है, ऐसे शब्दों में हमें गुरु शिष्य परंपरा जैसे शब्दों के दर्शन प्राप्त होते हैं। संगीत जैसी कल की पूर्णता इसी प्रत्यक्ष क्रिया द्वारा संभव है तथा प्रत्यक्ष क्रिया द्वारा प्रदत्त शिक्षा को ही 'तालीम' कहा जाता है, जब उस्ताद अपने शागिर्द को सम्मुख बिठाकर पारंपरिक शिक्षा प्रदान करते हैं, तो यह "सीनाबसीना"तालीम कही जाती है।

संगीत शिक्षा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारतीय संस्कृति में परंपरागत तथा अनवरत धाराओं का दृष्टय रूप प्राप्त होता है। यह निर्मल धारा प्राचीन काल से वर्तमान काल में भी सतत बह रही है भारतीय संगीत का जो अभिजात स्वरूप वर्तमान काल में प्रचलित है वह सहस्त्र वर्षों से चली

आ रही पारंपरिक क्रिया तथा अनुसंधान का परिणाम स्वरुप है।[91] यद्यपि मानव जीवन में संगीत एक नैसर्गिक तथा स्वयंभू कला के रूप में प्रारंभ से ही है। भारतीय साधकों तथा चिंतकों ने अनवरत तपस्या के पश्चात सांगीतिक ध्वनि तथा गति का जो अनुभव प्राप्त किया, उसी के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि भारतीय संगीत कला का विकास तथा उद्गम पूर्णतः चमत्कारिक है, जिसे हमारे आचार्य ने "ओंकार ध्वनि" की संज्ञा प्रदान की है। यह ध्वनि शाश्वत सरकारी तथा सनातन है भारतीय शास्त्र कारों ने इसे उच्च स्तर पर स्थापित किया है तथा भारतीय कलाकारों ने संगीत को केवल धारणा की श्रेणी में नहीं रखा ,अपितु लक्ष्य प्राप्ति के लिए इस साधना के रूप में स्वीकार किया है।

शिक्षा मानव के सम्यक विकास का महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है तथा किसी भी काल में संगीत शिक्षा उसे काल के परिवेश एवं प्रशासनिक व्यवस्थाओं पर निर्भर करती है। शिक्षा मानव के सम्यक विकास का महत्वपूर्ण आधार है, तथा सामान्य शिक्षा मानसिक विकास की दृष्टि से मानसिक एवं आत्मिक शक्तियों के परिष्कार की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण तथ्य है। भारतीय संगीत शिक्षा में सुसंस्कृत समाज को जीवन दर्शन के लक्ष्य की प्राप्ति कला, साहित्य तथा शिक्षा के सम्मिलित रूप द्वारा ही प्राप्त होती रही है।[92] 'विद्यार्जन' संस्कृति तथा समाज का महत्वपूर्ण स्तंभ है, तथा किसी भी विधा में उत्कृष्ट स्थान प्राप्ति के लिए शिक्षा परम आवश्यक तत्व है।

ज्ञान अर्जन विधि 'विद्या' प्रदान करना 'शिक्षा'तथा शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रयुक्त की गई विशिष्ट विधि 'शिक्षण प्रणाली' कहलाती है।

---

[91] भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उसकी वर्तमान स्तर डॉ मधुबाला सक्सेना पृष्ठ संख्या 1

[92]शिक्षा एक विवेचन चांद किरण सलूजा पृष्ठ संख्या 34

किसी भी विद्या को प्रयोग द्वारा अनेक पीढ़ियों तक चलने की प्रथा को परंपरा कहा जाता है। परंपरा ही संगीत का आधार है क्योंकि संगीत का क्रियात्मक पक्ष अन्य पक्ष से अधिक महत्वपूर्ण तथा साक्षी माना जाता है। प्राचीन परंपराओं व शिक्षक प्रणालियों की अनवरत धारा द्वारा ही वर्तमान शिक्षक प्रणाली दृष्टिगत है।

भारत की शिक्षण व्यवस्था प्राचीन काल से हैं गुरु शिष्य पद्धति के रूप में व्यवस्थित थी। प्राचीन काल में विद्या अध्ययन गुरु आश्रम या गुरुकुलो में ही होता था जिसका आधार गुरु शिष्य परंपरा थी तथा यह शिक्षण पद्धति पूर्णरुपेण गुरु शिष्य संबंधों पर केंद्रित थी। गुरुग्राम में तथा गुरु के सम्मुख रहकर शिष्य वर्ग निरंतर साधना तथा ज्ञान प्राप्त करते हुए विषय पर आधिपत्य प्राप्त करते थे। पिता पुत्र संबंध की भांति ही गुरु शिष्य संबंध की मान्यता थी।

भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली भी गुरु शिष्य परंपरा पर ही आधारित रही है।

स्वर्गीय रातजनकर जी के शब्दों में -- "संगीत के प्राचीन साहित्य में संगीत की शिक्षण प्रणाली का कोई उल्लेख नहीं मिलता, किसी भी संस्कृत ग्रंथ में संगीत की कक्षाओं या वर्गों का उल्लेख नहीं है, अधिकांश शिक्षा यदि कोई थी तो वह व्यक्तिगत थी, जिसे "गुरु शिष्य परंपरा"कहा जाता था। संगीत की अध्यापन प्रणाली प्राचीन काल में अनवरत धाराओं में बहते हुए गुरुकुल पद्धति ,प्राचीन संस्थागत शिक्षण पद्धति, (नालंदा,तक्षशिला) आदि मंदिरों धार्मिक परंपराओं द्वारा अनेक काल खंड में विभिन्न संस्कृतियों के प्रभाव से प्रभावित होती रही है।"

भारतीय सांस्कृतिक इतिहास में संगीत कला की परंपरा एवं उसका संवर्धन प्राचीन काल से ही अनवरत है ,संगीत केवल कला के रूप में ही नहीं वरन विद्या के रूप में भी समाज मे प्रतिष्ठित रहा है।

वैदिक काल में संगीत शिक्षण

वैदिक कालीन भारतीय संस्कृति प्राचीनतम अंश के रूप में विद्यमान है। [93]संगीत का प्रचलन मानव की उत्पत्ति के साथ ही जोड़ा जाता है किंतु संगीत का नियमित, सुसंबद्ध एवं संहिताबद्ध रूप वैदिक साहित्य के माध्यम से ही प्राप्त होता है। तत्कालीन संगीत का विशिष्ट रूप चारों वेदों में स्पष्ट रूप से उल्लेखित है, परंतु संगीत का विहंगम आलोकन 'सामवेद' के माध्यम से प्राप्य है। भारतीय वैदिक काल में संगीतिक शिक्षा गुरमुख द्वारा प्रदान की जाती थी गुरुकुल में रहकर शिष्य गुरु मुख से निःश्रित वाणी को नियमित एवं संयमित जीवन व्यतीत करते हुए कठोर अनुशासन द्वारा अनवरत रूप से ग्रहण करता था। संगीत के शिक्षण प्रक्रिया में साम संगीत का शिक्षण देने वाले भावी उद्गाता को सर्वप्रथम आर्चिक ग्रंथों की शिक्षा प्रदान की जाती थी जिससे गान के आधारभूत विचार शिष्य कंठस्थ कर ले,तत्पश्चात ही इनमें यथायोग्य परिवर्तन तथा परिवर्धन कर शिक्षा दी जाती थी। संभवतः इसी पारंपरिक रीति से प्रेरणागत वर्तमान काल का भी संगीत है। सर्वप्रथम शिक्षक ऑन राघव की बंदिश कंठस्थ कराई जाती है जिससे शिष्य के मस्तिष्क में रागों का मूलभूत रूप स्थापित हो सके तत्पश्चात उन गीतों में रागानुकूल रूप भेद, राग विस्तार, लयकारी तथा अनेक परिवर्तन आदि की शिक्षा प्रदान की जाती है।

वैदिक साहित्य के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि जिस प्रकार आज महाविद्यालय विद्यालयों अथवा विश्वविद्यालय में शिक्षक के साथ-साथ संगीत सभाएं, चर्चाएं तथा विचार गोष्ठियां आदि का आयोजन होता है ठीक उसी प्रकार प्राचीन काल में भी शिक्षा के अनेक प्रारूपण के अंतर्गत सम्मेलनों तथा परिषदों का

[93] भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उसकी वर्तमान स्तर डॉ मधुबाला सक्सेना पृष्ठ संख्या 1

आयोजन किया जाता था, जिसमें बड़े-बड़े विद्वान शास्त्रार्थ हेतु आमंत्रित किए जाते थे।

उत्तर वैदिक काल से मध्यकाल तक की संगीत शिक्षण प्रणाली

रामायण काल के पाठ्यक्रम में वेदों तथा षटवेदांगों का अंतरभाव समाहित था, इसके स्पष्ट प्रमाण रामायण में प्राप्त होते हैं। [94]सांगीतिक संदर्भ में मुनि वाल्मीकि द्वारा श्री राम के पुत्र लव कुश को प्रदान किए गए स्वर, ताल, पद मूर्छना प्रमाण आदि की प्रदत्त शिक्षा के उल्लेखों से यह ज्ञात होता है कि उस समय सांगातिक शिक्षण का व्यवस्थित स्वरूप था। सांगीतिक माध्यम से जीविकोपार्जन करना समाज में निषिद्ध था। पौराणिक ग्रंथ आदि के अवलोकन से भी यह ज्ञात होता है कि संगीत का विशेष महत्व था, तथा इसी प्रकार सांगीतिक शिक्षा प्राचीन काल से ही परंपराओं का निर्वहन करते हुए सतत गतिशील रही।

वैदिक काल के पश्चात भी अनेक संप्रदायों ने संगीत का संरक्षण एवं संवर्धन किया, इस अंतराल में कदाचित समय-समय पर संगीत तथा अन्य विषयों के शिक्षा का संस्थागत स्वरूप भी ग्रंथो में दृष्टिगत होता है।

तक्षशिला या नालंदा विश्वविद्यालय जो विश्व के प्राचीनतम विश्वविद्यालय में से एक हैं, 10 वीं शताब्दी में "सालोरागी मंदिर"में संगीत विद्यालय की स्थापना आदि जैसे अनेक तथ्य प्राप्त होते हैं,जिससे संगीत का संस्थानिक प्रारूप सम्मुख होता है। प्राचीन ग्रंथो के अनुसार 'तक्षशिला नालंदा विश्वविद्यालय'से संबंद्ध क्षेत्र संगीत एवं नृत्य जैसी संस्कृति के मुख्य केंद्र थे।

---

[94]भारत में संगीत शिक्षा नंदराम चतुर्वेदी संगीत जून 1962 पृष्ठ संख्या 27

श्री नंदराम चतुर्वेदी के अनुसार [95]" "भरत मुनी से पूर्व 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक शिक्षा गुरु द्वारा प्रत्यक्ष रूप में ही प्रदान की जाती थी, क्योंकि संगीत अन्य वेद शास्त्रों की भांति ही सुनकर ग्रहण की जाने वाली विद्या थी, प्राचीन काल में अध्ययनकर्ता गृहत्यागी,ब्रह्मचारी बालक के रूप में गुरु सम्मुख उपस्थित होता था, वहीं गुरु की सेवा करते हुए सांगीतिक शिक्षा ग्रहण करता था तथा गुरु द्वारा प्रदत्त शिक्षा को कंठस्थ कर लेता था ,उस कल में विद्यार्थी के लिए संयमित एवं अनुशासित जीवन व्यतीत करना अनिवार्य था।

मध्यकाल में संगीत शिक्षण पद्धति

मध्यकाल में यवनों के आक्रमण होने के पश्चात भारतीय संगीत ने राज दरबारों में स्थान प्राप्त किया। राज दरबारों में पहुंचने के कारण संगीत में उसे काल की व्यवस्था का प्रभाव दृष्टिगत होने लगा। [96] दक्षिण भारत में आक्रांताओं का विशेष प्रभाव न होने के कारण वहां की संस्कृति और परिवर्तित रही, वहीं उत्तर भारतीय हिंदुस्तानी संगीत पद्धति पर अनेक प्रकार के परिवर्तन का असर दिखाई देने लगा। इसी काल में उत्तरी संगीत पद्धति तथा दक्षिणी संगीत पद्धति का निर्माण हुआ। हिंदुस्तानी संगीत पद्धति की परंपरा जिन राज दरबारों में आश्रय लेकर पनपी, उसी स्थान से जुड़कर उसका नाम पड़ा तथा उसकी एक विशेष पहचान भी स्थापित हुई।

ग्वालियर,दिल्ली,आगरा, किराना ,पटियाला,आदि यह स्थान आगे चलकर घरानों के नाम से प्रसिद्ध हुए।

---

[95] भारत में संगीत शिक्षा नंदराम चतुर्वेदी संगीत जून 1962 पृष्ठ संख्या 27

[96] बागेश्वरी वॉल्यूम 13 14 पृष्ठ संख्या 8

घराना का तात्पर्य गुरु शिष्य परंपरा से है जिसमें शिष्य गुरु के सम्मुख बैठकर ज्ञान की प्राप्ति करता है। स्वयं की परिष्कृत की गई विशिष्ठाओं के कारण एक शैली का निर्माण होता है जिसे घरानों की संज्ञा दी जाती है। गायन में 'गायकी' तथा वादन में 'बाज'के नाम से यह प्रचलित है।

घरानों में शिक्षण व्यवस्था

सांगीतिक प्राप्त ग्रंथों की जानकारी के अनुसार -[97]किसी घराने के कलाकार अपने स्वयं के अभ्यास तथा चिंतन शक्ति द्वारा सांगीतिक प्राप्त ग्रंथों की जानकारी के अनुसार विशेष शैली का निर्माण करते हैं, तथा उस शैली के वहां संरक्षक, संवर्धक एवं मार्गदर्शक बन जाते हैं। जहां तक संगीत में शिक्षा अथवा तालीम का संबंध है वह अपनी योग्यता तथा शैली के अनुसार उनकी नींव डालते हैं तथा प्रसार प्रसार करते हैं तथा स्वयं के अभ्यास, रचित शैली तथा परंपरा को अपने शिष्य में उतारने का प्रयास करते हैं। शिष्य भी अपनी अपनी कंठ की कुशलता तथा विशेषता के अनुसार उसे शैली को ग्रहण करते हैं, परंतु यह अकाट्य सत्य है कि हर शिष्य अपने गुरु के कंठ के संस्कार उनके कलात्मक चमत्कार तथा उनके गांभीर्य को संपूर्ण आत्मसात करने का सफल प्रयास करते हैं। शिष्य अपने गुरु की सिखाई गई घराने की पद्धति तथा गुरु के द्वारा प्रदत्त तकनीक को अपने व्यक्तित्व में आत्मसात कर अपने गुरु की महत्ता का प्रचार प्रसार करते हैं। शिष्य अपने गुरु द्वारा प्रदत्त हर तकनीक पद्धति तथा शैली को तथा संगीत की आत्मा में स्थान देता है। [98]ऐसे

[97] बागेश्वरी वॉल्यूम 13 14 पृष्ठ संख्या 8

[98] 5 वही पृष्ठ संख्या 34

उत्तम शिष्यों पर ही घराने का संपूर्ण भविष्य लंबित होता है तथा ऐसे शिष्य ही उसे घराने का कारण कर्णधार बनते हैं। प्रत्येक घराने की आवाज लगाने का ढंग, उसका कला चातुर्य उतार -चढ़ाव तथा परिष्कृत शैली का अपना एक स्वयं का स्वरूप होता है।आवाज का फैलाव भी विशेष ढंग का होता है , तथा स्वरों के लगाने का एक विशेष तरीका होता है और यही विभिन्नता उसे घराने को अन्य घरानों से अलग बनाती है। भारतीय संगीत के प्रसिद्ध विद्वान 'वामन हरि देशपांडे' अपनी पुस्तक घरानेदार गायकी में घराने शब्द की व्याख्या करते हुए लिखते हैं कि—
"स्वर मानवीय आवाज एवं अत्यंत आंतरिक गुणधर्म है,उसका संगोपान संवर्धन कर उस पर अलग-अलग अलंकार चढ़ाकर समृद्ध किया गया 'गला' गुरु अपने प्रिय शिष्य के गले में उतारने का प्रयास वर्षों तक करता रहता है,संगीत की भाषा में इसे ही "तालीम"कहा गया है इस प्रक्रिया के द्वारा ही संगीत कला का लेन-देन संभव हो सकता है,इसी कारण स्वर लगाने का तरीका वगायकी के अलग-अलग कायदे शिष्य के गले में सालंकार उतारे जाते हैं इस पद्धति में ही उन कायदों में एक कभी न टूटने वाला सिलसिला बन जाता है, और यही से घरानों का उद्गम होता है"।[99]

किराना घराने का उदय

ख्याल गायन शैली के अंतर्गत जितने भी घराने अस्तित्व में हैं,उनमें किराना घराना का विशेष स्थान है।[100] इस घराने का आरंभ सुप्रसिद्ध बीनकार एवं ध्रुपद गायक "उस्ताद बंदे अली खाँ"द्वारा मानी गई है,परंतु इस घराने की गायकी को सर्वजनप्रिय तथा प्रसिद्ध करने का श्रेय "उस्ताद अब्दुल करीम खाँ तथा "उस्ताद अब्दुल बहीद

[99] वामन हरि देशपांडे घराने दार गायकी मराठी 1985 पृष्ठ संख्या 18

[100] किराना घराने की गायकी एवं बंदिशें का मूल्यांकन धर्मपाल पृष्ठ संख्या 33

खाँ" को दिया जाता है। उस्ताद अब्दुल करीम खाँ 'किराना' नामक स्थान के रहने वाले थे, जो वर्तमान में 'उत्तर प्रदेश के जिला मुजफ्फरनगर'में स्थित है इसी स्थान के कारण इस घराने को 'किराना घराना' कहा जाता है।

उस्ताद बंदे अली खां ग्वालियर घराने के प्रसिद्ध ख्याल गायक उस्ताद हद्दू खान के दामाद थे। किराना घराना की अवधारणा से संबंधित कहानी महत्वपूर्ण तथ्य प्राप्त होते हैं, इस घराने के मूल पुरुष नायक धोंडू व नायक मन्नू थे। वह ग्वालियर के राजा मानसिंह के दरबार में सन 1486 से 1516 तक रहे, यह दोनों ही प्रसिद्ध कलाकार तथा गायक थे। [101]ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर कहा जाता है कि मानसिंह के काल में संभवतः गायको को तीन श्रेणियां में बांटा गया था-

प्रथम श्रेणी में संगीताचार्य या नायक थे। उनकी रंगशाला अनेक गुणी कलाकारों से युक्त थी। राजा मानसिंह की राज्यसभा में नायक- बख्शू, मन्नू (बैजू) मोहम्मद लोहंग थे। अबुल फजल ने मानसिंह के राज दरबार के इन तीन प्रमुख रत्नों को बख्शू, मन्नू, मंझू जैसे नाम दिए थे।

नायक धोंडू के वंश में दो भाई उस्ताद गाजी खाँ तथा गुल्लू खाँ शाहजहां के दरबार में सन 1656 में रहे। उस्ताद गाज़ी खाँ के पुत्र रहीम अली व गुल्लू खाँ के दो पुत्र थे- हुसैन अली (हिंगारंग) और गुलाम मौला खाँ (सबरस)। दोनों ही कलाकार दिल्ली के "बादशाह मोहम्मद अली"के राज दरबार में सन 1748 के समय थे। उस्ताद हुसैन अली "ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती" के भक्त थे, तथा उन्होंने अविवाहित रहने का प्रण लिया था। उस्ताद रहीम अली के दो पुत्र तथा दो पुत्रियां थी प्रथम पुत्र शहाब खाँ तथा द्वितीय पुत्र वाजत अली। शहाब खाँ सन 1808 से 1841 तक बिदर के "राजा चंदूलाल" के दरबार में गायक के रूप में रहे। उस्ताद शहाब खाँ खान को एक पुत्र नन्हे खाँ तथा एक पुत्री थी,नन्हे खा बहुत प्रसिद्ध गायक थे वाजिद अली

---

[101] संगीत उस्ताद अब्दुल करीम खां,डॉ जयंत खोत पृष्ठ संख्या 15

के तीन पुत्र अब्दुल्ला खाँ, शिंदे खाँ और काले खाँ थे, तथा काले खान के तीन पुत्र हुए- अब्दुल करीम खाँ, अब्दुल हक़ और अब्दुल लतीफ़ थे तथा उनकी एक पुत्री थी।

उस्ताद अब्दुल करीम खाँ साहब के चाचा नन्हे खाँ थे, जिनसे खाँ साहब को सांगीतिक शिक्षा प्राप्त हुई। उस्ताद नन्हे खाँ साहब के पुत्री का विवाह छपरौली के "सारंगी नवाज हैदर बख्श" से हुआ था तथा उनके पुत्र "रहीम बक्श" भी बहुत प्रसिद्ध सारंगी वादक थे। हैदर बख्श ने अपने भांजे वाहिद खाँ को सारंगी तथा गायन की शिक्षा प्रदान की थी,हैदर बक्श से थोड़ा सांगीतिक ज्ञान उस्ताद अब्दुल करीम खान साहब को भी प्राप्त हुआ था।

किराना घराना : भौगोलिक स्थिति

पौराणिक ग्रंथों के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि महाभारतकालीन दानवीर 'राजा कर्ण' की नगरी का नाम उनके 'कर्ण' से कैराना पड़ा।[102] कैराना अपभ्रंश होकर 'किराना' नाम से प्रचलित हुआ। वर्तमान समय में किराना घराने का प्रतिनिधित्व कर रहे "उस्ताद मशकूर अली खान" का जन्म स्थान भी किराना ही है।[103] उस्ताद के अनुसार 1965 से 1966 ईस्वी में उसे स्थान के बुजुर्गों ने सोचा कि कैराना के स्थान पर यहां का नाम किराना ही रख दिया जाए, भले ही इस गांव का नाम कैराना है। यह स्थान उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरपुर जिले में स्थित है, कुछ समय पहले यह "शामली"जिले के अंतर्गत आ गया।किराना गांव यमुना नदी के किनारे अवस्थित है, तथा इसके पास के क्षेत्रों में हरियाणा है यहां की भाषा में

---

[102] Kirana gharana Wikipediahttps://share.google/yxRA74Go4uf1yYW4j

[103] उस्ताद मश़कूर अली खान के साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी

पंजाब का भी असर है,क्योंकि हरियाणा पहले पंजाब में ही था, पानीपत भी पंजाब में था पानीपत से 30 किलोमीटर के करीब कैराना है।

ऐतिहासिक परिपेक्ष्य -

नवाब मुकर्रम अली खान बहुत बड़े हकीम तथा दिल्ली के अंदर सलीम की फौज में थे, सलीम ने खुश होकर मुकर्रम अली खाँ की फरमाइश पर उन्हें कैराना स्थान भेंट स्वरूप दिया था। मुकर्रम अली खाँ दिल्ली से अपने साथ बहुत लोगों को लेकर आए जिनमें बहुत से गुणी कलाकार तथा संगीतज्ञ थे, इनमें सुजान खाँ साहब,अहमद खान साहब बरखुरदार खाँ साहब यह सभी कलाकार बीनकार तथा उच्च कोटि के गायक भी थे। कैराना गांव में बहुत से संगीत पहले से ही उपस्थित थे, उन कलाकारों का आपस में परिचय हुआ उस्ताद बंदे अली खाँ, का परिवार उस्ताद अब्दुल करीम खाँ का परिवार भी वहीं के स्थानीय निवासी थे ।

[104] प्रसिद्ध तबला वादक साबिर हुसैन किराना घराने की वंश परंपरा से अपना संबंध जोड़ते हुए कहते हैं कि- मेरी पीढियों का सिलसिला आरंभ होता है "मुशर्रफ़ खान"से।

यह किराना घराने के प्रसिद्ध कलाकार थे, उसके बाद सुजान खाँ भी परंपरा में हुए, तत्पश्चात अहमद खाँ, बरखुरदार खाँ, मुकर्रम अली खाँ, कुतुब अली खाँ उसके बाद नानू खाँ हुए,जिनमें चार बेटे थे - इलाही बख्श खाँ, धूमिल खाँ, खुदा बख्श और अल्हैया खाँ।

नानू खान की पुत्री का विवाह मियां बंदे अली खान साहब के दादा के साथ संपन्न हुआ। गुलाम मौला खान साहब नानू खाँ रिश्तेदार थे, इन्होंने इलाही बख्श तथा धूमिल खाँ को गोद लिया था तथा सांगीतिक प्रशिक्षण प्रदान किया था। इलाही बख्श

[104] प्रसिद्ध तबला वादक साबिर हुसैन द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार

प्रसिद्ध गायक थे तथा धूमिल खान एक उत्कृष्ट सारंगी वादक थे। इलाही बख्श के दो पुत्र थे-- अब्दुल रहीम खाँ और अब्दुल मजीद खाँ। अब्दुल रहीम खान के चार पुत्र थे -अब्दुल रकीम खाँ अब्दुल गफूर खाँ, नन्हे खाँ,तथा अब्दुल करीम खाँ। अगली पीढ़ी में अब्दुल गफूर खाँ के भी चार पुत्र हुए- उस्ताद शकूर खाँ, उस्ताद अब्दुल गनी खाँ, अब्दुल हक खाँ, गुलाम मोहम्मद खाँ। उस्ताद शकूर खाँ के दो पुत्र हुए –मशहूर अली खान तथा मुबारक अली खान।

अब्दुल करीम खान के पुत्रों में उस्ताद बशीर खान अच्छे कलाकार थे, यह मशहूर अली खान के 'फूफा' थे उस्ताद बशीर खान साहब के बेटे उस्ताद अमीर अहमद खाँ, उस्ताद अब्दुल हक खाँ और अख्तर नवाज इन सभी कलाकारों की तालीम उस्ताद शकूर खाँ साहब द्वारा हुई। इसी घराने में प्रसिद्ध बिन वादक उस्ताद बंदे अली खाँ "कैराना परंपरा" के ही अनुयाई थे। इस घराने में दिग्गज वीणा वादक "बंदे अली खान" का नाम बड़े ही सम्मान के साथ लिया जाता है।

उस्ताद बंदे अली खान का समय शुरू होता है खलीफ़ा रमजानी खाँ साहब से जो अपने समय के बहुत प्रसिद्ध बीनकार थे, उस काल में उनके समान कोई कलाकार नहीं था, उनके बेटे उस्ताद अल्ला रक्खा खाँ साहब जो ध्रुपद तथा होली का गायन करते थे।उस्ताद मशकूर खाँ साहब के अनुसार--[105]" ध्रुपद तथा धमार, गायकी की जड़ तथा बुनियाद है, जिन कलाकारों को इसका गायन नहीं आता उनको कुछ नहीं आता बीन और ध्रुपद मे यही होता है"।

किराना घराना के वादन के क्षेत्र में उस्ताद अल्लाह रक्खा खाँ के पुत्र उस्ताद "अब्दुल तकि खाँ साहब" अपने समय के बहुत बड़े बीनकार थे। उनके समस्त परिवार में से गुलाम आजम खाँ, गुलाम कासिम खाँ, गुलाम ज़ामिम खाँ यह सभी बीनकार थे, तथा उनके चचेरे भाइयों में "लंगड़े हुसैन बख्श खाँ" तथा "खादिम

[105] उस्ताद मश़कूर अली खां द्वारा प्रदत्त जानकारी

हुसैन खाँ" यह सभी बीनकार थे। असद अली खाँ के दादा परदादा मुशर्रफ़ खान साहब लंगड़े हुसैन बख्श खान के शिष्य थे।[106]

गुलाम तकि खाँ के पुत्र थे उस्ताद सादिक अली खान, यह भी बहुत प्रसिद्ध बीनकार थे।यह अब्दुल करीम खान ताया के यहां सीखने जाते थे, और नन्हे खां बाबा सादिक अली खान से सीखा करते थे, नन्हें खाँ के शिष्यों में हैदर बक्श खाँ तथा उनके स्वयं के बेटे रहीम बक्श साहब दोनों बहुत बड़े सारंगी वादक थे, उसके बाद उस्ताद सादिक अली खाँ के बेटे हुए -उस्ताद बंदे अली खान साहब तथा हैदर अली खान साहब। बंदे अली खाँ के बीन वादन में सौंदर्य तत्व समाहित था, तथा बीन वादन का सौंदर्य तत्व उस्ताद अब्दुल करीम खाँ की गायकी का मुख्य आधार था।

सरीला पान अब्दुल करीम खान को जन्म से ही मिला था तथा मात्र 6 वर्ष की आयु में ही संगीत सभा में प्रदर्शन करने लगे थे उनकी प्रतिभा इतनी विलक्षण थी कि 15 वर्ष की आयु में बड़ौदा के राज दरबार में राज गायक के पद पर नियुक्त हो गए थे तथा वहां 1899 से लेकर 1902 तक की अवधि तक रहे, तत्पश्चात मिरज चले गए।

निष्कर्ष

भारतीय संगीत के शास्त्रीय घराना में निष्कर्षतः किराना घराना एक प्रसिद्ध घराना है। किराना घराने के संगीतज्ञों ने ख्याल गायन के साथ-साथ ठुमरी, तथा मराठी भजनों के गायन में भी विशेष रूप से ख्याति अर्जित की है तथा घराने के गायक कलाकारों ने जन मन रंजन करने में विशेष भूमिका निभाई है। जिन्होंने अपने घरानेदार शिक्षा प्रणाली को ही मूल आधार बनाकर अपने गायकी को हर क्षेत्र में उत्कृष्टता प्रदान की है तथा इस घराने के कलाकारों को उच्च स्तरीय श्रेणी में स्थापित किया है। यह घराना गायन तथा वादन का सुंदर संगम है। भारत के अन्य

[106] उस्ताद मश़कूर अली खां द्वारा प्रदत्त जानकारी

राज्यों की तुलना में महाराष्ट्र में इस घराने को अधिक संरक्षण एवं संवर्धन मिला भले ही इसका जन्म उत्तर प्रदेश में हुआ, किंतु महाराष्ट्र की धरती पर प्रवेश करते हुए इस घराने को असीम लोकप्रियता प्राप्त हुई । लोकसंगीत, नाट्य संगीत, सुगम संगीत, चित्रपट संगीत आदि कई प्रकार की संगीत इस घराने में विकसित हुए तथा परिपक्व हुए हैं।

किराना घराने के अध्वर्यु कलाकार उस्ताद अब्दुल करीम खान जिनकी एक अनूठी शैली थी, तथा वह अन्य धारा के प्रणेता थे, जो उस काल के प्रचलित अन्य धाराओं से बिल्कुल अलग स्थान प्रदान करती थी।

इस घराने की भावपूर्ण गायकी श्रोताओं का मनमोह लेती है। इस घराने के प्रसिद्ध कलाकारों में विदुषी हीराबाई बडोदेकर, विदुषी सरस्वती राने, तथा विदुषी रोशन आरा बेगम, बहरे बहीद आदि ऐसे अनेक कलाकार हैं, जो राग विस्तार करते समय स्वर सागर में जल चर प्राणी के समान स्वच्छंदता पूर्वक विचरते हैं तथा श्रोताओं में आनंद का संचार करते हैं।[107]

[107] उस्ताद मश़कूर अली खां द्वारा प्रदत्त जानकारी

1.4 किराना घराना: सांगीतिक परंपरा

किराना घराने मे उस्ताद अब्दुल करीम खाँ की गायकी का आधार सौंदर्य तत्व था यह तत्व ,जो उनके गायकी मे उस्ताद बन्दे अली खान के बीन वादन के तत्व समाहित था। [108]बीन वादन के मधुर स्वर, सूक्ष्म नाद उनकीआत्मा तथा उनके कंठ में गहराई से समायुक्त थे, उनके आवाज में श्रुति का सुंदर प्रयोग आवाज के विशिष्ट लगाव तथा सरगम एवं विस्तृत आलापचारी उनकी गायकी का अविभाज्य अंग बने। तत्व भाग में जिस प्रकार अचूक स्वर बचता है तथा उसका प्रभाव लंबे समय तक रहता है ठीक उसी प्रकार उस्ताद अब्दुल करीम खान की गायकी में उनके स्वरों का प्रभाव एवं उनका स्वर लगाव आंस युक्त रहता था।

उस्ताद अब्दुल करीम खान की भावनात्मक, संगीतात्मक तथा गुणात्मक शैली से किराना घराना को एक अलग ही पहचान मिली, इस शैली में अनेक प्रकार के स्वरों का प्रयोग प्रवाह के साथ, मींड, कण तथा स्वरों का प्रयोग कोमलता के साथ एवं शिल्प कौशल पर विशेष जोर दिया जाता है।[109] इस घराने में आलाप मुख्य गायन है, तथा प्रत्येक स्वर के क्रम में एक-एक करके आलाप के साथ गाया जाता है।स्वरों का एक विशेष उद्देश्य होता है तथा रागों की विस्तृत श्रृंखला और आलाप रागों के विशेष प्रचलन के साथ किया जाता है। ऐसे उपक्रमों का प्रयोग कर इस घराने के कलाकारों ने विशेष प्रतिष्ठा अर्जित की है तथा इस घराने में कई महान तथा धुरंधर कलाकारों के नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखित हैं। स्वर उच्चारण भाव प्रधान गायकी की एवं स्वर वैचित्र्य, आदि लक्षणों ने किराना घराने को अग्रसर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

---

[108] स्वर मयी डॉ. प्रभा अत्रे पृष्ठ संख्या 63

किराना घराने की गायकी एवं विशेषता-

उस्ताद अब्दुल करीम खान की भावनात्मक गायकी एवं गीतात्मक गुणों से किराना गायन शैली ने विशिष्ट स्थान प्राप्त किया। इस शैली में स्वरों की कोमलता, शुद्धता एवं शिल्प कौशल पर विशेष तौर पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। स्वरों का प्रयोग प्रवाह के साथ कण मींड, आदि विशेषताओं का प्रयोग किया जाता है। [110]

आलापचारी मुख्य क्रिया है,तथा प्रत्येक स्वर के क्रम में एक-एक करके आरोह के साथ गाया जाता है - स्वरों का एक विशेष उद्देश्य होता है, तथा रागों की एक विस्तृत श्रृंखला तथा आलापचारी प्रसारित की जाती है ,जैसे - राग ललित, मियां की तोड़ी, पूरिया, दरबारी, कल्याण अभोगी कांन्हड़ा आदि। विलंबित समर्पित दृष्टिकोण के कारण गीत की सुंदरता पर विशेष तौर पर ध्यान दिया गया है।[111] माधुर्य का प्रदर्शन सारंगी तथा वीणा के बारीक धुनों को स्वर देने का प्रयास किया जाता है। बंदिश को समझदारी एवं सुंदरता के साथ चुना जाता है। विलंबित और त्वरित स्थाई और अंतरा पूरी तरह नहीं परोसते। विलंबित खयाल अपेक्षाकृत धीमी गति से गाया जाता है, तथा ठुमरी अंग के छोटे ख्याल गाए जाते हैं, और परंपरागत एवं संकीर्ण रागों का उपयोग न के बराबर किया जाता है। विभिन्न प्रकार के तान जैसे --सपाट, अलंकृत एवं स्वर्गतम आदि का उपयोग किया जाता है।रागों का प्रदर्शन करते हुए किराना घराने में राग के अनुसार चरण दर चरण राग ऋषभ, गंधार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद आदि विस्तार पूर्वक प्रयुक्त है। ठुमरी अंग में विशेष उत्कृष्टता प्रदान की गई है, विशेष रूप से ख्यालांग ठुमरी का प्रदर्शन किया जाता है, जिसमें आत्म बलिदान की इच्छा विशेष रूप से दर्शनीय होती है। स्वर की प्रधानता अधिकतम

[110] उस्ताद मश़कूर अली खां द्वारा प्रदत्त जानकारी
[111] उस्ताद मश़कूर अली खां द्वारा प्रदत्त जानकारी

है, विभिन्न मधुर स्वरों का समुचित प्रयोग तथा स्वरों के विभिन्न उपयोगों को विशेष रेखांकित किया गया है।

कुछ प्रमुख विशेषताओं का वर्णन निम्नवत है –

स्वर उच्चारण

इस घराने की गायकी के बारे में यह तथ्य प्रचलित है कि-[112] स्वर गोल, गहरे तथा एक दूसरे का हाथ पकड़ कर चलने वाले होते हैं, जिससे स्वरों की एक श्रृंखलाबद्ध लड़ी बन जाती है, यह लड़ियां आपस में नहीं टूटती सभी स्वर भावना से ओतप्रोत होते हैं, तथा सीधे हृदय में उतरते हैं। माधुर्य के साथ गांभीर्य यहां गायकी का स्थाई भाव है। कई शास्त्रकारों ने कहा है कि "इस घराने में स्वर लगाने की पद्धति गले को थोड़ा सिकोड़ कर, आवाज को चुराने वाली तथा नक्की यानी नाक से गाने की है", परंतु इस पर कृत्रिमता का अभाव है और किराना घराने में स्वार लगाने का एक अलग ही ढंग है।स्वर के सुरीलेपन तथा गांभीर्य को केंद्र बिंदु माना जाता है, भाव तथा चैनदारी ही इस घराने की गायकी का प्रतीक है। इस घराने की आवाज में एक संतुलन है उसमें स्वरों का आ-कार भी बराबर लगता है। कंठ साधना में अभ्यास के तौर पर अब्दुल करीम खाँ और अब्दुल वाहिद खाँ साहब ने इस प्रकार प्रयास किया कि आवाज को ज्यादा खोलने से स्वर माधुर्य नष्ट हो जाता है तथा स्वरों को ज्यादा दबाकर गाने से स्वर की मौलिकता नष्ट हो जाती है। उन्होंने अभ्यास के द्वारा एक नवीन शैली परिष्कृत की जिसमें आवाज को ऐसे प्रकार से प्रयोग किया कि स्वरों का आ-कार भी रहे उनमें गोलाई भी दिखे तथा पर-तासीर हो जाए।

किराना घराने के संगीतज्ञ के अनुसार ---

[112] किराना घराना के गायकी एवं बंदिशों का मूल्यांकन धर्मपाल पृष्ठ संख्या 40

[113]"संगीत पहले एक कला है, उसके बाद शास्त्र"।

गायन का माध्यम यानी गायक की आवाज यदि प्रभावशाली तथा भावपूर्ण अगर नहीं होगी तो उसके कार्यक्रम असफल होने के आसार अधिक होंगे तथा श्रोताओं द्वारा उसे नापसंद किया जा सकता है। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए किराना घराना ने स्वयं के स्वरोच्चरण पद्धति परिष्कृत की, जिसके कारण सामान्य श्रोता भी शास्त्रीय संगीत की तरफ आकृष्ट हुए।

आलापचारी एवं राग विस्तार

किराना घराना मूलतः बीनकारों का घराना है, तथा इस वादन शैली का इस घराने पर विशेष प्रभाव है। इस घराने में गायकी मे बीन वादन अंतर्निहित है। इस घराने में बीन, सारंगी तथा ध्रुपद इन तीनों विधाओं का संगम है।

स्वर की ओर विशेष लगाव होने के कारण इस घराने में एक कहावत प्रचलित है कि-

"स्वर गया तो सिर गया, पर ताल गया तो सिर्फ बाल गया”

"सूर्य साधे सब सधे, सुर ना सधे फिर कुछ ना सधे"[114]

खान साहब के भांजे उस्ताद अब्दुल वाहिद खान इस घराने की सांगीतिक पद्धति को विशेष शास्त्रीय तथा विश्लेषणात्मक रूप मे प्रतिष्ठित किया। दूसरे शब्दों में अगर कहा जाए "अब्दुल करीम खाँ किराना घराने की गायकी के "माधुर्य विशेषज्ञ" थे और वहीं बहीद खाँ "गणितीय विशेषज्ञ" कहे जाते थे। किराना घराने गायन शैली का यह दूसरा मार्ग अब्दुल वाहिद खान द्वारा प्रारंभित है, जिन्होंने स्वर माधुर्य तालीम

[113] पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र के साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

[114] संगीतकार उस्ताद अब्दुल करीम खां जयंत खोत पृष्ठ संख्या 89

के साथ-साथ रागों के व्यवस्थित विस्तार तथा भावनात्मक प्रदर्शन पर विशेष ध्यान केंद्रित किया।

लय सौंदर्य

किराना घराने में नए कार्य से ज्यादा स्वरों की मधुरता पर विशेष ध्यान दिया जाता है इस घराने की गायकी में बोल, उपज या लयकारी ना के बराबर दिखाई जाती है,[115] सभी घरानों की तुलना में किराना घराने मे विलंबित लय अति विलंबित प्रकार से प्रदर्शित की जाती है, यही मुख्य बिंदु किराना घराने का सौंदर्य घटक हैं। एकताल तथा झूमरा जैसे तालों का अति विलंबित लय मे प्रयोग सर्वप्रथम उस्ताद अब्दुल करीम खाँ एवं उस्ताद वहीद खाँ द्वारा ही किया गया।

एक-एक स्वरों की बढ़त करते हुए राग के प्रत्येक स्वरों को स्पष्टतया उजागर करने वाली आशु रचना, किराना गायन शैली के मुख्य विशेषता है।[116] किराना घराने के वंशज बीनकार तथा सारंगी वादक रहे और इन वाद्यो का प्रभाव यहां के गायन शैली मे प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगत होता है। आशु रचनाओं में स्वरों का सूक्ष्म प्रयोग एवं भावपूर्ण उच्चारण अति विलंबित लय के मार्ग पर चलते हैं, ताल के साथ विभिन्न आशु रचनाएं एक समान लय मे चलते हुए बंदिश के मुखड़े को पकड़ कर सम पर आती है। यही कारण है कि इस घराने में विलंबित खयाल के प्रदर्शन में ताल का प्रयोग अन्य घरानों की तुलना में मंद गति का प्रतीत होता है।

---

[115] घरानेदार गायकी वामन राव देशपांडे पृष्ठ संख्या 30

[116] उस्ताद मशकूर अली खान से प्राप्त जानकारी

किराना घराने में ख्याल गायन विलंबित अथवा अतिविलंबित भले ही हो, परंतु गायन के उत्तरार्ध में द्रुत रचनाओं की लय बिल्कुल भिन्न होती है[117]। अन्य घरानों में छोटा ख्याल का गायन मध्य लय मे प्रारंभ होता है, कुछ अपवादों को अगर छोड़ दिया जाए तो किराना घराने में द्रुत लय की चीजों को द्रुत में ही प्रस्तुत किया जाता है तथा गायन का अंतिम भाग अतिद्रुत होता है, जिसका विस्तार काफी देर तक चलता है।

तान प्रयोग

किराना घराने मे अतिविलंबित लय के कारण तत्काल द्रुत्त लय वाले तानों का प्रयोग जल्दी नहीं करते, वह मध्यलय विलंबित लय की दोगुनी न होकर दुगुन से कुछ कम लय की होती है। इस विशेष लय में प्रदर्शित की गई तान,बोलतान तथा आलाप कार्य आदि सामंजस्य पूर्ण, अनुकूल एवं सुंदर होते हैं। गान क्रिया के दौरान कुछ कलाकार बोल बांट की क्रिया भी करते हैं, या सरगम आदि गाना पसंद करते हैं, आलाप तथा तान के मध्य की कड़ी इस विशेष लय में प्रदर्शित की जाती है, धीमी ताने या सरगम मौलिकता विहीन अथवा प्रभावहीन ना लगे इसलिए इन्हें गमक युक्त प्रदर्शित किया जाता है।[118]

किराना घराने की गायकी आलाप प्रधान गायकी है, स्वरों में सुरीलापन, चैनदारी गमक, मींड, लगाव आदि सौंदर्य विशेषताएं समाहित हैं, साथ ही तानों का सौंदर्य युक्त प्रयोग आदि का विशेष ध्यान रखा जाता है। तानों में स्वर् तथा लय दोनों ही पक्ष विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, अतः तान की विभिन्न मात्राओं पर ध्यान दिया जाता है या ज़रब का प्रयोग, बल तथा पेंच का प्रयोग किराना घराने की गायकी की मुख्य

---

[118] उस्ताद मशकूर अली खान से प्राप्त जानकारी

विशेषता है। दुगुन, तिगुन, चौगुन किसी भी लय में आकार का स्पष्ट उच्चारण तथा स्वरों का सुरीलापन तान में विशेष भूमिका निभाता है।

तान में गमक तथा काकु जैसे विशेषताओं का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है, स्वर प्रयोग कूट तान मेरूखंड प्रणाली आदि पर आधारित होती है। किराना घराने में तीनों सप्तकों वाली आरोही तान, सपाट तान,अवरोही तान, फिरत तान, फिरकी तान, लपेट की तान,फुलझड़ी तान आदि का विधिवत प्रयोग होता है।

बंदिश प्रयोग

किराना घराने में मुख्यतः उस्ताद गुलाम मौला खाँ (सबरस) तथा उस्ताद हुसैन अली (हिंगारंग) द्वारा रचित बंदिशें प्राप्त होती हैं, तथा परंपरागत तौर पर शिष्यों को इसी आधार पर शिक्षित किया जाता है।[119] इस घराने में अन्य भी कई रचनाकारों की बंदिशें कलाकारों के पास उपलब्ध हैं ,जो विलंबित खयाल अधिकतर "एकताल विलंबित" "झुमरा विलंबित" में गाए जाते हैं, कुछ रचनाएं ताल एकवई में निबद्ध भी मिलती है, इसके अलावा अन्य प्रचलित तालों में तीनताल, झपताल रूपक आदि तालों में भी विलंबित लय तथा मध्यलय की रचनाएं प्राप्त होती हैं।

विद्वानों के मतानुसार [120] "स्वर की तरफ खाँ साहब का विशेष ध्यान होने के कारण अन्य अंगों की तरफ की तरफ उनका ध्यान कम गया और उन अंगों का विकास उनकी गायकी में कम हुआ"। स्वर यदि सच्चा लगे तो मनुष्य निश्चित तौर पर प्रभावित होता है, इसी मुख्य तथ्य को उन्होंने समझा तथा इसी तथ्य के आधार पर

---

[119] उस्ताद मशकूर अली खान से प्राप्त जानकारी

उन्होंने स्वर् प्रधान गायकी परिष्कृत की। खाँ साहब ने केवल ख्याल गायकी ही नहीं बल्कि "ठुमरी" जैसी भाव प्रधान गायकी को भी शास्त्रीय रूप प्रदान कर लोकप्रिय बनाने का श्रेष्ठतम प्रयास किया है। शास्त्रीय संगीत के अलावा मराठी भावगीत, भजन,तराना आदि भाव प्रधान गायकी पर भी उनका विशेष अधिकार था, तथा उनकी स्वर प्रधान खयाल गायकी का संपूर्ण प्रभाव उनके नाट्य संगीत तथा ठुमरी पर भी दृष्टिगत होता था।

आवाज़ का लगाव

किराना घराने के स्वरों में स्पष्टता एवं सुगमता दृष्टिगोचर होती है। उस्ताद अब्दुल करीम खान ने सुरीली गायन एवं सुरीलेपन तथा भावुकता पर विशेष जोर दिया। "अब्दुल वहीद खान" का ध्यान शास्त्रीय संगीत एवं घरानेदार गायकी के संरक्षण एवं संवर्धन पर था। "राग मारवा" वह बहुत सुंदर गाते थे, जहां तक राग विहाग का स्थाई "रसिया जाओ ना" का संबंध है, उन्होंने विशेष रूप से इसका प्रचार किया। वास्तव में किराना घराना सारंगी वादकों का घराना है , " उस्ताद अब्दुल करीम खान" तथा "वहीद खान" के घराने में पहले सारंगी बजाई गई तथा गायन की परंपरा बाद में आरंभ हुई, अतः प्राप्त तथ्यों के आधार पर कहा जाता है कि किराना घराने का संबंध अधिकतर सारंगी वादन से रहा है। किराना घराने में मौलिक गायकी की दृष्टि से प्रतिक्रिया की भावना है,अतः इस घराने में ख्याल गायन सुनकर ऐसा प्रतीत होता है कि सारंगी वादक अपनी सारंगी पर किसी राग का प्रयोग कर रहा हो। इस गायन शैली में रागों को विलंबित लय मे गया जाता है, स्थाई अंतरा के शब्दों को संपूर्ण तौर पर दृष्टिगत नहीं किया जाता, और ना ही यह सुनाई देता है। शब्दों को मात्रा में बिठाकर दो या तीन शब्द ही कहे जाते हैं इसमें गायकी आसानी से सम पर आ जाती है।कलात्मक ढंग या द्रुत लय इसकी गायकी में नहीं मिलते तथा किराना घराना स्वर उच्चारण में विचित्रता पर विशेष जोर देता है।

किराना घराने में ठुमरी का स्थान

उप शास्त्रीय गायन शैली ठुमरी भी किराना गायन शैली के प्रभाव से अछूती नहीं रही। किराना घराने में ठुमरी ख्याल मार्ग पर चलती है किंतु फिर भी ठुमरी ख्याल रूप में परिवर्तित नहीं होती। किराना घराने में ठुमरी विलंबित लय में गाई जाती है, बोल अंग आलाप से मिलते हैं तथा बोलों का अपेक्षाकृत कम प्रयोग होता है,इस ठुमरी के स्वरों में एक तेजमयी शक्ति का प्रदर्शन होता है।

उस्ताद अब्दुल करीम खाँ ऐसे पहले शास्त्रीय गायक थे, जिन्होंने शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम जिनमे शास्त्रोक्त तौर पर केवल ध्रुपद,धमार अथवा ख्याल गायन शैली ही प्रस्तुत की जाती थी,उनमें उपशास्त्रीय गायन ठुमरी का प्रचार प्रसार आरंभ किया, परंतु खान साहब की ठुमरी गायन शैली पूर्व अंग तथा पंजाब अंग श्रृंगारी के ठुमरी से भिन्न थी, और यह ख्याल गायन शैली से निकटता रखती थी[121]। यह ठुमरी विशेष प्रकार की होती थी, महाराष्ट्र के शास्त्रीय संगीत के रसिक जनों तथा विद्वानों की रुचि के अनुसार उस क्षेत्र में प्रचलित शास्त्रीय संगीत की आधारभूत शैली को समझते हुए उस्ताद अब्दुल करीम खान साहब ने ठुमरी की नवीन शैली प्रस्तुत की, और इस क्षेत्र में भी वह ख्याति तथा प्रशंसा प्राप्ति में सफल रहे। समानांतर काल में आए बदलाव के कारण किराना घराने के गायको ने जनसामान्य की रुचि को देखते हुए ठुमरी गायन में भी अनेक परिवर्तन किये।

[121] किराना घराने की गायकी, लय के संदर्भ में, सुलभा ठाकुर संगीत कला विहार सितंबर 1981 पृष्ठ संख्या 363

किराना घराने के अंतर्गत नाट्य संगीत तथा मराठी भावगीत

किराना घराने की गायकी मे कलाकारों द्वारा प्रयुक्त नाट्य संगीत पर भी विलंबित गायकी का समुचित प्रभाव है। [122]अन्य घराने के गायको द्वारा प्रस्तुत नाट्य संगीत के लय से किराना घराने के गायको द्वारा गए गए नाट्य संगीत में लय 'विलंबित अवस्था' में होती है। बाल गंधर्व जी द्वारा प्रस्तुत दो नाट्य गीत- "वाद जाऊं कुणाला", " किती किती सांगू तुला" तथा विदुषी हीराबाई बड़ोदेकर द्वारा गेय गीत की अगर तुलना की जाए तो विदुषी हीराबाई जी द्वारा गाये गए गीतों की लय अधिक विलंबित प्रतीत होती है।

उस्ताद अब्दुल करीम खान साहब द्वारा निर्मित किराना घराना की गायकी का अनुसरण बाद के शिष्यों ने किया, इसी कारण इस घराने के संगीतकार आलाप प्रधान ख्याल गायन तथा ठुमरी अंग के प्रदर्शन में भी कुशल रहे हैं।उस्ताद अब्दुल करीम खाँ तथा उस्ताद वहीद खाँ द्वारा स्थापित किराना घराने की गायकी को समृद्ध करने का प्रयास बाद के भी कलाकारों ने किया तथा इन कलाकारों के समर्पण,संरक्षण तथा संवर्धन द्वारा इस घराने की विकास यात्रा अनवरत जारी है।

कलाकार एवं गायन शैली

किराना घराने की मूर्धन्य कलाकार डॉ. प्रभा अत्रे किराना घराने की गायकी को विश्लेषित करते हुए कहती हैं कि [123] "सामान्य रसिक जनों के लिए किराना की विशेषता है स्वर माधुर्य तथा भावनाओं का उद्बोधन, आवाज लगाने का ढंग सीधे अंतर ह्रदय को स्पर्श करता है, और आप अपने शरीर में एक प्रकार की सिहरन

---

[123] स्वर योगिनी डॉ. प्रभा अत्रे डॉक्टर चेतन बनावत पृष्ठ संख्या 51

का अनुभव करने लगते हैं, किराना संगीत का आनंद उठाने के लिए शास्त्र जानना आवश्यक नहीं है, यह संगीत अंतर्मुखी है, तथा रागों का धीर भाव से उन्मूलन हो जाता है, स्वर की सहज, शांत गति ताल चक्र के अनुरूप होती है तथा प्रत्येक स्वर के साथ भावना मूर्त रूप में विद्यमान होती है"।

उस्ताद अब्दुल करीम खां

खान साहब का गायन उनकी आत्मा से संबद्ध थी। गायन तथा स्वर मन मोह लेने वाला होता था, शास्त्रों में वर्णित शब्द मन को छू लेने वाला, "शिशुवर्ती" तथा "पशुवर्ती" जो नवजात शिशु भी समझ सकता हो, तथा पशु भी समझता हो,खाँ साहब पूर्ण रूपेण तन्मयता के साथ गाते थे तथा उनकी गायकी की तकनीक तथा भाव प्रधान स्वर् उनके कंठ में समाहित था।

उस्ताद अब्दुल वहीद खां

उस्ताद अब्दुल वाहिद खान ने वननशील तथा ध्यानपूर्ण गायकी की एक आधारभूत शैली विकसित की तथा राग के विधिवत प्रस्तार मे "मेरूखंड" प्रणाली का भी विनियोग किया। इस घराने में और भी अन्य कलाकार थे परंतु उनकी गायकी स्वयं का आविष्कार थी। उनके मामा तथा स्वयं के गुण जिसमें "बंदे अली खाँ की बीन तथा मेरूखंड भी समाहित था। मेरूखंड सही मायने में एक ऐसी क्रिया है जिसमें उसकी लड़ियां श्रृंखलाबद्ध होती हैं,और कभी टूटती नहीं है, वह एक नियमित चलने वाली क्रिया है। जिस प्रकार सागर में लहर आती है तथा यह सिलसिला लगातार चलता है, यह प्रक्रिया भी उसी के अधीन है। खान साहब जब हाथों में तानपुरा लेकर तारों को झंकृत करते थे तो एक सुंदर वातावरण निर्मित हो जाता था तथा श्रोताओं के मस्तिष्क में आनंद का संचार करता था।

उन्होंने झुमरा जैसे 14 मंत्र की ताल में विलंबित लय के गायन पर विशेष ध्यान केंद्रित किया, इस प्रकार उन्होंने धीमी गति में रागों के विस्तार द्वारा स्वरों के माधुर्य एक नया रूप प्रतिबिंबित किया,जिससे उन्हें रागों के भावनात्मक तत्व को विकसित करने में विशेष सफलता मिली।

सरगम में "मेरूखंड" का प्रयोग इन दो मूल पुरुषों द्वारा परिष्कृत मार्ग से किराना घराना समय अनुसार परिवर्तनशील होते हुए एक उत्कृष्ट रूप धारण कर संगीत जगत मे प्रकट हुआ।

उस्ताद अब्दुल गनी खान

यह प्रसिद्ध कलाकार अपने समय में काफी ख्याति लब्ध थे, तथा बिहार राज्य अंतर्गत दरभंगा के शाही दरबार में एक राज कलाकार के रूप में पद स्थापित थे। [124]किराना घराने के ख्याल गायन शैली के "पद्म विभूषण पुरस्कार विजेता पंडित छन्नूलाल मिश्र जी" ने उनसे संगीत शिक्षा प्राप्त की थी तथा दरभंगा क्षेत्र में किराना घराने के प्रचार प्रसार में अब्दुल गनी खान का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

श्री राम भाऊ कुंदगोलकर (सवाई गंधर्व)

सवाई गंधर्व का जन्म 1886 में कुंडगोल में मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था।

इस प्रसिद्ध कलाकार के बारे में कहा जाता है की बाल्यावस्था में इन्हें विद्वानों ने यह कहकर त्याग दिया था कि उनकी आवाज संगीत के योग्य नहीं है। कठोर परिश्रम तथा लगन के द्वारा आशातीत उन्नति करके उन्होंने यह सिद्ध किया कि अभ्यास द्वारा जीवन में सब कुछ संभव है। [125] उस्ताद अब्दुल करीम खान की एक

---

[124] किराना घराने की गायकी एवं बंदिशों मूल्यांकन धर्मपाल पृष्ठ संख्या 4

[125] सुरीले लोगों की संगत ,गजेंद्र नारायण सिंह पृष्ठ संख्या7

विशिष्ट गायकी थी, उसको आत्मसात करने के लिए उस प्रकार का अनुसरण आवश्यक है,उस आवाज को अभ्यासिक तौर पर तैयार किए बिना गायकी की उत्कृष्ट को प्राप्त करना असंभव था। खान साहब ने इन्हें स्वीकार कर संगीत साधना करवाई। श्री राम भाऊ कुंदगोलकर ने अपने आवाज के दोषों को समझते हुए धैर्य एवं साहस के साथ अपने गुरु की गायकी को आत्मसात करते हुए अथक परिश्रम किया, तत्पश्चात संगीत जगत को एक सुरीला आलापी, लय भास्कर तथा एक समृद्ध गायक मिला।

व्यापकता की भावना या गरिमा की गुणवत्ता जिसने उनके संगीत को चिन्हित किया, उन्होंने ज्यादातर केवल वही राग प्रस्तुत किए,जो उनके श्रोताओं के लिए परिचित एवं सरल थे। शांत , सूक्ष्म तथा प्रगतिशील संगीत द्वारा विभिन्न प्रकार के विरमित, नरम स्वर, अलापना तथा सूक्ष्म एवं सुंदर भावना को दर्शित किया। 1960 में सवाई गंधर्व "मराठी ड्रामा सोसाइटी" में शामिल हुए सुंदर व शांत संगीत तथा नाटक के प्रदर्शन आज भी संगीतिक जगत में कलाकारों के लिए प्रेरणा स्वरूप हैं।

उस्ताद रज़ब अली खान

किराना घराने के प्रख्यात कलाकार उस्ताद रजब अली खाँ (1874 - 1959) का जन्म मध्य प्रदेश के नरसिंहगढ़ में हुआ था। उन्होंने अपने चाचा हैदर बख्श के पास परंपराओं का पालन करते हुए गायन की समस्त शैलियों तथा तकनीकों को विस्तार से सीखा। रजब अली खान ने बाद में बीच की पिच बहलावा में बंदिश का प्रदर्शन किया फिर विस्तार न करते हुए बढ़ती पिच में संगीत का शानदार प्रदर्शन किया,वह इंदौर दरबार में दरबारी गायक थे।[126]

[126] https://swarajyamag.com/culture/swara-and-its-purity-the-story-of-the-kirana-gharana

पद्म विभूषण गंगूबाई हंगल

सन 1913 ई. में चीक्कूराव और अंबाबाई की पुत्री गंगूबाई हंगल का जन्म धारवाड़ में हुआ था। ग्रामोफोन रिकार्ड की दुकानों में बजने वाले संगीत को सुनकर अत्यंत प्रभावशाली गंगूबाई हंगल हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की ओर आकर्षित हुई। 1945 के बीच विदुषी गंगूबाई ने संपूर्ण भारत में विभिन्न स्थानों पर तथा आकाशवाणी माध्यम से संगीत का प्रदर्शन किया। वह शास्त्रीय संगीत तथा उपशास्त्रीय एवं सुगम संगीत में भी विशेष रूप से पारंगत है उनके जीवनकाल में लगभग 50 रिकॉर्डिंग्स हैं,जिसमें गजल, मराठी भाव संगीत, शास्त्रीय संगीत तथा कुछ युगल संगीत शामिल हैं। इन्होंने अपने पूरे जीवन काल में अनेक उपाधि तथा समान प्राप्त किए हैं।[127]

भारत रत्न पंडित भीमसेन जोशी

पंडित भीमसेन जोशी का जन्म 1922 ई. में कर्नाटक के गदग में एक ब्राह्मण कुल में हुआ था। संभवत 1950 ई के बाद पंडित भीमसेन जोशी ने किराना गायन शैली में अन्य शैलियों से कुछ अलंकरणों को शामिल करके नवीन स्पर्श के साथ किराना घराने का प्रतिनिधित्व किया। उनकी आवाज जयपुर के केश्वर भाई केकर और आमिर खान की आवाज से मिलती-जुलती थी,वह ग्वालियर घराने की रागों की शुद्धता के प्रति भी आकर्षित थे। उनका अभिनव गायन दर्शकों को बहुत पसंद आया ।पंडित भीमसेन जोशी जी ने संपूर्ण भारतवर्ष में ऑल इंडिया रेडियो पर अनेक कार्यक्रम देकर अपार प्रसिद्ध तथा प्रतिष्ठा प्राप्त की। उन्होंने मराठी रंगमंच संगीत, भजन तथा शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय संगीत में भी सफलता का परचम लहराया।उनके ऑडियो सीडी तथा अनेक रिकॉर्डिंग्स व्यापक रूप से उपलब्ध हैं, उन्हें अपने जीवन काल में अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए जैसे "भारत का सर्वोच्च सम्मान

---

[127] https://swarajyamag.com/culture/swara-and-its-purity-the-story-of-the-kirana-gharana

भारत रत्न 2009" पदम श्री, पद्म भूषण, पद्म विभूषण, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, महाराष्ट्र भूषण आदि।[128]

उस्ताद फैयाज अहमद खान और नियाज अहमद खान

उस्ताद फैयाज अहमद खान और नियाज अहमद खान किराना घराना शैली के प्रसिद्ध गायक थे। उस्ताद फैयाज अहमद खान तथा नियाज अहमद खान को उनके पिता बशीर अहमद ने घराने की परंपरा के अनुसार ही प्रशिक्षित किया था तथा उनके गायन शैली में किराना घराने के सारे गुण तथा भाव दृष्टिगत होते थे। वे युगल गायक के रूप में प्रसिद्ध थे तथा उन्होंने अनेक पारंपरिक गीत एवं किराना गायन शैली का विशेष तौर पर प्रतिपादन किया।

डॉ .प्रभा अत्रे

विदुषी प्रभा अत्रे जी का जन्म सन 1930 ईस्वी में पुणे के एक सांगीतिक परिवार में हुआ था। वह भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक महिला कलाकार के रूप में विशेष रूप से स्थापित हैं। उनके प्रशंसक न केवल भारतीय श्रोता या संगीत परखी बल्कि विदेशी शास्त्रीय संगीत प्रेमी एवं संगीत प्रतिभाएं भी उनसे विशेष तौर पर प्रभावित होती हैं। उनकी गायन शैली तथा सांगीतिक लेखन दोनों ही गुण उन्हें मूर्धन्य कलाकार की संज्ञा प्रदान करते हैं। इन्होंने संगीत, साहित्य व कला साधना रूपी प्रभाव से संगीत जगत को विशेष रूप से आलोकित किया है।

उनकी समालोचनात्मक क्षमता एवं चिंतनशील व्यक्तित्व के कारण तथा सांगीतिक लेखन तथा उनके विचार एवं अनुभव को संगीत समाज विशेष आदर की दृष्टि से

[128] Wikipedia https://share.google/yxRA74Go4uf1yYW4j

देखा है। [129]भावपूर्ण ध्वनि सौंदर्य, कण एवं गमक का विस्तृत तौर पर प्रयोग, तर्क एवं परंपरा के आधार पर रागों का विस्तार, राग स्वरूप के अनुसार असामान्य, सरल व जटिल स्वर संगतियों का प्रयोग, शब्द उच्चारण में स्पष्टता, बंदिशें का रसानुकूल प्रयोग आदि ऐसे अनेक तत्व हैं जो प्रभाव अत्रे जी की सांगीतिक प्रतिभा को विशेष तौर पर उजागर करते हैं। इनकी गायकी अंतर मन को स्पर्श करती है, विदुषी प्रभा अत्रे जी के बड़े ख्यालों में आलापों के द्वारा धीरे-धीरे धैर्य पूर्ण रागों के अंग- प्रत्यंगों की बढ़त होती है तथा कल्पनाशीलता बढत के माध्यम से विविधता को बनाए रखती है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः भारतीय संगीत के घरानों विदुषी गंगूबाई जी के शब्दों में- मैं भक्ति गीत नहीं गाती हूं लेकिन जो भी गाती हूं भक्ति पूर्वक गाती हूं।[130] किराना घराने ने विशेष भावनात्मक प्रदर्शन तथा सुरीलेपन के द्वारा विशेष स्थान प्राप्त किया है।इस घराने में खुली आवाज, वज़नदार बुलंद गायकी में बंदिश का अक्षुण्ण्य सौंदर्य राग रूप एवं रागों का स्पष्ट विस्तार इस शैली की विशेषता है। बढ़त तथा फिरत तानें विशेष रूप से आश्चर्यजनक रूप में प्रस्तुत होती हैं, तथा बोलतानो और लंबी तानों में असंदिग्ध रूप से यह अन्य घरानों से भी प्रेरित रही है। पूर्ण रूपेण "मेरूखंड" गायकी किराना घराने के प्रमुख विशेषता है निष्कर्षतः विस्तार पूर्वक अनौपचारिक तथा लय आदि का प्रयोग एवं सरगमों की श्रृंखलाबद्ध परंपरा अतुलनीय है।

---

[129] https://swarajyamag.com/culture/swara-and-its-purity-the-story-of-the-kirana-gharana

[130]किराना घराना की गायकी एवं बंदिशें का मूल्यांकन धर्मपाल पृष्ठ संख्या 54

इस घराने से संबंद्ध कलाकारों ने भक्ति संगीत तथा शास्त्रीय संगीत को उच्च स्तर तक स्थापित किया है। पंडित भीमसेन जोशी के अनुसार- "भक्ति संगीत हमारे शास्त्रीय संगीत का ही लघु व भिन्न रूप है दोनों धाराएं समानांतर हैं और सांस्कृतिक एवं सौंदर्य गति दृष्टि से एक दूसरे के पूरक हैं"।

1.5 बनारस एवं हरिहरपुर की सांगीतिक स्थिति

संगीत मानव जीवन का महत्वपूर्ण अंग है जो जीवन की नीरसता का अंत कर कलात्मकता तथा रचनात्मकता की अवधारणा करती है। ईश्वर ने मानव को दो वर्गों में विभाजित किया है - स्त्री तथा पुरुष।[131] भावना चाहे स्त्री की हो अथवा पुरुष की, अत्यंत मनोभाव के आवेग चाहे सुख के हो अथवा दुख के, प्रमुखता से भावनात्मक ध्वनि क्रियाकलापों के माध्यम से ही प्रकट की जाती है। यही कलरव विभिन्न कलाओं के माध्यम द्वारा मुखरित या जागृत होते हैं। भारतीय संगीत के आध्यात्मिक अंश की अगर बात करें, तो इंद्र की सभा संगीत विशारदों से सदैव पूर्ण मानी गई है। गंधर्व गायक हैं, अप्सराएं नृत्य करती हैं, तथा किन्नर वादक हैं, इस प्रकार भारतीय संगीत के अंतर्गत गायन, वादन तथा नृत्य इन तीनों कलाओं का समावेश होता है। शास्त्रकारो ने संगीत की व्याख्या कुछ ऐसी की है-

"गीतं, वाद्यं तथा नृत्य त्रयं संगीत मुच्यते"

अर्थात गायन वादन तथा नृत्य संगीत की यह तीन शाखाएं हैं शास्त्रकारों ने इन कलाओं को परस्परावलंबी बतलाया है।

"नृत्यं वाद्यंनुगं प्रोक्तं वाद्यं गीतानुवर्ती च"[132]

सभी कलाएं महत्वपूर्ण है, परंतु संगीत के अंतर्गत इन तीनों मे से गान को ही प्रधानता दी गई है, सम्यक प्रकार से अर्थात स्वर, ताल, शुद्ध उच्चारण हाव-भाव और शुद्ध मुद्रा आदि के साथ जो गाया जाए, उसी का नाम संगीत है।

---

[131] पंडित शारंगदेव, संगीत रत्नाकर, पदार्थ संग्रह प्रकरणम् 21, 22

[132] पंडित शारंगदेव, संगीत रत्नाकर, पदार्थ संग्रह प्रकरणम् 21, 22

भारतीय संगीत में घराना

भारतीय संगीत परंपराओं से प्रबुद्ध संपदा है। इस परंपरा कहें या पद्धति यह सांगीतिक रूप से बहुत ही महत्वपूर्ण मानी जाती है, क्योंकि घराने का मतलब किसी विशिष्ट गुरु परंपरा से होता है। घरानों की प्रथा सांगीतिक संदर्भ में कई प्रकार से पाई जाती है। जिस प्रकार गायन के घराने होते हैं वैसे ही वाद्य एवं नर्तन शैली के भी अनेक घराने दृष्टिगत होते हैं। घरानों का प्रजनन उत्तर भारतीय संगीत पद्धति तथा दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति दोनों में ही समान रूप से प्राप्य है।

उत्तर भारतीय संगीत पद्धति में जिसे 'घराना' कहा जाता है दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति में वही संप्रदाय कहलाता है। प्राचीन कालीन सांस्कृतिक साहित्य के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि संगीत में 'शिवमत', 'ब्रह्म मत' तथा 'भरत मत' जैसे विभिन्न संप्रदाय थे , उनका सांगीतिक स्वरूप भले ही एक हो किंतु उनके मतों में विभिन्नता थी। दतिल , कोहल, मतंग तथा अभिनव गुप्त इत्यादि जैसे वाग्यकार भरत संप्रदाय के अनुयाई थे। संप्रदाय की महत्ता प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक दृष्टिगत होती है।[133]

ध्रुपद गायन शैली में जिन्हें बानियों के नाम से पुकारा गया, वैसे ही ख्याल गायन में इन्हें घराना नाम दिया गया। वर्तमान समय मे ख्याल गायन शैली अधिक लोकप्रिय है। इस गायन शैली का प्रारंभ भारत के मुगल सम्राट 'मोहम्मद शाह रंगीले' के शासनकाल में हुआ। उनके दरबार के रत्न कलाकार सदारंग तथा अदारंग ,नामक दो कलावंत भाइयों ने इस गायन शैली की स्थापना की। इस काल के प्रारंभिक युग में सदारंग और अदारंग का एक स्वयं का घराना चल पड़ा। आगे चलकर अपनी अपनी प्रादेशिक विशेषताओं तथा विभिन्नताओं के कारण अथवा नए प्रयोगों के कारण अनेक घरानों का निर्माण हुआ। खयाल गायकी के क्रम में अनेक घराने

[133] तृप्त कपूर उत्तरी भारत में संगीत शिक्षा, पृष्ठ 43

आज भारतीय संगीत क्षेत्र में प्रचलित हैं जैसे --बनारस घराना, रामपुर घराना, दिल्ली घराना, ग्वालियर घराना ,पटियाला घराना ,आगरा घराना, किराना घराना ,जयपुर घराना मेवाती घराना ,भिंडी बाजार घराना, अतरौली घराना तथा हरिहरपुर घराना। इन सभी घरानों मे दिल्ली ,लखनऊ तथा ग्वालियर घराने प्राचीन घरानों में गिने जाते हैं तथा अन्य शेष घराने किसी न किसी रूप से इन्हें प्रबुद्ध घरानों की शाखाएं हैं।

हिंदुस्तानी संगीत में घराना परंपरा

आज' घराना 'शब्द से जो अर्थ प्रयोग में लाया गया है, उसका प्राचीन इतिहास 200 वर्षों से अधिक प्राचीन नहीं है, परंतु यह भी नहीं कहा जा सकता कि प्राचीन काल मे घराना पद्धति जैसी व्यवस्था नहीं थी। [134]प्राचीन शस्त्र कारों मे भरत, नंदीकेश्वर, मतंग ,नारद, शारंगदेव ,आदि सुप्रसिद्ध शास्त्र कारों मे उनकी मान्यता थी तथा इनकी सांगीतिक कौशल्य तथा अनेकों विशेषताओं के कारण इनके मत एक दूसरे से विभिन्न भी थे, तथा उनके मत प्रमुख स्थान भी रखते थे। आधुनिक काल की परिभाषा के अनुसार इन्हें भी विभिन्न घरानों के रूप मे विभक्त किया जा सकता है।

घराना शब्द का अर्थ

घराना शब्द का शाब्दिक अर्थ शब्दकोश के अनुसार 'वंश' अथवा 'कुल' लिखा होता है। सांगीतिक शास्त्रों के अनुसार संगीत के संदर्भ में इसी अर्थ का प्रयोग किया गया है। किसी ख्याति लब्ध गायन शैली के कलाकार तथा उनके वंश या कुल को घराना शब्द से सुशोभित किया जाता है।[135]

---

[134] मिश्र रमेश, दिल्ली घराने का संगीत में योगदान पृष्ठ 21

[135] तृप्त कपूर उत्तरी भारत में संगीत शिक्षा, पृष्ठ 43

घराना शब्द गायन, वादन ,नृत्य इन तीनों क्रियाओं के लिए प्रयुक्त होता है। घराना शब्द संस्कृत भाषा के गृह से अवतरित है। साधारण तौर पर घराना शब्द के अनेक अर्थ मे प्रयुक्त है जैसे कुटुंब, घर ,वंश ,संप्रदाय, परंपरा आदि। परंतु जहां तक शास्त्रीय संगीत का संबंध है, घराना शब्द इन्हीं शब्दों में से किसी एक अर्थ के साथ संबद्ध होता है। अनेक विद्वानों ने 'घराना'शब्द का अर्थ 'घर' को माना है।

इस संदर्भ में शास्त्रों में अनेक परिभाषाएं प्राप्त होती हैं, जैसे "भिन्न-भिन्न घराने भिन्न फूलों की तरह है जिसकी अपनी सुगंध तथा अपना एक अलग ही रंग है।"[136]

जिस प्रकार ईंट, पत्थर, गारा, लोहा तथा लकड़ी इत्यादि भिन्न सामग्री होते हुए भी एक समान भवन का रूप ले लेती है तथा भवन की आकृति इन्हीं सामग्रियों के प्रयोग से भिन्न भी हो जाती है ठीक उसी प्रकार ताल, लय ,स्वर संगीत उपयोगी अलंकार आदि एक समान सामग्री होते हुए भी उनके संयोजन एवं सूक्ष्म लगावदार गायकी के द्वारा भिन्न-भिन्न प्रयोग से तैयार घरानों का स्वरूप हमारे सम्मुख उपस्थित है। भारतीय संगीत घरानों द्वारा ही उत्कृष्ट रूप में प्रतिष्ठित है।

संगीत एक ऐसी विधा है , जो जिसे बिना किसी मार्गदर्शन अथवा परंपरा विशेष के प्राप्त होना कठिन है।[137] घराना रीति अथवा परंपरा पालन का ही दूसरा नाम है। किसी विशेष प्रकार की शैली पर अधिकार प्राप्त करना ही घराने का मुख्य उद्देश्य होता है। 'घराना' एक विशेष गायन शैली , वादन शैली तथा नृत्य शैली का परिचायक है, और यह शैली अथवा रीति कलाकार के स्वयं की प्रतिभा द्वारा परिवर्तित होती है तथा वही उस नए स्वरूप का प्रवर्तक माना जाता है और उसी के नाम अथवा निवास स्थान पर घराने का नामकरण होता है। कारण स्थिर तत्व होता है जब इस शैली का अनुकरण करने वाला, विशेष पीढ़ी अथवा शिष्य समुदाय हो।

---

[136] डॉ.शरद चंद्र श्रीधर परांजपे संगीत दिशा पृष्ठ 181

[137]संगीत में घराना (निबंध) संगीत कला विहार जून 1957

घरानों मे परंपरा का विशेष स्थान है परंपरा ही प्राचीन संगीत संस्कारों को सुरक्षा प्रदान करती है व उन्हें उत्कृष्ट बनाती है।[138] परंपरा के बिना भारतीय संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती परंपरा किसी भी कल का अभिन्न अंग है, परंपरा के अंतर्गत होने वाली कलाओं मे सदैव कोई उद्देश्य, दर्शन व आध्यात्मिक दृष्टिकोण होता है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय अथवा उपशास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में अधिकांश का सर्वश्रेष्ठ संगीतज्ञ ऐसे ही परंपरा का उदाहरण है जिन्होंने परंपरागत संगीत के मन वह प्रतिष्ठा को बनाए रखा है और, परंपरा की नीतियों का अक्षरतः पालन किया है। भारतीय सांगीतिक परिवेश में जो परंपराएं प्रचलित हैं, वह दृष्टिकोण, रिवाज पीढीयों द्वारा हस्तांतरित है। प्रख्यात शास्त्र कारों के अनुसार प्रत्येक घराना गुरु तथा शिष्य के सहयोग से बनता है एक विशेष 'घराना' घराने रुपी शब्द का मान तभी रख पाता है जब उनकी परंपरा का सिलसिला कई पीढियां तक चला रहे। जब तक एक ही परंपरा का पालन तीन पीढियां ने ना किया हो तो उसे प्रतिष्ठित रूप में घराना नहीं कहा जा सकता। प्रत्येक घराने की गायन शैली में राग,लय ताल जैसे आधारभूत नियम समान रूप से प्रयोग किए जाते हैं, किंतु उनके गायन शैली एवं स्वरों का प्रयोग भिन्न-भिन्न होने के कारण वह गायकी एक विशेषता तथा उस घराने की पहचान बन जाती है।

उपरोक्त विवरण से यह पूर्णतया स्पष्ट होता है कि[139] भारतीय संगीत में अनेक प्रकार के प्रथाएं प्रचलित हैं जिनमें मुख्य रूप से बनारस तथा हरिहरपुर घराना प्रचलित है। इन दोनों घरानों अनेक समानताएं हैं, रागों का श्रृंगारिक रूप में प्रयोग, उपशास्त्रीय भावपूर्ण गायन, लौकिक एवं पारंपरिक संगीत का प्रयोग इन दोनों घरानों के मुख्य विशेषता है। प्रसिद्ध संगीतज्ञ पंडित भोलानाथ मिश्र के अनुसार-

---

[138] संगीत घराना अंक, संगीत मासिक पत्रिका, 1982 पृष्ठ 47

[139] डा. हरिकिशन गोस्वामी भारतीय संगीत की परंपरा पृष्ठ 12-13

"अगर दूसरे शब्दों में कहा जाए तो बनारस घराना तथा हरिहरपुर घराना एक ही चने के दो टुकड़े हैं"। दोनों ही घरानों में एक निश्चित परंपरा का पालन किया गया है, तथा बनारस एवं हरिहरपुर घराने से संबंधित अनेक ऐसे कलाकार हुए हैं, जिन्होंने घरानेदार शिक्षा प्रणाली को मूल आधार बनाकर गायकी एवं अपने घराने को उत्कृष्ट प्रदान की है। इन घरानों में आनुवंशिकता तथा परंपरिकता का अद्‌भुत मेल है। घराने की परंपरा में अपनी बुजुर्गों से प्राप्त ज्ञान को नवीन पीढ़ी में उतारना इन घरानों की विशेषता है।

हरिहरपुर घराना (भौगोलिक परिवेश)

ऐसे ही परंपराओं का पालन करने वाला तथा ख्याति लब्ध घराना हरिहरपुर है, जो उत्तर प्रदेश की सांगीतिक विरासत का क्षेत्र उत्तर प्रदेश राज्य के आजमगढ़ में स्थित है। हरिहरपुर गांव धर्मनगर काशी से करीब 106 किलोमीटर तथा आजमगढ़ शहर मुख्यालय से 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है । 5000 की आबादी वाला यह गांव हरिहरपुर घराना के नाम से विख्यात है ।[140]संगीत का गुरुकुल कहे जाने वाले इस गांव के लोगों में अपनी प्राचीन काल के प्रति असीम समर्पण भाव नजर आता है ।यह घराना लगभग 200 वर्ष पुराने शास्त्रीय तथा उप शास्त्रीय संगीत की परंपरा को अपने में समेटे हुए है तथा यह घराना जिले में नहीं, बल्कि पूरे देश में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। चाहे वह लोग संगीत की कजरी हो अथवा चैती यह धुनें इतनी लोकप्रिय हुई की लोक कलाकारों के साथ-साथ शास्त्रीय संगीत के घरानों ने भी इसे आश्रय प्रदान किया।

[140] इंद्रेश मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

यह घराना लगभग छठी शताब्दी से संगीत की सेवा की ओर उन्मुख हुआ, इस घराने के कलाकारों ने देश ही नहीं विश्व स्तर तक अपनी कला का डंका बजाया है। उपशास्त्रीय संगीत विधा इस घराने की विशेष पहचान है स्वर साधक 'पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी' ने इस घराने को सर्वोच्च स्तर प्रदान किया है।[141] प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक यह घरानाअपनी विशिष्ट पहचान के साथ आज भी कायम है। आजमगढ़ जिले का हरिहरपुर गांव हरिहरपुर घराने के नाम से ही विख्यात है इस घराने से संबद्ध कलाकार संगीत के माध्यम से समाज मे प्रेम का संदेश, लोक संगीत की धारा तथा प्राचीन शास्त्रीय संगीत की विरासत को प्रसारित कर रहे हैं। वर्तमान में भी इस ग्रामीण क्षेत्र में हर सुबह शाम काफी छोटे उम्र के बच्चों को भी रियाज करते देखा सुना जा सकता है। गांव के नवीन पीढ़ी में भी संगीत के प्रति इतना समर्पण भाव है कि अपने जीविकोपार्जन के लिए अन्य काम को करते हुए भी उन्होंने इस परंपरा को जीवित रखा है।

हरिहरपुर घराने की उत्पत्ति

हरिहरपुर गांव में करीब 25 घर मिश्र परिवारों के हैं जिनके पूर्वज शास्त्रीय संगीत साधक थे और कहा जाता है -[142] जहां की संगीत परंपरा तीन पीढ़ी पुरानी हो उसे घराने का नाम दिया जा सकता है इसलिए यहां के लोग हरिहरपुर घराने के कलाकार के नाम से जाने जाते हैं। इस घराने की उत्पत्ति के लिए कई प्रकार के कथन प्रचलित है, जैसे हरिहरपुर घराने के पूर्वज बाबा श्री गोविंद साहब 1008 के शिष्य थे और प्रतिवर्ष श्री गोविंद साहब के स्थान पर लगने वाले मेले में अपने

[141] पंडित भोलानाथ मिश्र द्वारा प्राप्त जानकारी

[142] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

सांगीतिक कार्यक्रम से अपने गुरु को श्रद्धांजलि समर्पित करते थे जिनका कार्यकाल लगभग 400 वर्ष पुराना है और यही समय आजमगढ़ के नवाब आजम शाह का कार्यकाल भी रहा।

इस घराने के निर्माण के पीछे कुछ किवदंतिया प्रचलित हैं ,"[143]उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जिले के हंडिया गांव निवासी दो सगे भाई पंडित हरिनाम दास और सरिनाम दास को संगीत से अगाध प्रेम था । दोनों ही उच्च कोटि के कलाकार थे, उन्होंने सुना की हरिहरपुर गांव में कलाकारों की बहुत कद्र की जाती है तथा सांगीतिक वातावरण बहुत अच्छा है"। गांव के बारे में अच्छी बातें सुनकर दोनों भाइयों ने हरिहरपुर गांव में बसने का फैसला किया। दोनों भाइयों ने गायन वादन में और भी अधिक निपुणता हासिल की। दोनों भाइयों में सरिनाम ,जो ब्रह्मचर्य का पालन करते थे, वहीं उनके भाई हरि नाम दास का परिवार बढ़ता चला गया। इस गांव के लोग भी गीत संगीत को बहुत पसंद करते थे तथा कलाकारों के कद्रदान थे , गांव वालों के सम्मान तथा दोनों भाइयों के ज्ञान द्वारा इस घराने ने गायन वादन जैसे कृतियों को ऐसा पिरोया की पूरा गांव संगीत का गुरुकुल कहलाने लगा। गांव के बुजुर्गों के कथनानुसार की ,इन दोनों भाइयों में एक भाई ने समाधि ले ली थी जिनकी समाधि आज भी हरिहरपुर गांव में पंडित राखल मिश्र जी के दरवाजे पर स्थित है ,तथा दूसरे भाई ने गृहस्थ आश्रम का पालन किया था जिनमे

तीन पुत्र हुए और उन तीनों पुत्रों के परिवार से तीन पट्टी का निर्माण हुआ, पूर्व पट्टी , पश्चिम पट्टी , उत्तर पट्टी जिनके घरों में आज भी सांगीतिक धारा प्रवाहित है। आज भी सभी मिश्र परिवार के वंशज अपने संगीत परंपरा का प्रचार प्रसार कर रहे हैं। जब नवाबों की रियासत एवं जमींदारी प्रथा समाप्त हो गई , तो इस गांव के अनेक कलाकार जीविकोपार्जन के लिए बड़े शहरों जैसे कोलकाता, मुंबई, दिल्ली

[143] पंडित भोलानाथ मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी

,लखनऊ आदि जैसे शहरों में प्रस्थान कर गए और वही अपनी संगीत साधना द्वारा रोजी-रोटी कमाने लगे परंतु उन्होंने वहां भी अपने संगीत की परंपरा को जीवित रखा।[144] इस गांव के बुजुर्ग अपनी नई पीढ़ी में यह शिक्षा प्रदान करते हैं की संगीत की परंपरा है उनका जीवन है ,और उन्हें अपने गांव का नाम रोशन करना है। इस घराने की खासियत यह है कि इस घराने में संगीत की शिक्षा प्राप्त करने के लिए हर जाति हर धर्म के शिष्य आते हैं। घर आने के कलाकारों का मानना है कि संगीत ही एक ऐसी विधा है, जो जाति, पंथ मजहब से उठकर एक अलौकिक कार्य करती है। वर्तमान समय में संगीत का स्वरूप बदलता जा रहा है प्राचीनतम शैलियां विनाश की ओर है क्योंकि आधुनिकता का असर हर क्षेत्र पर पड़ रहा है, ऐसे में हरिहरपुर घराना अपनी प्राचीनतम विरासत को बचाने के लिए प्रयासरत है। संगीत संस्थाओं के माध्यम से हर वर्ष अगस्त माह में 'हरिहरपुर कजरी महोत्सव' का आयोजन किया जाता है जिसमें अनेक क्षेत्रों के कलाकार अपने सर्वोच्च कला का प्रदर्शन करते हैं। ऐसे आयोजनों के माध्यम से यह घराना संगीत की अपनी शास्त्रीय उपशास्त्रीय तथा लोक शैली जैसी विरासत को संरक्षण तथा संवर्धन प्रदान कर रहा है। इस घराने में शिष्यों को परंपरागत तरीके से संगीत की शिक्षा प्रदान की जाती है।

गायन शैली एवं विशेषताएं

हरिहरपुर घराने के गायन तथा वादन शैली बनारस घराने से मिलती-जुलती है या दूसरे शब्दों में कहें तो हरिहरपुर बनारस घराने का उपघराना है। [145]साहित्य का

---

[144] पंडित भोलानाथ मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी

[145] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

साफ-सुथरा तथा सुंदर प्रयोग गायन शैली मे खुली आवाज तथा लचकदार गायकी व पुकार और ठुमरी की तरह गाने का ढंग, खटका, मुर्की, जमजमा गमक, फिरत, मींड व कहन इस घराने की प्रमुख विशेषता अथवा अंग है।

हरिहरपुर घराना तथा बनारस घराने की गायकी में काफी समानता है इसके कई कारण भी हैं। हरिहरपुर गांव के काफी लोग ऐसे हैं जिन्होंने बनारस के गुणी कलाकारों से शिक्षा प्राप्त की है, यही नहीं हरिहरपुर वह बनारस के कलाकारों में आपस की रिश्तेदारियां पहले भी थी व आज भी है। अनेक गुणी कलाकारों का हरिहरपुर में आगमन भी होता था जैसे - मशहूर गायक तथा रचनाकार पंडित सजीले जी मिश्र , संगीत आचार्य पंडित बड़े रामदास जी मिश्र एवं पंडित छोटे रामदास जी मिश्र, पंडित अनोखे लाल मिश्र, पंडित कंठे महाराज , पंडित महादेव मिश्र ,पंडित शारदा सहाय ,पंडित हनुमान प्रसाद, पंडित श्री गोपाल जी मिश्र, पंडित कृष्ण महाराज ,पंडित शामता प्रसाद गुदई महाराज व लखनऊ के पंडित शंभू महाराज पंडित, बिरजू महाराज जी, इन गुणी कलाकारों का आगमन सुअवसरों पर हुआ करता था और संगीत की संगोष्ठी भी हुआ करती थी।

गुणी कलाकार पंडित भोलानाथ मिश्र के शब्दों में ,की बनारस घराना तथा हरिहरपुर घराना एक चने के दो टुकड़े हैं तथा हरिहरपुर घराना बनारस घराने की ही एक शाखा है।

इस घराने के प्रसिद्ध कलाकारों में पंडित छन्नूलाल मिश्र' कैफ़ी आज़मी, राहुल सांकृत्यायन 'पंडित अयोध्या सिंह उपाध्याय, (हरिऔध) अल्लामा शिब्ली नोमानी, पंडित भोलानाथ मिश्र, मालिनी अवस्थी शंभू नाथ मिश्र, प्रवीण कुमार, आयुष मिश्र, पन्नालाल मिश्र, दीनानाथ मिश्र, नवरत्न मिश्रा राखल मिश्र जीवनलाल मिश्र सावन प्रसाद मिश्र आदि संगीत के सुप्रसिद्ध कलाकारों ने इस घराने को ख्याति प्रदान की है। यहां ऐसे अनेक कलाकार हुए जिन्होंने संगीत की शिक्षा यहां से प्राप्त की तथा बनारस तथा अनेक संगीत संबंधित क्षेत्र मे जीविकोपार्जन के लिए प्रस्थान किया।

किंतु अपने घराने की पहचान को अपने साथ लेकर गए तथा उन्हें वर्तमान में भी अनेक क्षेत्रों में प्रसारित कर रहे हैं।

हरिहरपुर घराने से संबंधित कलाकार

इस गांव मे तीन परिवारों की पीढीयों से तीन पट्टी का निर्माण हुआ-- पूर्व पट्टी, पश्चिम (बड़ा पट्टी) तथा उत्तर पट्टी अर्थात मोहल्ला। इस आधार पर तीन क्षेत्र वर्गीकृत है।

(बड़ी पट्टी) क्षेत्र से संबंधित कलाकार

पंडित ढोलई प्रसाद मिश्र (सारंगी), इनके पुत्र पंडित बद्री प्रसाद मिश्र (तबला), पंडित चानिका प्रसाद मिश्र (गायन), पंडित छांगुर मिश्र (सारंगी)[146]

पंडित मानिका प्रसाद मिश्र (तबला), पंडित बद्री प्रसाद के पुत्र पंडित छन्नूलाल [147]मिश्र(गायन), पंडित विश्वनाथ मिश्र(तबला) उनके पुत्र नित्यानंद मिश्र पंडित, शिवजी मिश्र (नृत्य) इनके पुत्र हरि मिश्र (तबला) रवि मिश्र (गायन) छन्नूलाल मिश्र जी के पुत्र पंडित रामकुमार मिश्र एवं उनके पुत्र राहुल (तबला)पंडित चानिका मिश्र के पुत्र भगवती प्रसाद (गायन) पंडित प्रदीप मिश्र (तबला) उनके पुत्र अजीत, सुजीत (गायन)पंडित मनिका प्रसाद के पुत्र सुनील मिश्र(तबला) अनिल मिश्र (वायलिन) पंडित सोना मिश्र संदीप मिश्रा के पुत्र पंडित जोखु मिश्र (नृत्य) पंडित देवी प्रसाद मिश्र (सारंगी) इनके केपुत्र पंडित श्याम लाल मिश्र (सारंगी) पंडित कांता मिश्र (सारंगी) पंडित फुन्नूलाल मिश्र (तबला) कांता प्रसाद के पुत्र सोहनलाल (सारंगी) अरुण लाल मिश्र के पुत्र अनिल मिश्र (हारमोनियम), हृदय मिश्र (गायन), मुन्नालाल

---

[146] पंडित भोलानाथ मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी
[147] पंडित भोलानाथ मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी

(तबला) अजय मिश्र (तबला) आनंद मिश्र (तबला), अरुण लाल मिश्र के पुत्र अनिल मिश्र (हारमोनियम), हृदय मिश्र (गायन), विवेक मिश्र (सारंगी) मुन्ना लाल के पुत्र संदीप मिश्र (तबला), विशाल मिश्र (तबला) विकास मिश्र (तबला), पंडित श्याम लाल के पुत्र श्री मणिलाल मिश्र (तबला), श्री मोहन मिश्र (सारंगी), श्री बांके मिश्र (हारमोनियम), श्री नन्हे लाल मिश्र (तबला), श्री रतन लाल मिश्र (तबला) , श्री मणिलाल के पुत्र संतोष मिश्र (गायन) मोहनलाल के पुत्र अनूप मिश्र (हारमोनियम), दीप राज मिश्र (तबला), दिनेश मिश्र (सारंगी), गौरी शंकर मिश्र (तबला), नन्हे लाल के पुत्र दयाशंकर (तबला), अनूप मिश्र के पुत्र हर्ष मिश्र (तबला), फुन्नू जी के पुत्र मिनमिन मिश्र (तबला), पंडित चंद्रबली मिश्र (गायन), उनके पुत्र शिव पूजन मिश्र (गायन), शिव पूजन के पुत्र सतीश मिश्र (तबला) योगेश मिश्र (गायन एवं हारमोनियम), पंडित सूर्य बली मिश्र के पुत्र पंडित महेश प्रसाद मिश्र (सारंगी), पंडित लक्ष्मी नारायण मिश्र (तबला) श्री मुरारी मिश्र (गायन) श्री चंद्रभान मिश्र (तबला), महेश प्रसाद मिश्र के पुत्र राजेश मिश्र , गितेश मिश्र (युगल गायन), लक्ष्मी नारायण के पुत्र पुरुषोत्तम मिश्र (तबला), कमलेश मिश्र (सारंगी), मुरारी के पुत्र उत्तम (गायन), मोहन मिश्र (तबला) बृजेश, सुरेश व शीतला प्रसाद (गायन), उत्तम के पुत्र सत्यम (तबला), शिवम(गायन), चंद्रभान के पुत्र पंकज मिश्र (तबला), गुड्डू मिश्र (हारमोनियम), पंडित तपस्या मिश्र (सारंगी), उनके पुत्र पंडित तारकेश्वर मिश्र (सारंगी), पंडित रामबली मिश्र (सारंगी), पंडित घनश्याम मिश्र (तबला), पंडित तारकेश्वर जी के पुत्र रमेश (तबला), पंडित घनश्याम मिश्र के पुत्र राजेश (तबला), चंदन मिश्र (तबला), राजेश मिश्र के पुत्र आदर्श (गायन) पंडित राम प्रसाद जी (सारंगी), उनके पुत्र पंडित विद्या मिश्र (गायन), सूरज मिश्र (तबला एवं नृत्य), छोटेलाल (तबला), उनके पुत्र शशिकांत मिश्र (हारमोनियम), सूरज मिश्र के पुत्र कमलेश मिश्र बृजेश मिश्रा (हारमोनियम, गायन)

पंडित राजपत मिश्र (तबला), उनके पुत्र बसंत मिश्र (सारंगी), पंडित दरेश मिश्र (गायन), उनके पुत्र पंडित कृष्णानंद मिश्र (गायन) उनके पुत्र डिंपू , रिंकू (गायन)[148] पंडित सोना मिश्र (तबला), उनके पुत्र पंडित जोखू मिश्र (नृत्य), पंडित गोपी मिश्र (सारंगी) उनके पुत्र पंडित किशोर मिश्र एवं पंडित शिव सेवक मिश्र (सारंगी), शिव सेवक मिश्र के पुत्र राजेश मिश्र (सारंगी), पंडित फुलर मिश्र (गायन) इनकी नवीन पीढ़ी भी संगीत क्षेत्र मे ही कार्यरत है।

पंडित काशी मिश्र (सारंगी) पंडित मतनु मिश्र (सारंगी), पंडित मारकंडेय मिश्र (गायन), पंडित काशी मिश्र के सुपुत्र भानु प्रताप मिश्र (तबला) अनिल मिश्र (सारंगी)

पश्चिम पट्टी (बड़ा पट्टी) क्षेत्र से संबंधित कलाकार

पंडित राम जी मिश्र (गायन), उनके पुत्र पंडित शिव मिश्र (गायन व सारंगी), पंडित शिव मिश्र के पुत्र पंडित राखल मिश्र (गायन व सारंगी), पंडित राखाल मिश्र के पुत्र पंडित दीनानाथ मिश्र (गायन) , पंडित शंभू मिश्र (तबला), पंडित सारनाथ मिश्र (गायन) , पंडित पशुपति नाथ मिश्र (तबला), पंडित भोलानाथ मिश्र (गायन) पंडित काली नाथ मिश्र (तबला), पंडित दीनानाथ मिश्र के पुत्र राजेश मिश्र (तबला), मंगल मिश्र (गायन), पंडित शंभूनाथ मिश्र जी के पुत्र विवेक मिश्र (गायन), आलोक मिश्रा पंडित सारनाथ मिश्रा के पुत्र अमित मिश्र (गायन), पंडित[149] पशुपति नाथ मिश्र के पुत्र अभिषेक मिश्र (तबला) पंडित भोलानाथ मिश्र के पुत्र शिवम मिश्र (गायन) पंडित काली नाथ मिश्र के पुत्र कमल मिश्र (तबला), कपिल मिश्र (गायन), पंडित ज्वाला मिश्र (गायन) उनके पुत्र पंडित नवरत्न मिश्र (सारंगी एवं गायन), पंडित रामाश्रय मिश्र (सारंगी) पंडित रामाश्रय जी के पुत्र पंडित राम सूरत मिश्र (सारंगी),

[148] पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी

[149] पंडित भोलानाथ मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी

श्री बलिराम मिश्र (तबला), रामसूरत मिश्र के पुत्र नरेंद्र मिश्र (गायन), उदय शंकर मिश्र (गायन), राजेंद्र मिश्र के पुत्र दिवाकर (गायन), बलराम मिश्र के पुत्र रवि शंकर मिश्र (तबला), विजय व अजय मिश्र (तबला), पंडित नवरत्न के पुत्र पंडित जगदंबा मिश्र (गायन), जगदंबा मिश्र के पुत्र आनंद मिश्र (गायन), आनंद मिश्र के पुत्र अभिषेक मिश्र (गायन), अभिनंदन मिश्र (तबला) पंडित ललित प्रसाद मिश्र, उनके पुत्र पंडित लखन लाल मिश्र, पंडित माखनलाल मिश्र पंडित सखन लाल मिश्रा, (सारंगी) लखन लाल के पुत्र श्री सोना मिश्र (हारमोनियम) श्री योगेंद्र मिश्र (तबला) सोना मिश्र के पुत्र स्वतंत्र कुमार (तबला), पंडित मेवा मिश्र (गायन), पंडित चुन्नीलाल मिश्र (गायन), पंडित सर्वजीत मिश्र उर्फ 'जीत' (गायन) पंडित मेवा मिश्र के पुत्र पंडित घुरहू मिश्र (गायन) एवं पंडित कासु मिश्र (गायन)।[150]

उत्तरपट्टी -- क्षेत्र से संबंधित कलाकार

पंडित हरि नारायण मिश्र (गायन) उनके पुत्र पंडित हरिप्रसाद मिश्र (सारंगी वादक), उनके पुत्र पंडित राजेश्वर मिश्र (सारंगी वादक), उनके पुत्र पंडित प्रेमनाथ मिश्र, डॉ मनोज मिश्र एवं पंकज मिश्र (गायन), पंडित राम किशोर मिश्र के पुत्र विजय प्रकाश (तबला) त्रिपुरारी मिश्र (तबला) प्रमोद मिश्र (गायन) पंडित शिवकुमार मिश्र (सारंगी), उनके पुत्र अनंत मिश्र (गायन), शशि भूषण मिश्र (तबला), अनंत मिश्र के पुत्र अमित मिश्र (नृत्य), आनंद मिश्र (तबला), दयाराम मिश्र (सारंगी), उनके पुत्र कमलेश मिश्र (तबला), सुरेश मिश्र (तबला), प्रवीण मिश्र (गायन) , संकठा मिश्र के पुत्र दीपक (वायलिन), कमलेश मिश्र के पुत्र आदर्श कुमार (गायन), आशीष (सारंगी) आलोक(तबला)।

[150] पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी

पंडित राम प्रताप मिश्र (सारंगी) उनके दो पुत्र सुरेंद्र कुमार (सारंगी) श्री माता सेवक (गायन)सुरेंद्र कुमार के पुत्र अनुप, अनिल, दिलीप, व मुन्नी (गायन), माता सेवक जी के पुत्र अचल चंचल (गायन)पंडित उदित मिश्र (सारंगी), उनके पुत्र पंडित सजीवन मिश्र (गायन), पंडित राम आधार मिश्र (तबला), पंडित लूरू मिश्र (सारंगी), पंडित लालमन मिश्र (सारंगी), पंडित सजीवन के पुत्र पंडित काशी प्रसाद (गायन) काशी प्रसाद के पुत्र अशोक मिश्र, राम कुमार मिश्र , प्रदीप मिश्र, व मुन्नी मिश्र (गायन), अशोक मिश्र जी के पुत्र नीरज मिश्र (गायन), द्वारिका मिश्र (गायन), वरुणेश मिश्र (गायन) राजकुमार मिश्र के दो पुत्र आकाश मिश्र (तबला), शिवम मिश्र (गायन)

पंडित गिरजा मिश्र (गायन), उनके पुत्र वासुदेव मिश्र (गायन), उनके पुत्र पंडित पन्नालाल मिश्र (गायन), पंडित रवि लाल मिश्र (हारमोनियम) संतलाल मिश्र (हारमोनियम), पन्नालाल जी के पुत्र जितेंद्र मिश्र (गायन), जितेंद्र के पुत्र कौशल ऋषिकेश, शिवांकर (गायन), रवि लाल के पुत्र रितेश (गायन), श्रीकांत (हारमोनियम) राहुल, अभिषेक (गायन) पंडित संतलाल के पुत्र अंकुर, अंबर (हारमोनियम)

पंडित महावीर मिश्र (सारंगी), पंडित भैरो मिश्र (सारंगी) पंडित शंकर मिश्र (तबला), पंडित गणेश मिश्र (तबला), पंडित महावीर के पुत्र पन्नालाल मिश्र (सारंगी)पन्नालाल के पुत्र वीरेंद्र मिश्र ,रविंद्र मिश्र, महेंद्र मिश्र (हारमोनियम) वीरेंद्र मिश्र के पुत्र रजनीश (हारमोनियम) सूरज मिश्र (तबला) भैरो मिश्र के पुत्र पंडित अंबिका प्रसाद मिश्र (तबला), गोपाल मिश्र (हारमोनियम) अंबिका प्रसाद के पुत्र मनीष (तबला)[151]

पंडित श्री नंदन मिश्र (सारंगी) उनके पुत्र पंडित मुनन मिश्र, गायन इनके चार पुत्र पंडित चिंतामणि मिश्र ,पंडित रामेराम मिश्र ,पंडित राधेश्याम मिश्र, पंडित श्याम बिहारी मिश्र, सभी भाई (सारंगी वादक), चिंतामणि मिश्र जी के पुत्र परशुराम मिश्र

[151] पंडित भोलानाथ मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी

(गायन), परशुराम जी के पुत्र बबलू (गायन) प्रवीण (हारमोनियम) रामेराम जी के पुत्र श्रवण कुमार मिश्र (तबला) पंडित सुदर्शन मिश्र (गायन) श्रवण कुमार जी के पुत्र (तबला) कान्हा (हारमोनियम), किशन (गायन) सुदर्शन मिश्र जी के पुत्र सुमित (तबला) श्याम बिहारी जी के पुत्र अजय मिश्र (गायन) अजय मिश्र के पुत्र नितिन (गायन), राहुल (गायन)पंडित गुरु सहाय मिश्र (तबला), पंडित राम सहाय मिश्र (तबला), गुरु सहाय मिश्र जी के पुत्र पंडित शिवपूजन मिश्र उर्फ कुलकुल मिश्र (सारंगी), पंडित बुलबुल प्रसाद मिश्र (तबला), पंडित यदुनाथ मिश्र (सारंगी) पंडित अमरनाथ मिश्र (तबला), कुलकुल मिश्र के पुत्र भवानी मिश्र (तबला) भवानी मिश्र के पुत्र शीतला प्रसाद मिश्र (तबला) बुलबुल महाराज के पुत्र काली प्रसाद (तबला), चंडिका प्रसाद मिश्र , दुर्गा प्रसाद मिश्र व माया मिश्र (तबला) काली प्रसाद के पुत्र गोविंद (गायन), अमरनाथ के पुत्र जालीपा (गायन), विष्णु (तबला) उत्तम (तबला), गौतम (गायन)जालीपा के पुत्र गौरव (तबला) विष्णु के पुत्र भास्कर (गायन) इन्हीं के परिवार में पंडित दीप नारायण के पुत्र पंडित रामचंद्र मिश्र (सारंगी), उनके पुत्र डॉक्टर गजेंद्र मिश्र , दिवाकर मिश्र (संगीत प्रेमी) शक्ति मिश्र (सारंगी) डॉ गजेंद्र मिश्र के पुत्र विश्वजीत मिश्र (गायन) दिवाकर मिश्र के पुत्र आशुतोष, अभिषेक, अजय (गायन), पंडित बच्चन मिश्र (सितार वादक), उनके पुत्र पंडित चमन लाल मिश्र (सितार वादक), पंडित शांतिलाल मिश्र (तबला), पंडित गणेश प्रसाद मिश्र (गायन) पंडित सुखदेव मिश्र चमनलाल जी के पुत्र रतनलाल मिश्र (सितार) शांतिलाल के पुत्र मदन मिश्र (सितार), कृष्ण मुरारी (गिटार) गणेश प्रसाद मिश्र जी के पुत्र श्री विद्याधर मिश्र (गायन) श्री गिरधर मिश्र (तबला) सुखदेव जी के पुत्र रमेश मिश्र (सितार) पवन मिश्र (तबला) आदित्य मिश्र (सितार)[152]

[152] पंडित भोलानाथ मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी

बनारस घराना:उत्पत्ति एवं विकास

काशी की संगीत परंपरा का क्रमबद्ध इतिहास प्रमाणिकता के अभाव में प्राप्य सहाय किंतु 16वीं शताब्दी के पूर्व के इतिहास का अवलोकन करने पर कहीं-कहीं घटनाक्रम के माध्यम से यह पूर्णतया स्पष्ट है कि यह नगरी संगीत और कला से अछूती कभी नहीं रही। संस्कृति तथा कला की राजधानी के रूप में सदियों से विराजमान है। प्रसिद्ध गायक पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के अनुसार "बनारस की संगीत परंपरा केवल सुनने की नहीं है, यह रसपान तथा आनंद का माध्यम है"।[153] उत्तर वाहिनी गंगा के तट पर स्थापित या नगर सांस्कृतिक महत्ता से परिपूर्ण है, यहां के महात्मा, आलिया, साहित्यकार, चित्रकार, पीर, फकीर गुण ग्राहय राजा, धनाढ्य एवं संगीतज्ञों की पीढीयो का योगदान सदैव विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिनकी प्रकांड विद्वता से समय-समय पर यह नगरी आलोकित होती रही है। इस घराने के संगीतजों ने अपनी विशेष साधना से इस क्षेत्र को साधना स्थली के रूप में विकसित किया है। बनारस में संगीत एवं संगीत के साधना करने वाले कलाकारों का पूर्ण रूपेण आदर्श समान है नागरिकों के सामान्य जनजीवन में पारिवारिक,सामाजिक, धार्मिक एवं मांगलिक उत्सवों के अवसर पर संगीत नृत्य का समावेश होता है।

संगीत बनारस का प्राण तत्व है,यहां के वातावरण में संगीत घुला है गंगा की आरती के साथ ही संगीत प्रारंभ होता है, तथा गंगा के घाट पर सूर्य अस्त के साथ ही संध्या होती है। कहां जाता है कि 'यहां के कलाकारों की सुबह गंगा स्नान के पश्चात भगवान शिव के दरबार में हाजिरी स्वरूप रियाज से आरंभ होता है'।[154] अनेक मंदिर तथा देवालय धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रदर्शन का मुख्य केंद्र है इनके माध्यमों से संस्कृति

[153] प्रसिद्ध गायक पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी

[154] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

की धारा प्रवाहित है। समय-समय पर इन देवस्थानों में आयोजित जन्मोत्सव, वार्षिकोत्सव, झूलोत्सव आदि विशेष अवसरों पर नृत्य संगीत जैसी कला का रसास्वादन सामान्य जनमानस को भी सहज रूप से प्राप्त होता है। बनारस घराना हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के प्रसिद्ध घरानों में एक है, तथा शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय संगीत के संरक्षण एवं संवर्धन में इस घराने का विशेष योगदान है। संगीत कला के उच्चतम कला साधकों के श्रृंखलाबद्ध परंपरा तथा काशी की महत्ता सदियों से राष्ट्र गौरव का प्रतीक है। गायन वादन तथा नर्तन की विविध श्रेणियों के प्रणेता तथा विद्वानों के रूप में काशी की सम्मानित विभूतियों ने संगीत जगत में सदैव कीर्तिमान स्थापित कर इस स्थान को गवांवित किया है।

संगीत की त्रिविधाएं गायन,वादन तथा नृत्य इन तीनों ही शैलियों को इस नगर में आत्मसात किया है। काशी की कला तथा मूर्धन्य कलाविदों पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही, गुरु शिष्य परंपरा की श्रृंखला द्वारा राष्ट्र, समाज तथा संगीत क्षेत्र को सुनहरे हस्ताक्षर दिए हैं।

प्रचलित गायन शैलियां

इस घराने में शास्त्रीय उपशास्त्रीय टप्पा ठुमरी ,ख्याल ,चैती ,कजरी आदि अनेक विधाएं प्रचलित हैं तथा उपशास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में यह सर्वोत्तम स्थान पर सुशोभित है। [155]इस गायन पद्धति में शब्दों का स्पष्ट उच्चारण तथा भावनाओं को स्वरों के माध्यम से सशक्त प्रकटीकरण इस घराने की मुख्य विशेषता है।बनारस घराने के गायक ख्याल तथा उपशास्त्रीय शैली के लिए प्रसिद्ध हैं, गायक शुद्ध तथा

[155] पंडित शिवजी मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

स्पष्ट उच्चारण एवं संवाद युक्त गायन शैली का प्रयोग करते हैं टप्पा गायन, ख्याल तथा ठुमरी आदि भी इन्हीं विशेषताओं से परिपूर्ण है

सादगी एवं भावुकता

बनारस घराने के गायक सहज व सरल गायकी को विशेष महत्व देते हैं, साथ ही अपने गायन में भावुकता युक्त स्वर एवं भावपूर्ण शैली का प्रयोग करते हैं। अपनी कल्पना शक्ति के माध्यम से बोल बांट तथा बोल बनाव आदि का विशेष तौर पर प्रयोग करते हैं जो यहां की गायकी को चार चांद लगा देती है।[156]

सौंदर्य एवं लालित्य का उपयोग

घरानेदार गायको में आवाज में माधुर्य, सुंदरता एवं लालित्य का पूर्ण समावेश होता है। परंपरागत तकनीक का पालन एवं स्वरों का मधुरतम प्रयोग घराने की विशेषता है, तथा रागो के श्रृंगारिक रूप का बेहतरीन प्रदर्शन यहां के कलाकारों में विशेष रूप से दृष्टिगत होता है।

साहित्यिक भाषा

इस घराने के कलाकार प्रदर्शन के दौरान साहित्यिक भाषा का स्पष्टतम रूप प्रयोग करते हैं तथा शब्दों के शुद्ध उच्चारण पर विशेष ध्यान देते हैं। गायन के दौरान शब्दों की ओजस्विता तथा परंपरिकता का विशेष ध्यान रखा जाता है तथा लयकारी अथवा बोल बांट के दौरान रागहानी ना हो, गायकों के लिए यह महत्वपूर्ण विषय होता है।

परंपरा का पालन

काशी में संगीत की सभी विधाएं अपनी परंपरा अनुसार चली आ रही हैं, यहां चारों पट की गायकी विद्यमान रही है, जिसमें ध्रुपद, धमार, ख्याल, ठुमरी, टप्पा से लेकर

[156] पंडित शिवजी मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

कजरी, चैती, गीत, गजल लोकगीत आदि की मधुर गुंजन यहां के वातावरण में प्रचलित है।[157] इस घराने की गायकी प्राचीनतम है, ध्रुपद (विष्णुपद)से लेकर लोकगीत गायन तक बनारस का संबंध है। कोई भी घराना अपने विशिष्ट शैली लक्षणों तथा गुणों परिचायक होता है। इस घराने की गायकी में कलात्मक मौलिकता तथा उत्कृष्टता के दर्शन होते हैं रागों का स्पष्ट उच्चारण, बहलावा साहित्य आदि सभी गुण विद्यमान है।

घराने में प्रचलित महत्वपूर्ण तथ्य -

बनारस घराने में रागों की प्रकृति के अनुसार ही बंदिश के बोल एवं शब्दों का चयन होता है, इसलिए बंदिश का अभ्यास विशेष रूप से ध्यान पूर्वक किया जाता है। जैसी रागों की बंदिश होती है, उसी प्रकार रागों की बढ़त आदि का काम किया जाता है। रागों के स्वरूप को मंद्र, मध्य तथा तार तीनों सप्तकों में दर्शाया जाता है, समायोजित रागों को उचित समय गाने बजाने तथा सीखने की परंपरा भी इस घराने में प्रचलित रही है।स्वरों का लगाव एवं भावात्मकता इस घराने की विशेषता है। बनारस घराने की गायकी बढ़त की गायकी है। काकु का प्रयोग, तीनों सप्तक की गायकी, बेडार अंग की तानों का प्रयोग, तानों का स्पष्ट उच्चारण, गायकी में खटका, मुर्की, मींड,गमक तथा वह वैविध्यपूर्ण तानें एवं लय युक्त गायकी इस घराने की अन्य विशेषताएं हैं। राग पूर्वांग वादी है या उतरांग वादी होने का स्पष्टीकरण या बारीकियां बंदिश से ही पता लगती है ।उच्च कोटि की साहित्यिक रचना, स्वर,शब्द,लय,ताल से युक्त रागों के स्वभाव अनुसार तथा स्वरूप के अनुसार रचना की क्षमता तथा एक राग में एक बंदिश ना होकर विविधता पूर्ण बंदिश प्राप्त होते हैं। बनारस घराने की बंदिशें एवं उनका अनूठा चलन अन्य घरानों से भिन्न है, राग

[157] पंडित शिवजी मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

की शुद्धता एवं मौलिकता प्रमाणित करते हुए कल्पनाशीलता एवं सृजनशीलता के माध्यम से अनेक भावों को प्रस्तुत किये जाते हैं।

गायकी पर[158] "खंडमेरू पद्धति"का प्रभाव "गुरु शिष्य परंपरा की शिक्षा पद्धति" सभी कलाकार गायन के सभी विधाओं ध्रुपद,धमार,ख्याल, चतुरंग सरगम, टप्पा, टप्प ख्याल, ठुमरी, दादरा, होरी, चैती, कजरी आदि के साथ अनेक वाद्यों को बजाने में प्रवीण विद्वान इन विधाओं के अतिरिक्त नृत्य विधा में भी पारंगत हुए हैं।

बनारस की ख्याल गायकी में सादगी के साथ-साथ ओजस्विता एवं भाव की प्रधानता रहती है, सधी हुई गोलाई युक्त आवाज माधुर्य, सुंदरता एवं लालित्य की प्रधानता लिए हुए संवाद युक्त गायन साहित्यिक भाषा के साथ स्वर के शब्दों का शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण, मुद्रा दोषरहित गायन शैली एवं भावपूर्ण स्वरों को लगाने का ढंग, यहां की मुख्य विशेषता है।

आलापचारी में भाव को प्रधानता दी जाती है, तथा अलाप का कार्य बोल आलाप और आकार आलाप दोनों ही प्रकार से किया जाता है ।स्वरों का भाव से तथा एक हृदय स्पर्शी अंदाज में पिरोते हुए शब्दों के अंतर्गत व्यंजनों तथा स्वरों की श्रुति के अद्भुत सम्मिश्रण के ध्वन्यांकन बिंदुओं का ध्यान रखते हुए बोल आलाप किया जाता है। बंदिश के बोल के उच्चारण में खुलापन इस घराने में मुख्य रूप से दर्शित होता है, बंदिश की प्रत्येक पंक्ति पर आलाप, बोल आलाप लय बांट, बोलतान, पुकार अथवा हरकतों का विशेष प्रयोग होता है। बंदिश में लय ताल योजना विशेष लयकारी में बोलों का उच्चारण तथा उसमें अलंकारों का आकर्षक प्रयोग किया जाता है। बंदिश में सौंदर्य तत्व की रक्षा करते हुए लयकारी में बोलो एवं स्वर उच्चारण के माध्यम से विशेष काकू भाव व्यंजन इस घराने की प्रमुख विशेषता है।

[158] डॉ इंद्रेश मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

लयकारी के समय साहित्य के मुख्य रस तथा बिंदुओं का ध्यान रखना, बंदिश के बोलों का लयकारी में प्रयोग करना, तथा बोल, बढ़त, बोल बांट आदि में स्वर, लय ,ताल का सार्थक संयोजन करना कि घराने की विशेषता है। गायन करते समय दुगुन, तिगुन, चौगुन, आड़, कुआड़ आदि लयकारीयों का प्रयोग के अलावा लड़न्त आदि क्रिया का भी विशेष तौर पर प्रयोग होता है। लय, लड़ी-गुथाव लपेट तथा कठिन लयकारीयों का सहज प्रयोग ,तान प्रस्तार अंग में समझदारी से अलंकारों का तथा सरगम का प्रयोग किया जाता है, सरल, सपाट, फिरत आदि अनेक प्रकार की तानों को वरीयता दी जाती है। लय के अनुसार ताने चलती हैं, स्वरों को जोड़ बनाकर प्रस्तार करना ही तान प्रस्तार है, यह राग प्रस्तार का एक अभिन्न अंग होता है। लय को देखकर लय के हिस्से की तान, सरगम का स्पष्ट उच्चारण, अलंकारिक तान, फिरत की तान कूट तान टप्पे की तान आदि अनेक प्रकार के तानों का प्रयोग किया जाता है।[159] कलाकार गायकी और नायकी जैसे भेद में समान रूप से पारंगत होते हैं तथा बंदिश को कहने का ढंग बहुत सुंदर होता है। खयाल गायकी में ध्रुपद तथा अन्य गायन शैलियों का भी उचित समावेश है।

बनारस घराने के संगीतज्ञ एवं शिष्य परंपरा के अनुकरणीय लोग "चारों पट" की गायकी यानी ख्याल के साथ ठुमरी, टप्पा, कजरी, चैती, भजन, गजल तथा ध्रुपद धमार आदि गए शैलियों में भी पारंगत रहे हैं। एक ही महफिल में कभी धमार कभी ध्रुपद कभी-कभी उपशास्त्रीय गायन भी दृष्टिगत होता रहता है। ध्रुपद, धमार, गायन की प्रस्तुति विशेष अंग बोल- बांट उपज की लयकारियों से सजाई जाती है, तथा ठुमरी गायन के लिए आवश्यक लोचदार कंठ एवं भाव युक्त प्रस्तुति, दोनों ही प्रस्तुति में भाव की प्रधानता तथा बोलों के माध्यम से पुकार काकु भाव की अभिव्यक्ति यह सभी गुण बनारस घराने की संगीतज्ञों में विशेष रूप से पाए जाते

[159] डॉ इंद्रेश मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

हैं ।ध्रुपद से लेकर लोकगीत तक की परंपरा यहां दृष्टिगत होती है। राग के स्वरों को लेखन उस पर सार्थक शब्द की रचना करना जिसे "स्वरकल्प" कहा जाता है यह विशेष रूप से इस घराने में दर्शनीय है।

ख्याल शैली में सौंदर्य तत्वों का विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण

ख्याल का साहित्यिक सौंदर्य-

भारतीय मनीषियों की दृष्टि में धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष चार पुरूषार्थ हैं इन पुरुषार्थों की प्राप्ति मानव जीवन का मुख्य ध्येय है। [160] काव्य और गीत का प्रयोजन यश, अर्थ,व्यवहार, ज्ञान, अमंगल की शांति तथा लोक रंजन है। काव्य को गीत का ही अंग माना गया है, तथा काव्य के लिए संगीत शास्त्र में 'पद'शब्द का प्रयोग हुआ है, पद शब्द का अर्थ है- 'बंदिश' साहित्यिक सौंदर्य पर दृष्टिपात करने के लिए पदों का विशेष महत्व है, पदों द्वारा प्रस्तुत गीत के वर्णन, विषय, भाषा तत्व, रस तत्व ,अलंकार एवं छंद आदि साहित्यिक विषयों पर संगीत की दृष्टि से निम्नवत विचार किया गया है।

भक्ति परक ख्याल

ईश भक्ति

राग श्री झपताल मध्य लय

स्थाई-- प्रभु के चरण कमल,

निश दिन सुमिरिये भावधर सुध,भितर भव जलधी तर

अंतरा- जोई जोई धरत ध्यान,पावत समाधान

---

[160] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

हर रंग कहे ज्ञान, अब हूं चित धर रे।।[161]

गुरु भक्ति-

नटभैरव विलंबित एक ताल

स्थाई- करो कृपा मोपे सद्गुरु
आज शरणागत हूं तुमरे द्वारे

अंतरा- दिन दुनिया में तेरो ही नाम
"रामदास"विनती कर रखियो लाज

कृष्ण भक्ति –

राग जौनपुरी द्रुत ख्याल तीनताल
स्थाई- प्यारे कन्हाई ना मारो कंकरिया
मोरी फूटेगी सारी गगरिया हां हां
अंतरा- गगरी फूट मोरी भीजेगी चुनरिया
ताना मारेगी सास ननदिया

उत्सव संबंधी-

राग धानी तीन ताल मध्

स्थाई- मंदिर बाजो रे बाजो रे

[161]पद्म विभूषण भूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी

मोरे द्वारे मोर मनमीत आवन कीनो

अंतरा- सब सखियां मिल नाचो गाओ
धूम मचाओ पिया को रिझाओ[162]

नायक नायिका संबंधी
राग बागेश्री तीनताल मध्यलय

स्थाई- बलमा मोरी संग लागली प्रीत
अंतरा- घर अंगना कछु नहीं भावे
सदारंग देखी प्रीत की रीत

ख्याल का सांगीतिक सौंदर्य

राग शब्द उन कतिपय पर शब्दों में से एक है जो बहुत से अर्थों का बोध कराता है- हर्ष, शोक,क्रोध, उत्साह आदि अनेक भावों की अभिव्यक्ति के लिए विभिन्न स्वरावलियों के समन्वय को चिंतनशील एवं मननशील कलाकारों ने निर्धारित किया है। बंदिश राग की एक विशिष्ट आकृति है जिसके द्वारा उस राग के स्वरूप एवं स्वभाव को स्पष्ट किया जाता है। ख्याल की बंदिशों के द्वारा संगीतात्मक एवं लयात्मक सौंदर्य को स्पष्ट किया जा सकता है, जैसे ख्याल शैली में बंदिशें अत्यंत महत्वपूर्ण है। नवीन आकृति का सौंदर्य प्रतिबिंबित करने के लिए, एक ही राग के कई रूप दिखाने के लिए बंदिश एक महत्वपूर्ण तरीका है, यह गीत रागों के उत्तमोत्तम नमूने हैं, जो ख्याल गायन को समृद्ध तथा परिष्कृत करते हैं।

[162] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

ध्रुपद अंग के ख्याल—

कुछ रागों में ख्याल की बंदिशें ध्रुपद अंग से भी गाई जाती हैं जैसे--

राग कल्याण तीनताल गदाधर मिश्र कृत

स्थाई- ब्रजधार गिरधर मुरलीधर घर

धरनी धर माधो पीतांबर

शीश मुकुट धरे गोप वेश धरे

अंतरा- नगधर पटधर निशान पटधर

चक्र गदाधर अधर सुधा धर,जयति

जयति जय जयति जय जयति कालिया

फन पर चरण कमल वर[163]

ठुमरी अंग के ख्याल

ठुमरी के दो प्रकार हैं --बंदिश की ठुमरी तथा बोल-बनाव ठुमरी। बंदिश की ठुमरी में शब्द ज्यादा होते हैं। शब्द तथा स्वर रचना बंधन युक्त होती है, मात्राओं के वजन का ध्यान रखा जाता है, तथा यह छोटे ख्याल से मिलती-जुलती है।

द्रुत ख्याल की ठुमरी अंग की बंदिश—

राज खमाज तीनताल द्रुत लय-

स्थाई- ना मानूंगी ना मानूंगी ना मानूंगी

पिया के मनाए बिना

[163] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी

अंतरा-जावो जी,जावो जी वे हुए तो अपने रंग के रसिया
ना जाऊंगी ना जाऊंगी ना जाऊंगी उनके मनाए बिना

टप्पा अंग के ख्याल

बनारस घराने में टप्पा अंग की बंदिशे भी प्राप्त होती हैं जो "राग भूपाली" में इस प्रकार से हैं--

स्थाई- जू मन जोबन मानदावे
मियाँ सिंदी नजरावे खणदा
अंतरा- इश्क ताडा माडे जिंदगी रे दास
हाल हुसैन दास कोई मा[164]

तिरवट, चतुरंग एवं ख्याल

चार प्रकार की चीजों को मिलाकर चतुरंग की रचना होती है जिनमें सार्थक शब्द तराने के बोल सरगम तथा पाटाक्षर यानी तबले के बोल आदि प्रयुक्त होते हैं।
चतुरंग राग यमन तीन ताल

स्थाई- चतुरंग हरि गुण गाय सुनाओ
हरि गुण गावो सबको रिझाबो

अंतरा- सप्त सूरन अरु तिनी ग्राम[165]

---

[164] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी
[165] डॉ इंद्रेश मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

बाइस श्रुति अरू इक्कीस मुरछन।
उनचास कूट तान सुनावो।
 ग ग रे नि नि ध गं रें सां नि ध प, मग,मध,
रें रें सां रें रां सां नि ध म नि ध म ग रे सा-
 दिन दिन तक ननन दे रे ना दिन
 धा किट धा,किटतक धुमकिट
तक धुमकिट तक, तेटेकत गदिगन
तक धूम किट तक धा तक धूम किट
तक धा तक धूम किट तक

भजन अंग के ख्याल

भक्ति परंपरा के पद और सगुण भक्ति परंपरा के "पदपदान्त तथा कीर्तन से विकसित और पल्लवी होकर आई हुई इस विधा में भाभा विभक्ति के पराकाष्ठा है तथा ईश्वर पारक शब्दों के दर्शन होते हैं तथा इस स्तुति ही इसका एकमात्र विषय होता है।

स्थाई -मैं तोपे वारी वारी जाऊं
मोहन तोरी बंसी नैक बजाऊं

अंतरा- जो तुम मोहन राधे बनोगे मैं मोहन बन जाऊं
जो तुम गोकुल गांव वसत हो बरसाने को आऊं
"रामदास" के तुम हो स्वामी चरण कमल चित गाऊं[166]

[166] पंडित भोलानाथ मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार द्वारा प्राप्त

स्वारार्थ प्रबंध के ख्याल

इस गीत की रचना उसे राग में प्रयुक्त होने वाले स्वरों के वाचक अक्षरों 'सारेगमपधनि' बनने वाले शब्दों से होती है, और उन स्वराक्षरों के द्वारा एक सार्थक रचना बनाई जाती है।

राग यमन त्रिताल मध्यलय

स्थाई- नीर गगरी गिरी नार सो मग में री

अंतरा- मग में ध्यान सरी श्याम रंग

रंगीली सरस रस सो सनी धरी पगड़ी गिरी गगरी।

ख्याल की बंदिशों में लयात्मक दर्शन

बनारस घराने की द्रुत ख्याल की बंदिशें लयात्मक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण होती हैं। द्रुत ख्याल की बंदिशों लयात्मक स्तर पर सौंदर्य के बहुत सारे स्थान हैं, जिनमें राग रूप के सौंदर्य में तो वृद्धि होती है साथ ही ताल पक्ष भी मजबूत होता है। लयात्मक स्थल के सौंदर्य को निम्न रूप से दर्शाया गया है-

सम से पहले बंदिश को उठाना, लय पर आने का एक विशेष अंदाज है

स्थाई- बादर की धमक सुनी जब से कानन

तब से जियरा एक नहीं धरत धीर

अंतरा- दादुर मोर पपीहा शोर मचावत

कोयल की कूंक अति मनभावत

रामदास के मोहन प्यारे हरत दरदी सकल पीर[167]

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि हरिहरपुर तथा बनारस दोनो ही क्षेत्र कला तथा संस्कृति के क्षेत्र में प्राचीन काल से ही बहुत समृद्ध हैं तथा यहां के घर-घर में संगीत आदर्श स्वरूप व्याप्त है। इन दोनों ही घरानों ने परंपरागत संगीत तथा अपनी विशेषताओं के कारण सांगीतिक जगत में अपनी विशेष पहचान बनाई है यहां की वंश परंपरा हो अथवा सांगीतिक कौशल दोनों ही तथ्यों में यह घराने अपनी विशेष छाप छोड़ते हैं। जिन मुख्य कारणों से मिलकर घराने का निर्माण होता है वह सभी गुण इन दोनों ही घराने में व्याप्त है। परंपरागत तौर पर प्रसिद्ध विद्वान बताते हैं कि "हरिहरपुर घराना बनारस घराने के उपघराने के तौर पर जाना जाता है।

अगर केवल हरिहरपुर घराने के बात की जाए तो हरिहरपुर की कुल आबादी करीब 10000 है। हरिहरपुर में करीब 40 ब्राह्मण परिवार बाकी अन्य विभिन्न जातियों में बंटे हैं। इस गांव के मिश्र परिवारों की सबसे खास बात यह है कि यह सभी किसी न किसी सुप्रसिद्ध कलाकार अथवा संगीतकार के वंशज हैं जो अपनी सांगीतिक परंपरा को संरक्षित तथा संदर्भित कर रहे हैं।

यहां सामान्यतः बालक अथवा बालिकाएं औपचारिक रूप से ही यहां के सांस्कृतिक वातावरण से परिपूर्ण होने के कारण संगीत की औपचारिक शिक्षा बाल्यावस्था में ही प्राप्त कर लेते हैं। इसका कारण भी यहां का महत्वपूर्ण सांगीतिक परिवेश है।

[167] पंडित आदर्श मिश्र हरिहरपुर घराना द्वारा प्रदत्त जानकारी

इस ग्रामीण परिवेश में सामान्य महिलाएं भी बहुत सुंदर गायन तथा वादन करती हैं। यह अपने घर के सांस्कृतिक उत्सवों में तथा रीति रिवाजों में भी सांगीतिक प्रयोग करती हैं। हरिहरपुर गांव के आसपास अनेक जाति के भी लोग रहते हैं जो संगीत तथा कलाकारों की बहुत सराहना करते हैं। लोक संगीत भी यहां के रग रग में बसा हुआ है। बिरहा, आल्हा, चैती, कजरी जैसे लोक संगीत को यह लोग बहुत अच्छी तरह गाते बजाते हैं।[168]

मिश्र परिवार जो कलाकारों का गढ़ कहलाता है, पहले मिश्र परिवार को 'कथिक' भी कहा जाता था। "कथा कथिनते सो कथिकः" अर्थात कथिक का अर्थ गायन तथा वादन के साथ कथा का सुंदर प्रस्तुतीकरण। यहां के कलाकारों को चारों पट का गवैया कहा जाता है। सांगीतिक अर्थ में चारों पट का अर्थ ध्रुपद ,धमार, ख्याल, चतुरंग, टप्पा, ठुमरी , भजन, गजल एवं लोक संगीत से है। पिछले कई दशकों में यहां के कलाकारों ने बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की ,जिसके कारण भारत सरकार ने एक संस्था "इंडियन ट्रस्ट फाॅर रूरल हेरिटेज एंड डेवलपमेंट" जिसके अध्यक्ष पद्मश्री श्री शशिकांत मिश्रा (दिल्ली) डॉ योगेंद्र नारायण जी वाइस चेयरमैन (दिल्ली), श्री अर्चना कपूर मेंबर सेक्रेटरी (दिल्ली), श्रीमती अनीता सिंह (दिल्ली) श्री आर भटनागर जी आदि जैसे कर्तव्यनिष्ठ लोग यहां के बच्चों को पढ़ने एवं गायन के निशुल्क शिक्षा दिलवा रहे हैं, तथा इन लोगों की संस्थाओं द्वारा यहां के उभरते कलाकारों तथा नवीन पीढ़ी को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर प्रदान किया जा रहा है। राज्य सरकार की ओर से इस गांव में एक संगीत अकादमी का निर्माण किया जा रहा है जिससे यहां की सांगीतिक प्रतिभा को और भी विकास का अवसर प्रदान किया जा सके।[169]

---

[168] पंडित भोलानाथ मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी

[169] पंडित भोलानाथ मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी

इसके अलावा भी यहां 'कजरी महोत्सव' जैसे सांगीतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिससे लोक संगीत की वह कला जो धूमिल होती जा रही है उन्हें पुनर्जीवित किया जा सके। प्राचीन सांगीतिक सभ्यता संस्कृति को जिन परिवारों ने पीढीयों से संभाला है उन्हें नवीन पीढ़ी मे भी स्थानांतरित किया जा सके इसके लिए यह घराना आज भी प्रयासरत है। किंतु भौगोलिक दृष्टिकोण एवं व्यवसायिक दृष्टिकोण से यह आजमगढ़ जिला छोटा है जहां कलाकारों के आय के स्रोत बहुत कम है इस कारण से अनेक कलाकार तथा संगीतज्ञ मुंबई ,दिल्ली लखनऊ जैसे बड़े शहरों में प्रस्थान कर गए। किंतु यह कलाकार जहां भी गए अपने घराने की छाप को साथ लेकर गए और परंपरा को उस क्षेत्र में भी प्रसारित कर रहे हैं।

वहीं बनारस घराने में अपनी कला तथा साधना के बल पर यहां के संगीतज्ञों ने संगीत को उच्च स्तर प्रदान करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। यहां के कलाकारों की लंबी सूची है, जिन्होंने अपने हुनर से गीत संगीत को बुलंदी तक पहुंचाया।

वर्तमान में बदलते परिवेश के साथ आधुनिकता और बाजारवाद संगीत घराने को कमजोर करने का काम कर रहे हैं बड़े कलाकार तथा साधनाशील शिष्य अपने गुरु तथा परंपरा को छोड़कर बड़े शहरों में बसते जा रहे हैं कई बड़े कलाकार जो संगति क्षेत्र से बहुत संपन्न है आर्थिक कारणो से वह विदेश अथवा बड़े शहरों में बस चुके हैं।[170]

कहीं गायन वादन अथवा नर्तन के क्षेत्र में भी प्रख्यात कलाकार जिन्होंने संगीत अथवा वादन की परंपरा को विश्व स्तर तक प्रसारित किया आज बनारस को छोड़कर बाजार जैसे तथ्यों में उलझते जा रहे हैं। यह घराने संस्कृति तथा परंपरा के "ध्वजवाहक" माने जाते हैं तथा "गुरु शिष्य परंपरा" एक अटूट परंपरा है तथा सरकार को भी चाहिए कि ऐसे कलाकार जो आर्थिक स्थिति के कारण अपने स्थान

[170] श्री अमन जैन द्वारा किए गए साक्षात्कार द्वारा प्राप्त

को छोड़कर अन्य स्थान पर बसते जा रहे हैं उन्हें भी एक सरकारी मदद मिले, ताकि यह विधा तथा परंपरा जो सहस्त्र वर्ष प्राचीन है इनकी प्रथा कायम रहे।

अध्याय- 2 संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन एवं शोध कार्य प्रणाली

2.1 - संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

शोध कार्य संबंधी उपलब्ध साहित्य का पुनरावलोकन

किसी भी विषय पर अनुसंधान करने से पूर्व उस विषय पर पूर्ववर्ती समय मे किए हुए शोध कार्यों का सटीक तथा स्पष्ट अवलोकन करना एक आवश्यक तथा अनिवार्य चरण है। यह प्रक्रिया जो अनुसंधान कार्य को प्रभावशाली बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अवलोकन अथवा परिशीलन एक ऐसी विधि है, जिसमें प्रस्तुत हो चुके साहित्य का निरीक्षण किया जाता है, जिसके द्वारा शोधार्थियों को अपना शोध कार्य संपूर्ण करने के लिए नई दिशाओं की प्राप्ति होती है, तथा शोध कार्य के द्वारा अतीत मे किए गए कार्यों अथवा साहित्यों का अवलोकन किया जाता है। यह प्रक्रिया विशेष रूप से भविष्य में विषय से संबंधित पुनरावृत्ति की संभावना को काम करती है साथ ही शोध से जुड़े नवीनतम तथ्यों को भी उजागर करती है।

प्रस्तुत चयनित शोध कार्य से संबंधित पूर्व में किए गए शोध कार्यों का विवरण इस प्रकार है-

(क)

2.1.1 पत्रिका ऑनलाइन-29 जनवरी 2020" पद्म सम्मान पर बोले पंडित छन्नूलाल मिश्र यह सिर्फ मेरा नहीं पूरे बनारस का गौरव बढ़ा"

प्रस्तुत आलेख में आशीष शुक्ला द्वारा काशी के प्रसिद्ध शास्त्रीय तथा उपशास्त्रीय गायक छन्नूलाल मिश्र जी के साक्षात्कार के दौरान उन्होंने यह बात कही। भारतीय पदम पुरस्कार की घोषणा के पश्चात जब पंडित छन्नूलाल मिश्र जी को पद्म विभूषण

की उपाधि से नवाजा गया ,तो उन्होंने ओजस्वी शब्दों में यह बात कही, कि यह सिर्फ मेरा नहीं पूरे बनारस का सम्मान है। लेखक ने यह तथ्य भी उजागर किया की पंडित छन्नूलाल मिश्र एक विख्यात कलाकार ही नहीं बल्कि एक प्रबुद्ध वक्ता भी है। वह कार्यक्रम के दौरान भी अपने सुमधुर गायन के अलावा भाषणों से भी श्रोताओं को आनंदित करते हैं।

2.1.2 अमर उजाला 16 .1. 2023

"संगीत घराने तो 200 साल पहले ही लगभग प्रचार में आए हैं जबकि संगीत तो अनंत काल से है।"

प्रस्तुत लेख में पंडित छन्नूलाल मिश्र जी द्वारा दिए गए साक्षात्कार मे उन्होंने संगीत का संबंध अनंत काल से होने की बात कही है, तथा भारतीय संगीत का संबंध अनादि काल से होने की बात कही है। पंडित छन्नूलाल मिश्र जी जो सांगीतिक विषयों पर अक्सर चिंतन करते रहते हैं। अपनी चिंतन को सार्वजनिक तौर पर रखते हुए उन्होंने कहा की घराने जैसी संस्था का प्रादुर्भाव तो लगभग 200 साल पहले हुआ किंतु संगीत प्राचीन काल से अब तक ,है तथा उन्होंने सांगीतिक मर्यादा की भी विस्तृत विवेचना की है। ऐसे तथ्य अथवा विचार उन्हें एक प्रबुद्ध चिंतक के रूप में भी दर्शाते हैं।

2.1.3 shailja khanna, 3.10.2019 .The Hindu news,"The magic of chhannulal Mishra

प्रस्तुत लेख में शैलजा खन्ना द्वारा पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के एक कार्यक्रम के दौरान लिए गए साक्षात्कार के आधार पर उनके सांगीतिक कौशल तथा उनके व्यक्तिगत विचारों एवं उनकी सांकेतिक विषयों पर उनके विचारों का संकलन किया है।

ठुमरी महोत्सव के कार्यक्रम में समापन दिवस पर पंडित जी ने अपना गायन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की शुरुआत मे पंडित जी ने शंकरा राग में छोटा ख्याल गाया।

उसके बाद उन्होंने ठुमरी जो एक "बोल बांट" रचना थी उसमें उन्होंने अपने विशेषज्ञता दिखाई , उन्होंने राग नट के एक दुर्लभ वाक्यांश भी दर्शकों को सुनाया ,जो आम तौर पर ठुमरी में नहीं सुना जाता है तथा अगली रचना "लागे तोसे नैन" जो उनकी पसंदीदा ठुमरीयों में से एक है तत्पश्चात पारंपरिक "कजरी बरसन लागी बदरिया रूम झूम" के साथ संगीत कार्यक्रम का समापन किया। जिससे श्रोता उनकी धुन पर झूम उठे। इस कार्यक्रम के दौरान उनके साक्षात्कार में लेखिका ने उनकी सुंदर गायन शैली तथा पारंपरिक समझ, ठुमरी तथा उसके प्रकार पर उनके ज्ञान को संग्रहित किया है।

2.1.4 नवभारत टाइम्स 14. 4. 2019 "संगीत साधना की तरह देश साधना भी कठिन"

प्रस्तुत आलेख के अंतर्गत विश्व विख्यात शास्त्रीय तथा उपशास्त्रीय पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी की संगीत के क्षेत्र के अलावा अन्य क्षेत्र में उनके योगदान को समाहित किया गया है। आलेख में पंडित छन्नूलाल मिश्रा जी जो चुनाव के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के बनारस क्षेत्र के चुनाव संवाहक के रूप में उन्होंने कार्य किया था। इस दौरान उन्होंने यह वक्तव्य दिया, कि जिस प्रकार संगीत क्षेत्र में परंपराओं का पालन करना पड़ता है, उसके अतिरिक्त कठिन साधना करनी पड़ती है ।तभी एक कलाकार तथा उसकी कलाकारी जीवंत होती है,ठीक उसी प्रकार देश की बागडोर को संभालना भी एक साधना की तरह ही है,जहां अनेक कठिनाइयां को पार करते हुए देश को विकास यात्रा की ओर अग्रसर होता है।

2.1.5 नवभारत टाइम्स 10.4.2020 "बड़ा ही रोचक रहा है गायकी के उस्ताद पंडित छन्नूलाल मिश्र जी का बचपन"

प्रस्तुत आलेख के अंतर्गत विश्व प्रसिद्ध शास्त्रीय तथा उपशास्त्रीय गायक की जीवन गाथा जिसमे उनके बचपन तथा शिक्षक संबंधी जानकारी इस आलेख के माध्यम से प्राप्त होती है, तथा प्रारंभिक सांकेतिक शिक्षा तथा पारिवारिक पृष्ठभूमि इस

आलेख में दर्शित है। प्रस्तुत आलेख से यह तथ्य उजागर होता है, कि संगीत के क्षेत्र में इतनी प्रतिष्ठा पाने के बावजूद भी पंडित छन्नूलाल मिश्र जी आज भी अपनी जन्मभूमि को असीम प्रेम करते हैं तथा एक सामान्य जीवन व्यतीत करने में विश्वास रखते हैं। उनके वक्तव्यों में भी एक देसी सहज भाव है, जो बरबस ही किसी भी व्यक्ति का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेती है।

2.1.6 सिटी रिपोर्टर 25.2.2019" पंडित छन्नू लाल मिश्रा जी ने सुनाए भैरवी, तोड़ी ,और ललित राग" प्रस्तुत पत्रिका के अंतर्गत विश्व विख्यात शास्त्रीय तथा उपशास्त्रीय गायक पंडित छन्नूलाल मिश्रा जी की जयपुर स्थित सेंट्रल पार्क में आयोजित किए गए कार्यक्रम में गायन प्रस्तुति की समीक्षा को प्रस्तुत किया गया है। पंडित छन्नूलाल मिश्रा जी ने इस अवसर पर अपने पसंदीदा राग भैरवी ,तोड़ी तथा ललित राग सुनाए। आयोजित प्रस्तुति श्रोताओं पर अपना प्रभावशाली चिन्ह छोड़ने में सफल हुई। तथा पंडित जी की शास्त्रीय तथा उपशास्त्रीय शैली दोनों ही शैलियों का संगम आपकी गायकी में दृष्टिगत होता है। प्राचीन संगीत की विरासत को पंडित जी संरक्षित तथा संबंधित करने में पूर्ण रूप से सक्षम है जिससे यह निष्कर्ष प्राप्त होता है ,कि पंडित छन्नूलाल मिश्र जी एक उच्च कोटि के कलाकार है , एक प्रभावशाली वक्ता है, जो श्रोताओं पर अपनी अमिट छाप छोड़ने में पूर्ण रूप से सक्षम हैं।

2.1.7 अमर उजाला 20.1.2023 "पंडित छन्नूलाल मिश्र जी ने किया उद्घाटन" प्रस्तुत लेख में पंडित छन्नूलाल मिश्र जी की काशी यात्रा कार्यक्रम का वर्णन किया गया है, इसमे उल्लेखित है कि पंडित छन्नूलाल मिश्र जी की काशी यात्रा कार्यक्रम के दौरान, उनकी गायकी का मुख्य उद्देश्य समाज में धर्म का प्रचार तथा जीवन दाहिनी गंगा का गुणगान करना था। इसी कार्यक्रम के दौरान उन्होंने अपने साक्षात्कार में कहा कि गंगा हमारे जीवन दायिनी है तथा यह अनंत काल से मानव

संयोजनात्मकता, गुरु, रचनाकार, कलाकार, विचार आदि रूपों को जानने, मूल्यांकित करने तथा विश्लेषित करने का यथा संभव प्रयास किया गया है,तथा दत्त सामग्री को पूर्णतया जांच करने के पश्चात ही तथ्यों को प्रतिबिंबित किया गया है, ताकि एक कलाकार का जीवन दर्शन तथा सांगीतिक यात्रा विभिन्न पड़ावों के माध्यम से स्थापित की जा सके। प्रस्तुत शोध प्रबंध में सूचना व तथ्यों के माध्यम से साक्षात्कार प्रणाली तथा ध्वन्यांकित प्रणाली द्वारा सृजित हुए गुणवत्तापूर्ण सांगीतिक प्रचार प्रसार का अध्ययन किया गया है। इस अनुसंधान में पंडित जी के द्वारा गाए गए शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, लोक संगीत, फिल्मी संगीत के अंतर्गत कैसेट, सीडी तथा अन्य माध्यमों से उपलब्ध होने वाले अत्यंत लोकप्रिय तथा भावुक रचनाओं को अध्ययन में शामिल किया गया है। इस शोध कार्य के अंतर्गत किए गए अध्ययन का महत्व इस बात में निहित है कि यह शोध कार्य कला साधना को निखारने तथा अवसर मिलने पर अपने अध्यापन कार्य मे भी इन रचनाओं का प्रयोग करके संगीत जगत तथा विद्यार्थियों को भी लाभ प्रदान किया जा सके।

2.2 शोध प्रविधि (Research Methodology)

किसी भी अनुसंधान की सफलता के पीछे कुछ निश्चित मापदंड तथा एक विशिष्ट कार्य विधि का होना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस कार्य विधि के अंतर्गत सुनियोजित वैज्ञानिक शोध प्रविधि का प्रयोग ही तार्किकता एवं प्रासंगिकता प्रदान करने में सक्षम है। यदि शोध प्रविधि व्यवहारिक,वस्तुनिष्ठ ,वैज्ञानिक रूपरेखा से परिपूर्ण नहीं है तो यह कार्य निष्फल भी सिद्ध हो सकता है। शोध प्रविधि का चयन विषय तथा समस्या की प्रकृति के आधार पर होता है।

शोध के लिए शोध प्रविधि के माध्यम से ही दत्त स्तोत्र एवं वस्तुनिष्ठ उपकरणों का चयन किया जाता है,ताकि शोध कार्य को मौलिकता, तार्किकता, पूर्णता एवं आलोचनात्मक दृष्टि प्रदान की जा सके। किसी अनुसंधान प्रणाली के अंतर्गत दत्त

संग्रह विधियां, दत्त स्तोत्र, दत्त उपकरण, दत्त विश्लेषण विधियां, न्याय दर्श शोध की सीमाएं आदि सूचनाएं शोध प्रक्रिया का अभिन्न अंग बनती हैं।

2.3 समस्या कथन

"पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

2.4 अध्ययन के उद्देश्य (Objectives)

1. पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के जीवन एवं सांगीतिक यात्रा का अध्ययन करना ।
2. पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय संगीत मे योगदान को प्रलेखित करना
3. पंडित छन्नूलाल मिश्र जी की गायकी की विशेषताओं का अध्ययन करना।
4. पंडित छन्नूलाल मिश्र जी की रचनाओं का संकलन करना।
5. पंडित छन्नूलाल मिश्र जी एवं उनके शिष्य परंपरा के माध्यम से सांगीतिक लोकप्रियता का उल्लेख करना।

2.5 दत्त संग्रह विधि

डेट संग्रह विधि मे सर्वेक्षण विधि तथा वर्णनात्मक विधि (साक्षात्कार) विधि का प्रयोग किया गया है। इसके अंतर्गत जीवन वृतांत अध्ययन,केस अध्ययन, पुस्तक ग्रंथ, पत्र- पत्रिकाएं, साक्षात्कार,ऑडियो -वीडियो रिकॉर्ड, कंप्यूटर, इंटरनेट आदि को शोध विधि रूप में प्रयोग किया गया है।

2.6 दत्त उपकरण

दत्त उपकरणों मे शोध कार्यों का विश्लेषण करके सूचियों और समालोचना को अनुसंधान का आधार बनाया गया है तथा मुख्यतः साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है।

2.7 साक्षात्कार

जीवन वृतांतक अनुसंधान कार्य हेतु अपेक्षित दत्त सामग्री का मुख्यतः अभाव पाया जाता है। इस प्रकार के व्यक्तित्व अथवा जीवनी संबंधी अनुसंधान कार्यों में व्यक्तियों से अपेक्षित एवं साक्ष्य जैसे दत्त संग्रह हेतु,साक्षात्कार एक सशक्त ठोस तथा महत्वपूर्ण उपकरण है। इसका आधार एक मौखिक प्रश्नावली है, जिसके अंतर्गत सूचक उत्तर लिखने के स्थान पर आमने-सामने बैठकर मौखिक ज़रिए से व्यक्ति उत्तर देता है। साक्षात्कार दो प्रकार के होते हैं-

(क) निर्देशित और संरक्षित साक्षात्कार

ऐसे साक्षात्कारों में प्रश्न प्रश्नोंक्रम के शब्द संयोजन तथा प्रश्नावली पहले से ही सुनिश्चित होती है तथा साक्षात्कृत को उन्हें बदलने का अधिकार प्राप्त नहीं होता। इसका मुख्य उद्देश्य एकत्र करना तत्पश्चात उन तथ्यों का वैज्ञानिक परिशीलन अथवा परीक्षण करना होता है। इस प्रकार की अनुसूची तथा संबंधित सूचनाओं को एकत्र करने में प्रश्नावली बहुत ही सावधानी से तैयार की जानी चाहिए।

(ख) निर्देशित और असंरचित साक्षात्कार

इस प्रकार के साक्षात्कार का उद्देश्य व्यक्ति विशेष संबंधी सूचनाओं का गहराई से निरीक्षण किया जाता है।ऐसे प्रयोग साधारणतःकिसी केस अध्ययन मे ही किया जाता है। इस प्रकार से तैयार की गई अनुसूची मे प्रश्नावली की शब्द संयोजना , क्रम, विषयवस्तु साक्षात्कृत के अनुसार स्वतंत्र रूप से ही की जाती है। साक्षात्कर्ता

को पूर्ण स्वतंत्रता होती है कि वह अपने सम्मुख बैठे व्यक्ति की स्थिति के अनुसार पूर्ण रूप से सहजता प्रदान करे, जिससे वह सामग्री की जड़ तक पहुंच सके ताकि,उसकी वस्तुनिष्ठता बरकरार रह सके।

उत्तम साक्षात्कार के लक्षण

साक्षात्कार एक बहुत उपयोगी उपकरण है। परंतु इसके लिए समर्पण तथा कठिन परिश्रम आवश्यक है। इसलिए निम्नलिखित चरणों को व्यवहारिक रूप प्रदान करना परम आवश्यक है--

(क) अनुसंधानकर्ता को अपनी शोध समस्या का व्यावहारिक तथा सैद्धांतिक वृहत ज्ञान होना चाहिए।

(ख) साक्षात्कार के सूचकों का चुनाव गंभीरतापूर्वक करना चाहिए।

(ग) साक्षात्कार के दौरान किसी भी प्रकार की निराशाजनक स्थिति से बचाव के लिए पूर्व से ही सक्षमकृत तथा आज्ञा अनुसार समय प्राप्ति अनिवार्य अंग है ताकि शोधकर्ता का परिश्रम तथा समय दोनों ही परिष्कृत रूप का सके। पूर्व से ज्ञात होने से साक्षात्कृत विषय से पूर्णतया परिचित होगा तथा यथा संभव सामग्री प्रदान करवाने में असुविधा महसूस नहीं करेगा।

साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण

कोई भी अनुसूची किसी अनुसंधान समस्या की अध्ययन योजना का क्रमबद्ध तथा संक्षिप्त रूप होता है। किसी भी व्यक्तिगत साक्षात्कार के दौरान अनुसंधान कर्ता एक प्रश्नावली माध्यम प्रयोग करता है, जिसको साक्षात्कार अनुसूची की संज्ञा दी गई है। साक्षात्कार अनुसूची में दो प्रकार के अनुसूची पद होते हैं-

(क) अमुक्त विकल्प पद

(ख) मुक्त विकल्प पद

(क) अमुक्त विकल्प पद -

दो अथवा उससे अधिक विकल्प दिए जाते हैं। जिस प्रकार हां या नहीं, सहमत-असहमत।

(ख)मुक्त विकल्प पद -

मुक्त विकल्प पद में उत्तरदाता प्रश्नों को निश्चित संदर्भ प्रदान करते हैं। उत्तर देने वाला किसी भी रूप में जानकारी प्रदान कर सकता है।

साक्षात्कार अनुसूची के मापदंड

1. प्रश्नशोध समस्या के उद्देश्यों तथा कार्य निर्वेक्षण के अनुसार होना चाहिए।
2. प्रश्नावली सही प्रकार की हो।
3. प्रश्न सीमित तथा स्पष्ट रूप मे होने चाहिए।
4. प्रश्न दिशा सूचक होने चाहिए।
5. प्रश्न उत्तर उत्तर से उसे ज्ञान अथवा सूचना की मांग ना करें जो पक्ष उससे अनभिज्ञ हो।
6. प्रश्नावली के दौरान गुप्त तथा व्यक्तिगत सामग्री की मांग नहीं की जानी चाहिए, जिसे देने में सूचनाकर्ता को कोई असुविधा हो।

साक्षात्कार का सफल कार्य निर्देशन

1. सर्वप्रथम साक्षात्कारकर्ता को अपने विभाग तथा संस्थान से एक प्रमाण पत्र जिसमे, अनुसंधानकर्ता तथा अनुसंधान कार्य की सूचना के बारे में समग्र जानकारी प्रदान की गई हो, उसे लेकर हर समय अपने पास रखना चाहिए ताकि,

उत्तरदाता को अपने सूचना अथवा सामग्री के दुरुपयोग होने का संदेह मात्र ना रहे।

2. साक्षात्कारकर्ता हर प्रश्न को धीमी गति, संक्षेप, स्पष्ट विधि तथा सहजता से पूछना चाहिए ताकि, उत्तरदाता सुविधा पूर्वक सूचना प्रदान कर सके।

3. साक्षात्कारकर्ता को संवेदनशील, तर्कशील तथा कुशल होना चाहिए। इसी समर्पण तथा सक्षम भाव के कारण वह कठिन से कठिन सूचना तथा सामग्री को गहन रूप मे भी प्राप्त करने में सक्षम हो सकता है।

4. साक्षात्कार के दौरान साक्षात्कारकर्ता को केवल श्रोता नहीं बनना चाहिए, बल्कि पूरी तरह उसका व्यक्तित्व संवादात्मक होना चाहिए। इससे प्रश्नकर्ता तथा उत्तरदाता दोनों में सही सामंजस्य तथा तालमेल बनता है जिसके फलस्वरुप एक किसी घटनाक्रम को कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।

5. साक्षातकारकर्ता के प्रश्न उत्तर सूचक नहीं होने चाहिए जिससे साक्षातकृत अथवा उत्तरदाता की वस्तुनिष्ठता का क्षय होने का भय सताता है।

6. साक्षात्कार समाप्ति के पश्चात औपचारिकतावश धन्यवाद सहित विदा लेनी चाहिए।

साक्षात्कार का अभिलेखन

साक्षात्कार के अभी लेखन के लिए तीन प्रकार की विधियों का प्रयोग आवश्यकता अनुसार किया जाता है।

1. उत्तरों को तत्काल रिकॉर्ड कर लेना चाहिए ताकि साक्षात्कार के दौरान कोई व्यवधान न पड़े।

2. साक्षात्कार से प्राप्त सामग्री तथा सूचना को तत्काल लिख लेना चाहिए,परंतु इस विधि द्वारा समय नष्ट होता है,तथा वार्तालाप विधि में व्यवधान पड़ता है।

3. साक्षात्कार समाप्ति के पश्चात वार्तालाप को लिखित रूप प्रदान करना चाहिए, परंतु ऐसा करने से कई प्रकार के सूचना के नष्ट होने का भय रहता है, तथा मौलिकता की कमी होती है।

साक्षात्कार की सीमाएं

1. सशक्ल प्रक्रिया एक कठिन विधि है, तथा इसमे अधिक समय लगने की संभावना रहती है।
2. इसमें साक्षात्कारकर्ता पक्षपातपूर्ण व्यवहार के भय से भयभीत होता है।
3. किसी भी सफल साक्षात्कार के लिए अनुसंधानकर्ता के लिए संवेदनशील, कुशल तथा वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण का पालन अतिआवश्यक है। शोधार्थियों की दत्त खोज की सार्थकता कम ना हो, इसलिए यह गुण अत्यावश्यक है।

शोध कार्य की योजना

सर्वप्रथम पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के व्यक्तित्व तथा कृतित्व के अनिवार्य पहलुओं को सूचीबद्ध तरीके से तैयार किया गया है।

सूची को पूर्ण तैयार जांच करने के लिए इस विषय मार्मोनियों के सम्मुख रखा गया तथा उन पहलुओं में से कुछ आवश्यक सुधार करके जोड़ दिए गए, तथा इस प्रकार इस सूची का एक आधारभूत प्रारूप निर्मित हुआ। तत्पश्चात पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के व्यक्तित्व तथा संगीतात्मकता से संबंधित पहलुओं की एक अंतिम सूची तैयार कर ली गई है।

अनुसूची संपादन

अनुसूची प्रश्नों को विषय विशेषज्ञों के सम्मुख रखा गया और उनमें भाषा संबंधी प्रश्नों के क्रम के साथ संबंधित निर्माण तथा प्रक्रिया संबंधी कुछ अन्य सुझाव लेकर

अनुसूची को अंतिम रूप प्रदान किया गया। इन सुझावों को प्रयोग में लाने के पश्चात साक्षात्कार अनुसूची में भी अनेक परिवर्तन किए गए तथा उसमे अनेक तकनीकी त्रुटियों भी यथासंभव समाप्त कर लिया गया। पंडित छन्नूलाल मिश्र के उपरोक्त वर्णित सारे तथ्यों पर आवश्यक दत्त सामग्री का संकलन करने के उद्देश्य से साक्षात्कार के लिए जो प्रश्नावली तैयार की गई ,उनकी संख्या 30 थी, परंतु विषय विशेषज्ञों से विचार विमर्श के पश्चात उनकी संख्या 22 हो गई।

2.8 दत्त स्त्रोत

किस अनुसंधान कार्य के दौरान निम्नलिखित प्रथम तथा द्वितीय स्रोतों का प्रयोग किया गया है-

. पुस्तकें/Library

. समाचार पत्र

. पत्र पत्रिकाएं शोध प्रबंध तथा शोध आलेख जर्नल

.Audio, Video, C.D/Albums

.Internet Sources/E-Resources

2.9 न्यादर्श

न्यादर्श में आधारभूत रूप में पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी को तथा उनके परिवार को शामिल किया गया है, इनके जीवन वृत्त तथा कृतित्व संबंधी दत्त संकलन सामग्री के लिए कुल 50 व्यक्ति विशेषों को सम्मिलित किया गया है, जिनसे साक्षात्कार, फोनवार्ता आयोजित किये गये। इसके अतिरिक्त विभिन्न विश्वविद्यालयों

के संगीत विभागों में प्रस्तुत पीएचडी शोध प्रबंधों के सर्वेक्षण तथा समालोचना को भी न्यादर्श के रूप में समावेशित किया गया है।

2.10 दत्त विश्लेषण

दत्त सामग्री का विश्लेषण गणनात्मक तथा गुणात्मक विधियों द्वारा किया गया है।

2.11 शोध का परिसीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए दत्त सामग्री एकत्रीकरण के उद्देश्य से न्यादर्श मे कुल 100 व्यक्तियों को शामिल किया गया है, जिनसे साक्षात्कार करके पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर आधारित सामग्री का एकत्रिकरण किया गया है। उनके संगीत कार्यक्रमों तथा आख्यानों की जो सूचना इंटरनेट पर उपलब्ध है ,उन सूचनाओं को गहराई से जांचा तथा परखा गया है,तथा वस्तुनिष्ठता से तथ्यों को निरूपित किया गया है।

अध्याय 3 - पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र: जीवनवृत्त,व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.1 - जीवनवृत्त

जीवन वृत्त अथवा जीवन गाथा किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व विचार तथा संपूर्ण जीवन के विभिन्न तथ्यमूलक पहलुओं को जानने,मूल्यांकन तथा विश्लेषित करने का एक सशक्त एवं अनिवार्य माध्यम है। [171]जीवन गाथा लेखन एक ऐसा माध्यम है, जिससे किसी व्यक्ति विशेष के जीवन से संबंधित समस्त उतार-चढ़ाव, गतिविधियां, संघर्ष, अथवा आनन्दमयी अनेक रोचक तथा आकर्षक तत्व उल्लिखित होते हैं। किसी भी महान व्यक्तित्व का जीवन-वृत्त केवल उसके जन्म, शिक्षा, कार्य और उपलब्धियों का क्रमबद्ध विवरण मात्र नहीं होता, बल्कि वह उसके व्यक्तित्व, कृतित्व, विचारधारा, संघर्ष, साधना तथा समाज और संस्कृति के प्रति उसके योगदान का समग्र परिचय प्रस्तुत करता है। किसी व्यक्ति का जीवन उसके अनुभवों, मूल्यों, आदर्शों और कर्मों का ऐसा सजीव दस्तावेज होता है, जिससे समकालीन समाज के साथ-साथ भावी पीढ़ियाँ भी प्रेरणा प्राप्त करती हैं। जीवन-वृत्त का अध्ययन हमें यह समझने का अवसर प्रदान करता है कि किसी व्यक्ति ने किन परिस्थितियों में अपने व्यक्तित्व का निर्माण किया, किन चुनौतियों का सामना किया तथा किस प्रकार अपने ज्ञान, परिश्रम और समर्पण के बल पर समाज में विशिष्ट स्थान प्राप्त किया।[172]

---

[171] डॉ. नागेंद्र अनुसंधान की पद्धति पृष्ठ संख्या 25

[172] डॉ. विनय मोहन शर्मा, *शोध प्रविधि एवं अनुसंधान*, जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृ. 41–43

किसी भी संगीतज्ञ के संपूर्ण रचना कार्य का विधिवत परिचय पाने के लिए भी उसके जीवनवृत्त का अध्ययन एक अनिवार्य तथा आवश्यक पहलू है। किसी व्यक्ति अथवा कलाकार के जीवन में आए उतार-चढ़ाव, कठिन संघर्ष मे उसकी सलंग्नता,परिश्रम, समर्पण अथवा कार्य सिद्धि हेतु सुदृढ़ता तथा सुयोग्यता सभी विघ्न बाधाओं को पार कर लक्ष्य सिद्धि का दिग्दर्शन आदि ऐसे अनेक पहलू हैं,जो कलाकार के जीवन गाथा को एक विलक्षण रूप प्रदान करते हैं। शोध अथवा अनुसंधान का परम उद्देश्य है, कि व्यक्ति विशेष के जीवन की अनभिज्ञ गतिविधियों अथवा गाथाओं तथा उपलब्धियां को साकार रूप करके सामान्य जनमानस से परिचय करवाना एवं निष्पक्षता प्रदर्शन, सहित गहन अध्ययन,विश्लेषण तथा सर्वेक्षण करना। किसी भी कलाकार को सुनकर यह कह देना, कि वह अच्छा है या बुरा पर्याप्त नहीं है, आलोचक का कार्य है कि वह अच्छाई अथवा बुराई को तर्कपूर्ण शुद्ध शैली मे प्रमाणित करे अन्यथा उसकी आलोचना का कोई मूल्य नहीं होगा।

सामान्यतः सांगीतिक दृष्टिकोण से किसी भी व्यक्ति विशेष कलाकार या संगीतज्ञ के जीवन अथवा कृतित्व का परीशीलन केवल स्तुति गान नहीं होता, अपितु साक्ष्य तथा तथ्यों का एक सुव्यवस्थित संकलन, मूल्यांकन तथा तथ्यमूलक विश्लेषण होता है।मानव के आकर्षण का सर्व प्रमुख केंद्र मानव तथा उसका जीवन है,जीवनी-साहित्य मानव से और उसके हृदय के स्पंदन से ही जीवित है। इस संसार में मनुष्य के विभिन्न रूप होते हैं तथा उन रूपों से संबंधित अनेक गाथाएं होती हैं, जिनमे उसका चरित्र साकार हो उठता है, मानव जीवनी का नायक होता है, तथा अनुकरणीय भी होता है। जीवनी लेखन परंपरा प्राचीन है भारतीय संस्कृति अथवा साहित्य के लेखकों ने जीवनी को अनेक रूपों में लिखा है। महाकाव्य,नाटकों तथा किसी यथार्थ कहानी को जीवनी का आधार लेकर लिखने की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है।

भारत की संस्कृति साधकों की संस्कृति रही है। साधना मे अपना सर्वस्व समर्पित करने वाले ऋषियों के गौरवशाली इतिहास को संजोए हुए भारतीय संस्कृति वर्तमान काल मे भी विविध क्षेत्र मे साधकों के सृजनार्थ उचित वातावरण की निर्मिती करती रहती है। साधना के विविध क्षेत्रों में कला की साधना तथा कला के साधकों की विशिष्ट भूमिका रही है। भारतीय संस्कृति भी एक माता की भांति कला साधकों को अपने अंक में धारण कर उन्हें पुष्पित तथा पल्लवित होने का अवसर प्रदान करती है।

वैसे तो भारत स्वयं एक कला सिद्ध स्थान है,तथा भारत का हर कोना विविध संस्कृति की प्रचुरता से परिपूर्ण है किंतु बनारस अथवा वाराणसी की धरती इसके लिए विशिष्ट है। विधिक विषय तथा कलाओं के साधक बनारस मे अंकुरित, पुष्पित तथा पल्लवित हुए। हिमालय से प्रसारित होती उत्तर वाहिनी मां गंगा के तट पर अवस्थित बनारस साहित्य,संस्कृति साथ ही संगीत के लिए भी विश्व प्रसिद्ध है। बनारस अनेक चीजों के लिए प्रसिद्ध है, चाहे वह खेल-कूद का अखाड़ा हो या संगीत के विविध कला साधक, बनारस के संगीत कलाकारों की लंबी सूची है।[173]

शहनाई वाद्य को वैश्विक फलक पर लाने वाले उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ(भारत रत्न) तबला वादन के क्षेत्र मे भारतीय संगीत को नए आयाम देने वाले कलाकारों मे पंडित गुदई महाराज,पंडित किशन महाराज,पंडित अनोखे लाल मिश्र तथा गायन मे पंडित राजन- साजन मिश्र, गिरिजा देवी, मालिनी अवस्थी जैसे कलाकार बनारस जैसी सांस्कृतिक राजधानी से संबंधित हैं।

ऐसे ही भारतीय संगीत में विलक्षण प्रतिभाशाली वह उत्कृष्ट संगीतज्ञों की श्रेणी मे "पंडित छन्नूलाल मिश्र" का नाम अग्रणी है,जिन्होंने अपनी असाधारण, विलक्षण, प्रतिभा तथा प्रतिबद्धता और संघर्षमयी कला साधना के माध्यम से हिंदुस्तान की

[173] Wikipedia https://share.google/FwQWpw2R3LkonPb5W

सांगीतिक परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हुए भारतीय शास्त्रीय तथा उपशास्त्रीय संगीत को सर्वोत्तम तथा उत्कृष्ट कला के रूप मे जनमानस के समक्ष रखते हुए, संगीत को विश्व स्तर तक प्रतिष्ठित किया है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत की मौलिकता तथा गरिमा बनाए रखने तथा समस्त विश्व मे इसका प्रसार-प्रसार कर प्रतिष्ठा प्रदान करने में पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी की उत्कृष्ट भूमिका रही है। पंडित छन्नूलाल मिश्र भारतीय शास्त्रीय तथा उपशास्त्रीय संगीत जगत के उन कलाकारों में से एक हैं,जिन्होंने कला साधना तथा लक्ष्य प्राप्ति हेतु जीवनपर्यंत संघर्ष किया, तथा अपनी क्षमता, समर्पण, कलात्मकता एवं सृजनात्मकता द्वारा भारतीय सांगीतिक क्षेत्र को व्यापक तथा विस्तृत बनाने में महत्वपूर्ण तथा उल्लेखनीय योगदान दिया है। पंडित जी का संपूर्ण जीवन ज्ञान अनुशासन,कर्मठता एवं उत्प्रेरकता को संचित किए हुए है।

जन्म एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि

पंडित छन्नूलाल मिश्र जी का जन्म 15 अगस्त 1936 ई. को उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले में स्थित एक छोटे से गांव हरिहरपुर में हुआ था।[174] पिता का नाम पंडित बद्री प्रसाद मिश्र तथा माता का नाम श्रीमती रानी देवी था। उनके घर में इनके अतिरिक्त दो छोटे भाई तथा एक बहन हैं। पंडित जी अपने माता-पिता की प्रथम संतान हैं। दो छोटे भाइयों में पंडित विश्वनाथ मिश्र तथा पंडित शिवजी मिश्र जो, पंडित जी को पिता तुल्य मान सम्मान देते हैं। पंडित विश्वनाथ मिश्र जो एक जाने माने तबला वादक है तथा वर्षों से 'कथक केंद्र' नई दिल्ली में अपनी सेवा प्रदान कर रहे हैं, तथा छोटे भाई पंडित शिवजी मिश्र 'भारतीय नृत्य कला मंदिर' पटना बिहार में 'कथक नृत्य' के प्रोफेसर के पद पर नियुक्त हैं तथा विश्व विख्यात

[174] पद्म विभूषण भूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी

कथक नृत्य के पर्याय "पद्म विभूषण पंडित बिरजू महाराज जी"के सुयोग्य एवं वरिष्ठ शिष्य भी हैं। पंडित जी की छोटी बहन श्रीमती सावित्री देवी अपने परिवार के साथ भोपाल मध्य प्रदेश में निवास कर रही हैं। तीनों भाई वस्तुतः गायन, वादन तथा नृत्य की त्रिवेणी हैं। पंडित जी का जन्म धार्मिक एवं सांगीतिक परिवेश वाले वातावरण मे हुआ। आपके पिता मुख्यतः कृषक थे,किंतु एक किसान होने के अलावा अत्यंत कुशल तबला वादक तथा गायन के सभी विधाओं के भी ज्ञाता थे। प्रख्यात कलाकार स्वर्गीय जगदीप प्रसाद मिश्र के प्रपौत्र होने के कारण, संगीत आपको विरासत में मिला था।

संस्थागत एवं सांगीतिक शिक्षा

आप बहुत भाग्यशाली रहे कि आपका जन्म ऐसे परिवार में हुआ जहां धार्मिक तथा सांगीतिक वातावरण उपलब्ध था। [175] पंडित जी के पिता पंडित बद्री प्रसाद मिश्र अपने पांचो भाइयों में सबसे बड़े थे,उनके बड़े चाचा चंद्रिका प्रसाद मिश्र कुशल सारंगी वादक,दूसरे चाचा पंडित श्याम लाल मिश्र कथक नृत्य, छोटे चाचा ठाकुर प्रसाद मित्र कृषक तथा सबसे छोटे चाचा मनिका प्रसाद मिश्र तबलावा वादक थे। ठुमरी सम्राट स्वर्गीय पंडित जगदीप महाराज जी के वंशज पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के सभी कुटुंबी जनों के शरीर में संगीत रक्त के समान प्रवाहमान था। पिता स्वयं सुबह 4:00 बजे जगा कर संगीताभ्यास कराया करते थे ,तथा बचपन में अभ्यास के प्रति लापरवाही अथवा गलत अभ्यास करने पर कठोर दंड भी मिला करता था।

प्रारंभिक दिनचर्या अत्यंत अनुशासित एवं सांगीतिक थी। संगीत शिक्षा के दौरान शास्त्रीय संगीत संबंधित चर्चा प्रसिद्ध कलाकारों की जीवन गाथा तथा विभिन्न घरानों

[175] पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से किए गए साक्षात्कार द्वारा उद्धृत

की संगीत शैलियां आदि की जानकारी भी पिता के माध्यम से प्राप्त होती थी। पिता अत्यंत प्रेम करने वाले पिता होने के साथ ही साथ एक उच्च कोटि के तथा सच्चे गुरु भी थे। उनका कहना था कि "सच्चा गुरु कुम्हार की तरह होता है,जो बर्तन के अंदर हाथ रखकर बड़ी सावधानी से सहारा देता है तो वही, दूसरे हाथ से चोट देकर आकार को सही करता है।"[176]

5 वर्ष की आयु से ही आपका गायन का अभ्यास पूर्ण परिश्रम के साथ आरंभ हो गया था, गायक होने के साथ हि साथ कुशल तबला वादक भी थे इसलिए 7 वर्ष की आयु तक आते-आते आपके स्वर लय का अच्छा ज्ञान हो गया था।

परिवार निर्धन किंतु संस्कार पूर्ण था। 7 वर्ष की आयु में ही ऐसी कठिन तथा चमत्कार पूर्ण लयकारियां किया करते थे कि संगत कलाकार को संभालने के लिए विशेष योग्यता की आवश्यकता पड़ती थी। आपकी बेजोड़ लयकारियां, तिहाईयां तथा तबले के साथ लड़ंत-भिड़ंत सुनकर श्रोतागण आश्चर्य से भर जाते थे कि इस छोटे से बालक पर वास्तव मे सरस्वती की कृपा है। एक बालक के पूर्ण विकास में माता-पिता का संपूर्ण योगदान होता है। पिता की तपस्या के साथ ही साथ आपकी माताजी श्रीमती रानी देवी जो स्वयं रामायण एवं रामचरितमानस जैसे धार्मिक ग्रंथो का नियमित पाठ करने के साथ ही सभी प्रकार के भजनों तथा लोकगीतों का सुंदर गायन करती थीं जिसका अद्‌भुत प्रभाव आपके बालमन पर बाल्यावस्था से ही पड़ा।

आपके परिवार में पीढ़ी दर पीढ़ी सांगीतिक रत्न हुए हैं जिसका प्रभाव आपकी गायकी पर बाल्यावस्था से ही दृष्टिगत होता था। जन्म से ही आपके पिता, चाचा तथा अनेक कुटुंबीजनों से स्वर लहरिया श्रवण करने को मिली। संगीत के प्रति पूर्णतया समर्पित होने के कारण पढ़ाई लिखाई में आपका मन नहीं रमा, इस कारण अपने

[176] पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से किए गए साक्षात्कार द्वारा उद्‌धृत

आठवीं कक्षा के बाद पढ़ाई छोड़कर संपूर्ण जीवन संगीत के प्रति समर्पित कर दिया।

कला जीवन का प्रारंभ एवं जीवन का संघर्ष

यह पूर्वविदित है कि [177]पंडित छन्नूलाल मिश्र जी का परिवार सांगीतिक संस्कारों से परिपूर्ण था किंतु निर्धनता वह बेड़ी है जो मानव को परिस्थितियों से बांध देती है। गुणी तथा समर्पित कलाकार होने के उपरांत भी परिस्थितियों तथा उचित अवसर न मिलने के कारण पिता तथा चाचा एक ख्याति प्राप्त कलाकार नहीं बन सके क्योंकि जीविकोपार्जन परिवार की सबसे बड़ी प्राथमिकता थी, और यही वह स्थिति थी, जिसके कारण एक समर्पित कलाकार अर्थाभाव के कारण उच्च स्थान को प्राप्त नहीं कर सका। यह परिवार छोटे-मोटे संगीत समारोह एवं व्यक्तिगत कार्यक्रमों में कार्यक्रम करने के साथ है खेती बाड़ी एवं अन्य साधनों से भी धन अर्जित करने के लिए कठोर परिश्रम किया करता था।

आर्थिक स्थिति इतनी खराब थी कि एक रोटी खाकर पंडित जी को पूरे दिन शारीरिक श्रम करना पड़ता था कई कई बार बिना भोजन किया भी दिन बिताना पड़ता था। ऐसी स्थिति में भी आपने रियाज करना नहीं छोड़ा।

ऐसी कठिन परिस्थिति के बावजूद भी आपके पिता ने आपको संगीत शिक्षा प्रदान करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। आप एक ही विलंबित ख्याल को अलग-अलग तालों में भी गा लेते थे, ताल की की प्रत्यक मात्रा से खूबसूरत तथा कठिन तिहाईयां बनाने में आपको बड़ा आनंद आता था। आपके पिता ताल पक्ष पर आपकी इतनी अच्छी पकड़ देखकर बहुत प्रसन्न होते थे,आज भी महान से महान तबला वादक

[177] डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

भी पंडित जी के साथ तबले पर संगत करना गौरव की बात समझते हैं तथा एक चुनौती के रूप में स्वीकार करते हैं।

सांगीतिक जीवन की ओर अगला कदम

पिता से संगीतिक ज्ञान लेने के पश्चात पिताजी ने सोचा कि बालक बहुत प्रतिभाशाली है और इसे योग्य तथा प्रतिभावान गुरु की आवश्यकता है, 8 वर्ष की आयु में एक योग्य गुरु की तलाश में मुजफ्फरपुर बिहार चले गए, क्योंकि पिता के विचार थे, का एक कुशल गुरु का मिलना आवश्यक है जो मेरे पुत्र के हुनर को और भी अधिक तराश सके। पंडित जी की इस यात्रा में पिता के साथ छोटे भाई विश्वनाथ मित्र भी थे। इस खोज में उन्हें एक महान गुरु का सानिध्य प्राप्त हुआ, "उस्ताद अब्दुल गनी खान साहब" जो 'किराना घराने' के सुप्रसिद्ध कलाकार थे, तथा उस समय दरभंगा राज दरबार मे महान दरबारी गायक के पद पर सुशोभित थे। वह ख्यातिलब्ध कलाकार थे तथा, पिता श्री बद्री प्रसाद मिश्र ने उनके बारे में बहुत सुना था। वह आपको उस्ताद जी के पास लेकर गए और उनके सामने आपका गायन करवाया। इतने छोटे बालक के मुख से इतना सुंदर गायन सुनकर उस्ताद जी बहुत प्रभावित हुए तथा उन्होंने उनके पिता से कहा कि वह आपको उनके सुपुर्द कर दे,ताकि संगीत की शिक्षा निरंतर चलती रहे, इस प्रस्ताव को आपके पिता ने सहर्ष से स्वीकार कर लिया। [178]आपके गुरु से आपको शिक्षा दीक्षा मिलती रहे इसलिए आपके पिता ने मुजफ्फरपुर में चतुर्भुज स्थान मंदिर के पास एक छोटा सा कमरा किराए पर लिया, तथा दोनों बेटों के साथ वहीं रहने लगे। आर्थिक तंगी तथा जीविकोपार्जन के लिए वहां कोई समुचित साधन न होने के कारण यहां आप लोगों को बहुत कष्ट उठाने पड़े, किंतु इस परिस्थिति में अपने 'उस्ताद अब्दुल गनी खाँ साहब' से गंडा

[178] डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

बंधन करवा कर विधिवत सीखना प्रारंभ कर दिया। आप तीनों बहुत ही आर्थिक तंगी से जूझ रहे थे,पिताजी मंदिर में गा- बजाकर तथा बच्चों को संगीत सीखाकर थोड़ा बहुत अर्जन कर लेते थे। दिन भर के परिश्रम के पश्चात जो थोड़ा बहुत कमा कर लाते थे,उसमें से ही किसी प्रकार कमरे का किराया तथा थोड़ा बहुत भोजन का इंतजाम कर पाते थे। कभी आंधी कभी एक रोटी खाकर दोनों भाई उस्ताद जी के घर चले जाया करते थे घर कुछ किलोमीटर दूरी पर था तो दोनों भाई पैदल ही घंटे भर का सफर कर उस्ताद जी के घर पहुंचते थे। गुरु के घर दिन भर कामकाज में हाथ बंटाते तथा संगीत की चर्चा तथा अभ्यास किया करते थे, दिनभर इन्हें खाने को कुछ नहीं मिलता और ऐसी परिस्थितियों में भी अभ्यास जारी रखा। ऐसा लक्ष्य जिसके लिए बहुत संघर्ष किया तथा कभी हार नहीं मानी, ऐसे संघर्ष में कई कठिन पड़ाव,उतार-चढ़ाव आए जिन्हें पार करना बहुत ही मुश्किल था,और अंततः आपने अपनी मंजिल को पाया और अपने गुरु से दीक्षित हुए।[179]

यह वह समय था जब आपके पिता संघर्ष करके धनोपाजर्न में जुटे थे ताकि पुत्र की संगीत शिक्षा में कोई व्यवधान ना आए।अब वह मुजफ्फरपुर में छोटे-छोटे कार्यक्रम करने लगे थे,तथा बहुत कम पारिश्रमिक में भी कार्यक्रम करते थे।

धीरे-धीरे मेहनत रंग लाने लगी, संगीत प्रशिक्षण के उपरांत जो भी समय मिलता,उसमें पंडित छन्नूलाल मिश्र जी ने भी कार्यक्रम देना आरंभ किया,वहीं अपने गुरु के उत्कृष्ट मार्गदर्शन में पंडित जी की गायकी मेंऔर भी अधिक निखार आता गया और वह गायकी की गूढ बारीकियों को अपने गायन में आत्मसात करने लगे। किराना घराना के प्रतिष्ठित तथा मूर्धन्य कलाकार होने के बावजूद भी उस्ताद जी ने आपको घरानों के बंधन से मुक्त अलग स्वतंत्र गायन शैली प्रदान की।

---

[179] पंडित रामकुमार मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी

संगीत जगत से जुड़े लोगों से पंडित जी की अच्छी पहचान होने लगी थी पंडित जी ने दरभंगा के राज दरबार में थे अपने उस्ताद जी के साथ गायन की प्रस्तुति दी। पंडित जी में कुछ भी नया सीखने की जिज्ञासा बहुत अधिक थी, वह गांव तथा अन्य ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर घर की बुजुर्ग महिलाओं से क्षेत्रीय लोकगीत सीखा करते, अपनी एक बुआ जिनका नाम 'प्यारी' था उनसे ढेर सारे शादी विवाह के गीत, ऋतुओं के गीत, त्योहार के गीत, ग्रामीण लोक संगीत तथा रामायण और रामचरितमानस के कुछ प्रसंगों को सीखा। स्मरणशक्ति इतनी तेज थी, कि जो गीत एक बार सुन लेते थे वह आज भी कंठस्थ है। लोक संगीत के प्रति पंडित जी की रुचि तथा लगन इतनी प्रबल रही कि [180]आज पूरे भारतवर्ष में 70 प्रकार का लोकगीत गाने वाले एकमात्र कलाकार है। 8 वर्षों तक गुरु के सानिध्य में कठोर साधना करने के पश्चात पंडित जी गायन कला की सभी विधाओं तथा बारीकियां को समझने में सफल हुए ।कठिन परिश्रम से एक ओर जहां कठिन स्वर संगतियों को गले मे साधा वहीं दूसरी ओर संगीत की भाव पक्ष मे भी इनका कोई सानी नहीं था। आपकी गायकी मे आप गीत के हर शब्द में निहित अर्थ को अपनी भाव अभिव्यक्ति से जीवंत करते हैं, तथा ध्रुपद,ख्याल एवं उपशास्त्रीय गायन तथा सुगम संगीत, लोक संगीत आदि में भी आप समान रूप से सिद्धहस्त है।

समकालीन सांगीतिक परिवेश

वह समय था जब छन्नूलाल मिश्र जी का नाम किसी क्षेत्र या नगर सीमित नहीं था बल्कि देश के बड़े-बड़े संगीत समारोह में भी उनकी आवाज सुनाई देने लगी। अच्छे-अच्छे कार्यक्रमों में शिरकत करने लगे एक बार चंपा नगर के राजा 'कुमार श्यामानंद सिंह'ने उन्हें अपने यहां गायन हेतु आमंत्रित किया,क्योंकि महाराज स्वयं

[180] डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

एक कुशल गायक थे तथा श्री भीष्म देव चटर्जी नामक गुरु से संगीत शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। गायन के पश्चात महाराज इतने प्रभावित हुए कि, उन्होंने आपके पिता से आग्रह किया कि आपको इस राज्य का दरबारी गायक बनने के अनुमति दें तथा वही चंपानगर राज्य में ही रहने दें। उस काल मे इस प्रकार की व्यवस्था को कलाकार बहुत पसंद करते थे, किंतु पंडित जी तथा उनके पिता ने विनम्रता इस प्रस्ताव को स्वीकार करने से मना कर दिया। आपके पिता का कहना था कि एक कलाकार को अपनी कला, प्रतिभा तथा गुरु द्वारा प्राप्त विद्या को एक दरबार तक सीमित नहीं रखना चाहिए,बल्कि हर खास तथा आम लोगों तक यह कला पहुंचनी चाहिए। उस समय मुंबई, कोलकाता तथा चेन्नई तथा पुणे आदि जैसे बड़े शहरों में बहुत ही भव्य तथा प्रतिष्ठित संगति कार्यक्रम आयोजित होते थे,जहां पूरे भारत वर्ष के गण्यमान्य गायक ,वादक तथा नर्तक कार्यक्रम मे अपनी प्रस्तुतियां देते थे, ऐसे कार्यक्रमों में गाना- बजाना बड़े सम्मान की बात मानी जाती थी। आपके गुरु कृपा से अब आपने भी ऐसे कार्यक्रमों में प्रस्तुति देनी आरंभ कर दिया।[181]

उस्ताद जी का देहावसान

पंडित जी को उस्ताद जी के शनिद में गुरु शिष्य परंपरा का पालन करते हुए लगभग 9 वर्ष बीत चुके थे, इसी बीच उस्ताद जी की बढ़ती आयु के साथ उनकी तबीयत थोड़ी खराब रहने लगी, कुछ दिनों बाद वह दुखद दिन भी आया जब उस्ताद जी का देहावसान हो गया। [182]अपने गुरु के साथ के एक अनुभव को बताते हुए पंडित जी कहते हैं कि- सामने उस्ताद बैठे हुए थे और वह राग दरबारी का अभ्यास कर रहे थे सरगम के बंदिश गाते हुए उनके अभ्यास को उनके गुरु बड़ी

[181] डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

[182] पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से किए गए साक्षात्कार द्वारा उद्धृत

तालीनता से सुन रहे थे,तभी किसी गलती पर उस्ताद जी ने उनकी पीठ पर मारा,इस पर उनके गुरु मां तथा उनके पुत्र अहमद खाँ साहब ने आपत्ति जताई, और पूछा कि इतना अच्छा गा रहा है, फिर आपने क्यों मारा इस पर उस्ताद जी ने बड़े प्रेम तथा विश्वास से कहा कि "आज मैं इसे बहुत खुश हूं और इसे आशीर्वाद देता हूं कि तुम्हें गायन में कभी कोई नहीं पराजित करेगा हमेशा मेरे सरसब्ज रहोगे तुम, यही मेरी दुआ है और आशीर्वाद भी"

और उसी दिन पंडित जी के गोद में कर रखे हुए उनके गुरु ने अपने प्राण त्यागे। पंडित जी बताते हैं कि यह अंतिम शब्द उनके लिए अविस्मरणीय है,उस्ताद जी का आशीर्वाद वास्तव में सत्य सिद्ध हुआ इसमें कोई संदेह नहीं है।

गुरु से इस प्रकार भावना जुड़ी थी कि अपने गुरु के कफन से थोड़ा सा कपड़ा काटकर पंडित जी उसके टोपी बनाकर पहना करते थे,और यह सिलसिला कई वर्षों तक चला। गुरु के निधन के पश्चात उनके सुपुत्र उस्ताद अहमद खान साहब ने पंडित जी का मार्गदर्शन किया।[183]

आजमगढ़ तथा मुजफ्फरपुर जैसे छोटे शहरों से जुड़े होने के कारण बड़े शहरों तथा कार्यक्रमों में शिरकत करना थोड़ा कठिन था, उसके बाद पंडित जी के जीवन में एक अद्भुत मोड़ आया जिसमें उनके जीवन की दशा तथा दिशा बदल दी।

जीवन में आध्यात्मिक दृष्टिकोण का प्रादुर्भाव

लगभग 22 वर्ष की आयु में आपके जीवन में एक चमत्कार हुआ,यह वह समय था, जब आप सांगीतिक पराकाष्ठा के पथ की ओर अग्रसर थे बस आवश्यकता थी, एक आध्यात्मिक शक्ति की एक पथ प्रदर्शक की तथा एक अपराजेय मनोबल की।

[183] पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से किए गए साक्षात्कार द्वारा उद्धृत

इसकी पूर्ति हेतु ही आपको एक ईश्वर स्वरूप अलौकिक तथा आध्यात्मिक गुरु का सानिध्य प्राप्त हुआ जिनके संपूर्ण व्यक्तित्व तथा ज्ञान के प्रकाश ने आपके जीवन को आलोकित कर दिया। [184]और एक बार की कहानी आप बताते हैं कि एक संत जो कहीं से आ रहे थे, जो अपने शिष्यों की मंडली के साथ "गुरु महाराज महंत श्री नरसिंह दास जी" (मौनी बाबा) जो कि संत "श्री करपात्री महाराज जी" के मित्र एवं समकालीन थे। अपने जैसे ही उनको देखा उनके मुख के आधा तथा आकर्षक से वशीभूत होकर व्याकुल होकर उनके चरणों में नतमस्तक हो गए। यहीं से आपके जीवन में आध्यात्म का आरंभ तथा समर्पण भाव उत्पन्न हुआ। उन्हें गुरु ने आपको "रामनाम"का गुरु मंत्र दिया तथा आपके संपूर्ण जीवन को राममय बना दिया।
उसे आध्यात्मिक शक्ति के बल पर आप बताते हैं कि जीवन मुझे आत्मिक शांति तथा आत्मबल का अनुभव होने लगा कठिन से कठिन परिस्थितियों भी मुझे डिगा नहीं पाती थी।
कुछ समय उपरांत लंबी बीमारी के बाद पंडित जी की माता का भी देहांत हो गया। पंडित जी का अपने माता के साथ आत्मिक लगाव था और इस तरह उनके चले जाने से हृदय बहुत व्यथित हो गया, ऐसे में गुरु महाराज के आध्यात्मिक शब्दों ने उन्हें भावनात्मक रूप से बहुत सहयोग दिया तथा गुरु महाराज के सानिध्य तथा संगीत के सहारे पंडित जी ने स्वयं को दुख से उबारा और एक बार फिर आजीविका हेतु मुजफ्फरपुर चले गए। मुजफ्फरपुर जाकर घर की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए अलग-अलग तीन स्कूलों में नौकरी की तथा साथ ही साथ रियाज भी करते रहे । आश्चर्यजनक बात तो यह थी की इतना व्यस्त होने के बाद भी सदा तनाव मुक्त तथा प्रसन्न चित्त रहते थे।

[184] पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से किए गए साक्षात्कार द्वारा उद्धृत

पंडित जी का काशी से संबंध एवं काशी आगमन

पंडित छन्नूलाल मिश्र ने लगभग 35 वर्ष की आयु मे, गुरु की आज्ञा को मानकर काशी नगरी को कर्मभूमि बनाने के निर्णय के साथ काशी नगरी में प्रदार्पण किया। जीवन में एक ही उद्देश्य था-जीवन तथा संगीत की दशा तथा दिशा को बदलना।[185] कुछ समय उपरांत जीवन के महत्वपूर्ण चरणों को पार करते हुए सभी कर्तव्यों का पालन करते हुए पंडित जी काशी आ गए, क्योंकि छोटे शहरों में रहकर बड़े कार्यक्रमों तक पहुंच पाना कठिन होता जा रहा था। काशी तथा पंडित जी का संबंध बहुत पुराना रहा है, पंडित जी का जन्म भले ही आजमगढ़ के हरिहरपुर में हुआ हो किंतु वास्तव में काशी के साथ उनका संबंध रक्त समान है। बनारसी संगीत तथा बनारस के कलाकारों से उनका नाता जन्म से है। कई बार अपने साक्षात्कारों में उन्होंने यह बात बताई है कि-[186]

"बनारस और यहां के संगीत के प्रति मेरे मन में इतनी श्रद्धा, लगाव अथवा रुचि इसलिए है,क्योंकि बनारस से मेरा खून का नाता है और मेरा खून बनारस का है"

पंडित बड़े रामदास जी मिश्र बनारस के कलाकारों के गुरु तथा पूज्य संगीतज्ञ थे उन्हीं से बनारस घराने को पहचान मिली। पंडित बड़े रामदास जी की एक ही बेटी थी, जिनकी शादी अत्यंत गुणी सारंगी वादक 'पंडित बग्गड महाराज' जी से हुई थी तथा पं बग्गड़ महाराज की सगी बहन पुनीता देवी मेरी दादी थी श्रीमती पुनीता देवी के बेटे पंडित बद्री प्रसाद मिश्रा मेरे पिता है इस प्रकार पंडित बगड़ महाराज मेरे नाना हुए यहां के और भी कलाकारों से मेरे पारिवारिक तथा आत्मिक संबंध हैं। पंडित जी ने यहां तक कहा कि उनके मेरे भाई पंडित शामता प्रसाद मिश्र (पंडित गुदई महाराज) मेरे बहुत करीबी थे, तथा "नाधिंधिंना" के जादूगर "तबला सम्राट

[185] पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से किए गए साक्षात्कार द्वारा उद्धृत
[186] पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से किए गए साक्षात्कार द्वारा उद्धृत

पंडित अनोखेलाल मिश्र" जी का दामाद होने के नाते मेरा संबंध बनारस से जुड़ ही गया। जीवन में अनेक रुकावटें आई तथा अनेक प्रलोभन वाले प्रस्ताव मिलने के बाद भी मैंने कभी काशी को नहीं छोड़ा और ना ही किसी और जगह बस सका क्योंकि बनारस मेरे दिल में बसता है।

आध्यात्मिक एवं धार्मिक परिवेश से संबंध होने के कारण पंडित जी के हृदय में काशी विश्वनाथ तथा संकट मोचन हनुमान जी के प्रति विशेष श्रद्धा रही है। अपने जीवन काल के 40 से 50 वर्षों में सप्ताह के ऐसे शायद ही कोई दिन बीते हो जो पंडित जी ने संकट मोचन हनुमान जी के दर्शन न किए हो। मंदिर के महंत जो पंडित जी के परम मित्र तथा भ्राता के समान थे, प्रोफेसर वीरभद्र मिश्र जिनके साथ पंडित छन्नूलाल मिश्र का एक सांगीतिक संबंध भी था।

बनारस आकर पंडित छन्नूलाल मिश्र जी ने जीवन की नई शुरुआत की।[187] जीवन के शुरुआती दिन बहुत ही कठिन तथा संघर्ष पूर्ण थे। उनके शब्दों मे " जब मैं बनारस आया तो शुरू में रामापूरा मोहल्ले में स्थित अनोखे भवन ससुराल में ही रहता था और यहां आते ही अच्छे ट्यूशन करने लगा, रवींद्र पुरी में ढाकी साहब रहते थे,वह मेरे गायन से अत्यंत प्रभावित हुए और मुझे संगीत सिखाने के लिए कहा। "काशी हिंदू विश्वविद्यालय"में डॉ.गुरु मोहन सिंह के बड़े भाई की पत्नी, भूपेंद्र शीतल जी मुझे ठुमरी गायन सीखने लगी, उसके बाद धीरे-धीरे मेरे काम का विस्तार बनारस में होने लगा। "काशी हिंदू विश्वविद्यालय संगीत एवं मंच कला संकाय" की प्रो.डॉ.अर्चना दीक्षित और डॉक्टर वनमाला पर्वतकर जी ने भी मुझसे करीब 6 महीने तक ठुमरी सीखी थी। बनारस के प्रसिद्ध विद्वान मेरे ससुर स्वर्गीय अनोखेलाल मिश्रा जी के शिष्य तथा मेरी पत्नी के गुरु पंडित छोटेलाल मिश्र मुझे बहुत प्रेम सम्मान देते थे छोटेलाल मिश्र जी मेरे साथ तबला संगत किया करते थे

[187] पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से किए गए साक्षात्कार द्वारा उद्धृत

और इस प्रकार बनारस मे जीविकोपार्जन की व्यवस्था होने लगी। पंडित जी कहते हैं,कि मेरे गुरु तथा राम जी के आशीर्वाद से बनारस मे मेरे भाग्य ने करवट ली और यही से संगीत के आकाश में बुलंदियों को छूने का क्रम आरंभ हो गया।

संगीत के सैद्धांतिक पक्ष के गुरु पद्म भूषण ठाकुर जयदेव सिंह का सानिध्य

बनारस आगमन के पश्चात पंडित जी को महान शस्त्रागार तथा विद्वान पद्म भूषण ठाकुर जयदेव सिंह का सानिध्य प्राप्त हुआ जिससे पंडित जी का शास्त्रीय पक्ष भी क्रियात्मक संगीत की भांति समृद्ध हो गया। ठाकुर जयदेव सिंह एक शास्त्रकार नहीं बल्कि एक अच्छे संगीतज्ञों की श्रेणी में गिने जाते थे जब दोनों की भेंट हुई तो दोनों ही एक दूसरे से अत्यंत प्रभावित हुए।[188]

पंडित छन्नूलाल मिश्रा जी अपने गायन में राग रागिनी तथा गायन के नियम पालन करने के बावजूद भी संगीत के शास्त्रीय तथा भाव पक्ष पर विशेष ध्यान देते हैं। पंडित जी ने प्रथम मुलाकात में ही उनमें अपना आदर्श तथा गुरु मान लिया। ठाकुर जयदेव सिंह जी पंडित जी के अंदर एक उत्सुकता तथा जिज्ञासा देकर बहुत प्रसन्न होते थे, उन्होंने पंडित छन्नूलाल मिश्र जी को संगीत शास्त्र से संबंधित अमूल्य ज्ञान प्रदान किया तथा अपने जीवन के अनुभव तथा ग्रंथों का गहन मंथन करके उसका संस्कार छन्नूलाल जी मे प्रत्यारोपित किया। आज पंडित जी अपने गायन में अपने क्रियात्मक गुरु उस्ताद गनी खान के क्रियात्मक तथा शास्त्रीय गुरु ठाकुर जयदेव सिंह के शास्त्रीय प्रयोग को गायकी मे आत्मसात करते हैं। उनके ही सौजन्य से पंडित छन्नूलाल मिश्र 15 प्रकार के गमको का प्रयोग स्थाई भंजनी,रूपक भंजनी,

[188]डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

साथ ही मेरूखंड तथा खंडमेरू का प्रयोगात्मक रूप मे अपने गायकी में प्रयोग करते हैं। [189]आज भी मंचीय कार्यक्रमों के दौरान पंडित जी गायन के बीच मे संगीत के शास्त्र पक्ष को समझाते हैं, यही कारण है कि आम श्रोता भी उनकी गायकी को समझ पाते हैं इसका श्रेय अपने गुरुओं को प्रदान करते हैं।

अपने गुरु के मार्गदर्शन तथा ज्ञान एवं अपने संगीत के प्रति समर्पण के कारण अल्प समय में ही बनारस में पंडित छन्नू लाल मिश्र जी का नाम प्रसिद्ध होने लगा। अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत करने लगे और जल्दी ही देश के सुप्रसिद्ध शास्त्रीय, उपशास्त्रीय प्रतिष्ठित गायको की श्रेणी में पंडित जी का नाम प्रशंसनीय रूप से सम्मिलित हो गया।

पंडित जी की गायन मे अधिक रुचि होने के कारण अधिक पढ़ाई लिखाई नहीं कर पाए किंतु प्राइवेट से 12 वीं तक की परीक्षा उत्तीर्ण की।अपनी गायन कला से उन्होंने प्रवीण की उपाधि इलाहाबाद से प्राप्त की। यह वह दौर था जब बनारस में 'आकाशवाणी केंद्र' नहीं था सबको इलाहाबाद केंद्र से ही स्वर परीक्षण हेतु आवेदन करना पड़ता था। अपने प्रथम प्रयास में ही पंडित जी को परीक्षण के पश्चात(B High) ग्रेड मिला इसके पश्चात उनके इलाहाबाद आकाशवाणी से अनेक कार्यक्रम होने लगे। कुछ समय उपरांत बनारस में आकाशवाणी की स्थापना के पश्चात वहां से अपने गायन की कई सफल प्रस्तुतियां दी जिसके फलस्वरुप देशव्यापी स्तर पर ख्याति अर्जित की। धीरे-धीरे 'ए ग्रेड' और 'टॉप ग्रेड' बनने का सम्मान प्राप्त हुआ। अपने अविस्मरणीय संस्मरण के तौर पर कहते हैं-

"बहुत पहले मुजफ्फरपुर बिहार में सिकंदरपुर मैदान में मंच पर उस्ताद अल्लारख्खा खाँ साहब का तबला वादन चल रहा था,और यह बहुत ही बड़ा संगीत का कॉन्फ्रेंस था। मैं हारमोनियम बहुत अच्छा बजाता था, सौभाग्य से उस दिन उनके

[189] पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्रजी के साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

साथ मैं ही हारमोनियम संगत कर रहा था, और वह बहुत ही तैयार और कठिन तबला वादन कर रहे थे, मैं बहुत सावधानी से लय पकड़कर चल रहा था, कार्यक्रम के बाद खान साहब ने मेरी पीठ ठोक कर कहा " बेटा तुम अनोखेलाल मिश्र के दामाद हो, बहुत ही लयदार हो,"जियो" खूब खुश रहो, तुमने मेरा दिल जीत लिया।[190]

यह मेरा सौभाग्य था कि एक अच्छे कलाकार,जो स्वयं विश्व विख्यात थे, उन्होंने स्वयं आगे बढ़कर मेरा सम्मान किया। पंडित जी अपने एक सुमधुर क्षण के बारे में बताते हैं---मिर्जापुर में तेजपाल जमुना दास जी के मंदिर में झूलनोउत्सव के अवसर पर पंडित सामता प्रसाद मिश्र "गुदई महाराज" मेरे साथ स्वयं तबला पर संगत कर रहे थे, गायन के बीच में ही खुश होकर बोले की बेटा इतना अच्छा गा रहे हो कि मेरा भी गाने का मन कर रहा है,ऐसा कहकर वह मेरे साथ कजरी गाने लगे जिसके बोल थे-"बरसन लागी बदरिया रूम झूम के, आयो सावन अति मनभावन, झूम झूम के सखियां गावे कजरिया"गाना खत्म होने के बाद मुझे आशीर्वाद देकर कहा कि बेटा बहुत अच्छा गाते हो इसी प्रकार गाते रहो मेरा आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ है।

पंडित जी अपने एक सुमधुर क्षण के बारे में बताते हैं-[191]"एक बार सारनाथ में मेरा कार्यक्रम चल रहा था तथा श्री शिव प्रसाद जी तबले पर संगत कर रहे थे कार्यक्रम बहुत ही अच्छा चल रहा था तभी शिव प्रसाद जी का तबला कार्यक्रम के दौरान ही फट गया प्रोग्राम वहीं पर रुक गया, सभी घबरा गए और पूछने लगे कि अब कार्यक्रम कैसे हो पाएगा शिव प्रसाद भी बोले, कि "हां अब तो प्रोग्राम नहीं हो पाएगा"क्योंकि तबला फट गया, तब मैंने पूछा? क्या वहां कोई ढोलक बजाने वाला है?आयोजकों नू तुरंत सबसे पूछा,कि क्या कोई आप मे से ढोलक बजा सकता है?

---

[190] पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से किए गए साक्षात्कार द्वारा उद्धृत

[191] पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से किए गए साक्षात्कार द्वारा उद्धृत

तो वही दर्शक दीर्घा में सुरजन सिंह जी बैठे थे, वह ढोलक लेकर आए,लेकिन उनको केवल ढोलक पर 'दादरा' और 'कहरवा ताल' ही बजाना आता था मैंने कहा कोई बात नहीं मैं, गा लूंगा आप संगत कीजिए मेरे साथ, फिर तो इसके बाद करीब डेढ़ घंटे तक कार्यक्रम चला और मैंने पूरा कार्यक्रम ख्याल से लेकर हर प्रकार की शैली प्रस्तुत की, वह भी सिर्फ ताल दादरा और कहरवा मे,कार्यक्रम बहुत ही अच्छा रहा श्रोता ,आयोजक और वहां उपस्थित सभी लोगों ने बहुत तारीफ की।[192]

3.2 छन्नूलाल मिश्र जी का व्यक्तित्व एवं चारित्रिक विशेषताएं

पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के व्यक्तित्व तथा चरित्र में अनेक विशेषताएं समाहित है जो उन्हें अन्य लोगों से अलग बनाती है।आप एक उत्कृष्ट कलाकार ,सृजनधर्मी रचनाकार सुयोग्य प्रयोगकर्ता प्रेरक गुरु, प्रबुद्ध चिंतक, कर्मठ प्रशासक, समर्पित शिष्य तथा बनारस घराना, किराना घराना तथा हरिहरपुर घराना के संगीत प्रचारक रहे हैं। अपने अपने जीवन कथा चरित्र में उन सभी पहलुओं तथा वक्तव्यों को विकसित किया है जिसके कारण अपने अपने जीवन में विभिन्न प्रकार की उपलब्धियां अर्जित की हैं।

शारीरिक व्यक्तित्व

आपका व्यक्तित्व अत्यंत ओजस्वी एवं आकर्षक है, मंच प्रस्तुति के समय श्रोताओं का ध्यान आपके गायकी से एक पल के लिए भी वंचित नहीं होता है, इसका कारण है आपका मधुर व्यवहार जो आपके व्यक्तित्व में चार चांद लगता है।

[192] पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से किए गए साक्षात्कार द्वारा उद्धृत

आपका सरल स्वभाव एवं सादगी से भरी जीवन शैली है।[193] आपका सभी जाति, धर्म, संप्रदाय अथवा व्यक्ति के साथ प्रेमपूर्ण एवं निश्चल व्यवहार संगीत जगत तथा सामान्य जनमानस के मध्य आपकी अलग छवि प्रस्तुत करता है। आपकी सोच हमेशा सकारात्मक रही है तथा "सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय" जैसी उक्ति में विश्वास रखते हैं।

जीवन के संघर्ष में दिनों से लेकर वर्तमान तक आपके जीवन स्तर सामाजिक दायरे तथा लोकप्रियता मे अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन आए किंतु आपका स्वभाव आज भी सरल है। और यही गुण है की कोई भी मानव आपसे मोहित हुए बिना रह नहीं पाता है।

पहनावा एवं-खान पान

पहनावा किसी भी मानव के व्यक्तित्व के अनेक पहलुओं को उजागर करता है। आपके जीवन शैली एवं खान-पान अथवा पहनावा सामान्य है। मुख्य रूप से आपको कुर्ता पजामा पहनना पसंद है। आप आधुनिकता से संबंधित चीजे अपनी जीवन शैली मे शामिल नहीं करते। वस्त्रों के लिए भी आपके अंदर दिखावे जैसी भावना नहीं है, अपने अपने जीवन के हर दौर में वास्तविकता को स्वीकार किया है। आपके विचार हैं कि मानव के लिए रूप से ज्यादा गुण महत्वपूर्ण है।[194]

आपको अपने घर से विशेष लगाव है, अपने घर को मंदिर के समान मानते हैं। पूरा जीवन अपने घर की सफाई स्वयं ही की है विशेष कर अपने मंदिर की अपना काम स्वयं करते हैं, तथा दूसरों को भी अपना काम स्वयं से करने की तत्काल प्रेरणा देते हैं।

---

[193] डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी
[194] डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

खाने पीने में भी आपको सामान्यतः देसी चीज ज्यादा भाती है जिसमें सत्तू,अथवा गेहूं के आटे से बनी पंजीरी आदि शामिल हैं। सामान्य भोजन खिचड़ी, मसूर दाल,आलू भुजिया, सब्जी आदि सामान्य भोजन खाना पसंद करते हैं।

और बनारस से संबंध होने के कारण आपको मिठाइयां खाना भी बेहद पसंद है क्योंकि बनारस खान पान के शौकीनों का शहर है,जहां हर प्रकार का भोजन उपलब्ध है। बनारस के छेने की मिठाई विशेष रूप से प्रिय है।

पंडित छन्नूलाल मिश्र जी स्वयं भी अच्छा व स्वादिष्ट भोजन बना लेते हैं विशेष कर होली पर्व के अवसर पर 'मालपुआ' अवश्य बनाते हैं। परिजनों के अतिरिक्त आपके सभी परम शिष्यों अथवा मित्रों ने आपके हाथों के बने भोजन का स्वाद चखा है। आपका प्रारंभिक जीवन ग्रामीण परिवेश मे बीता , अपने जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव देखे किंतु इसके बावजूद भी आपका सामान्य भोजन अथवा रहन-सहन सादगी से परिपूर्ण है और शिष्यों मे यह तथ्य विशेष रूप से अनुकरणीय है।

दैनिक दिनचर्या

दैनिक दिनचर्या अथवा कार्य विहार प्रत्येक मानव के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिससे मानव के क्रियात्मक गतिविधियां अथवा दिनचर्या निश्चित रूप से प्रतिविंबित होती है। यही वह साधन है जिस व्यक्ति अपने जीवन के व्यस्ततम पलों मे भी दैनिक व्यवस्था किस प्रकार करता है इस तथ्य की जानकारी हमें इसी माध्यम से प्राप्त होती है।

पंडित जी को बाल्यावस्था से एक अनुशासित जीवन शैली की आदत रही है। प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में उठने तथा नित्य क्रिया से निवृत्त होकर संगीताभ्यास करने तथा एक निश्चित दिनचर्या का अनुसरण करने की आदत रही है।

प्रातः उठकर हाथ में लकड़ी की लाठी लेकर शिष्यों के साथ टहलने जाना, आधे घंटे ठंडी व गीली घास पर नंगे पांव टहलना, तथा छोटी गैबी मोहल्ले में स्थित देवेश्वर

महादेव दर्शन करना यह यहां मुख्य दिनचर्या रही है। किशोरावस्था में आपने लाठी भांजने की कला में भी महारत हासिल किया था, तो टहलने के बाद थोड़ा कसरत व्यायाम के पश्चात लाठी भांजने का भी अभ्यास करते हैं। [195]ग्रामीण परिवेश से जुड़े होने के कारण ग्राम में जनजीवन से जुड़े सभी कार्यों में पंडित जी निपुण हैं। प्रातः भ्रमण से लौट कर आने के पश्चात पंडित जी गुरुकुल परंपरा से रह रहे सभी शिष्यों को स्वर अभ्यास करवाते हैं तथा स्वयं योग साधना, प्राणायाम एवं विभिन्न आसन करते हैं। नित्य पूजा पाठ के दौरान रामायण तथा रामचरितमानस का सस्वर नियमित पाठ करते हैं। [196]पूजन के दौरान गायत्री मंत्र एवं गुरु मंत्र का जप करना पंडित जी के नित्य पूजन का अभिन्न अंग है,इनकी पूजन विधि पूर्णतःशास्त्रों में वर्णित तथा गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान पर आधारित है। देश के विख्यात कलाकार होने के कारण आपने देश-विदेश के अनेक क्षेत्रों में कार्यक्रम किया है, जिससे व्यवस्थाओं के बीच भी आपने अपनी दिनचर्या को बनाए रखने का अथक प्रयास किया है। अतिव्यस्ततम जीवन शैली,चाहे शिष्यों को शिक्षा प्रदान करना हो अथवा कार्यक्रम की व्यस्तता, इन सब के बीच भी आपकी गंगा मैया बाबा विश्वनाथ, बाबा संकट मोचन अथवा राम जी के प्रति भक्ति में कभी कोई कमी नहीं आई।

दृढ़ संकल्पी एवं परिश्रमी

आपके जीवन में अनुशासन का विशेष महत्व है तथा इसी के माध्यम से अपने अपने जीवन में प्रत्येक कार्य को किया है

क्योंकि आपका मानना है कि अनुशासन के माध्यम से प्रत्येक कार्य को करने का एक निश्चित समय निर्धारित हो जाता है, और अनुशासन से मात्र समय नहीं बल्कि

[195] डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी
[196] डॉ इंद्रेश मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

रियाज़ दैनिक दिनचर्या अथवा जीवन को सुव्यवस्थित करने का यह बेहतरीन तरीका है। आपकी इसी समर्पित तथा परिश्रमी व्यवहार के कारण आपके गुरु आपसे बहुत अधिक प्रेम करते थे।

आपके पिता द्वारा आपको एक अनुशासित तथा व्यवस्थित जीवन शैली प्रदान की गई थी,और आपने अपने पिता के आदर्शों को अपने अन्तर्मन मे स्थापित कर निष्ठा व लगन के साथ अपना संपूर्ण जीवन समर्पित किया है और आज भी आप इस प्रकार स्वयं अभ्यास करते हैं तथा अपने शिष्यों को कराते हैं। आपने अनेक घराने के संरक्षण तथा संवर्धन की जिम्मेदारी उठाई है, जिनमे किराना घराना का ख्याल गायन, बनारस घराने का उपशास्त्रीय गायन तथा हरिहरपुर घराने की उपशास्त्रीय तथा लोक परंपरा इन सभी घरानों को स्थापित करने का जो संकल्प आपने लिया,वह आज भी पूरी निष्ठा के साथ निभा रहे हैं। आपने लोक संगीत, शास्त्रीय संगीत, उप शास्त्रीय संगीत को जनमानस तक लोकप्रिय करने में सराहनीय भूमिका निभाई है,और संगीत को उन लोगों की मानस पटल में अंकित किया है जिनका संगीत से कोई संबंध न होने पर भी आपके वक्तव्यों द्वारा उन्हें संगीत समझ आता है। श्रोताओं के साथ संवाद स्थापित करना आपके गायन की मुख्य विशेषता है।[197]

पारस्परिक सामंजस्य

आज भारतीय संस्कृति पर आधुनिकीकरण हावी होने लगा है, सौहार्दपूर्ण परिवेश जो भारतीय संस्कृति अथवा परिवार का अभिन्न अंग है, वह कहीं ना कहीं विलुप्त होने लगा है। आज के इस व्यस्ततम माहौल में जहां पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव के कारण परिवारों में प्रेम तथा सम्मान की भावना खत्म हो गई है, ऐसे दौर में आपका

[197]डॉ इंद्रेश मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

परिवार तथा पारिवारिक सौहार्द एक उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत रहा है। आपके दो छोटे भाई आपके पिता तुल्य सम्मान देते हैं।[198] वहीं अपने पुत्र एवं पुत्री तथा सारे परिवार को एक प्रेम के डोर से बांधकर रखा है। आज सभी एक दूसरे के साथ अभ्यास करते हैं, उठते बैठते हैं,घूमने जाते हैं अपने सुख-दुख अच्छे- बुरे सभी पलों को प्रेम के साथ महसूस करते हैं। आपके पुत्र पौत्र, नाती अथवा नातिन सभी के साथ आपका मित्रवत तथा गुरुवत व्यवहार है।

शालीनता आत्मविश्वास एवं निर्भीकता का उचित समावेश

व्यक्ति के व्यक्तित्व में आत्मविश्वास एक ऐसा शब्द है जिससे मानव के व्यक्तित्व ज्ञान अथवा मनोबल व्यावहारिक तौर पर दृष्टिगत किया जाता है। जब ज्ञान रूपी वृक्ष अपनी जड़े मजबूत करता है तो, आत्मविश्वास रूपी फल व्यक्ति के व्यक्तित्व में फलता है। अर्थात जब कार्य में निपुणता होती है या विशिष्ट मनोबल के माध्यम से बात मुख्य रूप से स्पष्ट होती है तो,आत्मविश्वास की रोशनी से मुख स्वतःही चमकने लगता है। [199]पंडित छन्नूलाल मिश्र भी इस ज्ञान रूपी वृक्ष के समान हैं जो अपने प्रखर व्यक्तित्व के साथ संगीत के आकाश में सूर्य के समान प्रतिष्ठित हैं। अपने ओज रूपी व्यक्तित्व के साथ सांगीतिक सेवा में समर्पित हैं,वैसी कला में स्वतः ही निर्भीकता होती है और व्यक्ति द्वारा किए गए कार्य में भी निर्भीकता दिग्दर्शित होती है। स्वाभिमान व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बन जाता है और यह सभी तथ्य एक दूसरे के पूरक रूप में दर्शित होते हैं। अपने संगीत जगत में अपना व्यक्तित्व पूर्ण रूप से स्वाभिमानी, सहज व सरल बनाया है। आप अपने परंपरा के लिए पूर्ण रूप से सजग व समर्पित है उसमें किसी भी प्रकार की कमी स्वीकार

[198] पंडित शिवजी मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी
[199] पंडित विजय शंकर मिश्रा द्वारा प्रदत जानकारी

नहीं करते, यह तथ्य कोई अहंकार का प्रमाण नहीं है, यह तत्व दिखाता है कि आप अपने कार्य तथा संकल्प के प्रति पूर्णतया समर्पित एवं संवेदनशील है।

"हमेशा भगवान का ध्यान करके गाओ और रागको इतनी शुद्धता से गाओ कि राग का स्वरूप दिखने लगे, सुर मे सच्चाई होऔर हृदय में गुरुओं का ध्यान बना रहे,यही एक संगीत सेवा है,और यही राग पूजा है, राग हमें खुद अपना रास्ता बताता जाता है, हमें बस सच्चे हृदय से उसके पीछे चलने की जरूरत होती है।"

ग्रामीण खेलकूद प्रकृति एवं मनोरंजन के शौकीन

पंडित जी का जन्म ग्रामीण परिवेश में हुआ। ग्राम्य जन जीवन से जुड़े सभी कार्यों मे पंडित जी बेहद निपुण हैं।लाठी भांजना तथा तीर धनुष चलाने का भी विशेष शौक रखते हैं। किसी समय तीरंदाजी में विशेष रूप से निपुण थे, तीर धनुष अथवा गुलेल से बिल्कुल सटीक निशाना लगाते थे। गांव में खेतों को नुकसान पहुंचाने वाले जानवर अथवा पक्षी भगाने के लिए अथवा पेड़ से फल आदि तोड़ने के लिए गुलेल की आवश्यकता होती है और पंडित जी इसमें माहिर रहे हैं।

बाल्यावस्था में पंडित जी अत्यंत चंचल व शरारती थे अपने छोटे भाई पंडित विश्वनाथ मिश्र के साथ गांव में बड़ी शरारतें किया करते थे। जब दोपहर में पिताजी सो जाते थे तो अपने भाई को साथ लेकर गांव में स्थित पोखरी पर चले जाते थे और घंटा पानी में खेला करते थे।। आम के पेड़ पर चढ़ना तथा लाठी भांजना प्रिय खेलों में से एक था। [200]

जब कोई उनके पिताजी से जाकर कहता कि "छन्नू भैया दोपहर में पोखर में बहुत देर से नहा रहे हैं तो पिताजी बाँस की छड़ी लेकर आते थे और पीठ पर मारते थे। माता अत्यंत दयालु तथा भावुक स्वभाव की महिला थी, इसलिए पिताजी को रोका

[200] पंडित शिवजी मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी

करती थी और जब पिताजी नहीं मानते थे तो अपनी चाची जगन देवी (पंडित चंद्रिका प्रसाद मिश्र की पत्नी) के पीछे जाकर छुप जाते थे क्योंकि ग्रामीण परंपरा के अनुसार जेठ अपने छोटे भाई की पत्नी को नहीं छूते थे और इस प्रकार वह पिता की मार से बच जाते थे।

सकारात्मक सोच के धनी

पंडित छन्नूलाल मिश्र अपने सकारात्मक सोच के बहुत धनी हैं जीवन के क्षेत्र में निरंतर प्रगतिशील होने के लिए मनुष्य की ज्ञानेंद्रिय अपने लक्ष्य की ओर हो तब मनुष्य अपने सोच को सकारात्मक रूप प्रदान कर सकता है।[201] आपके कथनानुसार " अहंकार मानव का सर्वनाश कर देता है यह केवल संगीत के लिए नहीं बल्कि संपूर्ण जीवन के लिए एक बुरी और नकारात्मक अवधारणा है।" यह एक ऐसी भावना है जिसका स्वयं को पता नहीं होता हमें लगता है कि हम सहृदय हैं,दयालु हैं, और अहंकार से कोसों दूर है,परंतु हमारे व्यवहार,व्यक्तित्व,भाव आदि से यह स्वयं उजागर होता है। जब मानव किसी दूसरे की प्रशंसा करता है तो इससे आपका अहं भाव घटता है,और आपके व्यक्तित्व को उच्च स्तर पर स्थापित करता है,वहीं जब आप किसी की आलोचना करते हैं तो आपके अहंभाव में वृद्धि होगी और यही सबसे बड़ी समस्या है मानव जीवन की, उसे स्वयं में छोड़कर हर किसी में समस्या दर्शित होती है। आपके शालीनता पूर्ण एवं सरल व्यवहार के कारण यह अवगुण आपके व्यवहार में कभी दृष्टिगत नहीं हुआ।

[201] पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से किए गए साक्षात्कार द्वारा उद्धृत

स्नेहपूर्ण एवं विनम्र व्यवहार

पंडित छन्नूलाल मिश्र जी का व्यवहार सभी के प्रति बहुत ही स्नेहपूर्ण रहा है। पंडित जी जब भी किसी से मिलते हैं तो सामने वाले के हृदय में उनके प्रति एक श्रद्धा भाव अंकित हो जाता है। उनका कहना है "हम सभी प्रेम के वशीभूत हैं" पंडित जी कहते हैं कि "हम सभी प्रेम के प्रतिफल हैं प्रेम ही हमारा स्वभाव है प्रेम कही बाहर से उधार नहीं लिया जा सकता,यह तो आंतरिक तौर पर सबके अंदर विराजमान है, क्योंकि वह एक सुंदर भावना है।"पंडित छन्नूलाल मिश्र जी का मानना है की खुशियों का कोई और द्वार नहीं होता, हमें उसे स्वयं ही निर्मित करना होता है तथा प्रसार करना होता है, इसलिए जब हम स्वयं हंसते हैं और दूसरों को हंसाते हैं तो यह मानव जीवन तथा प्रेम भाव की सफल निष्पत्ति होती है। प्रेम तथा समर्पण इस महान कलाकार के मुख पर सदैव दर्शित होता है, और जो एक ओज में मुस्कुराहट के साथ सुंदर रूप में दर्शित होती है।

व्यक्तित्व इतना सकारात्मक है की जो भी व्यक्ति जिस कारण से इसे मिलता है वह सकारात्मक ऊर्जा से भर उठना है, और पंडित जी इस ऊर्जा का मुख्य स्रोत आनंद परम आनंद में रहने के बात करते हैं।

"संगीत हमारा लक्ष्य है परम कर्तव्य है हमारी आराधना है हमारी पूजा है।[202] बनारसी लहजे में कहते हैं कि इस आराधना में संपूर्ण समाज सम्मिलित हो जाए। पंडित छन्नूलाल मिश्र अत्यंत सौम्य एवं संवेदनशील कलाकार होने के साथ-साथ एक सरल शालीन, स्वाभिमानी तथा आत्मसम्मानी व्यक्तित्व के भी स्वामी हैं,अन्य जनमानस को भी यह गुण आत्मसात करने के लिए प्रेरित करता है। पंडित जी ने किसी भी प्रलोभन अथवा लालसा को अपने जीवन में कभी स्थान नहीं दिया है,सदा

[202] पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से किए गए साक्षात्कार द्वारा उद्धृत

घराने की परंपरा तथा मर्यादा को संरक्षित एवं संदर्भित किया है तथा सांगीतिक शिक्षा एवं प्रचार प्रसार को ही सर्वोपरि माना है।

सृजनात्मकता के परिचायक

पंडित छन्नूलाल मिश्र उच्च कोटि के सृजनधर्मी संगीतज्ञ हैं। संगीत के दो महत्वपूर्ण दृष्टिकोण व्यवसाय अथवा पार्श्व गायन गायन दोनों में ही उनकी भूमिका महत्वपूर्ण है। इन दोनों ही दृष्टिकोण से वहां पूर्ण रूप से संपन्न एवं सफल कहे जा सकते हैं, उनकी सफलता का वास्तविक गुण यह है की, परंपरिकता एवं सृजनशीलता दोनों ही गुणो को साथ लेकर चलते हैं। रागों का शास्त्रीय स्वरूप अथवा भावपूर्ण गायकी एवं संपूर्ण आख्यान द्वारा सप्रसंग व्याख्या द्वारा श्रोताओं को गायन के संपूर्ण भाव अथवा तथ्य से आत्मिक अनुभव करवाना उनकी एकमात्र उपलब्धि है। उनकी गायकी का मूल तत्व अवसर तथा मानसिक स्तर दोनों ही है,जिसके द्वारा श्रोताओं के साथ भावनात्मक संबंध प्रगाढ़ कर लेते हैं।

ओजस्वी वक्ता व प्रबुद्ध चिंतक

पंडित जी के हर व्याख्यान से सिद्ध होता है, कि वह एक प्रबुद्ध चिंतक एवं ओजस्वी वक्ता हैं। [203]उनके हर वक्तव्य हर शब्द में एक सकारात्मक सोच संगीत के प्रति दिग्दर्शिता तथा चिंता दर्शित होती है। वह एक सफल प्रयोगकर्ता तथा योग्य अन्वेषक भी हैं। उन्होंने लोक,शास्त्रीय, उपशास्त्रीय जैसी अनेक विधाओं को आध्यात्मिक तथा संस्कृति के साथ जोड़ा और शोध के नए आयाम प्रस्तुत किए हैं। [204]संगीत के क्षेत्र में अनेक विवाद ग्रस्त विषयों पर उनके विचार तथा उनके द्वारा दिए गए समाधान संगीत जगत में नई दिशा एवं नए आयाम प्रस्तुत करते हैं। संगीत

[203] लोक गायिका विजया भारती द्वारा किए गए साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी
[204] पंडित विजय शंकर मिश्रा द्वारा प्रदत जानकारी

के विद्यार्थियों में सजीवता एवं जागृति प्रदान की है,तथा संगीत,समाज के लिए भी शुद्ध,वैधानिक एवं सुंदर भाषा का प्रयोग किया है जिससे उनकी वाक्य चातुर्यता विलक्षणता के साथ प्रकट होती है। शब्दों में स्पष्ट धीमी गति तथा आत्मविश्वास तथा भावों युक्त से विचारों को व्यक्त करना उनकी स्पष्टवादिता तथा ओजस्विता का परिचायक है।

किराना घराने की शास्त्रीय गायकी तथा बनारस एवं हरिहरपुर घराने की उपशास्त्रीय एवं लोक गायकी के निस्वार्थ प्रचारक एवं उन्नयनक--

पंडित जी की गायकी देश विदेश में प्रसिद्ध रही है। विषय वस्तु के आधार पर पूर्ण पारदर्शिता, परिपक्वता, परंपरा का संपूर्ण तरीके से पालन, सौंदर्यात्मक गुणों का समावेश एवं सृजनात्मकता तथा दूरदर्शिता ऐसे अनेक कारण हैं, जिससे उन्होंने विशेष स्थान प्राप्त किया है। विदेशी श्रोता अथवा अनेक गुणी जनों ने भी उनकी कलात्मक की भूरी -भूरी प्रशंसा की है तथा उन्हें अनेक उच्च कोटि के सम्मान से विभूषित भी किया गया है। अपने अनेक देशी- विदेशी छात्रों को शिक्षक एवं प्रबुद्ध आख्यानों द्वारा लाभान्वित किया है,तथा अनेक कलाविदों को भी अपने ज्ञान अथवा प्रतिभाशीलता से विशेष रूप से प्रभावित किया है। आपने संगीत जगत में संगीत के श्रोताओं एवं छात्र-छात्राओं के लिए एक विशेष सुरूचिपूर्ण माहौल का निर्माण किया है, आपके पदचिन्हों पर चलने वाले शिष्य जहां भी जाते हैं,सबको सांस्कृतिक तौर पर सचेत करते हैं, तथा इस क्षेत्र में काफी सफलता भी प्राप्त कर चुके हैं। पंडित जी के विचारों में जिस प्रकार परंपराओं के दर्शन होते हैं, दर्शकों की जिज्ञासा शांत होती है, इस तौर पर उन्हें सांस्कृतिक अथवा पारंपारिक ऊर्जा का स्रोत मानना कोई अतिशयोक्ति नहीं है। सांगीतिक ऊर्जा का संरक्षण, संवर्धन एवं उत्पत्ति कर उसका विस्तार करना ही उनका संकल्प तथा परम ध्येय है।

किराना घराने की ख्याल गायन परंपरा को गौरवशाली स्थान पर स्थापित करने के पश्चात बनारस एवं हरिहरपुर घराने को गौरवशाली स्थान पर प्रतिष्ठित करने के प्रयत्नों को लेकर प्रतिबद्ध हैं। अपना समग्र जीवन उन्होंने इन परंपराओं को अटूट रखने एवं उन्नतशीलता के लिए समर्पित किया है। [205]उन्हें सरस्वती की कृपा प्राप्त है,वाणी में एक जादू है,जो उनमें ईश्वर तत्व के भी दर्शन कराता है। अपने समर्पण परिश्रम लगन एवं निष्ठा से प्राप्त अपने आगाज एवं विस्तृत ज्ञान से उन्होंने अपनी वाणी एवं व्यक्तित्व को उच्च स्तर पर स्थापित किया है जिसके द्वारा वह सबको मोहित करने में सक्षम है। वाणी में कला एवं भाव का कर्तव्य अद्भुत संतुलन एवं समुचित भाग भंगिमा व मुख्य मुद्राओं से ऐसा प्रतीत होता है, कि जैसे वह विषय संपूर्ण मंथन के रूप में सकारात्मक वह शरीर उपस्थित हो। इस प्रकार पंडित छन्नूलाल मिश्र ने जीवन पर्यंत अपनी कलात्मक,सृजनात्मक एवं उपलब्धियां के माध्यम से बनारस,किराना एवं हरिहरपुर की गायन परंपरा का संरक्षण एवं संवर्धन करके उन्नतशीलता में संजीव,सशक्त एवं सक्रिय योगदान दिया है।

सक्षम संगठनकर्ता

बड़े स्तर पर किसी भी बड़े से बड़े समारोह का कार्यभार संभालने में अद्भुत सक्षमता रखते हैं। किसी भी काम को व्यवस्थित ढंग से साकार रूप प्रदान करना एवं नामी कलाकारों के साथ आपका सुंदर तालमेल एवं सामान जैसे यही वह गुण है जिसके कारण आप बहुत ही विनम्र तथा सुंदर ढंग से बड़े से बड़े आयोजन सफलतापूर्वक कर लेते हैं। आपकी संस्था द्वारा किए गए कार्यक्रम व अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर किए गए कार्यक्रम आपके सफल आयोजन होने का उदाहरण है।

[205] पंडित साजन मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

अनेक सांगीतिक गोष्ठि अथवा अनेक विषयों पर सफल व्याख्यानों का आयोजन अथवा किसी विशेष अवसर पर अवसर के अनुरूप आपकी गतिशीलता आपके संगठनात्मक क्षमताओं का सफल उदाहरण है।[206]

आध्यात्मिक विचारधारा के धारणी

पंडित छन्नूलाल मिश्र राम भक्त हैं।[207]रामायण अथवा रामचरितमानस की पंक्तियां उनकी पथ प्रदर्शक हैं। रामायण की पंक्तियां अथवा राम के चरित्र ने जीवन भर रास्ता दिखाया है, इसके अलावा आप अपने गुरु के अनुयाई हैं, जिनके सुवचनों ने आपके जीवन में हर कदम पर अहंभाव को मिटाया है, और मनोबल को बढ़ाया है।

जीवन के कठिन दिनों में जब कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था तो गुरु के ज्ञान तथा राम की भक्ति में पथ प्रदर्शक का कार्य किया। [208]संगीत के प्रति उनका धार्मिक दृष्टिकोण हर प्रकार के चरित्र अथवा मत एवं सीमाओं से परे है। संगीत के सच्चे साधक के रूप में उन्होंने सौंदर्य शास्त्र को भली भांति समझा एवं आत्मसात किया है, और वह अपने इस मूल्यवान प्राप्त भाव मे आनंद के साथ उन सभी लोगों को सहभागी बनाते हैं जो उसे प्राप्त करने की इच्छा से उनके पास आते हैं।

उनके विचारानुसार “हर मानव के अंदर ईश्वर है, वह मेरे अंदर भी है वह सभी के अंदर है ईश्वर ने हमें केवल माध्यम के रूप में सुना ताकि हम प्रचार प्रसार कर सकें।”

---

[206] डॉ इंद्रेश मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी
[207] डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी
[207] डॉ इंद्रेश मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी
[208] डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी
[208] डॉ इंद्रेश मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

"हमारे भीतर ईश्वर ही गा रहा है क्योंकि यह आवाज यह स्वर ईश्वर प्रदत्त है हम सौभाग्यशाली हैं जैसे-जैसे कलाकार की उम्र बढ़ती है, कलाकार संगीत के सागर में और भी गहरा उतर जाता है और ईश्वर की अनुकंपा तभी प्राप्त होती है जब हम डूबते हैं। ईश्वर केवल समर्पण से ही मिलते हैं और वास्तव में जब हम मिटते हैं तभी कुछ बनते हैं।[209]

3.3 - छन्नूलाल मिश्र का गृहस्थ एवं पारिवारिक जीवन

पंडित छन्नूलाल मिश्र की प्रारंभिक सांगीतिक शिक्षा पिता द्वारा हुई,इसके अलावा माताजी स्वयं रामायण एवं रामचरितमानस जैसे धार्मिक ग्रंथो का नियमित पाठ करने के अलावा सभी प्रकार के क्षेत्रीय लोकगीतों एवं भजनों का गायन करती थीं, यही वह कारण था कि माता-पिता दोनों के सम्मिलित संस्कार पंडित छन्नूलाल की मे मिश्रित रूप से प्रस्फुटित हुए। संगीत की शास्त्रीय व प्रयोग शिक्षा दी वहीं माता ने व्यावहारिक व आध्यात्मिक ज्ञान दिया।

पारिवारिक वातावरण संपूर्ण रूप से संगीतमय था। [210]परिवार मे ठुमरी गायन की परंपरा पीढियों से थी। पंडित जी के अनुसार हमारे घराने में वर्षों से संगीत की परंपरा रही है, हमारे पिता, दादा, चाचा सभी हमारे गुरु भी हैं। "स्वर्गीय पंडित जगदीप प्रसाद मिश्र' जो ठुमरी के ज्ञाता कहे जाते थे, पंडित जी उन्हीं के वंश की पीढ़ी हैं। पंडित जी कहते हैं कि "हम भाग्यशाली हैं कि हमारा जन्म ऐसे परिवार में हुआ" बड़े चाचा चंद्रिका प्रसाद मिश्र कुशल सारंगी वादक थे, दूसरे चाचा पंडित श्याम लाल मिश्र कथक नृत्य में निपुण थे,तीसरी चाचा ठाकुर प्रसाद मिश्र, खेती-

---

[210] पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से किए गए साक्षात्कार द्वारा उद्धृत

बाड़ी का कार्य करते थे, वहीं सबसे छोटे चाचा पंडित मनिका प्रसाद मिश्र प्रसिद्ध तबला वादक थे।

"प्रारंभिक गुरु हमारे पिता ही थे, और हरिहरपुर में हमारा पुश्तैनी मकान था उन दिनों बाल्यावस्था में चीजें शांत होती थी,तथा बड़ों का संरक्षण मिलता था,हमें ऐसे पिता तथा गुरु मिले जिन्होंने जीवन के एक-एक क्षण को बहुमूल्य बता
कर जीना सिखाया। बड़ों का आदर सम्मान कार्यक्रम की विधिवत शिक्षा, वाचन शैली तथा जीवन की अनेक अच्छी बातें सिखाई, और वह समय मेरे लिए स्वर्णिम काल था।

पिता ने अनुशासन सिखाया माता द्वारा प्रदत्त आध्यात्मिक गुण के कारण पंडित जी गांव वालों को रामचरितमानस तथा सुंदर कांड गा कर सुनाते थे। बाल्यावस्था में ही गांव वालों ने उन्हें "व्यास जी" जैसी उपाधि प्रदान कर दी थी,और प्रसाद के रूप में माला, फूल, बताशे आदि चढ़ाया करते थे।उनके मधुर स्वर मे विभिन्न भजनों तथा पाठ को सुनकर श्रोता गण भाव विभोर हो जाते थे। सुबह की शुरुआत ही रामायण की पंक्तियों तथा भजनों के साथ होती थी। सुबह ब्रह्म मुहूर्त से ही दैनिक दिनचर्या प्रारंभ हो जाती थी जिसका संपूर्ण श्री माता-पिता को जाता है जिनके प्रदत्त गुणों के कारण आज इतने वर्षों के बाद भी जीवन में वही दिनचर्या कायम है, इसका संपूर्ण श्रेय माता-पिता को देते हैं।

जीवन संगिनी के रूप में

पंडित जी की आयु जब 27 वर्ष की हुई तो विवाह के अनेक प्रस्ताव आने लगे।
किंतु पंडित जी आदमी आध्यात्मिक विचारों के कारण ग्रस्त जीवन प्रारंभ नहीं करना चाह रहे थे और पूरी तरह से सांसारिक जीवन से विरक्त हो रहे थे,उनके पिता उनके निर्णय से बहुत दुखी रहते थे इस कारण उन्होंने अपनी व्यथा "गुरु महंत मौनी बाबा श्री नरसिंह दास जी"से कही। गुरु महाराज एक बात अवश्य जानते

थे कि, उनके अनुयायी उनके आदेश को कभी नहीं टाल सकता, और गुरु ने कहा कि, [211]"विवाह सांगीतिक जीवन में बाधा नहीं है, अतः विवाह करके गृहस्थ जीवन प्रारंभ करो, "हर मानव में परमात्मा का वास है, और नारी भगवत रूप है, वह तुम्हारे जीवन में बाधा नहीं बनेगी अपितु तुम्हारे जीवन को संपूर्ण करते हुए तुम्हें अनुचित मार्ग से बचाते हुए सहभागिनी बनेगी"

गुरु की आज्ञा मानकर उन्होंने विवाह के लिए सहमति दी और बनारस घराने के विश्व विख्यात तबला वादक एवं "नाधिंधिंना"के जादूगर के नाम से प्रसिद्ध 'पंडित अनोखेलाल मिश्र' की ज्येष्ठ पुत्री मनोरमा मिश्रा के साथ उनका विवाह संपन्न हो गया।

उच्च कुलीन एवं अमूल्य संस्कारों से युक्तह धार्मिक प्रवृत्ति, सरल स्वभाव एवं पारिवारिक मूल्यों में विश्वास रखने वाली जीवन संगिनी को पा करपंडित जी के जीवन में स्थिरता, शांति, शुभता एवं भाग्योदय का संचार होने लगा।

वैसे तो कार्यक्रम के दौरान विवाह से पूर्व भी पंडित अनोखेलाल मिश्र जी से पंडित जी की मुलाकात कई बार हो चुकी थी किंतु तब किसी को नहीं पता था कि भविष्य में पंडित जी अनोखेलाल मिश्रा जी के दामाद बनेंगे।

जिस समय पंडित जी तथा मनोरमा मिश्रा का विवाह हुआ उस समय मनोरमा मिश्रा की आयु मात्र 18 वर्ष थी, जो धनाढ्य परिवार की तथा अनेक सुख सुविधाओं मे पली थी, वहीं पंडित छन्नूलाल मिश्र का परिवार गरीबी से संघर्ष कर रहा था। 22 सदस्य एक ही छत के नीचे रहते थे तथा सभी लोगों का भोजन एक ही रसोई में बनता था।

[211] डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

परिवार में संस्कार व सामंजस्य इतना था की सभी खुशी-खुशी एक साथ रहते थे, तथा जीवन संगिनी मनोरमा मिश्रा जी ने सहर्ष सभी कर्तव्यों का पालन किया तथा एक आदर्श पत्नी की तरह सभी दायित्वों का निर्वाह किया।

पत्नी मनोरमा मिश्रा स्वयं भी बहुत अच्छी तबला वादिका थी, उनके पिता स्वर्गीय पंडित अनोखे लाल मिश्र जी के संस्कार उनमें दृष्टिगत होते थे। इतने धनी परिवार से आकर भी मनोरमा मिश्रा जी ने जिस प्रकार संयुक्त परिवार तथा आर्थिक स्थिति कमजोर होने के बाद भी परिवार को संभाला व प्रेम पूर्वक अपनाया, वह अत्यंत प्रशंसनीय है।

पंडित जी के छोटे भाइयों को माता तुल्य प्रेम किया तथा स्वयं को एक आदर्श पत्नी के रूप में परिवार में स्थापित किया।[212] जीविकोपार्जन हेतु पंडित जी को मुजफ्फरपुर भी जाना पड़ता था ऐसी समयावधि मे धर्मपत्नी मनोरमा मिश्रा जी ने मेहनत और समर्पण के साथ अपनी चाची सास श्रीमती जुग्गुन देवी के मार्गदर्शन मे समस्त कर्तव्यों का निर्वहन किया।

पंडित जी अपने जीवन की सफलता तथा संगीत को ऊंचाई पर ले जाने का सारा श्रेय अपनी पत्नी मनोरमा मिश्रा को ही देते हैं, उन्होंने कहा यदि मुझे पत्नी का त्याग, समर्पण व योगदान ना मिलता तो आज मैं जीवन में इस मुकाम पर नहीं होता,यदि मैं सारा जीवन आजीविका जुटाने एवं परिवार को संभालने में बिताता,तो आज मुझे सांगीतिक प्राप्ति नहीं होती,यह मेरी पत्नी की तपस्या और त्याग का परिणाम है क, उनके योगदान से आज मैं अपने जीवन में सफल हूं

पंडित छन्नूलाल मिश्र : पिता के रूप मे

विवाह के 5 साल बीत जाने के बाद भी पंडित जी के कोई संतान नहीं थी पंडित जी इस कारण थोड़े दुखी थे। अपनी हर समस्या का निवारण तथा समाधान गुरु

[212] पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से किए गए साक्षात्कार द्वारा उद्धृत

महाराज के द्वारा ही मानते रहे हैं, उन्होंने गुरु महाराज से प्रार्थना की की वंश वृद्धि के लिए उन्हें अपना आशीर्वाद प्रदान करें। जल्द ही भगवत कृपा एवं गुरु महाराज के आशीर्वाद से उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई उसे समय शायद ही किसी ने सोचा होगा की गुरु महाराज के आशीर्वाद से जन्म लेने वाला यह पुत्र एक दिन बनारस घराने की तबला परंपरा में अग्रणी कलाकारों में गिने जाएंगे। पुत्र का नाम गुरु महाराज जी ने भगवान राम के नाम पर ही रामकुमार मिश्र रखा। एक पुत्र के अलावा पंडित जी की चार पुत्रियां हुई- श्रीमती संगीता मिश्रा, श्रीमती अनीता उपाध्याय श्रीमती ममता मिश्रा एवं डॉक्टर नम्रता मिश्रा। पंडित जी के सुपुत्र तबला वादन के क्षेत्र में आज किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं, उन्होंने संगीत की प्रारंभिक शिक्षा श्रीमती मनोरमा मिश्रा से प्राप्त की एवं बनारस घराने के तबला वादन परंपरा के पर्याय स्वर्गीय पंडित अनोखेलाल मिश्रा का उत्तराधिकारी माना जाता है,उनके हाथों में नाना के हाथों जैसी स्पष्ट छाप देखी जाती है। [213]पंडित जी ने अपने सभी संतानों को योग्य एवं संस्कारवान बनाया है। पंडित जी की सभी बेटियों जितनी संगीत में निपुण है उतने ही संस्कारी एवं कुशल गृहणी भी हैं।

पंडित जी की बड़ी बेटी संगीता मिश्रा, जिन्हें संगीत के अलावा पाक कला से भी प्रेम है। यह स्वभाव से बहुत सरल तथा व्यवहार कुशल हैं। इनकी दो संताने बेटी मोहिनी मिश्रा जो संगीत गायन विषय से काशी हिंदू विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त हैं,इनका विवाह पद्म विभूषण पंडित किशन महाराज जी के नाती श्री अमरेंद्र मिश्र से हुआ है,जो स्वयं एक कुशल सितार वादक हैं। यह पंडित जी की अगली पीढ़ी है जिन्हें अपने पूर्वजों तथा अपने बुजुर्गों से शिक्षा मिल रही है। पंडित जी की दूसरी पुत्री श्रीमती अनीता उपाध्याय भी एक कुशल गायिका हैं, इनका विवाह वाराणसी के ही एक संभ्रांत परिवार मे श्री दीपक उपाध्याय जी से हुआ, इनके पुत्र

[213] पंडित रामकुमार मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी

श्री कृष्ण कुमार तबला वादन के क्षेत्र में बहुत प्रसिद्ध है। अनीता उपाध्याय जी की पुत्री करिश्मा उपाध्याय कथन नृत्य की तालीम ले रही हैं।

पंडित जी की तीसरी पुत्री श्रीमती ममता मिश्रा एक अच्छी गायिका होने के साथ ही साथ उच्च शिक्षित तथा व्यवहार कुशल है ट्रस्ट और संस्था से जुड़े अधिकांश कार्य वह बखूबी संभालती हैं।

पंडित जी की सबसे छोटी पुत्री डॉक्टर नम्रता मिश्रा हैं,जो एक प्रतिष्ठित महाविद्यालय में विगत 20 वर्षों से सह आचार्य (एसोसिएट प्रोफेसर) संगीत गायन के पद पर कार्यरत हैं।

बनारस के माहौल में पंडित जी ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने पुत्र तथा पुत्रियों मे कभी भेदभाव नहीं किया,पुत्री को भी उच्च शिक्षा प्रदान की तथा शहर से बाहर रहकर नौकरी करने की अनुमति भी दी। [214]पंडित जी 'बेटा बेटी एक समान'जैसे नारों को सिर्फ बोलने वालों में से नहीं है बल्कि पूरे भरोसे एवं दिल के साथ अपने बेटे तथा बेटियों को सामान प्रेम तथा सम्मान देते हैं।

वर्तमान में नई पीढ़ी में तबला वादन के क्षेत्र में कृष्ण कुमार उपाध्याय राहुल कुमार मिश्र आदित्य मिश्रा अपनी अलग पहचान बना रहे हैं वही गायन तथा शिक्षण के क्षेत्र में उतरी डॉ. नम्रता मिश्रा प्रस्तुतीकरण, अध्यापन एवं कार्यक्रमों का आयोजन करने में विशेष रूप से सक्षम हैं, नम्रता मिश्रा ने ट्रस्ट एवं' शिवगंगा संगीत कला केंद्र' एवं गुरुकुल का सचिव होने का भी दायित्व निर्वहन बहुत अच्छे से किया है। यही वह नवीन पीढ़ी है जो बनारस घराने के शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय गायन परंपरा को आगे लेकर जाएगी।

पंडित जी बड़े गर्व से कहते हैं "आज की पढ़ी लिखी तथा समझदार है,ईश्वर से यही प्रार्थना है कि हमारे परिवार के संस्कारों को आत्मसात करते, विनम्रता को समाहित

[214] डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

करते, हमारी परंपरा को यह पूरे विश्व में फैलाए तथा काशी की परंपरा का संपूर्ण जगत मे प्रस्तार करे।

एक भ्राता के रूप में

पंडित जी अपने परिवार एवं कुटुंब के सबसे बड़े पुत्र हैं तथा माता-पिता के देहावसान के पश्चात पूरे परिवार की धुरी हैं। [215]पंडित जी के अनुसार- हमारा बहुत बड़ा संयुक्त परिवार है तथा माता-पिता द्वारा प्रदत्त संस्कार के फल स्वरुप यही विचार है की सारा परिवार इकट्ठा रहे तथा परिवार में प्रेम का वातावरण हो सभी एक दूसरे को जाने समझें। इस बारे में पंडित जी कहते हैं - परिवार में एक दूसरे का सहारा होता है, परिवार में अहंकार जैसे शब्द का कोई स्थान नहीं होता। हृदय जब अहंकार विहीन होता है, तभी प्रेम होता है, प्रेम ही जीवन का रहस्य है अगर प्रेम नहीं है तो संगीत भी नहीं होगा।

प्रेम से वशीभूत होता है तो हृदय से स्वाभाविक रूप से निर्मल तथा निश्चल स्वर निकलते हैं और वही हमारे संगीत का एक अच्छा रहस्य है और मुख्य तथ्य यही है कि जहां प्रेम होगा वहां शांति सौंदर्य आनंद आत्मिक सुख सब कुछ उपलब्ध होता जाता है और यही शिक्षा दीक्षा हमें अपने बुजुर्गों के द्वारा मिली।

हम तीनों भाइयों में मेरे दो छोटे भाई मुझे पिता तुल्य सम्मान देते हैं,जहां सम्मान का भाव होता है, वहां प्रतिस्पर्धा जैसे भाव टिक नहीं पाते,वहीं सहजता सरलता तथा शांति व्याप्त हो जाती है हम साथ मे प्रयास करते हैं, साथ आते- जाते हैं परिचर्चाएं करते हैं,पारिवारिक एवं कलात्मक तौर पर भी एक दूसरे का सम्मान करते हैं।

पंडित जी तीनों भाई भी गायन, वादन एवं नृत्य की त्रिवेणी हैं। पंडित विश्वनाथ मिश्र जो नई दिल्ली में अपने परिवार के साथ निवास कर रहे हैं सुप्रसिद्ध तबला वादक

[215] पंडित शिवजी मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी

है तथा वर्षों से कथक केंद्र नई दिल्ली में अपनी सेवा प्रदान कर रहे हैं सबसे छोटे भाई पंडित शिवजी मिश्र भारतीय नृत्य कला मंदिर पटना बिहार से कत्थक नृत्य के प्रोफेसर के पद पर आसीन होने के साथ विश्व विख्यात कत्थक एवं कथक नृत्य के पर्याय पद्म भूषण पंडित बिरजू महाराज के सुयोग्य शिष्य हैं। छोटी बहन श्रीमती सावित्री देवी अपने परिवार के साथ भोपाल मध्य प्रदेश में निवास कर रही है, सभी भाई बहन एक दूसरे से अत्यंत प्रेम तथा स्नेह करते हैं, आज भी हर अच्छे बुरे समय में सभी भाई बहन इकट्ठे होकर एक दूसरे का दुख सुख बांटते हैं तथा संबल बनते हैं। छोटे भाइयों के कथनानुसार कि [216]"पंडित छन्नूलाल हमारे पिता की परछाई है, और हमारा सौभाग्य है कि हमारा जन्म इस घर में हुआ इस आंगन में हम साथ खेले, साथ गाना बजाना हुआ साथ ही जीवन का अनुभव लिया।"

व्यावहारिक तौर पर मंजिलें भाई विश्वनाथ मिश्र जितने धीर गंभीर एवं शांत स्वभाव के हैं छोटे भाई शिवजी मिश्रा का स्वभाव करुणा में भाव तथा बालक की भांति है इन तीनों भाइयों का परस्पर प्रेम तथा आदरपूर्ण संबंध वर्तमान समय में एक आदर्श प्रस्तुत करता है।

[216] पंडित विश्वनाथ मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी

3.4 पंडित छन्नूलाल मिश्र का व्यक्तित्व कृतित्व एवं सम्मान:-

विहंगम दृष्टिपात

संगीत एक सतत प्रयत्नशील कला है, एक तपस्या है, एक साधना है। किसी भी संगीतिक तौर पर प्रतिष्ठित व्यक्तित्व को एक कलाकार के रूप में परिशीलन करना अथवा आंकलन करना कोई सरल कार्य नहीं है। कलात्मक तौर से समायुक्त सभी विशेषताओं का मूल्यांकन मनन, चिंतन, परिसशीलन तीक्ष्ण दृष्टिकोण द्वारा ही संभव है। पंडित छन्नूलाल मिश्रा जी की कलात्मक उपलब्धियां बहुत विशाल है उनकी सांगीतिक यात्रा जिसमें बाल्यावस्था, युवावस्था तथा प्रौढावस्था समाहित है।

जीवन के हर पड़ाव पर उन्होंने अपने सृजनात्मक कलात्मक के दम पर अपनी स्वयं को संगीत जगत में स्थापित किया है और उनके परिश्रम तथा प्रयासों के फलस्वरूप उनकी कला विकसित होती गई और देश व विश्व स्तर पर ख्याति प्राप्त करते चले गए।

यह सर्वविदित है कि [217]पंडित छन्नूलाल मिश्र किराना घराना बनारस घराना तथा हरिहरपुर घराना तीनों ही घराने की परंपरा से संबंध रखते हैं किंतु आज पंडित जी दुनिया भर में बनारसी शास्त्रीय गायन परंपरा मुख्यतः ठुमरी गायन का पर्याय बन चुके हैं जहां ठुमरी गायन की बात हो और पंडित जी का जिक्र ना आए यह असंभव है। एक परंपरावादी कलाकार है पंडित छन्नूलाल मिश्र जी की परंपरागत वंशजों में स्वर्गीय पंडित जगदीप महाराज मिश्र जो कि ठुमरी के मूर्धन्य कलाकार एवं प्रचारकों मे गिने जाते हैं, उनके प्रपौत्र होने के कारण विगत 50 वर्षों से भी अधिक अनवरत रूप से काशी नगरी में निवास करते हुए कठिन संगीत साधना तथा विशिष्ट गायन शैली से पंडित जी ने ठुमरी गायन के क्षेत्र में अपना अलग स्थान प्राप्त किया है।

---

[217] पंडित साजन मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

पंडित जी ने अपने अनूठी रचनात्मक तथा भाव उत्पादक शैली के बल पर ठुमरी के अनेक प्रकार जैसे पूरब, पंजाब तथा गया की ठुमरी को इस प्रकार आत्मसात किया है। शास्त्रीय के अलावा पंडित जी की उपशास्त्रीय गायन शैली बेजोड़ है। ठुमरी को उपशास्त्रीय संगीत के अंतर्गत क्यों रखा जाता है,इस संदर्भ में पंडित जी कहते हैं कि ठुमरी शास्त्रीय संगीत के आधार पर ही होती है, इसमें भी आलाप, बोल बांट, बोल बनाव,एक - एक स्वरों की बढ़त, स्थाई अंतरा, लयकारी,भाव अभिव्यक्ति तथा रस निष्पत्ति होती है,किंतु सुंदरता के साथ प्रस्तुतीकरण के लिए रागके नियमों में थोड़ी छूट होती है और यह शास्त्रीयता के नियमों के विरुद्ध है इसमें भाव पक्ष शास्त्र पक्ष पर भारी पड़ता है इसलिए ठुमरी को स्वभाव अवश्य संगीत की परिधि में ही रखना उचित है।

राग की शुद्धता एवं परंपरिकता के अनुयाई

पंडित छन्नूलाल मिश्र एक परंपरावादी कलाकार हैं तथा राग की शुद्धता के प्रति अत्यंत सजग हैं।कला की जिस परंपरा को उस्ताद अब्दुल गनी खाँ, पंडित जगदीप प्रसाद मिश्र ने संजोकर रखा था वर्तमान में परंपरा के प्रणेता है। बनारस घराना ऐसा घराना है,जिसमें शास्त्रीय तथा संगीत की भाव अभिव्यक्ति तथा रस निष्पत्ति समाहित है।

पंडित जी के वंश परंपरा मे जगदीप महाराज जी जो आजमगढ़ हरिहरपुर के निवासी थे बाद में बनारस आकर रहने लगे लोग उन्हें 'ठुमरी दादरा का बादशाह' मानते थे बनारस के पूर्वी उत्तर प्रदेश मे ठुमरी दादरा के प्रचार प्रसार मे पंडित जगदीप महाराज का विशेष योगदान था और पंडित जी उनके अनुयाई।[218]

[218] डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

स्वयं पंडित जी के शब्दों में कि हमारे गांव हरिहरपुर को कलाकारों का गांव नाम दिया गया है मेरे पूर्वज पंडित जगदीश प्रसाद मिश्रा जो ठुमरी, दादरा के बादशाह थे वही संस्कार निश्चित ही मेरे अंदर विद्यमान थे इसीलिए मेरी कल्पनाशीलता तथा रुझान'ठुमरी शैली की तरफ विशेष रूप से आकर्षित हुई। अपने जीवन के 50 वर्षों में मैंने बनारस में रहकर ठुमरी,दादरा, चैता, चैती,टप्पा ,तराना,तिरवट,कजरी, सावनी, लावणी,झूला, सोहर बधइया तथा ख्याल गायन शैली जैसी संगीतिक रचना के प्रचार प्रसार मे पूरे समर्पण से लगा हूं।

पंडित जी द्वारा वर्णित ठुमरी के प्रकार

अपने पिता अपने गुरु एवं शास्त्र पक्ष के गुरु एवं अपने अनुभवों तथा शोध के माध्यम से वर्णन किया है तथा पंडित जी ही ठुमरी के ऐसे एकमात्र गायक हैं जो संस्कृत में भी गाते हैं जैसे- हल्लीसक ठुमरी, आसारित ठुमरी, बोल बनाव ठुमरी विलंबित लय, बोल बनाव ठुमरी मध्य लय, गत भाव ठुमरी , भाव नृत्य ठुमरी, बंदिश की ठुमरी, घनाक्षरी ठुमरी, बोल बांट ठुमरी। पूरे भारतवर्ष के कलाकार हैं जो वर्तमान समय में 10 प्रकार की ठुमरी को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता रखते हैं साथ ही ठुमरीयों की विस्तृत व्याख्या करके श्रोता गणों को संदर्भ में समझाते हैं।[219] पंडित छन्नूलाल मिश्र का लय तथा ताल के विषय में प्रभुत्व विशेष चमत्कार पूर्ण है, मंच प्रदर्शन के दौरान एक विशेष शास्त्रीय व चमत्कृत विधि से अभिव्यक्त होती है। किसी भी राग में अभूतपूर्व ढंग से सम पर आना तथा लयकारियां एवं कलात्मक तिहाईयों का निर्माण प्रत्येक ताल में स्वर विस्तार कर सकने का सामर्थ्य इत्यादि क्रिया उनकी प्रतिभा की परिचायक है। "[220]पंडित छन्नूलाल मिश्र लयकारी

[219] शास्त्रीय गायिका आस्था गोस्वामी द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित
[220] भजन गायक हेमंत बृजवासी द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

का सुंदर का प्रयोग करते हैं, उनकी तिहाईयां निश्चित नहीं होती सब कुछ उपज के द्वारा चलता है मैंने कई बार उनके साथ तबले पर संगत किया है, हम दोनों सीधे मंच पर ही मिलते थे उनकी लय तथा ताल पर पकड़ इतनी सशक्त थी कि मैं उनसे बहुत प्रभावित होता था", तिहाईयों की उपज तानों की विविधता एवं लय पर उनका प्रभुत्व देखकर मैं आश्चर्य से भर जाता था कि एक गायक होने के बावजूद भी उनमें वादक के सभी गुण विद्यमान थे।

श्रोताओं के मानसिक स्तर का ज्ञान

जब सामने असंख्य जन समूह हो तो मनोस्थिति का निरीक्षण करते हुए उन्हें प्रभावित कर पाना निश्चित तौर पर एक कठिन कार्य होता है। किसी कार्यक्रम की सफलता इस तथ्य पर भी पूर्ण रुपए निर्भर होती है की कलाकार को श्रोता के मानसिक स्तर तथा मनोविज्ञान का अपेक्षित ज्ञान है या नहीं। सफल मंच प्रदर्शन के लिए विशेष अवसर एवं विशेष ऋतुओं का ध्यान श्रोताओं की संख्या, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, भाषा, आयु, वर्ग इत्यादि को दृष्टिगत रखते हुए उन्होंने अपना हर कार्यक्रम प्रस्तुत किया है। "वह एक प्रभावशाली गायक हैं उनके गायन शैली उस वर्ग को भी मोहित कर लेती है जो वर्ग संगीत की शास्त्रीयता से अनभिज्ञ है।"

"एक बार अपनी बाल्यावस्था में मैंने दिल्ली में उनकी गायकी को सुना एक अलग ही आनंद तथा शांति का अनुभव किया"[221] उनकी गायकी प्रशंसानीय है, गायन से ऐसा महसूस हुआ जैसे गायन के शब्द सचित्र सम्मुख उपस्थित हो गए हो"

मैंने उनका होली गायन सुना और सुनने के बाद ऐसा लगा जैसे राधा कृष्ण की छवि सम्मुख हो गई हो।

[221] भजन गायक ध्रुव शर्मा द्वारा किए गए साक्षात्कार द्वारा उद्धृत

पंडित जी की गायकी में अलग ही भाव है तो मन करता है कि बस सुनते रहे अपनी प्रस्तुति के दौरान श्रोताओं की रुचि एवं उनकी फरमाइश पर भी ध्यान देते हैं, जब बिहार में जाते हैं तो बिहार की बोली बोलते हैं, और जब उत्तर प्रदेश में जाते हैं तो ब्रजभाषा बोलते हैं, श्रोताओं के साथ एक आत्मिक संवाद स्थापित करते हैं।

भाव पक्ष एवं कला पक्ष में उचित समन्वय

वर्तमान काल में अनेक कलाकारों द्वारा चमत्कार पूर्ण कला पक्ष की प्रबलता तथा विशेष तैयारी श्रोताओं को चकित करने की प्रवृत्ति बहुतायत रूप से पाई जाती है। पंडित छन्नूलाल मिश्रा जी की मुख्य विशेषता है कि उनके गायन में स्वर ,ताल तथा भाव का एक उचित संतुलन है।[222] कठिन विद्या के पूर्ण सफल प्रदर्शन अथवा लयकारियों के बादशाह होने पर भी वह भाव और रस की सृष्टि करने वाले आलाप को हमेशा गंभीरता के साथ स्थापित करते हैं। "[223]उनकी गायकी में भाव पक्ष है, एक आनंद है, यही विशेषता है और यह सब अनुभव करने से आता है। रागदारी सभी कलाकार करते हैं, परंतु राग प्रस्तुतीकरण में जो भावपूर्ण सौंदर्य है इसकी समझ बहुत कम कलाकारों में होती है। उनके और स्वर आत्मा को स्पर्श करते है, स्वर जैसे ही गुंजायमान होते हैं, एक अलग ही मिठास मन को आकर्षित करती है। जैसे ठुमरी का गायन करते हैं तो भाव स्वयं ही प्रस्तुत होने लगते हैं गायकी अच्छी बात है परंतु गायकी के साथ भाव का समावेश आवश्यक है।

---

[222] गजल गायक गोपाल अग्रवाल द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

कथक नर्तक अनुज मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा उद्धृत

[223]

मुद्रा दोषों से मुक्त

मंच प्रस्तुतीकरण के समय विशेष गंभीर वातावरण उत्पन्न करते हैं जिससे कला प्रदर्शन का स्तर कम हो जाता है तथा वातावरण में रस का रस होता है परंतु पंडित छन्नूलाल मिश्र सदैव मुद्रा दोषों से मुक्त रहे हैं।[224] आप मंच पर सदा प्रसन्नचित्त आनंदमयी वातावरण उत्पन्न करते हैं, तथा अनावश्यक चमत्कार से बचते हैं तथा अपनी लयकारियों,उपज अथवा भाव द्वारा संकेत प्रसारित करते हैं जो स्थिति के हिसाब से अनुकूल होता है।

नवीनता एवं सृजनशीलता

एक सुयोग्य कलाकार मे सृजनात्मक गुण होना अनिवार्य है। [225]सृजन के माध्यम से कलाकार अधिक से अधिक रचनाएं तथा उपज श्रोताओं के समक्ष रखने मे सक्षम होता है। पंडित छन्नूलाल मिश्र सृजनात्मक प्रतिभाओं के धारक हैं। गायन में भाव अभिव्यक्ति तथा रस निष्पत्ति भी है, उनके गायन मे उपज की नवीनता तथा कलात्मक पहलू भी है वह नवीन से नवीन स्वर समुदायों एवं रचनाओं का प्रयोग कर दर्शकों को चकित करने में पूर्णत: सक्षम हैं। बनारस आकाशवाणी में एक बार गायन के दौरान पंडित शारदा महाराज संगत कर रहे थे उन्होंने विनम्रतावश कार्यक्रम शुरू होने के पहले कहा "छन्नू भैया तो बहुत लयदार गवैया हैं संभाल कर बजाना पड़ेगा।कार्यक्रम बहुत ही सुंदर रहा और पंडित जी को बहुत तारीफें मिली।

सुप्रसिद्ध संगीत निदेशक तथा गायक एवं संगीतकार शंकर महादेवन जी कहते हैं कि- हम स्वयं को बहुत भाग्यशाली समझते हैं कि पंडित छन्नूलाल मिश्र जी जैसे

---

[224] तबला वादक ललित कुमार द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

[225] श्रीमती कुमुद दीवान द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

कलाकार हमें जानते और पहचानते हैं यह बहुत बड़ी बात है,क्योंकि वह एक महान कलाकार हैं अगर दादरा, ठुमरी, कजरी या शास्त्रीय संगीत का कोई गहरा कलाकार है या जिसे गहन जानकारी है तो वह एक ही है, उनकी गायकी बेमिसाल है। मैंने उन्हें अनेक कार्यक्रमों में सुना है उनकी गायकी में भारतीय संगीत की प्राचीनता तथा नवीनता दोनों ही रूपों के दर्शन होते हैं।[226]

पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रीय/ अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम

एक व्यावसायिक कलाकार के रूप में पंडित जी ने देश और विदेशों में अपने कई सफल मंचीय कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं।[227] अब तक भारतवर्ष के अनेक क्षेत्रों में सभी प्रसिद्ध शास्त्रीय संगीत सम्मेलन में अपने गायन के मधुर प्रस्तुतियां दे चुके हैं जिनमे मुख्यतः पुणे, दिल्ली, नोएडा, ग्वालियर, भुवनेश्वर, हैदराबाद, शिमला, मंगलौर, जयपुर, कोलकाता, वाराणसी, पटना, गया, जैसे अन्य क्षेत्रों में अपने सांगीतिक प्रस्तुतियां दी हैं। विशेष कार्यक्रम के अंतर्गत श्री बाबा हरि बल्लभ संगीत सम्मेलन (जालंधर), सवाई गंधर्व (पुणे), तानसेन संगीत समारोह (ग्वालियर), सप्तक म्यूजिक फेस्टिवल (अहमदाबाद), संकट मोचन संगीत समारोह (वाराणसी), स्वामी हरिदास संगीत सम्मेलन (वृंदावन), स्वामी हरिदास संगीत सम्मेलन (मुंबई) विशेष रूप से उल्लेखनीय है। पंडित छन्नूलाल मिश्र जी ने व्यापक रूप से सांगीतिक यात्रा की है,तथा उन्हें भारत की स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ समारोह के दौरान ICCR द्वारा भी आमंत्रित किया गया था उन्होंने वाशिंगटन डीसी, न्यूयॉर्क और शिकागो तथा अमेरिका सहित कई स्थानों का दौरा किया तथा सफल प्रदर्शन किया। उन्हें

[226] https://youtu.be/sTPGopsK5mU?si=pl37jx-IkP1VgjPx
[227] डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

एयर एंड स्पेस ऑडिटोरियम वॉशिंगटन डीसी में स्मिथसोनियन मे अपना सफल कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

पंडित छन्नूलाल मिश्र जी द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रमुख मंचीय कार्यक्रम एवं रूपरेखा

1. शिवगंगा संगीत कला केंद्र एवं गुरुकुल वाराणसी 24 जून 2018
2. संगीत बैठक नई दिल्ली 14 अप्रैल 2018
3. 18वां बसंत उत्सव मुंबई महाराष्ट्र 25 फरवरी 2018
4. संगीत सम्मान समारोह कोलकाता पश्चिम बंगाल 22 जनवरी 2018
5. अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा मध्य प्रदेश सांस्कृतिक कार्यक्रम 23 दिसंबर 2017[228]
6. ठुमरी महोत्सव विष्णुपद मंदिर, गया, बिहार 10 नवंबर 2017
7. इंडिया इंटरनेशनल सेंटर नई दिल्ली 20 नवंबर 2017
8. इंडिया इंटरनेशनल सेंटर नई दिल्ली 27 अक्टूबर 2017
9. पंडित छोटेलाल मिश्र जयंती समारोह वाराणसी 15 अप्रैल 2018
10. सर्वधर्म प्रार्थना सभा गांधी जयंती नई दिल्ली 2 अक्टूबर 2018
11. फागुन उत्सव वाराणसी 15 मार्च 2016
12. प्रवासी भारतीय दिवस वाराणसी, 21, 23 जनवरी 2019
13. जवाहर कला केंद्र जयपुर 25 फरवरी 2019
14. राष्ट्र सर्वोपरि सम्मेलन नई दिल्ली 26 अक्टूबर 2023
15. काशी संगीत न्यास ट्रस्ट मिर्जापुर 15 अगस्त 2024
16. प्रबुद्ध सम्मेलन वाराणसी उत्तर प्रदेश 5 मार्च 2022

डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

17. दिल्ली स्पीक मैके 2015 दिल्ली

18. गुरु संगीत उत्सव 2017 दिल्ली

19. बनारसिया बनारस

20. प्रसार भारती भारतीय लोकसेवा प्रसारक आकाशवाणी, बनारस

21 स्वामी हरिदास संगीत समारोह वृंदावन 2018

22. सप्तक 2016 अहमदाबाद

23. तक्षशिला उत्सव कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स पटना

24. संकट मोचन संगीत समारोह वाराणसी

25.हरिबल्लभ संगीत समारोह 2012

26. गंगा महोत्सव वाराणसी

27. स्पीक मैके जयपुर 2017

28. संकट मोचन समारोह वाराणसी 18 अगस्त 2020

29. हर्षोत्सव गया बिहार 2016

30. स्पीक मैके जयपुर 2017

31. ठुमरी महोत्सव साहित्य कला परिषद नई दिल्ली 3 अक्टूबर 2019

32. लखनऊ महोत्सव 2011

33. विशेष शनि बहार पटना 30 मार्च 2014

पंडित छन्नूलाल मिश्र जी तथा उनकी प्रभावशाली गायकी एवं सांगीतिक योगदानों के लिए उन्हें राज्य सरकार तथा भारत सरकार से अनेक पुरस्कार तथा सम्मानों द्वारा अलंकृत किया गया है।[229]

[229] डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

पंडित छन्नूलाल मिश्र ने अपनी गायकी से गायन क्षेत्र को हमेशा अलंकृत किया है किंतु अभिनय क्षेत्र में भी आपकी निकटता दृष्टिगत होती है।चित्रपट संगीत में आपने अनेक योगदान दिए हैं। बनारस में भोजपुरी भाषा के अंतर्गत एक फिल्म निर्माण की चर्चा के पश्चात आपका अभिनय के प्रति भी लगाव दृष्टिगत हुआ। इसके अतिरिक्त उनके अनेक राष्ट्रीय स्तर के साक्षात्कार भी समय-समय पर प्रसारित हुए जिनमें कुछ विशेष हैं।

साक्षात्कार संबंधित जानकारी-

- 25 मई 2017 संजय श्रीवास्तव द्वारा किया साक्षात्कार किया गया तथा यूट्यूब के माध्यम से यह प्रसारित किया गया।[230]
- ATE वर्ल्ड टॉक आयुष केसरी द्वारा यह साक्षात्कार किया गया तथा 28 फरवरी 2017 को यूट्यूब के माध्यम से प्रसारित किया गया।[231]
- हरि बल्लभ संगीत सम्मेलन 2012 पंडित जी की गायकी को प्रसारित किया गया।
- Up तक 26 जनवरी 2020 पंडित छन्नूलाल मिश्रा जी को पदमा विभूषण सम्मान की घोषणा के पश्चात उनका यह साक्षात्कार प्रसारित किया गया।
- 8 जून 2024 बनारस कार्यक्रम के अंतर्गत यूट्यूब के माध्यम से साक्षात्कार का प्रसारण हुआ
- 8 जून 2020 प्रधानमंत्री मोदी के बनारस आगमन के पश्चात एबीपी न्यूज़ के माध्यम से साक्षात्कार का प्रसारण हुआ।

[230] https://youtu.be/b4_c8kL1MsA?

[231] https://youtu.be/bEI0HauNM-8?si=pgN0ykuNDNFax0di

- 22 दिसंबर 2013 कपिल जैन के माध्यम से पंडित जी की गायकी को प्रसारित किया गया। इस साक्षात्कार में पंडित जी ने चैती, कजरी आदि गायन विधाओं का सुंदर प्रस्तुतीकरण किया।
- रिपब्लिक चैनल पर 26 अक्टूबर 2023 को साक्षात्कार को प्रसारित किया गया इस साक्षात्कार में पंडित जी ने डमरू का महिमा मंडन किया तथा प्राचीन तथा वैदिक संगीत से जुड़े तथ्यों को उजागर किया।[232]
- छन्नूलाल मिश्रजी ने 15 सितंबर 2009 इस वीडियो में पंडित जी ने बनारस तथा बनारस के सांस्कृतिक इतिहास का वर्णन किया है।[233]
- शख्सियत संसद टीवी 30 मई 2016 एंकर समीना द्वारा दिए गए साक्षात्कार में पंडित छन्नूलाल मिश्र जी की संगीत की यात्रा तथा सांगीतिक अनुभवों के बारे में चर्चा की गई है। उनके लोक गायन शास्त्रीय उपशास्त्रीय गायन की विस्तार पूर्वक चर्चा की गई है।
- बसंत 26 9 अप्रैल 2010 चैनल के माध्यम से साक्षात्कार को प्रसारित किया गया, वैदिक संगीत तथा अलौकिक संगीत का आपस में संबंध को संदर्भित किया।
- चैनल के माध्यम से 13 मार्च 2011 को पंडित जी के द्वारा राग भैरवी तथा कजरी शेती जैसी लोक विधाओं का गायन किया गया
- आर्ट एंड आर्टिस्ट्स चैनल के माध्यम से पंडित जी के कार्यक्रम को प्रसारित किया गया इस कार्यक्रम में पंडित जी ने राग मिश्र काफी तथा लागे तोसे नैन दादरा का सुंदर गायन प्रस्तुत किया।

[232] https://youtu.be/yUUrXaHfTa0?si=gmPZTsXk_0ytQzfB
[233] https://youtu.be/ggca59Aekjg?si=I_aYeS4z9iHorkzO

- गुफ्तगू संसद टीवी पत्रकार इरफान द्वारा लिए गए साक्षात्कार में पंडित छन्नूलाल मिश्र अपने जीवन की सांगीतिक यात्रा तथा अपने घराने के विषय में चर्चा कर रहे हैं।
- पंडित छन्नूलाल मिश्रा डॉक्युमेंट्री 12 मार्च 2019 इस डॉक्यूमेंट्री में पंडित छन्नूलाल मिश्र के गुरु, घराने जन्मभूमि तथा सांगीतिक अनुभव के विषय मे चर्चा की गई है।[234]
- न्यूज़ नेशन संजय श्रीवास्तव चैनल, पंडित जी ने होली कजरी आदि उप शास्त्रीय विधाओं के विधाओं की सप्रसंग व्याख्या की है।
- इंडियन हेरिटेज कलर 29 सितंबर 2024 में साक्षात्कार मे पंडित जी ने शास्त्रीय संगीत तथा लोक संगीत का आपस में क्या संबंध है इस विषय में परिचर्चा की है।
- रिपब्लिक भारत 14 मई 2020, इस साक्षात्कार में पंडित जी बनारस तथा बनारस वास्तविक स्थिति का वर्णन किया है। एमडिवाइन ब्लेसिंग स्टूडियो चैनल के माध्यम से या साक्षात्कार प्रसारित हुआ जिसमें एक फिल्म 'मनस्वी' के बारे में पंडित जी चर्चा कर रहे हैं कि इस फिल्म का संगीत निर्देशन उनके शिष्यों द्वारा किया गया है।
- छन्नूलाल मिश्रजी ने 15 सितंबर 2009 इस वीडियो में पंडित जी ने बनारस तथा बनारस के सांस्कृतिक इतिहास का वर्णन किया है।
- शख्सियत संसद टीवी 30 मई 2016 एंकर समीना द्वारा दिए गए साक्षात्कार में पंडित छन्नूलाल मिश्र जी की संगीत की यात्रा तथा सांगीतिक अनुभवों के बारे में चर्चा की गई है। उनके लोक गायन उप शास्त्रीय गायन तथा आध्यात्मिक संगीत के बारे में पंडित जी ने विस्तृत व्याख्या की है। मोदी जी

[234] https://youtu.be/L3ZQJ5g8vM4?si=KNDTYqCGOYcCQs3w

के आने के पहले तथा बाद में क्या अंतर है, इसके बारे में अपने विचार व्यक्त किए हैं।

आपने अनेक कार्यक्रमों में मुख्य रूप से भूमिका निभाई तथा शास्त्रीय -उपशास्त्रीय संगीत के प्रचार प्रसार हेतु अपना संपूर्ण सहयोग दिया है जैसे-स्पीक मैके, हरिबल्लभ संगीत सभा, जैसे अनेक सांस्कृतिक सभाओं तथा कार्यक्रमों में संगीत के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है उनके शब्दों मे "स्पीक मेके संस्था सांस्कृतिक क्षेत्र में बहुत बड़ी सेवा कर रही है।,यह शास्त्रीय संगीत का प्रचार प्रसार कर रही है, यह बहुत बड़ा काम है, और उसमें हम सभी भारतवर्ष के कलाकारों ने संपूर्ण सहयोग दिया है जिसके कारण आज पूरे विश्व में यह संस्था अपने कार्यक्रम आयोजित करती है, और हम भी यही चाहते हैं कि भारत की नवीन पीढ़ी भी अपने संगीत के इतिहास को जाने समझे ताकि संगीत की तालीम हो ।

शिखर सम्मान एवं उपाधियां

पंडित जी ने अपना पूरा जीवन संगीत साधना प्रशिक्षण तथा संगीत के प्रचार प्रसार मे व्यतीत किया। सदा सरल व प्रलोभन रहे थे जीवन जीने के आकांक्षी रहे। सामान्य मानव का भक्ति में जीवन तथा संत प्रकृति यही उनका व्यक्तित्व रहा है। पंडित जी का जीवन इस बात का प्रमाण है कि "बिन मांगे मोती मिले मांगे मिले ना भीख" उन्होंने बिना किसी आकांक्षा के संगीत की सेवा की, किंतु सच्चे भगवत तथा गुरु कृपा अवश्य होती है।[235]

[235] डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

पंडित छन्नूलाल मिश्र जी को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेकों पुरस्कारों द्वारा अलंकृत किया गया है जिसका विवरण इस प्रकार से है–

- उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा "नौशाद पुरस्कार"
- *एयर एंड स्पेस ऑडिटोरियम वॉशिंगटन डीसी द्वारा अति विशिष्ट "स्मिथसोमियन पुरस्कार"
- बिहार सरकार तथा राज्यपाल द्वारा "संगीत शिरोमणि पुरस्कार
- संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली द्वारा "अकादमी रत्न पुरस्कार"
- संगीत नाटक अकादमी उत्तर प्रदेश द्वारा "संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार"
- दिल्ली सरकार द्वारा "डॉ.राधाकृष्णन पुरस्कार"
- मध्य प्रदेश सरकार द्वारा "तानसेन पुरस्कार"
- उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा "भातखंडे पुरस्कार"
- सुर सिंगार संसद मुंबई द्वारा "सुरमणि पुरस्कार"
- काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा "पंडित मदन मोहन मालवीय पुरस्कार"
- पद्म भूषण पंडित विश्व मोहन भट्ट द्वारा जयपुर मे "ठुमरी सम्राट की उपाधि"
- श्री मुरारी बापू जी द्वारा महुआ गुजरात मे "हनुमंत पुरस्कार"
- वाराणसी प्रशासन द्वारा "काशी विद्या सम्मान"
- स्वदेशी मेला लोक संगीत संस्थान उत्तर प्रदेश द्वारा "लोकरत्न की उपाधि"
- मध्य प्रदेश सरकार द्वारा "कालिदास संगीत सम्मान"
- धारवाड़ कर्नाटक सरकार द्वारा "मल्लिकार्जुन मंसूर नेशनल मेमोरियल ट्रस्ट वार्षिक अवार्ड"

- उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा “यश भारती सम्मान”
- भारत सरकार द्वारा देश का तीसरा सबसे बड़ा सम्मान "पद्म भूषण वर्ष 2010"
- भारत सरकार द्वारा देश का दूसरा सर्वोच्च सम्मान "पद्म विभूषण वर्ष 2020"
- स्टैग मिर्ची म्यूजिक अवॉर्ड्स की ओर से "लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड मुंबई"
- संगीत रिसर्च अकैडमी कोलकाता द्वारा सम्मानित
- लंदन संगीत समारोह मंच द्वारा सम्मान
- नेशनल सेंटर फॉर द परफॉर्मिंग आर्ट मुंबई द्वारा सम्मानित
- स्वामी हरिदास संगीत सम्मेलन मुंबई द्वारा सम्मानित
- स्वामी हरिदास संगीत सम्मेलन दिल्ली द्वारा सम्मानित
- स्वामी हरिदास संगीत सम्मेलन वृंदावन द्वारा सम्मानित
- उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत समारोह भोपाल द्वारा सम्मानित
- कोलकाता आकाशवाणी संगीत सम्मेलन बंगाल द्वारा सम्मानित
- आकाशवाणी तथा दूरदर्शन केंद्र दिल्ली द्वारा सम्मानित
- आकाशवाणी तथा दूरदर्शन केंद्र वाराणसी द्वारा सम्मानित
- आकाशवाणी तथा दूरदर्शन केंद्र लखनऊ द्वारा सम्मानित
- आकाशवाणी तथा दूरदर्शन केंद्र पटना द्वारा सम्मानित
- श्री राम शंकर लाल संगीत समारोह दिल्ली द्वारा सम्मानित[236]
- श्री हरि बल्लभ संगीत समारोह जालंधर पंजाब द्वारा सम्मानित
- कालिदास संगीत समारोह उज्जैन द्वारा सम्मानित

[236] डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

इन शिखर सम्मान तथा उपाधियों के अलावा पंडित छन्नू लाल मिश्र जी संस्कृति मंत्रालय मिनिस्ट्री ऑफ़ कलर उत्तर मध्य भारत सरकार के गणमान्य सदस्य भी रह चुके हैं।इसके अलावा गंगा महोत्सव, ध्रपद मेला, संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ/ दिल्ली तथा आकाशवाणी की चयन समिति के सदस्य आदि माननीय पदों पर भी वर्षों से अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

आज संगीत जगत मे वह स्थान प्राप्त किया है,जो सामान्य जनमानस के सोच से परे है,कि एक साधारण सरल व्यक्ति जिसने विद्यालय स्तर पर भले ही विशेष शिक्षा न प्राप्त की हो, किंतु संगीत की साधना, समर्पण तथा सृजनता के बल पर अनेक उपाधियां प्राप्त की, जो संगीत जगत मे शोध का विषय बना।

भारत के अनेक माननीय विश्वविद्यालय तथा संगीत संस्थाओं ने उन्हें माननीय उपाधियों से सम्मानित किया है—

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर तथा कैप्टन अवधेश प्रताप विश्वविद्यालय रीवा, मध्य प्रदेश से पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी को डि.लिट. की मानद उपाधि से भी सम्मानित किया गया।

उपरोक्त लिखित उपाधियों के अलावा उन्हें अन्य इतने विशिष्ट सम्मान तथा पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं कि, उनकी उनके कृतित्व को संदर्भित कर पाना "गागर में सागर भरने के समान है।"

निष्कर्ष एवं विश्लेषण

वस्तुत: पंडित छन्नूलाल मिश्र जी को साहित्य ,संगीत, आध्यात्मिक तथा शास्त्रों का सूक्ष्म ज्ञान है। [237]पंडित जी अत्यंत परिश्रमी अनुशासित एवं सृजनधर्मी कलाकार हैं, जिन्होंने भारत ही नहीं बल्कि विश्व भर में भारतीय शास्त्रीय उपशास्त्रीय अथवा लोक संगीत के उन्नयन के लिए अपनी सार्थक, सकारात्मक व अतुलनीय भूमिका का समुचित निर्वहन किया है। इनके गायन शैली में स्वरों की स्पष्टता, रागों की शुद्धता एवं भावात्मकता विशेष रूप से परिलक्षित होती है।

स्वर विस्तार, आलाप एवं मींड, मुर्की आदि का विशेष प्रयोग जिसे अपनी अनवरत साधना , सृजनता तथा कल्पना कौशल द्वारा अपनी गायकी मे साकार करते हैं। सुंदरतम स्वरों का प्रयोग,विलक्षण एवं क्लिष्ट तान, मींड, हृदय स्पर्शी आलाप तथा भावपूर्ण गायन के माध्यम से श्रोताओं के हृदय को समझने मे विशुद्ध रूप से सक्षम हैं। श्रोताओं के मनोविज्ञान की समझ उनके विशेषता है तथा संगतकारों के साथ उनका अपेक्षित तारतम्य है,उक्त सभी गुणों के माध्यम से पंडित जी ने अपनी संगीतात्मकता एवं कलात्मकता के उत्कृष्ट सम्मिश्रण से अपनी कला तथा पारंपरिक शैली को नवीनता के साथ प्रसारित किया है। वह सही अर्थ में प्रतिभासंपन्न, बहुमुखी, सहजगम्य, विनम्र व्यवहार वाले कलाकार हैं, उनका समस्त जीवन संगीत कला के प्रति पूर्ण रूप से एक अनुष्ठान के समान के समर्पित रहा है। वर्तमान में ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा, श्रेष्ठ गुरुओं का मार्गदर्शन, पारंपरिक नियमों का पालन तथा अपनी निरंतर कला साधना के माध्यम से एक क्रिया सिद्ध प्रबुद्ध तथा प्रतिष्ठित कलाकार के रूप में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार बनने में सफल हुए हैं।

[237] डॉ. निशा झा डीन फैकल्टी तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय बिहार

3.5 पंडित छन्नूलाल मिश्र जी की शिष्य परंपरा एवं गुणीजनों के विचार

पंडित छन्नूलाल मिश्र अपनी परंपरा के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए हर संभव कर्मशील तथा क्रियाशील रहे हैं।[238] उन्होंने सर्वदा परमात्मा से यही प्रार्थना की है कि जो प्रसाद उन्हें उनके पिता गुरु या प्रभु ने दिया है, उनकी आने वाली पीढ़ियां इस प्रसाद को एक प्रार्थना भाव से एक परंपरागत प्रसाद के रूप में आगे लेकर जाए। चाहे वह बनारस घराना हो, हरिहरपुर घराना हो अथवा किराना घराना हो, घराने भारतीय संस्कृति की विरासत हैं, जिनमें एक विशेष अंदाज है,जो सदियों से संगीत जगत की सेवा कर रहा है। यह घराने हमारे संगीत परंपरा से संबंधित हैं और यही शास्त्रीय संगीत की सुंदरता भी है। यदि हम परंपरा रूपी बंधन को तोड़ देंगे तो शास्त्रीयता अथवा प्राचीनता नष्ट हो जाएगी परंपरा से जुड़ा संगीत वैदिक काल से चला आ रहा है, आज के युग में परिस्थितियां परिवर्तित हो रही है तथा गुरु शिष्य परंपरा की नींव को स्थापित रखना कठिन हो गया है।

पंडित जी के विचारधारा के अनुसार घराने की परंपरा तथा विकास यात्रा चलती रहे, योग्य एवं निष्ठावान शिष्य हमारे विरासत की धारा का प्रवाह दूर तक ले जा सके तथा संरक्षण, संवर्धन एवं उन्नतशीलता के माध्यम से बूंद- बूंद करके एक सागर के भांति परंपरा के शुद्धता का निर्वाह भी कर सकें। सामान्य जनमानस के लिए संगीत भले ही एक मनोरंजन का साधन हो, परंतु संगीत मनोरंजन होने के साथ-साथ आध्यात्मिक मोक्ष प्राप्ति का भी एक सशक्त माध्यम है।

वास्तविक तौर पर शिक्षण एक दुरूह तथा कठिन प्रक्रिया है। एक शिक्षक का महत्वपूर्ण कार्य होता है,ज्ञान की विभिन्न अंतर्दृष्टियों से तथा पारंपरिक कृतियों से पहले स्वयं को जोड़ना फिर उस ज्ञान का प्रसार शिष्यों मे गुरु -शिष्य परंपरा के

[238] डॉ निशा झा विभागाध्यक्षा तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय बिहार

माध्यम से प्रसारित करना। यह एक शिक्षक अथवा गुरु का सामाजिक दायित्व भी होता है क्योंकि इस प्रक्रिया की अनुपस्थिति में समाज में ज्ञान का संचार अवरुद्ध हो जाएगा फलत: बहुमूल्य संचित धरोहर का विकास नहीं हो पाएगा।

गुरु अथवा शिक्षक समाज का एक सामान्य तथा योग्यतम व्यक्ति होता है जो ज्ञान की धारा का निरंतर प्रवाह करता है। गुरु शिष्य के लिए एक आदर्श, श्रेष्ठ, अनुकरणीय तथा सर्वगुण संपन्न संपूर्ण व्यक्तित्व होता है। गुरुद्वारा प्रदत्त ज्ञान शिष्य की उदत्त वृत्तियों को उसके मानस पटल तथा संपूर्ण व्यक्तित्व से परिष्कृत करता है। ऐसे ही व्यक्तित्व के स्वामी तथा बहुमूल्य परंपरा के अनुयाई पंडित छन्नूलाल मिश्र विगत लगभग 50 वर्षों से संगीत की शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्रदान करने का कार्य कर रहे हैं। पंडित जी स्वभाववश तथा वैचारिक स्तर से सर्व "जन हिताय सर्वजन सुखाय" जैसी उक्ति मे विश्वास रखते हैं। बनारस में इतने समय से रह रहे हैं उनके घर के दरवाजे हर वर्ग, धर्म,जाति ,संप्रदाय तथा संगीत प्रेमियों के लिए सदैव खुले रहते हैं।

शास्त्रीय तौर पर भी गुरु का शाब्दिक अर्थ है- अंधकार से प्रकाश ,अलौकिक रोशनी का मार्गदर्शक। गुरु वह दीप स्तंभ है, जो अपने ज्ञान रूपी प्रकाश से शिष्यों के मार्ग में आने वाली सभी विघ्न बाधाओं को चीरते हुए उसका निरंतर मार्गदर्शन करता है, तथा अपने ज्ञान रूपी जल द्वारा वृक्ष रुपी शिष्य को सींचता है।[239]

पंडित छन्नूलाल मिश्र कलाकार के साथ-साथ श्रेष्ठ पथ प्रदर्शन तथा सुयोग्य गुरु भी हैं उन्होंने अपने संगीत साधना के अंश से शिष्यों को सांगीतिक तत्व प्रदान किए हैं। एक पिता की भांति अपने शिष्यों का मार्गदर्शन करते हुए उन्हें शास्त्रीय उपशास्त्रीय घरानेदार गायन शैली प्रदान करते हैं। उन्होंने अपने घराने की समस्त परंपरा का

[239] श्रीमती विष्णु प्रिया प्रसिद्ध गायिका से प्राप्त जानकारी के अनुसार

अभ्युदय करते हुए अपने शिष्यों के लिए नवीन मार्ग को प्रशस्त किए हैं। पंडित जी स्वयं धार्मिक एवं सरल प्रकृति के कलाकार हैं तथा स्वयं भी बाल्यावस्था में जिज्ञासु प्रवृत्ति के रहे हैं, तो कभी कोई भी शिष्य जिसे कुछ सीखने की इच्छा हो,वह कभी निराश नहीं लौटता था। उनकी सहायता का इससे बड़ा प्रमाण क्या होगा कि कोई निर्धन शिष्य उनको कोई भी जो दक्षिणा देने में सक्षम नहीं होते थे, उनसे वह गुरु दक्षिणा के नाम पर केवल ₹1 लेकर घर आते तथा जाते समय उस शिष्य को ₹50 बस का किराया देकर विदा करते थे, और कहते थे "जाओ आराम से जाना मार्ग में कोई कष्ट नहीं होना चाहिए"।

पंडित जी एक आदर्श एवं स्वार्थ विभिन्न गुरु के रूप में प्रसिद्ध हैं वह कभी शिक्षा प्रदान करने से पूर्व यह नहीं सोचते कि शिष्य अथवा शिष्य की आर्थिक या सामाजिक स्थिति क्या है, वह मुक्त भाव से अपने गुरु, पिता तथा उस्ताद जी द्वारा दी गई कठिन साधना, व परिश्रम से अर्जित ज्ञान को दान स्वरूप दे देते हैं।[240] पंडित जी की अंतरात्मा में केवल एक ही बात होती है वह है भारतीय शास्त्रीय तथा उपशास्त्रीय संगीत का संरक्षण एवं संवर्धन, विशेष रूप से बनारस तथा हरिहरपुर की गायन परंपरा का। उन्होंने संपूर्ण जीवन काशी विश्वनाथ तथा मां गंगा की नगरी में निरंतर निवास करते हुए सभी विधाओं का सतत विकास एवं प्रचार प्रसार किया है।अपने इस प्रयास तथा प्रयोग के रूप में अपने गृह को गुरुकुल का रूप देकर शिष्यों को प्राचीन गुरू शिष्य परंपरा के आधार पर प्रशिक्षित कर रहे हैं। इस गुरुकुल में प्रतिभाशाली छात्र आवासीय संस्थान की तरह 24 घंटे रहकर संगीत सीखते हैं, तथा यह गुरुकुल पूर्णता निशुल्क है यहां योग्य शिष्य स्वयं को गुरुकुल में रहकर सीखने के लिए अपनी पात्रता सिद्ध करने के लिए अनवरत साधना करते हैं तथा परंपराओं का पालन करते हैं।

---

[240] श्री अमन कुमार शिष्य से प्राप्त जानकारी के अनुसार

पंडित जी का मानना है कि काशी की संगीत परंपरा ,इसके मौलिक और वास्तविक स्वरूप को संरक्षित एवं संदर्भित करना अति आवश्यक है,अगर समय रहते नहीं बचाएंगे तो यह कला लुप्त हो जाएगी अथवा उसका स्वरूप इतना बिगड़ जाएगा की भावी पीढ़ी सिर्फ रिकॉर्डिंग, सीडी, कैसेट दूरदर्शन तथा आकाशवाणी के माध्यम से जान पाएगी की वास्तविक संगीत कैसा था।[241] अपनी शिष्य परंपरा में भी पंडित जी गायन विधाओं के प्राचीन मूल स्वरूप को प्रसारित करते हैं। पंडित जी का विचार है कि संगीत केवल गाया नहीं जाता ,अपितु समझाया भी जाता है ,क्योंकि संगीत केवल कानों तक सुनने का विषय नहीं है, बल्कि उसकी पहुंच हृदय तक होनी चाहिए ,केवल संगीत साधक ही नहीं बल्कि सामान्य जन भी संगीत को समझें तथा संगीत का आनंद ले इसीलिए पंडित जी को "जनता के कलाकार" के रूप में भी जाना जाता है।

संगीत कला केंद्र की स्थापना का स्वप्न

पंडित जी की धारणा कि "कल को आकार देना" ही किसी भी संगीताचार्य का प्रथम दायित्व है। पूरब की मिट्टी मे जन्मे पंडित जी स्वयं को बहुत भाग्यशाली मानते हैं कि उन्हें संगीतिक पृष्ठभूमि वाले परिवार में ईश्वर ने जन्म दिया, योग्य एवं महान गुरुओं का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, दुनिया भर के जाने माने शास्त्रज्ञों तथा संगीतज्ञों का सानिध्य प्राप्त हुआ किंतु इस सौभाग्य को एक महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व के रूप में भी मानते हैं,आज पूरे मनोयोग से शास्त्रीय अथवा लोक विधाओं को संजोने मे लगे हुए हैं तथा शिष्यों को उन्होंने बड़े मनोयोग से शिक्षा प्रदान की है, ताकि संगीत की प्राचीनतम बहुमूल्य धारा अनवरत बहती रहे।

[241] पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से प्राप्त जानकारी के अनुसार

पंडित जी ने हर संभव प्रयास किया कि बनारस में एक ऐसा प्रशिक्षण संस्थान बनाया जाए जहां नवीन योग्य पीढ़ी को निशुल्क शिक्षा प्रदान की जाए किंतु अनेक कारणों से यह सपना साकार नहीं हो सका, पंडित जी ने यह बीड़ा स्वयं उठाया तथा अपने सीमित संस्थाओं से ही "पंडित छन्नू लाल मिश्र म्यूजिक चैरिटेबल ट्रस्ट वाराणसी" एवं "शिवगंगा संगीत कला केंद्र एवं गुरुकुल"की स्थापना की।[242]

इस संस्थान के द्वारा देश की धरोहर को संभालने का प्रयास किया है, धरोहर ही भारतीय संस्कृति की पहचान है, अन्य देशों में उनकी कला से संबंधित अनेक केंद्र हैं जिसके द्वारा वहां की कला संस्कृति को सुरक्षित रखा जा रहा है, किंतु हमारे देश में कला तथा संगीतकारों की बहुत ज्यादा देख- रेख सरकार नहीं करती । पाश्चात्य संगीत अथवा बॉलीवुड के कलाकारों को लाखों रुपए दिए जाते हैं परंतु संगीतज्ञ को आज भी अपने किसी कल्पना को साकार करने के लिए स्वयं ही प्रार्थना करनी पड़ती है, सरकार की तरफ से कोई सामाजिक सुरक्षा प्रदान नहीं की जाती। संगीत कला केंद्र पंडित जी की एक बड़ी योजना है जिसे साकार रूप मे देखना इनका मुख्य उद्देश्य है। पंडित जी का मानना है कि यदि भारतीय संस्कृति एवं संगीत को संरक्षित करना है तो इसका प्रारंभ भारत की सांस्कृतिक राजधानी 'काशी' से ही करना होगा। अनेक उप शास्त्रीय लोक विधा आदि को संरक्षित करने के लिए उन्होंने एक महायज्ञ का आयोजन किया है उसमें आहुति देने वाले भारतीय सभ्यता तथा संस्कृत में आस्था रखने वाले समर्पित कलाकारों संगीत प्रेमियों एवं प्रबुद्ध सुदी जनों का उन्होंने आह्वान किया है। उनका कथन है कि "बनारसी विलक्षण संगीत विधाएं भविष्य मे मात्र ऑडियो सी.डी, कैसेट अथवा पुस्तकों तक सीमित ना हो, बल्कि भावी पीढ़ी के कंठ तथा मन मस्तिष्क में अंकित हो जाए।

---

[242] डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

इस संस्थान तथा अपने परंपरागत शैली के माध्यम से उन्होंने मुक्त भाव से अनेक शिष्य तैयार किये।[243]

पंडित जी के अनेक शिष्य शिष्य में आज बड़े-बड़े मंचों पर सफल प्रदर्शन कर रहे हैं तथा संगीत विद्यालयों तथा महाविद्यालय में पद स्थापित हैं। पंडित जी की शिष्य श्रृंखला बहुत विस्तृत है,किंतु कुछ परम पुरुष तथा महिला शिष्याएं,जो आज भी उनकी परंपरा का अनवरत रूप से परवाह कर रहे हैं उनके नाम निम्नलिखित हैं--

पुरुष शिष्य

1. महंत प्रो. पंडित वीरभद्र
2. श्री जुबिन नौटियाल
3. श्री दीनदयाल जालान
4. श्री भागीरथ जालान
5. डॉ अजीत सहगल
6. श्री अमन जैन
7. डॉ इंद्रेश मिश्र
8. श्री ऋतुराज कात्यायन
9. श्री अभिषेक सिंह
10. श्री नवीन तिवारी
11. श्री राकेश तिवारी
12. श्री रवि कुमार मिश्र
13. श्री अजय सिंघल

[243] डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

14. डॉ नीरज खन्ना

15. श्री कौस्तुभ प्रकाश

16. श्री विप्लव अनंत

17. श्री मयंक जायसवाल

18. श्री युवमोहन

19. श्री देवेंद्र मिश्र

20. श्री विनोद स्वामी

21. श्री मृत्युंजय नाथ दीक्षित

22. श्री सुखदेव

23. श्री रमेश कुमार

24. श्री संतोष

25. श्री विष्णु पंडित

26. श्री उमंग अग्रवाल

26.श्री जुबेर हम्सी

27. श्री मयंक दीक्षित

28. श्री प्रखर कुमार

29. श्री ध्रुव

30. श्री मिलिंद सिंह

31. श्री नकुल

32. श्री वृंदादास[244]

महिला शिष्याएं—

[244] डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

1. डॉ. निशी गुप्ता
2. डॉ. अनीता गोस्वामी
3. डॉ. सुधा सहगल
4. डॉ. अर्पणा पंशिकर
5. डॉ. प्रतिक्षा
6. कुमारी आकृति
7. कुमारी खुशी
8. डॉ नम्रता मिश्रा
9. श्रीमती मधुमिता
10. श्रीमती किंकीनी
11. डॉ ऋचा कुमार
12. डॉ कमला शंकर
13. डॉ दीप्ति बनर्जी
14. डॉ.सुचारिता गुप्ता
15. डॉ राजेश्री बनर्जी
16. डॉ. मीनू खरे
17. श्रीमती शिखा सिंघल[245]
18. श्रीमती मोहिनी मिश्रा
19. श्रीमती सुषमा बाजपेई
20. श्रीमती बीना जैन
21. सुश्री विष्णु प्रिया
22. आस्था दीक्षित

[245] श्रीमती विष्णु प्रिया प्रसिद्ध गायिका से प्राप्त जानकारी के अनुसार

23. श्रीमती सीमा जालान

24. कुमारी रितिका

25. स्वाति मुखर्जी

26. कुमारी गौरांगी

27. श्रीमती अमित शर्मा (मीत बनारसी)

28. श्रीमती अनुपम राय

29. डॉ. अश्विना रंगनेकर

30. डॉ. आकांक्षा तिवारी

31. डॉ. पारूल दिक्षित उपाध्याय

32. डॉ. ज्योति मिश्रा

33. श्रीमती अलका तिवारी

34. श्रीमती दिव्या द्विवेदी

35. श्रीमती दीपाली

36. डॉ. मेनका मिश्रा

37 .डॉ नंदिनी भट्टाचार्या

38. श्रीमती रीता गनी

39 श्रीमती कुमुद दीवान[246]

पंडित जी का सांगीतिक व्यक्तित्व बहुत विशाल है तथा शिष्य श्रृंखला बहुत विस्तृत है। वाराणसी नगर के जो भी प्रशासनिक अधिकारी स्थानांतरित होकर पदभार ग्रहण करते हैं, उनमें से अधिकांशतः रुचिवश पंडित जी की शिष्यता मे अपना कुछ समय सपरिवार अवश्य व्यतीत करते हैं। वाराणसी नगर के सम्भ्रान्त समाज के जितने भी सुविख्यात नाम है , वह शिष्य अथवा प्रशंसक के रूप में पंडित जी की

[246] डॉ इंद्रेश मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

छाया अवश्य प्राप्त करते हैं ,अनेक कुलपति ,प्राचार्य, छात्र छात्राएं,जिलाधिकारी थाना अध्यक्ष अथवा नेता गण पंडित जी की कला तत्व तथा गायकी के परम भक्त हैं।

पंडित जी के शब्दों मे "हमारी सांगीतिक श्रृंखला बहुत विशाल तथा अतुलनीय है, बहुत निराला है भारत का संगीत अगर परंपरागत रूप से संरक्षित तथा संदर्भित नहीं किया गया तो यह नष्ट हो जाएगा, कलाकार होने के नाते मेरा यह कर्तव्य है कि मैं अपने पूर्वजों की सिखाई हुई परंपरा का पालन करूं तथा आने वाली पीढ़ी को प्रदान करूं।[247]

पंडित छन्नूलाल मिश्र की जी की शिक्षण प्रणाली

[248]पंडित छन्नूलाल मिश्र अपने शिष्यों को उनकी प्रतिभा लगन तथा योग्यता के आधार पर शिक्षित करते हैं। गुरु शिष्य परंपरा के आधार पर शिक्षा ग्रहण की अपने शिष्यों को भी उस परंपरा के अनुयाई बनाने का प्रयास करते हैं। अपने संगीत संस्था में भी उन्होंने अपने विलक्षण गुण एवं दूरदर्शिता के माध्यम से अपने संगीत विद्यार्थियों को अपनी शिक्षण विधि द्वारा विशाल हृदय से शिक्षित किया। अपने शिष्यों को कला साधना तथा रियाज के प्रति प्रेरित भी किया, आपने एक योग्य गुरु और शिक्षक के रूप में अन्य की शिष्यों को शिक्षा प्रदान की है, तथा बहुत सारे शिष्य राष्ट्रीय स्तर पर मंच प्रस्तुति कर रहे हैं तथा अनेक शिष्य उच्च पद स्थापित

[247] पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र के साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी
[248] प्रसिद्ध गायिका एवं शिष्या कुमुद दीवान द्वारा प्रदत्त जानकारी

हैं। अपने अपने शिष्यों को भी वही संस्कार प्रदान किए हैं जो आपके गुरु तथा परंपरा ने आप में समाहित किया।

पंडित छन्नूलाल मिश्र जी की शिक्षा पद्धति की विलक्षणताएं

पंडित छन्नूलाल मिश्र जी की शिक्षण पद्धति बहुत ही व्यवस्थित अनुसूचित संस्कृत एवं उच्च स्तरीय रही है जिनका विवरण निम्नलिखित है--

कुशल प्रदर्शक

यह बिल्कुल अनिवार्य नहीं होता, कि प्रत्येक शिक्षक के पास कला कौशल की विलक्षण प्रतिभा हो।[249] सुयोजित शिक्षण विधि एवं प्रदर्शन में पारंगत होना साधारणतया दोनो गुण एक साथ नहीं पाए जाते यही कारण है कि, प्रत्येक प्रख्यात तथा प्रतिष्ठित कलाकार में यह आवश्यक नहीं कि उसमें योग्य शिक्षक के गुण भी विद्यमान हो, इसलिए वह अपने शिष्य परंपरा को पूर्ण तैयार विकसित करने मे असमर्थ रहता है। पंडित छन्नूलाल मिश्र एक अनुभवी कलाकार के अलावा, सुयोग्य गुरु के रूप में भी योग्यता रखते हैं उक्त दोनों गुणो का एक साथ निर्वहन करना कला कौशल, अनुशासन ,कठिन साधना व्यक्तिगत गुणों की अपेक्षा रखता है। आप एक कुशल मंची है प्रदर्शन होने के साथ-साथ एक सफल गुरु भी हैं।मंच प्रदर्शन के साथ आप गायन की गहनता से पूर्ण रूप से परिचित है। आपके विलक्षणता का प्रमाणिक यह भी है कि आपने अपने शिक्षण कार्य एवं व्यवसायिक कार्यक्रमों के बीच सही संतुलन कायम किया है आज यही कारण है की आपसे प्रशिक्षित हुए सभी विद्यार्थी अपनी सांगीतिक यात्रा में सफलता का प्रथम लहरा रहे हैं।

---

[249] डॉ इंद्रेश मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

धैर्यपूर्ण शिक्षण

वर्तमान समय में जहां सामान्य जीवन जीना भी कठिन है, ऐसे में क्रोध का परित्याग कर धैर्य पूर्ण व्यवहार करना एक दुरूह कार्य है। [250]ऐसा संगीत जगत में हमें अक्सर सुनने को मिलता है कि कलाकार जितना प्रतिष्ठित होता है उसमें धैर्य की उतनी ही कमी होती है। शिक्षण एक ऐसा कार्य है जहां शिक्षक को अपने उच्चतम स्तर से नीचे उतरकर छात्र के मानसिक स्तर को समझ कर शिक्षा प्रदान करना होता है और यह एक जटिल कार्य है। यह किसी भी संगीतज्ञ अथवा कलाकार के व्यक्तित्व निर्माण मे बहुमूल्य रूप से सहायक है तथा यही वह गुण है जिसमें कलाकार की सफलता तथा कला कुशलता के सारे रहस्य छिपे होते हैं। पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के व्यक्तित्व में यह क्षमता उनके व्यक्तित्व में पूर्ण रूप से समाहित है, वह प्रतिष्ठित यशस्वी एवं सुयोग्य कलाकार होने के साथ-साथ विनम्र तथा धैर्यवान व्यक्ति भी हैं। छात्रों को अभ्यास करते समय किसी भी राग का तब तक रियाज करवाते हैं जब तक उस राग अथवा उसके स्वरूप को शिष्य आत्मसात ना कर ले। गंभीरता के साथ राग तथा स्वरूप पर केंद्रित रहते हुए आलाप बोल आलाप से लेकर तराने तक का सफर बड़ी ही दृढ़ता एवं संयम के साथ करवाते हैं। छात्र की त्रुटियों का संपूर्ण धैर्य के साथ निवारण करने के अलावा उन्हें समर्पण के साथ साधना के लिए प्रेरित करते हैं। "गुरुजी सीखने के वक्त जब हमें रागों का सही स्वरूप, भावपूर्ण आलाप, स्वरों का सही लगाव एक राग को दूसरे रागों की छाया से बचने का सही ढंग बताते समय धैर्य के साथ शिक्षा प्रदान करते हैं"।[251] शिष्य उन्हें भगवान की उपाधि भी देते हैं, "जिस प्रकार भगवान मन की पीड़ा को समझ कर निवारण कर देते,हैं ठीक उसी प्रकार गुरुजी भी हमारी आर्थिक, शारीरिक अथवा मानसिक पीड़ा को समझकर उसकी संपूर्ण निवारण कर देते

[250] डॉ अनीता गोस्वामी द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

हैं" 'कभी हमारे पास अगर उन्हें देने के लिए फीस नहीं होती थी तो भी उन्होंने कभी एक व्यावसायिक व्यवहार नहीं किया,तथा अपने पुत्र की भांति अपने घर में रखा और सिखाया। कोई चीज अगर नहीं भी समझ में आती थी तो उसे चीज को बार-बार समझाकर तथा प्रयास करवा कर अंततः वह कार्य संपन्न करवा देते हैं। उनकी नजर में सभी शिष्य समान है चाहे वह किसी भी धर्म जाति अथवा संप्रदाय से हो।

विद्यार्थियों में सृजनशीलता एवं उपज को प्रोत्साहित करना

संगीत एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें क्रियात्मक प्रक्रिया के दौरान प्रत्येक गुरु यह चाहता है कि उसका शिष्य उन्ही की गायन शैली तथा घराने के परंपरा का पूर्ण रूप से अनुसरण करने का प्रयत्न करे किंतु इस प्रयास में कभी ऐसा भी होता है कि छात्र के अपने सृजनात्मक प्रवृत्ति तथा प्रतिभा का पूर्ण रूप से विकास नहीं हो पाता। पंडित छन्नूलाल मिश्र स्वयं "चारों पट के गायन में निपुण है" वो सिर्फ एक घराने के बंधन में ना बंध कर उन्होंने अनेक प्रकार की गायन शैली अपनाई तथा अपने शिष्यों में भी ऐसे ही गुणों को बढ़ावा देते हुए उन्हें सृजनशीलता की ओर प्रोत्साहित किया। ख्याल शैली में उन्होंने किराना घराने का प्रचार प्रसार किया तथा बंदिशों को मौलिक रूप से सिखाया तथा उन्होंने अपने शिष्यों को भी अपनी कल्पना शक्ति के प्रयोग को लेकर हमेशा उत्साहित किया। बनारस अथवा हरिहरपुर घराने को लेकर भी उन्होंने उपशास्त्रीय गायन शैली ठुमरी, दादरा, चैती, कजरी अथवा अन्य लोक विधा को लेकर भी छात्रों को हमेशा प्रोत्साहित किया कि भारतीय संगीत के शास्त्रीय परंपरा के अलावा ग्रामीण लोक संगीत का भी मूल तत्व जीवित रहे। अन्य शास्त्रीय गायक मंच प्रस्तुति के दौरान लोक संगीत का प्रयोग नहीं करते हैं किंतु पंडित जी ने अपने शास्त्रीय कार्यक्रम के दौरान भी लोक संगीत को प्रमुखता से गया तथा

अपने शिष्यों को भी प्रेरणा देते रहे हैं कि किसी एक बंधन में ना बंध कर संगीत का समुचित प्रसार हो।[252]

गुरु शिष्य संबंधों के प्रति पूर्णत: निष्ठावान

पंडित छन्नूलाल मिश्र अपने शिष्यों के प्रति पूर्णत समर्पित तथा निष्ठा गुरु हैं, छात्रों के प्रति आपके मन में तथा प्रेम की भावना रही है। बाहरी तौर पर आपने भले ही अनुशासनात्मक तरीके से शिष्यों को संगीत साधना करवाई, जिससे शिष्यों को कभी-कभी आप कठोर भी प्रतीत हुए परंतु आपका आंतरिक हृदय बहुत कोमल है। अपने अपने शिष्यों के साथ एक पिता की भांति भी संबंध निभाया, कभी डांट कर, कभी फटकार कर तो कभी शिक्षा प्रदान कर अपने शिष्यों का सदैव मार्गदर्शन किया। शिष्यों की आंतरिक समस्या को एक मित्र की भांति उदार हृदय से निवारण करने में भी कभी पीछे नहीं रहे।[253]

शिष्य अगर कहीं दूर से उनके पास सीखने के लिए आता, तो आप हमेशा पूछते कि तुम कहां रहोगे? तुमने खाना खाया है या नहीं? या तुम्हारे पास पैसे है या नहीं? अपने अनेक शिष्यों की आर्थिक रूप से भी बहुत मदद की, अपने जीवन पर्यंत अपने पिता की उसे उक्ति को अपनाया " एक सच्चा गुरु कुम्हार की तरह होता है, जो थाप देकर कभी आकार सही करता है, तो कभी सहारा देकर संपूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करता है"।

[252] डॉ इंद्रेश मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

विद्यार्थियों की क्षमता तथा अभिरुचि परखने मे सक्षम

पंडित छन्नूलाल मिश्र जी विद्यार्थियों को हमेशा कठोर अभ्यास समर्पण तथा संगीत साधना की ओर प्रोत्साहित करते रहे हैं। [254]जिस विद्यार्थी मे जिस प्रकार के गुण होते थे आप उसकी प्रतिभा के अनुसार ही उसे प्रोत्साहन देते थे। एक बार जब मैं गुरु जी के पास सीख रहा था तो उन्होंने कहा कि तुम्हारी गायकी मे भाव बहुत है,तुम उपशास्त्रीय तथा लोक विधा को विशेष तौर पर गाओ, आज उनके कथनानुसार ही मैंने सांगीतिक यात्रा की और उनका कथन बिल्कुल सही सिद्ध हुआ और मुझे इस क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त हुई। एक विशाल हृदय शिक्षक की भर्ती आपने अपने छात्रों का हित ही प्रमुख रूप से देखा उनकी विकास यात्रा मे कभी बाधक नहीं बने।

शिक्षण के प्रति पूर्ण रूपेण समर्पित

पंडित छन्नूलाल मिश्र जी ने शिक्षण कार्य को सृजन कार्य के रूप में ही पूर्णरूपेण माना। उनके अनुसार किसी भी गुरु को अपनी शिक्षण पद्धति के लिए छात्रों का श्रद्धापूर्वक तथा आनंदपूर्वक अभिनंदन आवश्यक होता है। एक गुरु को किसी संस्था अथवा विद्वान द्वारा प्रमाण पत्र की आवश्यकता नहीं होती, उसके शिष्य उसे स्तर तक उसे स्वयं प्रतिष्ठित कर देते हैं। आज अपने कलात्मक एवं सृजनात्मक के कारण आपने अपने शिष्यों को भी इस प्रकार से कार्य करना सिखाया जैसे अपने परंपरागत रूप मे स्वयं सीखा। अपनी साधना के अलावा शिष्य को साधना करवाना भी आपके दैनिक दिनचर्या का एक जरूरी हिस्सा है, क्योंकि आपके विचार हैं कि शिष्य ने आपको चुना है, और आपकी जिम्मेदारी है कि शिष्य अपने मार्ग पर सही प्रकार से चले।

---

[254] श्रीमती मोहिनी मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी

उच्च बुद्धि स्तर

पंडित छन्नूलाल मिश्र एक विलक्षण बुद्धि के शास्त्रकार, रचनाकार, कलाकार तथा विद्वान हैं। आपके अंतर्मन में संगीत से संबंधित कुछ ना कुछ रचनाएं सदैव चलती रहती हैं। आपकी रचनात्मक क्षमता इतनी विशिष्ट है कि कभी मंच पर गाते गाते या प्रशिक्षण के दौरान कोई भी नई रचना आप तुरंत बना लेते हैं तथा अपने शिष्यों को भी ऐसे विलक्षणता के लिए प्रेरित करते हैं।

विषय वस्तु मे निपुणता

छन्नूलाल मिश्र क्रियात्मक तथा शास्त्रीय दोनों ही पक्षों के विद्वान हैं। आध्यात्मिक शास्त्रीय तथा उपशास्त्रीय अनेक क्षेत्रों में उन्होंने एक अनुसंधानिक रूप में काम किया है। आपका कहना है कि "श्रोता हो या शिष्य अगर विषय वस्तु को समझेंगे नहीं तो हमारा गाना अथवा सीखाना व्यर्थ है"।[255]

वक्तव्य कौशलता एवं प्रबुद्ध चिंतक

पंडित छन्नूलाल मिश्र एक कुशल वक्ता है तथा प्रबुद्ध चिंतक भी है आपने मंच से प्रदर्शन के दौरान अनेक आख्यान प्रस्तुत किए हैं तथा शास्त्रीय संगीत घराने अथवा प्रस्तुत गायन शैली को अलग-अलग तथ्यों द्वारा उजागर किया है। आपने अपने आख्यानों अथवा विचारों से नवीन पीढ़ी को नई दिशा प्रदान कर मार्ग प्रशस्त किया है। आपकी बौद्धिक क्षमताएं तथा उपलब्धियां समय-समय पर अलग-अलग माध्यमों से उजागर होती रही हैं। आपने संगीत के विभिन्न मुद्दों पर अलग-अलग मंच जैसे समाचार पत्रकारों से बातचीत करते हैं या अनुसंधान कर्ताओं से समय-

[255] पद्म विभूषण भूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी

समय पर किए साक्षात्कार के दौरान अपने अनेक क्षेत्रों में अपने विचार व्यक्त किए हैं, जिससे संगीत जगत का मार्ग प्रशस्त होता है तथा आपके आख्यान अनुसंधान के क्षेत्र को व्यापक करते हैं।

पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व संबंधी कुछ प्रमुख विद्वानों/ कलाकारों/ गुणीजनों के विचार

आपकी कृतित्व से संबंधित निम्न बुद्धिजीवियों कलाकारों के साक्षात्कार किए गए उनके विचार निम्न उद्धत किया जा रहे हैं---

हमारा भारत देश अपनी कला संस्कृति एवं धरोहर के लिए जाना जाता है। इस धरोहर में शास्त्रीय संगीत का विशेष महत्व है और शास्त्रीय संगीत में घरानों का महत्व है, उनमें से प्रमुख घराना है बनारस घराना। इस घराने में दादरा, ठुमरी, चैती, कजरी जैसी विधाओं का विशेष रूप से प्रयोग होता है, यह अपने आप में अद्भुत है और ऐसा विशेष कर बनारस घराने में होता है। इस घराने के ही कलाकार हैं सुप्रसिद्ध पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र साहब । इन्होंने इन सभी विधाओं पर भारत हासिल की है इनको हर जगह सराहना मिलती है, क्योंकि यह कार्यक्रम को इतना सरल बनाते हैं कि एक आम आदमी भी उनसे जुड़ जाता है वह समझाते हैं कि क्या गा रहे हैं? उसका अर्थ क्या है? उनके गायन सुनने के बाद मैं समझता हूं कि एक श्रोता यह समझने लग जाता है कि ताल क्या है?स्वर क्या है? गमक क्या होता है? ऐसे कलाकार बहुत कम हैं हमारे भारतवर्ष में उनको मै नमन करता हूं उनकी सांगीतिक की यात्रा इसी प्रकार जारी रहे यह मेरी शुभकामना है।[256]

[256] प्रसिद्ध गायक कैलाश खेर द्वारा किए गए साक्षात्कार से उद्धृत

- हम स्वयं को बहुत भाग्यशाली समझते हैं की पंडित जी हमें जानते हैं, पहचानते हैं, हमने उनके साथ वार्तालाप भी किया है। यह बहुत बड़ी बात है क्योंकि यह एक महान कलाकार है,हमारे देश मे अगर ठुमरी,दादरा ,कजरी चैती उत्तर प्रदेश का लोक संगीत और शास्त्रीय संगीत का कोई अगर गहरी समझ रखने वाला कलाकार है , जिसे बहुत ज्ञान अथवा बहुत जानकारी है तो वह एक ही है पंडित छन्नूलाल मिश्र जी।[257]

- मेरे ख्याल से हिंदुस्तान में संगीत के और खास तौर से शास्त्रीय संगीत के जितने भी सम्मान है वह सभी पंडित छन्नू लाल मिश्र जी को प्रदान किया जा चुके हैं, लेकिन यह उनके लिए कोई बड़ी बात नहीं है कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनको अवार्ड या सम्मान मिलता है तो, अवार्ड की इज्जत बढ़ती है और पंडित जी ऐसे ही कलाकार हैं।[258]

- मेरे लिए पंडित छन्नूलाल मिश्रा जी एक भारतीय रत्न है उनमें आपको भारत की कहानी भारत का इतिहास उसकी प्राचीन था उसकी आधुनिकता सब की झलक एक साथ देखने को मिलती है वह एक अतुलनीय गायक एवं संगीतज्ञ की होने के साथ विश्व के महान

[257] कैलाश खेर सुप्रसिद्ध गायक एवं संगीतकार साक्षात्कार पर आधारित
[258] https://youtu.be/sTPGopsK5mU?si=pl37jx-IkP1VgjPx

व्याख्याकार वो कथा को समझाने वाले कलाकार भी हैं, जैसे कालिदास जी थे, वैसे ही है पंडित जी। **He is a living legend**. [259]

- यह जो हमारे पंडित छन्नूलाल मिश्र जी हैं वह बहुत बड़े कलाकार हैं बहुत बड़े संत और योगी हैं मैं ऐसे लोगों को योगी कहता हूं, संत कहता हूं 85 साल के हो गए हैं उसके बाद भी उनका जो मन है एक बालक की भांति पवित्र है, भक्ति और कलाके प्रति एक समर्पित भाव से वह जीवन जीते हैं, ऐसे विभूति का नाम है पंडित छन्नू लाल मिश्र जी।मैं उनको मात्र गायक संगीतज्ञ, संगीत प्रशिक्षक नहीं मानता हूं ऐसे लोगों को तीर्थ मानता हूं। भारत में दो प्रकार के तीर्थ होते हैं- 'स्थावर' जो 'स्थितप्रज्ञ' होते हैं जैसे हमारे जो तीर्थ स्थल हैं,जहां हम जाते हैं दर्शन का लाभ प्राप्त करने जो मंदिरों के रूप में होते हैं, पवित्र स्थान के रूप में होते हैं। दूसरे प्रकार के तीर्थ को 'जंगम' कहते हैं। जंगम, श्रेणी के अंतर्गत जो तीर्थ कहलाते हैं, वह साधु , सन्यासी, संत ,योगी एवं भिक्षु आदि होते हैं यह लोग जहां होते हैं, जहां भी जाते हैं वह अपनी रोशनी वहीं प्रकाशित करते हैं , इस ब्रह्मांड को और समस्त जनमानस को, ऐसी ही एक दिव्य शक्ति है पंडित छन्नूलाल मिश्र जी।[260]

- we always wanted to do work with Pandit Channulal Mishra ji because he is such a fine artist and he doesn't get out of his she'll, because he is a very pure soul and

[259] https://youtu.be/sTPGopsK5mU?si=pl37jx-IkP1VgjPx
[260] कौशिकी चक्रवर्ती शास्त्रीय एवं उप शास्त्रीय गायिका द्वारा किए गए साक्षात्कार पर

he doesn't want to get involved in all this commercial things that happens in bollywood but we wanted to him to sing this song and we want his voice to reach to the massage. So we have requested him and just because of the fact he loves us he came.Every time I heard I was completely blown out of his voice. He is person who would normally not came and sing like a regular bollywood [261]singers. He understands the depth of the melody the depth of the raga.

- पंडित जी को हम बहुत पहले से जानते हैं। बहुत सुंदर गाना गाते हैं, हमारे घर आकर भी उन्होंने कई बार गाया है मैंने उनसे एक 'होली'भी सीखी है कहीं अवसरों पर मेरी उनसे मुलाकात हुई है, उनका गाया हुआ गीत "सांस अलबेली" आरक्षण फिल्म का मेरा सबसे पसंदीदा गाना है।

- पंडित छन्नूलाल मिश्र जी जो कि मेरे लिए छन्नू चाचा ही हैं, बचपन से मैं उनको सुन रहा हूं अत्यंत ज्ञानी पुरुष हैं, रागों के बारे में उनका गहरा ज्ञान है, और ठुमरी , दादरा के तो बादशाह हैं, साहित्य में उनकी पकड़ अद्वितीय है, ऐसा मैंने किसी में नहीं देखा ईश्वर उनको बहुत अच्छी सेहत दे, और बहुत सालों तक वह इसी प्रकार हम सबको ज्ञान बांटते रहें, हम

[261] श्री शंकर महादेवन सुप्रसिद्ध संगीत निर्देशक गायक संगीतकार से किया गया साक्षात्कार

सब उनसे सीखने रहे ,उनको सुनते रहे, बस यही प्रार्थना है कि चाचा जी इसी तरह बहुत वर्षों तक स्वस्थ रहें, गाते रहें और हमें सुख देते रहें।[262]

- हमारे पूरे परिवार की ओर से पंडित जी को बहुत-बहुत प्रणाम। आप हमको आशीर्वाद देते रहिए आपकी सेहत अच्छी रहे आपके पास न जाने कितनी सारी ठुमरी, चैती, कजरी , दादरा और सुंदर बंदिशों का भंडार है, और ऐसा भंडार आप हम जैसे जो छोटे 'स्टूडेंट'हैं संगीत के, उनको सिखाते रहे, सुनाते रहे, आपका स्नेहपूर्ण आशीर्वाद सदैव बना रहे हम सब पर, आपको सुन सुन कर ही बड़े हुए हैं हम लोग,आपकी गाई चीजों को गाने का भी प्रयास करती हूं, और आप भी बहुत बड़ी प्रशंसक हूं।

- हिंदुस्तानी शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय संगीत, पंडित छन्नूलाल मिश्र जी इसी परंपरा के संवाहक हैं। उनका न केवल भारतीय शास्त्र मे ,संगीत शास्त्र में गहरा लगाव है, गहरी अभिरुचि है, बल्कि उसके संवर्धन में उन्होंने अपना पूरा जीवन समर्पित किया है, उनकी साधना के आधार पर भारतीय शास्त्रीय संगीत पुष्पित एवं पल्लवित होकर आगे बढ़ रहा है, उनकी इस क्षेत्र में की गई सेवाओं को दृष्टिगत रखते हुए भारत सरकार ने उन्हें 'पद्म विभूषण' सम्मान से सम्मानित किया है वह एक उच्च कोटि के कलाकार के साथ ही एक सरल, सजग और मिलनसार स्वभाव के इंसान है,जिनसे मिलकर एक अलग ही सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

[262] प्रसिद्ध गायिका तथा शिष्या विष्णु प्रिया द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

मेरी उनसे मुलाकात अकस्मात ही शहीद उद्यान,नगर पालिका वाराणसी में हुई। उनका ओजपूर्ण चेहरा, साधारण सा पहनावा और मुस्कुराता हुआ आभामंडल व्यक्तित्व देखते ही मैं समझ गया कि निश्चित ही यह कोई असाधारण व्यक्ति हैं। [263]उनसे मिलकर ना जाने ऐसा क्यों लगा जैसे हम सदियों से एक दूसरे को जानते हैं, हमारी दोस्ती वर्षों पुरानी है, वह उम्र में मुझसे छोटे हैं,इसलिए मैं उन्हें 'तुम'कह कर पुकारता था और इतनी बड़ी शख्सियत होते हुए भी उनमे इतनी सरलता है कि, उन्होंने मुझे सदैव प्रेम और सम्मान ही दिया। वे इतने हंसमुख स्वभाव के हैं कि उनके साथ कभी कोई उदास नहीं हो सकता,वह बात-बात पर कोई ना कोई चुटकुला या मजेदार किस्सा सुनाते रहते हैं,उनके आसपास का माहौल बड़ा खुशनुमा रहता है वह सभी से बड़े प्रेम और अपनेपन से मिलते हैं, उनका मित्र होना मेरे लिए बड़े गौरव की बात है, ईश्वर उन्हें स्वस्थ और प्रसन्न रखें यही प्रार्थना है।

- बनारसी रंग में सराबोर और पंडित जी की गायकी, तहजीब और संस्कृति की नुमांइदगी करती है। मैं मुख्य रूप से 'पावर सेक्टर' से जुड़ा हूं संगीत यद्यपि मेरा विषय नहीं रहा,लेकिन मुझे यह बताते हुए बड़ा हर्ष हो रहा है कि भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रति मेरा जो रुझान हुआ, और जो उनके प्रति समर्पण हुआ, वह पंडित छन्नू लाल मिश्र जी का गायन सुनकर ही हुआ।
- अपने गायन में जब हुए भक्ति रस की बातें करते हैं तो विशेष आनंद आता

[263] . गिरीश चंद्र त्रिपाठी पूर्व कुलपति काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित)

है, कई बार मैंने उनको "रामचरितमानस" के पद सुनाते हुए भी देखा है जिससे मैं बहुत प्रभावित होता हूं, कई बार तो मुझे ऐसा लगा जैसे मैं पंडित डी वी पलुस्कर जी को साक्षात सुन रहा हूं।
काशी को प्रतिनिधित्व उन्हीं से मिल रहा है,उनके पास जाकर यह नहीं लगता कि, हम इतने बड़े कलाकार के पास बैठे हैं, ऐसा लगता है, जैसे अपने घर के किसी बुजुर्ग व्यक्ति के पास बैठे हैं, उनकी सादगी, सज्जनता, सरलता बिरले ही लोगों मे देखने को मिलती है।
योग्यता के साथ विनम्रता का जो समावेश है वह पंडित जी की विशेषता है। वह इस संयोग के जीते -जागते उदाहरण हैं, उनके चारों तरफ एक परिधि व भक्ति की आभा है, ईश्वर उन्हें चिरायु करें।

- पूजनीय आदरणीय पदम विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्रा जी के बारे में कुछ भी बोलना 'सूरज को दिया दिखाने जैसा है'। मैं खुद को इससे योग्य ही नहीं समझती कि आदरणीय गुरु जी के विषय में कुछ कह सकूं, वह अपने आप में पूरी एक संस्था हैं,साहित्य और संगीत के एक ऐसे गुणीज्ञाता हैं, जो अपने आप में किसी विश्वविद्यालय से काम नहीं। साहित्य और संगीत की जो बारीकियां मैने आदरणीय गुरु जी से सुनी और देखी वह अद्भुत है। क्लिष्ट को इतनी सरलता से श्रोताओं को समझा देने की कला जो आदरणीय गुरुजी में है,वह उनकी ऐसी विशेषता है जो वह बहुत कम है देखने सुनने को मिलती हैं मैं खुद को भाग्यशाली मानती हूं जो मुझे आदरणीय है गुरु जी का इतना समय है और आशीर्वाद मिलता रहता है गुरु जी के चरणों में मेरा वंदन है।
- संगीत शिरोमणि पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी की ठुमरी के लब्ध प्रतिष्ठित कलाकार हैं। उन्हें ख्याल, ठुमरी, भजन, दादरा,

कजरी ,चैती सभी गायन विधाओं में भारत हासिल है। वे खुद में संगीत की एक संपूर्ण संस्था हैं।पंडित जी से मिलना एक विरल संगीतज्ञ से मिलना मात्र नहीं है, उनसे मिलना आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत,संत सरीखे व्यक्तित्व के सानिध्य में बैठने की अनुभूति देता है। पंडित जी के दर्शन करने एवं उनसे बात करने की वर्षों से मेरे मन में इच्छा थी आंतरिक प्रेरणा से प्रेरित होकर मैं उनसे मिलने उनके आवास पर पहुंची, मैं आश्चर्यचकित थी उनकी सादगी देखकर अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त महान संगीतज्ञ मुश्किल से 10-10के कमरे में जमीन पर पालथी मार कर बैठे थे, मुख्य मंडल पर तेज बरस रहा था 85 वर्ष की उम्र में भी जिंदादिल्ली उनके अंदर कूट-कूट कर भरी हुई है, उन्होंने बड़े प्रेम से वार्तालाप करते हुए मेरे प्रश्नों का उत्तर दिया, साक्षात्कार लेने के पश्चात 'देव दर्शन'किसी अनुभूति लिए एवं पंडित जी के आशीर्वाद से पुलकित मैं अपने गंतव्य को लौट आई।गुरु परमात्मा, गुरु का होना ही आशीर्वाद है। वह मांगना नहीं पड़ता गुरु के पास होने से सब मिल जाता है। उनकी शरण में जाओ सब कुछ वही मिल जाएगा ऐसे ही अनुभूति मुझे पंडित जी से मिलने के पश्चात हुई। परम ऋषि तुल्य,व्यक्तित्व के सागर का एक-एक शब्द सुनना हम अपना भाग्य समझते हैं, उनके पिता सदृश व्यवहार से आत्म विभोर होकर पंडित जी को हमने हमेशा "पापा" ही कह कर पुकारा है, वह भी हमें प्यार से "बिटिया" कह कर बुलाते हैं ,3 साल पहले जब पुणे आए थे,एक कार्यक्रम में जब हम उनसे मिलने अपने पतिदेव के साथ गए,उन्होंने अंदर से ही आवाज लगाकर कहा 'आओ बिटिया'हमारे दामाद जी कहां है ? अंदर पहुंचने से पहले ही उनकी प्रेम भरी

वाणी में 'बिटिया और दामाद जी' शब्द सुनकर हम दोनों ही भाव विभोर हो गए प्यार और अपनेपन की प्रतिमूर्ति पंडित जी के विषय में क्या कहा जाए, मौन प्रार्थना जल्दी पहुंचती है, क्योंकि वह शब्दों के बोझ से मुक्त होती है, इसलिए बस हृदय मे अपनी मौन प्रार्थना उनके उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घ जीवन की कामना के साथ प्रेषित करती हूं।[264]

- पिताजी के विषय में कुछ कहने की सोचता हूं तो डर लगता है कि कहीं एक अलग अध्याय ही ना लिखना पड़ जाए क्योंकि जब भी भावनाएं और सीमित हो तो शब्द हमेशा काम पड़ ही जाते हैं। फिर भी बचपन की कुछ बातें साझा करता हूं, मेरे सांगीतिक जीवन की जो यात्रा प्रारंभ हुई, वह पिताजी से गायन सीखने से ही हुई। मैं उनके साथ मंच पर प्रस्तुति भी देने लगा था फिर धीरे-धीरे मेरा रुझान तबला वादन की ओर हो गया, और 7 वर्ष की उम्र से मै अपनी "माता श्रीमती मनोरमा मिश्रा" जी से "तबला वादन" का प्रशिक्षण लेने लगा किंतु संगत की बारीकियां मैं पिताजी से ही सीखी हैं।[265]

वह एक कुशल तबला वादक भी हैं,"वह बाएं हाथ से तबला बजाते हैं" और लोक संगीत तथा सुगम संगीत में ठेका लगाने में जो विविधता और जोरदारी उनके हाथों में है, वह बेजोड़ है,उनकी सिखाई हुई यही ठेका की विविधता

[264] डॉ.मेनका मिश्रा सुप्रसिद्ध सुगम गायिका द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

[265] पंडित रामकुमार मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

एवं "जोरदार हाथ से बजाने की कला" आज भी मेरे तबला वादन की विशेषता बनी हुई है।
बचपन में मुझे 'फिल्में देखने' तथा 'पतंग उड़ाने'का बहुत शौक था यह बात मेरे पिताजी जानते थे इसलिए जब कभी मैं रियाज़ करने से कतराता था या उनके इच्छा के अनुरूप मेहनत नहीं करता था तो कहते थे "अच्छे से रियाज करो तो आते रविवार को मैं तुम्हें सिनेमा लेकर जाऊंगा, और हफ्ते में एक दिन 2 घंटे के लिए पतंग उड़ाने की भी छूट मिलेगी" ऐसी लालच में मैं मन से उनकी इच्छा अनुसार खूब प्रयास करता था।एक गुरु के रूप रूप में वह जितने कठोर और अनुशासन प्रिय है, उतने ही एक पिता के रूप में प्रेम मे सहृदय ,ध्यान रखने वाले और हंसने हंसाने वाले इंसान हैं। मेरा परम सौभाग्य है कि, मैं पंडित जी के रूप में एक छल कपट से दूर ,सीधे सच्चे संत स्वरूप पिता को पाया भगवान उनका प्यार और आशीर्वाद हमेशा हम सब पर बनाए रखें।

- I first met Pt.Channulal Mishra, my beloved guru ji and then also Indian father, in October 2008,well before his much deserved recognition of the prestigious Padma Bhushan ,which award,which came only in 2010. I knew well who he was,and obviously he didn't know who I was,after all, I was just another foreigner living in Banaras, when destiny brought me to his feet. Knowing his artistic value and height.I didn't dare ask him for music lessons,and I was rather amazed when he turned to me and asked "Do you want to learn

music from me?"To this day,I am convinced that he read my mind and hearts,yearnings.And I heard a clear voice whisper sofly in my ear, "This great artist will open up your voice " And he did I had gone from being the director of the 'Spanish Space Technology programme in government to chela(Disciple) of the world-renown artist.This was true blessing and one of the magical things that has happened to me in my life.

I've been student of "Pt. Channulal Mishra" since than,never missing his lessons when I go to my most beloved 'Banaras' The home of my soul, every single year.Not only is Guru ji an unparalleled artist, but beyond that, he is a magnificent human being and a highly

spiritually developed person.He also welcomed me as a true member of his family and he eventually became my 'Indian father', as Mata ji became my Indian mother, and Namrata and her sisters became my sisters.

I feel very blessed to have stumbled upon this wonderful artist and human being, and this beautiful family, which today I call you own.[266]

[266] श्री राम संपत संगीत निर्देशक एवं संगीतकार साक्षात्कार पर आधारित

निष्कर्ष

पंडित छन्नूलाल मिश्र जी की संगीतिक पृष्ठभूमि, शिक्षण पद्धति तथा अनेक तत्वों के अवलोकन से यह तथ्य पूर्ण रूपण स्पष्ट है कि,पंडित जी ने बनारस घराने तथा हरिहरपुर घराने की उपशास्त्रीय तथा लोक विधा का मार्ग प्रशस्त किया है। बनारस, हरिहरपुर तथा किराना घराने के उत्कर्ष एवं उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई आपने माधुर्यपूर्ण, भावपूर्ण तथा ईश्वर से तादात्म्य स्थापित कर, अहंकार विहीन व्यक्तित्व के स्वामी होने पर लिखित प्रमाण दिया है। स्वर साहित्य तथा भाव का मधुर संगम आपकी संगीत की आत्मा में समाहित है आप अपनी गायकी के प्रस्तुतीकरण के माध्यम से श्रोताओं को आध्यात्मिक एवं अलौकिक आनंद से तृप्ति करवाना आपका महत्वपूर्ण प्रयास रहा है। जिस निष्ठा एवं समर्पण भावना एवं अथक परिश्रम के पश्चात अपने शिष्यों के अटूट श्रृंखला तथा संगीत संस्थान स्थापित किया है, वह अद्‌भुत विलक्षण एवं सराहनीय है। उपरोक्त तथ्य पूर्णतया स्पष्ट करते हैं कि पंडित छन्नूलाल मिश्र एक निर्भीक, सफल, सशक्त, कर्मठ, विनम्र व समर्पित कलाकार रहे हैं,तथा भारतीय संगीत के उन्नयन हेतु सक्रिय, अथक व यथेष्ट प्रयास किए हैं। उनकी बहुमुखी, प्रतिभा, दूरदर्शिता कलात्मकता ,कुशाग्र बुद्धिमत्ता, विद्वता, विवेकशीलता, विशाल दृष्टिकोण का विशेष प्रतिफलन है।

अध्याय 4 - छन्नूलाल मिश्र एक बहुमुखी कलाकार के रूप मे

भारतीय शास्त्रीय संगीत विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध सांगीतिक परम्पराओं में से एक है, जिसकी आधारशिला भारतीय संस्कृति, अध्यात्म, दर्शन तथा लोकजीवन में निहित है। इस संगीत परम्परा का विकास केवल राग, ताल और लय की तकनीकी संरचनाओं के माध्यम से नहीं हुआ, बल्कि गुरु-शिष्य परम्परा, सांस्कृतिक मूल्यों तथा सामाजिक जीवन के निरन्तर समन्वय से भी हुआ है। भारतीय संगीत के इतिहास में अनेक ऐसे महान कलाकार हुए हैं जिन्होंने अपनी साधना, प्रतिभा तथा सृजनात्मक दृष्टि से इस परम्परा को नवीन आयाम प्रदान किए। इन विभूतियों में पद्मविभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र का स्थान अत्यंत विशिष्ट है। उन्होंने न केवल बनारस घराने की गायकी को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया, बल्कि खयाल, ठुमरी, दादरा, कजरी, चैती, होरी तथा भजन जैसी विविध गायन विधाओं को समान दक्षता के साथ प्रस्तुत कर स्वयं को एक बहुमुखी कलाकार के रूप में स्थापित किया। उनके संगीत में शास्त्रीय अनुशासन और लोक-संवेदना का अद्‌भुत सामंजस्य दिखाई देता है।

पंडित छन्नूलाल मिश्र का व्यक्तित्व भारतीय संगीत की उस परम्परा का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें कलाकार केवल मंचीय प्रस्तोता नहीं होता, बल्कि संस्कृति का संवाहक, समाज का मार्गदर्शक तथा आध्यात्मिक चेतना का वाहक भी होता है। उनकी गायकी में बनारस की सांस्कृतिक विरासत, गंगा-जमुनी तहज़ीब, भारतीय भक्ति परम्परा तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोकजीवन का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। यही कारण है कि उनके गायन में विद्वत्ता और भावप्रवणता का संतुलित समन्वय देखने को मिलता है।

किसी भी गायक संगीतकार की कलात्मक एवं शैली का विश्लेषण एवं परिशीलन करना एक बड़ा ही दुष्कर कार्य है। इसके लिए कलाकार का विषय ज्ञान, प्रस्तुति, सृजनशीलता आदि का अध्ययन पूर्वाग्रह जैसी विषयो से उठकर वस्तुनिष्ठता के साथ करना अनिवार्य होता है। एक कलाकार की कलात्मकता के मापन हेतु आलोचकों द्वारा विभिन्न मापदंड तैयार किए जाते हैं,परंतु इस संपूर्ण प्रक्रिया का परिणाम प्रमाणिक एवं तर्कसंगत नहीं माना जाता,जब तक विश्लेषण की प्रक्रिया वस्तुनिष्ठ व निष्पक्षता के साथ ना की जाए। कलात्मकता का परिचालन, गहन, चिंतन, मनन एवं तीक्ष्ण दृष्टिकोण द्वारा ही संभव है।

किसी भी संगीत के संपूर्ण रचना कार्य का विधि परिचय तथा जीवन वृत्त आदि के ज्ञान के पश्चात ही मूल्यांकन कार्य किया जा सकता है। [267]

संगीतज्ञ का जीवन दर्शन , उसकी मान्यताएं ,आस्था विभिन्न परिस्थितियों के उतार -चढ़ाव के अंतर किस प्रकार निर्मित होती है, तथा उनकी चेतना किस प्रकार होती है इन सभी आवश्यक तत्वों के ज्ञान के पश्चात ही इस दुष्कर कार्य को प्रेषित किया जा सकता है। इस प्रक्रिया में परिणाम तर्कसंगत होने चाहिए तथा विश्लेषण की प्रक्रिया में वस्तुनिष्ठता एवं निष्पक्षता एक आवश्यक गुण है।[268]

प्रतिभा , कला या हुनर ईश्वर प्रदत्त है। जब कोई प्रतिभावान, बुद्धिमान अथवा विलक्षण गुणों से संपन्न व्यक्ति अपने सतत प्रयास से किसी विशाल जन समूह अथवा गुणवान व्यक्ति को प्रभावित करता है,तो वह कलाकार की संज्ञा से विभूषित होता है। कलाकार का अंतर्मन मात्र अनुकरण नहीं करता ,बल्कि अपने मन मस्तिष्क मे कल्पना शक्ति का असीमित भंडार समाहित कर अपने व्यक्तित्व का सुंदर प्रस्तुतीकरण करता है।[269] सौंदर्य तथा आनंद की सुंदर अभिव्यक्ति ही कला है,

---

[267] आचार्य बृहस्पति संगीत जुलाई 1980

[268] डॉ सुनीता गुप्ता कला कलाकार और संवेदनाएं लेख Vol.7 2019

तथा अभिव्यक्ति के माध्यम से जो कला प्रतिबिंबित होती है, वह अभिव्यक्तिकार कलाकार कहलाता है। हृदय में समाहित सौंदर्यपूर्ण भावनाओं को कलाकार विभिन्न माध्यमों तथा रूपों द्वारा व्यक्त करता है। प्रतीक कलाकार का जीवन कल्याणकारी मूल्य,उच्च आदर्शों एवं उसकी गरिमा का संपूर्ण निचोड़ होता है। हर व्यक्ति तथा उसका व्यक्तित्व एक स्वतंत्र आकृति है, वह आकृति संजीव, प्रभावकारी तथा प्रेरणादाई होती है तथा उसमे प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित करने के क्षमता होती है।[270] यही क्षमता आशा एवं उपलब्धियां के रूप में परिलक्षित होती है तथा लोक कल्याणकारी रूप मे सिद्ध होती है। समाज व्यक्ति के समर्थ वन रूप को अधिक प्रतिष्ठा देता है जब हमारा संपूर्ण व्यक्तित्व शौर्य के आलंबन के साथ शांति , स्नेह, कल्याण दया आदि जैसी छवि आलोकित करता है तभी वह श्रेष्ठ माना जाता है। एक सच्चा कलाकार सदैव एक समान रहता है, यही उसका आदर्श एवं सच्चा रूप होता है। एक कलाकार के मन मे संवेदना होती है। कलाकार के वैयक्तिक गुणों के रूप में संवेदना, अनुभूति, चेतना , सौंदर्य आदि तत्व समाहित होते हैं। कलाकार अपने कृति में अपने संवेगों को अभिव्यक्त करता है उन्हें संवेगों को प्रेषक अनुभव कर स्वयं आनंद की अनुभूति प्राप्त करता है तथा वही आनंद समाज में प्रसारित करता है। मनुष्य को समाज की सदैव आवश्यकता रही है ,और सामाजिकता की आकांक्षा के कारण ही उसमें सौंदर्य प्रियता तथा प्रेम जैसे संवेदना की परिणति हुई है। मनुष्य ने संस्कृतिकता एवं सामाजिकता के कारण सौंदर्य चेतना को इंद्रियों से नियंत्रित धरातल प्रदान किया है।[271]

कलाकार के संपूर्ण व्यक्तित्व में समस्त ज्ञानेंद्रियां --श्रवण, दृष्टि ,प्राण, स्पर्श तथा रचना अधिक सक्रिय रूप में विराजमान होती हैं। एक कलाकार के व्यक्तित्व के

---

[270] आचार्य बृहस्पति संगीत जुलाई 1980

[271] डॉ सुनीता गुप्ता कला कलाकार और संवेदनाएं लेख Vol.7 2019

निर्माण में स्थिति, कला कुशलता, कला कौशल, देश अथवा काल आदि का विशेष महत्व होता है। कला क्षेत्र में स्वयं सिद्ध करने की दक्षता को व्यक्तित्व का विशेष मापदंड माना जाता है, परंतु यह बिल्कुल आवश्यक नहीं है कि जो व्यक्ति आदर्श व्यक्तित्व का धनी हो ,तथा कला क्षेत्र में भी पारंगत हो। व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में कई महत्वपूर्ण तथ्य कारक बनते हैं। उच्च व्यक्तित्व के लिए दक्षता के साथ-साथ उच्च स्तर प्रतिभा, सुंदर चरित्र बल,आत्म बल, सदव्यवहार, उदार चित्त वृत्ति, शालीनता एवं स्नेह, ज्ञान गरिमा तथा सदाचार जैसे विशेष गुण वांछनीय हैं।
एक प्रतिभावान कलाकार अपने परंपरागत कौशल में एक अभिनव सौंदर्य का सृजन करते हैं तब उनकी असामान्य क्षमता एवं नवीन सौंदर्य के दृष्टिकोण की एक अलग कलात्मक सौंदर्य पूर्ण शैली जन्म लेती है। शनैः शनैः वही शैली अन्य परंपरागत शैलियों से पृथक स्वरूप धारण करती है उसे शैली को विशेष सिद्धांतों तथा नियमों द्वारा बद्ध किया जाता है। वह नवीन परिष्कृत शैली परंपरागत शैली से पृथक होकर नवीन स्वरूप धारण कर समाज मे नवाचार करती है।[272]
संगीतात्मक संदर्भ मे एक सफल एवं प्रतिष्ठित कलाकार की गायकी का परिशीलन निम्न तथ्यों के आधार पर किया जा सकता है—

- कलाकार संगीत के तीन विधाओं का ज्ञाता विशेष कर गायन-वादन दोनों में निपुण होना चाहिए।
- लय तथा ताल पर आधिपत्य होना चाहिए स्वर तथा लय मे पारंगत होना कलाकार के लिए परम आवश्यक है।

[272] डॉ सुनीता गुप्ता कला कलाकार और संवेदनाएं लेख Vol.7 2019

- रचनात्मकता किसी भी कलाकार का प्रमाणिक गुण है, श्रेष्ठ गायक होने के साथ-साथ रचनाकार को व्याकरण तथा भाषा का अच्छा ज्ञान होना चाहिए।
- कल्पना शक्ति से संपन्न,सृजनात्मक गुणों से युक्त, रचनात्मकता का अधिक प्रयोग करने वाला हो,नहीं तो उसकी कला अपूर्ण तथा अविकसित दृष्टिगत होगी।
- कलाकार का स्वभाव अभ्यास बहुत हो, संगीत का सच्चा साधक हो, क्योंकि संगीत के क्षेत्र में तपस्या ,साधना तथा अभ्यास परम आवश्यक गुण है, इसके बिना सफल कलाकार बन पाना असंभव है।
- कलाकार कुशाग्र बुद्धि का हो तथा रागों का सूक्ष्म ज्ञान रखता हो शास्त्रीय तथा क्रियात्मक विषय वस्तु मे भी निष्णात हो।
- राग प्रस्तुतीकरण के विभिन्न तकनीकों/ढंगों,भावपूर्ण एवं सौंदर्यात्मक अलंकारों के प्रयोग में परिपक्व तथा दक्ष हो।
- कला मे रस तथा भाव आवश्यक है इन तीनों मे उचित सामंजस्य स्थापित होना चाहिए।[273]
- कला प्रस्तुतीकरण के समय भाव पक्ष एवं कला पक्ष के बीच उचित संतुलन एवं सामंजस्य स्थापित करने में सक्षम हो।
- कलात्मक प्रदर्शन, रस निष्पत्ति एवं भावात्मक पहलू तीनों का उचित संतुलन एवं सामंजस्य स्थापित करने में कलाकार सक्षम हो।
- कलाकार के लिए यह परम आवश्यक है कि उसका संपूर्ण व्यक्तित्व प्रेरणा मूलक हो, तथा वह आत्मविश्वासी हो,श्रोताओं के मानसिक स्तर का उसे ज्ञान हो कि जिन श्रोताओं बीच प्रस्तुतीकरण दिया जा रहा है,

[273] पंडित शारंगदेव संगीत रत्नाकर प्रकीर्णनाध्याय

उनका मनोविज्ञान समझे बिना अपने कला को संचारित नहीं कर सकता।

- कलाकार मंच पर उपस्थित हो तो श्रोताओं को प्रभावित एवं आकर्षित करने की विशेषता एवं विलक्षणता उसके प्रदर्शन में हो।
- किसी भी प्रकार के मुद्रा दोषों से मुक्त होना कलाकार के लिए एक अनिवार्य नियम है।
- कलाकार का संपूर्ण व्यक्तित्व कलानुगामी तथा समय से सामंजस्य स्थापित करने मे योग्य होना चाहिए।

13वीं सदी का प्रसिद्ध शास्त्रीय ग्रंथ "संगीत रत्नाकर" में पंडित शारंगदेव ने गायकों के 22 गुणों की चर्चा की है। उनके अनुसार "गायक के स्वर मधुर एवं प्रिय होने चाहिए" वाणी में आकर्षण तथा बिना किसी अभ्यास के रागों को स्पष्टतया व्यक्त करने वाला, गीत को प्रारंभ तथा समाप्त करने के पूर्व रागांग, भाषांग, क्रियांग तथा उपांग का ज्ञान रखने वाला, प्रबंधऔर ज्ञान का श्रेष्ठ ज्ञानी, विभिन्न अलप्तियों के तत्वों का ज्ञाता, कंठ पर पूर्णता अधिकार रखने वाला तालज्ञ, एकाग्रचित, निरंतर गायन से भी कभी ना थकने वाला,शुद्ध तथा छायालग रागों का सफल प्रयोग कर्ता,समस्त प्रकार के काकुओं का ज्ञान रखने वाला, अनेक स्थानों पर संचरण करने में प्रवीण, समस्त दोषों से मुक्त, गायन क्रिया के अभ्यास हेतु तत्पर, उपर्युक्त लय के कारण रंजक स्वर ,वर्ण ताल से शोभित करने वाला,ग्राह्य शक्ति संपन्न, निर्जीवन ग्रह को स्फूर्ति प्रदान करने वाला, वायु वेग से गायन करने में सक्षम, राग को स्पष्टतया व्यक्त करने वाला तथा श्रेष्ठ गुरु शिष्य परंपरा का संपूर्ण निर्वाहक गायक गीत तत्व के ज्ञाताओं द्वारा उत्तम कहा जाता है।

पंडित छन्नूलाल मिश्र जी की गायन परंपरा-- विशेषता और विलक्षणता विश्लेषण एवं मूल्यांकन

संगीत एक ललित कला है इस दृश्य, श्रव्य कला भी कहा जा सकता है। यह कला अत्यंत प्रभावी होती है, जो मानव मस्तिष्क पर अनेक प्रकार के प्रभाव उत्पन्न करती है। संगीत में अनेक प्रकार के गायन विधाएं हैं- शास्त्रीय, उपशास्त्रीय सुगम संगीत तथा लोक।[274] संगीत अनेक रूपों में वर्गीकृत किया जा सकता है,और इस प्रकार की प्रचलित अनेक विधाओं में कलाकारों ने अपने प्रतिभा दिखाई है।

मंच प्रदर्शक गायक के तौर पर पारंपरिक शास्त्रीय तथा उपशास्त्रीय शैलियों का प्रदर्शन पंडित छन्नूलाल मिश्र विशेष तौर पर करते हैं। पंडित छन्नूलाल मिश्र 'एकल' गायक हैं।पारंपरिक शास्त्रीय गायन के अंतर्गत रागों का परंपरागत तौर पर विस्तार करते हैं तथा गायकी के बीच में पदों का विश्लेषण करते हैं।। विशेष प्रकार की क्लिष्ट तथा चमत्कार पूर्ण लयकारियां करके सम पर आते हैं। इनकी गायकी में बेजोड़ तिहाईयां तथा तबले के साथ लड़ंत-भिड़ंत सुनकर श्रोता गण आश्चर्य से भर जाते हैं, इस प्रकार के अनेक क्रियाएं पंडित जी अपने गायन के मध्य करते हैं। गायकी हर मंच पर नवीनता से भरी होती है, तथा गायन अत्यंत मधुर तथा भावपूर्ण प्रतीत होता है। प्रचलित उपशास्त्रीय गायन के अंतर्गत अनेक कलाकारों के नाम प्रचलित हैं-- पद्मश्री गिरिजा देवी, विदुषी रसूलन बाई , विदुषी बेगम अख्तर, विदुषी शोभा गुर्टू, नैना देवी, विदुषी कौशिकी चक्रवर्ती , श्री अजय चक्रवर्ती, उस्ताद बरकत अली खान, श्री महादेव प्रसाद मिश्रा, लक्ष्मी शंकर, उस्ताद राशिद खान आदि।[275] इन कलाकारों ने उपशास्त्रीय संगीत में उच्च स्थान प्राप्त किया। इसी परंपरा का पालन करते हुए पंडित छन्नूलाल मिश्र जो स्वर्गीय पंडित ठुमरी सम्राट जगदीप मिश्र

[274] श्रीमती विष्णु प्रिया प्रसिद्ध गायिका से प्राप्त जानकारी के अनुसार
[275] श्रीमती विष्णु प्रिया प्रसिद्ध गायिका से प्राप्त जानकारी के अनुसार

के वंशज, जिन्हें यह भावपूर्ण गायन विधा विरासत मे मिली है। पंडित जी की जो जन्मस्थली हरिहरपुर ग्राम है वह 'कलाकारों के गांव' के नाम से प्रसिद्ध है।

यह पंडित जी के कल्पनाशीलता का ही परिणाम है कि ठुमरी,दादरा की गायन शैली को उन्होंने इतना प्रभावशाली बनाया है कि हरिहरपुर तथा बनारस की संगीत परंपरा मे इस शैली को जोड़कर देखा जाता है।

ठुमरी के तीनों अंग पूरबअंग, पंजाब अंग तथा गया अंग में से पूरब अंग की ठुमरी को दो उप भागों में विभाजित किया गया है-- बनारस अंग तथा लखनऊ अंग।

पूरब अंग से ही 'बोल बनाव'और 'बोल बांट' ठुमरीयों का प्रचार प्रसार आरंभ हुआ। बनारस की संगीत परंपरा की एक अनूठी विशेषता रही है- सौंदर्य पूर्ण तथा भावपूर्ण स्वर उच्चारण, मींड की प्रधानता,लयकारी का प्रयोग। उपशास्त्रीय संगीत में महिला कलाकारों की पूर्व काल मे विशेष प्रधानता थी,तथा उपशास्त्रीय तथा लोक संगीत को मंच पर वरीयता प्रदान नहीं की जाती थी, ऐसे में पंडित छन्नूलाल मिश्र जी ने अपनी शास्त्रीय तथा क्रियात्मक सामंजस्य को प्रतिबिंबित करते हुए मंच पर समानांतर समृद्ध धारा प्रवाहित करनी प्रारंभ की।

बनारस में ख्याल गायन तथा तबला वादन की अतिरिक्त नृत्य एवं उपशास्त्रीय संगीत विधाओं का भी विशेष प्रचलन है। काशी के बड़े-बड़े राजा महाराजा वर्ग के लोग एवं साहित्य जगत के गण्यमान्य लोग विशेष, ठुमरी सम्मेलनों का आयोजन करते थे जिनमे गायक कलाकारों को भी पूरे मान सम्मान के साथ आमंत्रित किया जाता था,और इस तथ्य में कोई संदेह नहीं है कि बनारस उप शास्त्रीय संगीत का गढ़ रहा है। ऐसे ही उत्सव मे उनके पूर्वजों में गायन वादन प्रस्तुत किया और उनके व्यक्तित्व पर भी उनके पूर्वजों के संस्कारों का प्रभाव दृष्टिगत होता है।

एक बार उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ साहब बनारस रेडियो स्टेशन 'आकाशवाणी' मे आए। उस पंडित जी का गायन चल रहा था, उनके साथ उनके प्रसिद्ध तबला वादक 'सुपुत्र पंडित राम कुमार मिश्र' संगत कर रहे थे, खाँ साहब पंडित जी का

गायन सुनने लगे,थोड़ी देर सुनकर उन्होंने पंडित जी से कहा बहुत मधुर गाते हो, मैं तुम दोनों पिता और पुत्र को अपने घर बुलाकर सुनूंगा। सुनने के बाद बहुत प्रसन्न होकर बोले "तुम्हारे पास शुद्ध ख्याल है, जो पहले हमारे उस्ताद लोग गाते थे, इस प्रकार से राग हेम ,खेम की स्थाई अंतरा का भराव आजकल सुनने को नहीं मिलता है,बड़े गुणी[276] लोगों से सीखा है तुमने, बहुत खुश रहो" यह कहकर ₹250 आशीर्वाद स्वरुप पंडित जी के हाथों मे रख दिए कि किस्मत की बात है गुणी लोगों का बहुत आशीर्वाद और प्यार मिला।

इस प्रकार पंडित छन्नूलाल मिश्र एकल गायक के रूप में बहुत ही प्रसिद्ध तथा क्रियासिद्ध नादयोगी हैं।[277] वह गायन मे ख्याल गायन के अतिरिक्त शास्त्रीय गायन परंपरा ठुमरी, दादरा, चैती, कजरी आदि के उन्नयन तथा प्रचारक के रूप मे जाने जाते हैं। पंडित जी कहते हैं कि मेरे अंदर हमेशा संगीत को लेकर जिज्ञासा रही , मै गुणीजनों के अतिरिक्त गांव के बुजुर्गों के पास बैठकर भी हर प्रकार के पारंपरिक संगीत से संबंधित प्रश्न पूछा करता था,और हर कोई मुझे अपने अनुसार ज्ञान देता था उसके बाद मैं उसके सार को हृदय में धारण कर अपने अनुसार गीत को डालकर प्रस्तुत किया करता था।

"लिखा हुआ गाना पेटी में बंद रहता है जबकि सीखा हुआ आत्मसात किया हुआ गाना मन मस्तिष्क में सदा के लिए अवशोषित हो जाता है, इसलिए हमेशा व्यवहारिक रूप से प्रत्यक्ष ज्ञान ही प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए वही सदैव काम आता है।

---

[276] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित सूचना
[277]पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित सूचना

कहते हैं "मेरा मानना है जिन्हें संगीत से प्रेम हो उन्हें समय गंवाने के स्थान पर हर क्षण का भरपूर सदुपयोग करना चाहिए, किसी भी विषय का चिंतन और मनन आत्मसात करने में बहुत सहयोगी बनता है, संगीत के प्रति मेरे जुनून ने ही मुझे 'सतरंगी' बना दिया अपने गुरु से ही मैंने जाना कि संगीत सागर की तरह विशाल है, और शास्त्रीय संगीत उसकी एक बूंद है।"

शुरुआत मैंने शास्त्रीय संगीत से ही की थी किंतु कुछ समय पश्चात मुझे अनुभव हुआ कि शास्त्रीय संगीत में रागों की अधिकता है,तथा यह इतना अधिक वृहत है कि सामान्य श्रोता शास्त्रीय संगीत की सीमाओं से परे हैं, उनकी समझ में आना यह थोड़ा कठिन है,जिससे मुझे निश्चित श्रोतागण तक सीमित रहना पड़ेगा, इसलिए मैंने शास्त्रीय संगीत की अन्य विधाओं ठुमरी, दादरा, होरी, चैती ,बिरहा भजन, लोक संगीत आदि का[278] भी प्रयोग किया, जिसमें ठुमरी मेरी प्राण प्रिय बन गई। ठुमरी एक ऐसी गायन विधा है, जो अपनी संवेदनशीलता, भावात्मकता एवं लचीलेपन के कारण सामान्य जनमानस के हृदय में तुरंत ही बस जाती है,और कलाकारों को श्रोताओं की रुचि के अनुसार संगीत में बेहतर परिवर्तन के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। श्रोताओं की रुचि के अनुसार मैंने भाषा, भाव, स्वर ताल आदि तकनीक के साथ अपने संगीत को अभिव्यक्त किया है, और मेरे गुरु ने मुझे यह सिखाया है कि "संगीत अगर समझ ना आए तो कलाकार का गाना व्यर्थ है, इसलिए मैं संगीत समझकर और समझाकर गाता हूं।"

मेरे पिता ने मुझे गायन के अलावा वादन की भी शिक्षा प्रदान की ताल पक्ष पर भी मैंने विशेष अधिकार रखा है," मुंबई के रंग भवन में जाकिर हुसैन साहब के साथ मेरा गाना हुआ मैंने 21 मात्राओं में बंदिश सुनाया और जाकिर हुसैन साहब ने कहा "बहुत ही मजा आया बाद में कार्यक्रम समाप्ति के पश्चात जाकिर साहब ने कहा

[278] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित सूचना

इन सब तालों में कोई कलाकार नहीं गाता है आजकल। आप सचमुच बहुत कस्बी गायक है। "बांसुरी वादक पंडित राजेंद्र प्रसन्ना जी के साथ मेरी जुगलबंदी बहुत प्रसिद्ध हुई एक कलाकार का दूसरे कलाकार के साथ कर्तव्य अच्छा हो तभी मंच पर कुछ अच्छा प्रदर्शित हो पाता है,मैंने कुछ व्यक्त किया, तथा सामने वाले कलाकार ने उसे अपनी भाषा में व्यक्त किया, यही एक सहज इंतजाम है, यह कोई निश्चित नहीं है मैंने सपाट तान लिया और वह अपने अंदाज में कुछ सुंदर प्रस्तुती दे कर दे इस तरह से एक लय मे होकर नए-नए प्रयोग होते जाते हैं तथा एक फूलों का गुलदस्ता तैयार होता जाता है, और वातावरण में उसकी खुशबू फैलती जाती है। पंडित जी के "देवी फाउंडेशन दिल्ली द्वारा प्रसारित एल्बम "टेसू के फूल में" उनकी भावनात्मक गायकी तथा उनकी आत्मा में बसा हुआ संगीत स्वरों के माध्यम से उद्धृत होता है।"

पंडित छन्नूलाल मिश्र की कला: प्रदर्शन, परिशीलन एवं मूल्यांकन

प्रत्येक घराना एवं घराने से संबंधित कलाकार अपने गायन में रचना, सृजन परंपरा एवं चिंतन आदि का सुंदर समन्वय स्थापित करके एक स्वयं की मौलिक शैली विकसित करते हैं। किसी भी नवीन शैली की उत्पत्ति एवं विकास किसी के नकल से संभव नहीं है,अपितु उसके लिए स्वयं का चिंतन, मनन एवं मौलिक तत्व तथा तकनीक के साथ समर्पण होना आवश्यक है। शैलीगत विशेषताएं कलाकार को एक भिन्न पहचान देते हुए उसकी कलात्मक, सृजनात्मक कृति एवं अस्तित्व से संपूर्ण कला जगत का परिचय करवाती है। शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय गायकी के संरक्षण संवर्धन एवं विकास रूपी यज्ञ में अनेक महान कलाकारों ने अपने समर्पण

रूपी आहुतियां प्रदान कर सतत उन्नयन की दिशा में विशेष योगदान देकर सांगीतिक जगत में स्वयं को प्रतिष्ठित किया है।[279]

पंडित कामेश्वर नाथ मिश्र घरानों एवं उनके शैलीगत विशेषताओं के बारे में लिखते हैं कि[280] "संगीत कला के दो प्रमुख पक्ष स्वर तथा लय हैं, इन्हीं दो प्रमुख आधार स्तंभों पर ही संगीत की पूरी इमारत निर्मित हुई है।सूक्ष्म दृष्टिपात करने पर यह तथ्य विदित होता है कि "स्वर लय इन्हीं दो तथ्यों बीच भिन्न-भिन्न शैली से एक विभाजन रेखा खींचकर हर घराने ने अपनी स्वतंत्र शैली एवं मौलिकता पूर्ण अस्तित्व को बनाए रखा है।किसी घराने ने स्वर को प्राथमिकता दी, लय को गौण कर दिया, किसी घराने ने स्वर लय दोनों को समान रूप से लिया, किसी घराने ने लय की प्रधानता के साथ-साथ स्वर् को विशिष्टता प्रदान की।

डॉ सुशील कुमार चौबे के अनुसार कोई "भी घराना क्यों ना हो वह अपनी शैली से जाना जाता है,शैली हम किसे कहते हैं, गायन की शैली को हम गायकी के नाम से जानते हैं,इसी प्रकार वादन की शैली को हम बाज कहकर पुकारते हैं, आमतौर पर शब्द घरानेदार और व्यवसायिक संगीतज्ञ, क्योंकि ये नियम संगीतज्ञों पर लागू होते हैं अथवा उन पर जिनमे व्यावसायिक योग्यता होती है अथवा जो परंपरागत संगीत के विशेषज्ञ होते हैं"[281]

पंडित छन्नूलाल मिश्रा बनारस घराने के वर्षों से चली आ रही है गौरवशाली परंपरा के प्रमुख हस्ताक्षर हैं "शास्त्रीय उपशास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में आपने बनारस घराने की गायन शैली को विश्व स्तर तक स्थापित करके काशी ही नहीं बल्कि पूरे देश का मान सम्मान बढ़ाया है। अपने सृजनात्मक अथवा नवीन आविष्कार की आड़ में

---

[279] श्री अभिषेक मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

[280] पंडित कामेश्वर नाथ मिश्र, काशी की संगीत परंपरा एवं संगीत जगत को काशी का योगदान पृष्ठ संख्या 13 14

[281] डॉ सुशील कुमार चौबे संगीत के घरानों की चर्चा पृष्ठ संख्या 21

कभी भी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया तथा बनारस एवं हरिहरपुर जैसी उत्कृष्ट गायन शैली को अपने कंठ संगीत में सभी अंग एवं उपांगों के साथ प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण करके स्वयं को मूर्धन्य तथा बड़े कलाकारों की श्रेणी में स्थापित किया है।आपने पारंपरिक संगीत तथा शास्त्रीय नियमों के सहयोग से अपनी एक विशिष्ट शैली नवनिर्मित की है इसमें आपका संपूर्ण सांगीतिक व्यक्तित्व प्रतिबिंब होता है अपनी कला का मंच प्रदर्शन अपने गुरू तथा पिता की देखरेख में बाल्यावस्था से ही आरंभ कर दिया था। आपको सदैव ज्ञानी व प्रतिष्ठित संगीतजों का प्रोत्साहन तथा आशीर्वचन प्राप्त होता रहा है इसी आशीर्वचनों ने आपकी गायकी तथा आपके कलात्मक व्यक्तित्व को चरमोत्कर्ष प्रदान किया है।

पंडित छन्नूलाल मिश्र जी की कला का परिशीलन निम्न तथ्यों के आधार पर किया जा रहा है—

स्वर विस्तार पर अधिकार

संगीत में लगने वाले प्रत्येक स्वर का एक अपना अस्तित्व होता है,और स्वरों के व्यवस्थित योजना क्रम को स्वर विस्तार की संज्ञा प्रदान की गई है।" रागों में प्रयुक्त होने वाले स्वरों को शास्त्रीय नियमों के आधार पर तीनों सप्तकों में पूर्ण रूप से विस्तारित किया जाता है। रागों में प्रयुक्त भाव तथा स्वरों को गायक अपने कल्पना शक्ति, सृजनात्मकता तथा कलात्मकता द्वारा साकार रूप प्रदान करता है। पंडित छन्नूलाल मिश्र ने स्वरों का सही लगाव तथा भावपूर्ण प्रदर्शन को विशेष स्थान दिया है,उनके अनुसार मात्र राग स्वरूप ज्ञात होना अनिवार्य नहीं है, राग के स्वरों का सही प्रकार से लगाव तथा भाव की उत्कृष्ट प्रदर्शन, एवं रस की निष्पत्ति करना एक कलाकार की गायकी का वास्तविक लक्ष्य होता है।" राग के स्वरूप के अनुसार आप अपने गायकी मे अपेक्षानुरूप भाव स्पष्टीकरण, तथा रस को व्यक्त करते हैं जिससे उस राग का एक स्वयं का वातावरण निर्मित हो जाता है, आलाप द्वारा

अलग-अलग रसों की उत्पत्ति तथा राग को उसके मूल स्वरूप के साथ स्पष्ट करना एवं उस राग की बंदिश में भी उससे संबंधित रस को व्यक्त करना तथा उसकी संपूर्ण व्याख्यात्मक प्रदर्शन आपकी गायकी का विशेष गुण है। जैसे - शंकरा राग का गायन प्रस्तुत करते हुए शिव शंकर के स्वरूप को व्याख्यात्मक रूप से प्रस्तुतीकरण तथा स्वरों के द्वारा मींड, मुर्की, गमक के द्वारा सौंदर्य तथा भावपूर्ण प्रदर्शन आपकी प्रस्तुतियों मे दृष्टिगत होता है।[282] पंडित छन्नूलाल मिश्र जी की गायकी में एक और विशेषता है कि रागों की शुद्धता पर विशेष तौर पर ध्यान देते हैं, तथा स्वर विस्तार के मध्य रागों की मौलिकता का ह्रास ना हो, ऐसा हर संभव प्रयास करते हैं। उनकी गायकी में रागों का पारंपरिक तत्व तथा रस एवं भाव पक्ष भी बना रहता है,उनके द्वारा किए गए स्वर विस्तार,आलाप तथा प्रयोग अन्य कलाकारों से भिन्न है। उनकी आलापचारी मे रागों का अल्पत्व,बहुत्व,आविर्भाव तिरोभाव जैसे क्रियात्मक प्रयोगों के बीच रागों की शुद्धता विशेष तौर पर दृष्टिगत होती है। आपकी गायकी में स्वर लगाव तथा स्वर पुकार विशेष रूप से शोभनीय है, जिसके कारण उनके गायन मनभावन तथा हृदय स्पर्शी है।

पंडित जी मानते हैं कि- आजकल जो संगीत गया तथा बजाया जाता है उसमें अभिजात संगीत का प्रभाव अधिक दृष्टिगोचर होता है, आधुनिक कुछ संगीतज्ञ स्वर तथा लेकर नियमों का पालन नहीं करते तथा रागों की शुद्धता की ओर ना देखते हुए तैयारी की तरफ अधिक ध्यान देते हैं,कुछ गायको के शब्द इतने अधिक अस्पष्ट हैं कि, पता नहीं चलता की बंदिश के बोल क्या है? स्वर तथा शब्दों के बीच का तालमेल नहीं होता है, ऐसा संगीत मधुर ना होकर कर्कश लगता है, यही है आधुनिक काल का अभिजात संगीत, जबकि पंडित जी के अनुसार शास्त्रीय संगीत में क्रमबद्ध तरीके से राग प्रस्तुतीकरण होना चाहिए। पंडित छन्नूलाल मिश्र अपने गायकी मे

[282] डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार पर आधारित

शास्त्रीय नियमों का भली भांति पालन करते हैं, तभी उनकी गायकी श्रोताओं के हृदय मे बसती है।

बंदिशों का सुसंगठित प्रस्तुतीकरण

भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा में बंदिश केवल स्वरों का संयोजन नहीं, बल्कि राग, ताल, भाव, साहित्य तथा गायकी-परंपरा का समन्वित स्वरूप है। किसी भी राग की पहचान, उसके स्वरूप की स्थापना तथा भावाभिव्यक्ति का सर्वाधिक प्रभावी माध्यम बंदिश ही मानी जाती है। बनारस घराने की गायकी में बंदिशों का विशेष महत्व है, क्योंकि यहाँ बंदिशों का निर्माण केवल सांगीतिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से भी अत्यंत समृद्ध रूप में हुआ है। बनारस की संगीत परंपरा में ध्रुपद, धमार, खयाल, ठुमरी, दादरा, कजरी, चैती, होरी तथा भजन आदि सभी गायन-विधाओं की बंदिशों का सुव्यवस्थित एवं समृद्ध भंडार उपलब्ध होता है।

बनारस शैली की बंदिशों की प्रमुख विशेषता उनकी भावप्रधानता, शब्दों की स्पष्टता, लय की सुदृढ़ता तथा राग की शुद्ध प्रस्तुति है। ध्रुपद एवं धमार की बंदिशों में जहाँ गंभीरता, ओज और आध्यात्मिक भावों की प्रधानता दिखाई देती है, वहीं खयाल की बंदिशों में राग-विस्तार, आलाप, बोल-आलाप तथा तानों के लिए पर्याप्त अवसर उपलब्ध रहता है। बनारस घराने के कलाकार बंदिश के प्रत्येक शब्द के अर्थ और भाव को स्वर-सौंदर्य के साथ प्रस्तुत करते हैं, जिससे संगीत की प्रभावशीलता कई गुना बढ़ जाती है।

बनारस की परंपरा अपनी विशिष्ट "बोल-बनाव" शैली के लिए विश्वविख्यात है। इस शैली की बंदिशों में श्रृंगार, भक्ति, विरह तथा लोकजीवन के विविध भाव अत्यंत

स्वाभाविक रूप से व्यक्त होते हैं। दादरा, कजरी, चैती और होरी जैसी उपशास्त्रीय बंदिशों में पूर्वांचल की लोक-संस्कृति, ऋतु-वर्णन, सामाजिक जीवन तथा धार्मिक आस्था का सुंदर समन्वय मिलता है। यही कारण है कि बनारस शैली की बंदिशें केवल संगीत का माध्यम नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक विरासत की सजीव अभिव्यक्ति भी हैं।

बनारस घराने के महान आचार्यों एवं कलाकारों ने परंपरागत बंदिशों का संरक्षण करते हुए नई बंदिशों की भी रचना की। इन बंदिशों में राग के व्याकरण का पूर्ण पालन किया गया है, साथ ही प्रस्तुति को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए साहित्यिक सौंदर्य एवं भावात्मक गहराई का विशेष ध्यान रखा गया है। पंडित बड़े रामदास मिश्र, पंडित महादेव प्रसाद मिश्र, पंडित राजन-साजन मिश्र तथा पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जैसे विद्वान कलाकारों ने बनारस शैली की बंदिशों को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

बंदिशों प्रस्तुतीकरण की कला हर कलाकार की एक दूसरे से अलग होती है, साथ ही रागों के अनुरूप बंदिश के साहित्य का चुनाव भी हर संगीतज्ञ का अपनी परंपरा ज्ञान तथा घराने के अनुरुप होता है।[283] राग के अनुरूप बंदिश का स्वरूप होना चाहिए, तभी रस निष्पत्ति संभव है ,अर्थात राग की प्रकृति के अनुरूप के बंदिश का साहित्य होना चाहिए, तभी राग अपनी परिभाषा "जन मन रंजन"के अनुरूप होगा। पंडित छन्नूलाल मिश्र राग तथा रागों का स्वरूप, शास्त्रीय पारंपरिक नियमावली तथा बंदिश की साहित्य के प्रति अत्यंत सजग कलाकार हैं।पंडित जी वही बंदिश तथा साहित्य का चुनाव करते हैं जिसमें रागों का भाव तथा प्रभाव पूर्ण रूपेण न्याय संगत हो। बंदिश का प्रस्तुतीकरण पूर्ण रूप से उसी अंदाज मे करते हैं, जिस घराने

[283]पंडित विजय शंकर मिश्र से प्राप्त जानकारी के अनुसार

से वह बंदिश संबंधित है। ख्याल गायन हो अथवा उप शास्त्रीय संगीत आप हर परंपरा को बहुत ही माधुर्यपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करते हैं। आपके अनुसार संगीत मधुर तथा श्रोता के समझ में आने के लायक होना चाहिए। आप शास्त्रीय संगीत में क्रमबद्ध तरीके से राग प्रस्तुतीकरण करते हैं,लय बढ़ाकर बोल बांट, स्थाई भंजनी, रूपक भंजनी, सरगम एवं बोल तान के पश्चात आकार मे तानों को गाकर, तिहाई लेकर समाप्त करते हैं। छोटा ख्याल में बंदिश के बाद लयकारी, छोटी-छोटी ताने,फिर बड़े स्तर की तान,सरगम,बोल तान तथा तिहाई के पश्चात ही समाप्त करते हैं। । आपके अनुसार संगीत में शास्त्र सम्मत लय का भी प्रयोग सुंदरता के साथ किया जाना चाहिए, इन्ही पारंपरिक धरोहरों के संरक्षण एवं संवर्धन मे आप संगीत जगत मे अपनी विशेष भूमिका निभा रहे हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक ही राग में कई -कई रस विद्यमान है, प्रत्येक स्वर की अपनी पहचान है, और उन स्वरों को आप अपने गुणों द्वारा जीवंत रूप प्रदान करके रस का निर्धारण करते हैं। सारी परंपराओं का पालन करते हैं,तथा रस और सौंदर्य का संतुलित सामंजस्य एवं समन्वय आपकी बंदिशें में दृष्टिगत होता है[284]

मंद्र, मध्य एवं तार सप्तक मे सहज एवं सरल भाव से गमन

एक कलाकार के लिए सप्तक से सप्तक तक की यात्रा सरल नहीं होती, यह केवल उचित मार्गदर्शन,सही अभ्यास तथा पूर्ण ज्ञान के माध्यम से ही संभव होता है। [285]अधिकतर गायक एक या दो सप्तकों तक ही गाते हैं और उसी के अनुसार अपनी तैयारी तथा बंदिशें तैयार करते हैं। सप्तक से सप्तक तक जाना कोई सरल कार्य नहीं है, अपितु सप्तक में प्रयोग होने वाले प्रत्येक स्वर को एक समान प्रयोग

[284]पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्रजी के साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी
[285] प्रसिद्ध गायिका एवं शिष्या कुमुद दीवान द्वारा प्रदत्त जानकारी

करना तथा श्रुति एवं उसके साथ भावों में भी तारतम्य बनाना विशेष गुण के अंतर्गत आता है। यदि किसी एक स्वर को सही प्रकार से ना लगाया जाए तो राग उसका स्वरूप कभी स्पष्ट नहीं होता है एवं उस गायन से रस की निष्पत्ति भी संभव नहीं है।[286] तीनों सप्तकों में समान रूप से गायन करना पंडित जी की गायन शैली के विशेष गुणों में से एक है, आप तार सप्तक से मंद्र सप्तक तथा मंद्र सप्तक से तार सप्तक तक किसी भी स्वर तक गायन करने में पूर्ण रूपेण सक्षम है एवं सभी स्वरों का सही लगाव तथा उसके चलन से श्रोताओं को अपने गायन की पूर्ण रूपेण जानकारी प्रदान करते हैं। आपका दृष्टिकोण है कि "संगीत स्वयं के अनुभव, गुरुओं द्वारा प्रदत्त शिक्षा एवं विभिन्न विद्वानों के मार्गदर्शन के कारण संभव होता है। आप तीनों सप्तकों में सहज रूप से विचरण करते हैं तथा आपका रियाज का एक विशेष सिद्धांत है, जिससे आप तीनों सप्तकों में सहज रूप से गा सकें। पंडित जी बताते हैं कि "हमें गायन की अवधि में तीनों ही सप्तकों में सहज व सरल भाव से जाना चाहिए" अगर हम सिर्फ दो सप्तक ही जाते हैं ,और एक सप्तक अगर नहीं गए तो यह सांगीतिक अभ्यासहीनता प्रतीत होगी, नियमानुसार हमारा गायन तीनों सप्तकों मे समान रूप से होना चाहिए। कहते हैं कि "हम जितना मंद्र का रियाज़ करेंगे उतना ही मध्य का प्रयोग करेंगे तथा उसके उपरांत जो समय मिले तो तार सप्तक के स्वरों पर प्रयास करना चाहिएह यही अभ्यास का सही तरीका है"।

कंठ साधना हेतु गूढ़ सूत्र

[286] डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार पर आधारित

किसी भी कलाकार को सांगीतिक जगत में पहचान बनाने के लिए तथा अपनी कला के सौंदर्यतम प्रस्तुतीकरण के लिए कंठ साधना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।
जिस प्रकार एक वादक अपने वादे पर विभिन्न प्रकार की क्रियाएं करता है,ठीक उसी प्रकार एक गायक का कंठ भी 'वाद्य स्वरूप' ही है। कंठ रूपी वाद्य में गायक अनेक प्रकार की क्रियाएं करता है और क्रियाओं के माध्यम से श्रोताओं के समक्ष प्रभाव उत्पन्न करता है। स्वर लगाव अथवा स्वर विस्तार की क्रिया के मध्य रागों के न्यास का ध्यान रखना, वादी संवादी स्वरों पर केंद्रित रहना, आवाज को किस प्रकार खोलना है, कहां नर्म रखना है, कितना झटका देना है? और किस प्रकार मींड ,मुर्की, गमक आदि क्रियाओं के लिए गले में विशेष तैयारी होनी चाहिए। पंडित जी अपनी गायकी मे इस प्रकार की सभी क्रियाओं का प्रयोग करते हैं।
पंडित जी कहते हैं कि "जैसे गायन के अभ्यास के समय स्वस्थान के नियम का पालन, मेरू खंड एवं खंड मेरू तथा 21 मूर्छनाओं का ज्ञान तथा गाते समय शब्दों का सही ढंग से उच्चारण, आवाज को कितना खोलना है कहां बल देना है, कहां पर गोलाई दिखानी है, इसका ज्ञान हमने अपने गुरु चरण में बैठ कर लिया है"। संगीत के ऐसे अनेक गुण आपकी गायकी को सहज व सुंदरता से परिपूर्ण करते हैं, कंठ के द्वारा सभी क्रियाओं को आप बहुत ही सुंदरता से निभाते हैं। संगीत के सांगीतिक तत्व आलाप,तान, खटका ,मुर्की,मूर्छना आदि तत्वों पर आपक आधिपत्य है। यह आधिपत्य अपने अपने पिता,परिवार तथा गुरुओं से आशीर्वाद रूप मे प्राप्त किया है।[287] सप्तक के सारे स्वरों का एक-एक स्वर लगाव तथा कंठ साधना द्वारा गले का संस्कारित रूप में पूर्ण प्रयोग, आपकी गायकी की विशेषता है, गमक के साथ कठिन व उचित तानों का प्रयोग एवं रागों की विशेषता आपके गले के माधुर्य तथा आपकी गायन शैली को साकार करती है

[287] डॉ कुमुद दीवान द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

आलाप तान तथा सरगम का सुंदर समन्वय

सांगीतिक तत्व मे आलाप एक भाव प्रधान क्रिया है। भाव का संबंध सौंदर्य से है तथा संगीत एक ऐसा सौंदर्य है जो प्राणी मात्र एवं प्रत्येक प्रकार के जड़ और चेतन को तत्काल ही वश मे कर लेता है तथा स्वार्थ का परित्याग कर परमार्थ की ओर आकर्षित करता है।

भारतीय रस शास्त्र एक संपूर्ण विज्ञान है, जो अपने शांत, श्रृंगार, करूण, वीर, हास्य, अद्भुत, रौद्र ,विभक्त तथा भयानक आदि नव रसों तथा इसके स्थाई और संचारी भावों तथा विभावों द्वारा प्रत्येक प्रकार का आनंदात्मक वातावरण उत्पन्न तथा व्यक्त करने में सक्षम है। संगीत स्वाभाविक रूप से सुंदर तथा रसोद्दीपक है, इसे अधिक सुंदर रूप प्रदान करने के लिए इसमे आलाप,सरगम तथा तान जैसी रचना इसकी सुंदरता मे चार चांद लगा देती है, इन माध्यमों से राग स्वयं स्पष्ट तथा विकसित होता है, एवं अपनी पहचान स्वयं स्पष्ट कर देता है।

आपकी गायकी मे आलाप का विशेष स्थान है आप तीनों सप्तकों मे सरलता व सहजता के साथ आलाप करते हुए एक हृदयस्पर्शी तथा अलौकिक वातावरण निर्मित कर देते हैं।

तानों मे एक विशेष प्रकार की तैयारी तथा श्रेष्ठ प्रदर्शन दृष्टिगत होता है, एवं आपकी तानों में पुनरावृति कभी दृष्टिगत नहीं होती तथा लयकारियां के विभिन्न प्रकार देखने को मिलते हैं तथा यह लयकारी किसी भी लय तथा सप्तक मे प्राप्त होती है। 'लयकारियों' अथवा तिहाईयों द्वारा सुंदरता के साथ सम पर आना आपकी गायकी की मुख्य विशेषता है। पंडित जी कहते हैं" जब मैं काम करता हूं तो तैयारी दिखाने में ज्यादा उत्तेजक नहीं होता, तथा जोश और होश के साथ गाता हूं, क्योंकि प्रस्तुतीकरण में तैयारी दिखाने की जल्दबाजी में कभी भी होश नहीं खोना चाहिए" क्योंकि शास्त्रीय संगीत के नाम पर कुछ भी प्रस्तुत करना श्रोताओं के साथ धोखा

करने जैसा होता है, "क्योंकि श्रोता अबोध होता है, उसे शास्त्र सम्मत संगीत से परिचित करवाना हर कलाकार का धर्म है।"[288]

ऐसी जल्दबाजी संगीत जगत के लिए हानिकारक होती है, कलाकार को प्रस्तुतीकरण में तानों की स्पष्टता तथा अनुशासन दोनो का ही विशेष ध्यान रखना चाहिए।पंडित जी जब कठिन तथा क्लिष्ट तानें गाते हैं, तो भी राग का रस भंग नहीं होता माधुर्य तथा चैनदारी कभी टूटती नहीं है, वह आप आत्मक तथा अवरोहात्मक तान का भी प्रयोग करते हैं,जो कठिन माना जाता है, तानों में जटिलता एवं कठिनाई का समावेश होता है, किंतु उन्होंने अपनी साधना से कठिन चीजों को सरल बनाया है, ताल की हर मात्र से तानों को उठने का एक क्रम बनाया है। उनकी तानों में एक-एक श्रुति तथा स्वर स्पष्टतया दिखता है ,वह कहते हैं "एक-एक स्वर हमारे पिताजी ने हमें तीन-तीन घंटे का अभ्यास करवाया है,आज उन्हीं के आशीर्वाद से आज यह स्पष्ट दिखाई देती है।

लय एवं ताल पर विशेष प्रभुत्व

ताल संगीत का आधार तत्व है,इसके बिना यह निष्प्राण है। इस तत्व के बिना सांगीतिक विधा मे पूर्णता प्राप्त नहीं हो सकती। ताल गायन वादन तथा नृत्य का आधार तत्व है, इसी के द्वारा काल का मापन जैसी क्रिया प्रस्तुति के मध्य प्रसारित होती है। प्रत्येक गायन अथवा वादन के स्वरलिपि अथवा गत के निर्माण के समय एक ताल तथा निश्चित स्थान प्रदान किया जाता है,तथा उसी के आधार पर उस रचना को गायक अथवा वादक प्रस्तुत करता है तथा एक समान लय अथवा गति निर्धारित करता है,जिससे बंदिश का निश्चित स्वरूप स्पष्ट हो सके।

[288] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

जब कलाकार इन तथ्यों को सुनिश्चितता प्रदान करता है, तभी वह विभिन्न लयकारियों के साथ प्रस्तुतीकरण में सक्षम होता है।[289] पंडित छन्नूलाल मिश्र तबला वादन भी बहुत अच्छी तरह करते हैं, उन्हें तबले तथा शास्त्र तथा क्रियात्मक पक्ष का भी अच्छा ज्ञान है। आपकी पत्नी मनोरमा मिश्रा स्वयं अच्छी तबला वादिका थी, संगीत जगत के प्रख्यात तबला वादक "ना धिन धिन ना के जादूगर पंडित अनोखे लाल मिश्र" आपके ससुर तथा आपकी पत्नी के पिता थे, इसके अलावा आपके पिता स्वयं विद्वान तबला वादक थे जिनके संस्कार आप में प्रखर रूप से दिखाई देते हैं। आपने पिता मार्गदर्शन में विलंबित एकताल,तिलवाड़ा,झूमरा झपताल,आड़ा चारताल आदि में गाने और बजाने दोनों का अभ्यास किया था। आपको लय और ताल के साथ अनेक क्लिष्ट एवं चमत्कारपूर्ण की सुंदर क्रीड़ा का अभ्यास है। मंच प्रस्तुति के समय भी आप बेजोड़ तिहाईयां लयकारियां जैसी क्रिया को प्रस्तुत करते हैं, जो, अत्यंत चमत्कारिक प्रतीत होती हैं। अलग-अलग विशिष्ट लयकारियों तथा तिहाईयों द्वारा सम को प्रस्तुत करना,तानों को लयकारी के साथ उपज करना,विशिष्ठाओं के साथ तिहाईयों को प्रदर्शित करना आपकी कलात्मक मे गायकी तथा ताल के प्रभुत्व को दर्शाते हैं।

भारतीय शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय परंपरा के संवाहक

परंपरा एक दीर्घकालिक क्रिया है जो प्राचीन काल से चली आ रही है , इस व्यवस्था को धरोहर के रूप में संजोना यह कार्य प्रतिभा संपन्न लोग ही कर पाते हैं। पंडित छन्नूलाल मिश्र ने अपनी "परंपरा को संजोना" अपने जीवन का मूल मंत्र माना है और इन मूल मंत्रों को छोड़कर उन्हें कोई और कार्य करना पसंद नहीं है। पंडित जी कहते हैं कि अगर कोई शास्त्रीय राग हमने 2 घंटे गाया और अंत में ठुमरी,

[289] डॉ कुमुद दीवान द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

भजन, लोकगीत आदि जैसी प्रस्तुति भी दी तो लोग कहते हैं कि शास्त्रीय संगीत में लोक संगीत का क्या काम?[290] इन शब्दों को सुनकर मुझे तकलीफ होती है कि बनारस का संगीत चारों पट का संगीत है, लेकिन शास्त्रीयता का अपना अलग स्थान है। जहां हर गायन शैली का महत्व है चाहे वह शास्त्रीय संगीत हो अथवा ठुमरी। शास्त्रीय संगीत जहां परंपरा वादी है वही उपशास्त्रीय तथा लोक संगीत भी हमारी प्राचीन धरोहर है, हमने शास्त्रीय संगीत के नियम से ही अपनी संगीत यात्रा जारी रखी। बनारस शास्त्रीय संगीत का पुजारी है तो, ठुमरी,टप्पा, तराना जैसी चीजों की भक्ति भी बनारस में ही दृष्टिगत होती है। हम बनारस के हैं तो बनारस की परंपरा ही है "चारों पट की गायकी" और गुरु का अनुयाई तथा परंपरावादी होने के कारण यहां की परंपरा का निर्वहन करना मेरा परम कर्तव्य है।

उनके अनुसार बनारस के संगीतज्ञ बुजुर्गों तथा विद्वानों ने इस क्षेत्र में आशातीत कार्य किए हैं ,उनका अध्ययन तो आवश्यक है ही और परंपरा के संवाहक होने के नाते यहां की साहित्य तथा संगीत की समृद्धि तथा रचित बंदिशों का गान करना एक कर्तव्य बन जाता है,ताकि उस धरोहर से नवीन युग का साक्षात्कार हो सके। आज वर्तमान परिवेश में संगीत के बहुत सारे रूप दृष्टिगत हैं- पॉप म्यूजिक, फ्यूजन म्यूजिक तथा अनेक प्रकार के बदलते रूप वाला संगीत आज सुनाई पड़ता है, परंतु शास्त्रीय संगीत नियमों से बंधा संगीत है,और यह परंपरावादी संगीत अमूल्य धरोहर है,जिसे संभालना आवश्यक है क्योंकि यही धरोहर हमारी मूल संस्कृति हैं, तथा विदेश की धरती पर भी इसी संगीत के कारण हमें सम्मान मिलता है। "विदेश में भारतीय कला तथा संस्कृति को बहुत आदर तथा सम्मान से देखा जाता है" हमारे देश के नवीन पीढ़ी आज पश्चात संस्कृति की अनुयाई होने लगी है ,इसके कारण देश में कला की कद्र कम होती जा रही है,कोई भी संस्कृति आधारित चैनल नहीं

[290] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

है,जो संस्कृति का पूर्ण रूपेण प्रचार प्रसार कर सके, "हालांकि दूरदर्शन ने संगीत आधारित कुछ कार्यक्रम रखे जिससे संगीत जगत में थोड़ा बहुत योगदान इसका जरूर माना जाता है। उनका मानना है " शास्त्रीय उपशास्त्रीय अथवा लोक संगीत इन सभी में आकर्षण है तथा यह मूल पूंजी है, संगीत का कोई भी पक्ष एक दूसरे से कम नहीं है, ऐसा नहीं है की ठुमरी गाने से रागों का महत्व कम होगा, हर पक्ष में एक विशेष आकर्षण है तथा यह परंपरा एवं धरोहर के रूप में स्थित है, अतः संगीतकारों को चाहिए कि किसी अन्य दुविधाओं में ना पड़े तथा अपने परंपरा से दूर ना हो और हर संगीत को समान मानकर उसे प्रसारित करें"।

रचनात्मकता एवं नवीनीकरण

रचनात्मक का अर्थ है-किसी भी कार्य को नवीनता के साथ प्रस्तुत करना। किसी उर्वर भूमि ही वन संपदा को जन्म दे सकती है, दूसरे अर्थों में किसी भी बीज के उगने तथा फूलने -फलने की स्थिति तभी उत्पन्न होती है जब भूमि उर्वरा शक्ति से परिपूर्ण हो। रचनात्मक एवं नवीनीकरण किसी भी कलाकार के विशेष गुणो में से एक है। बुद्धि, चातुर्य एवं उपज का होना यही एक महत्वपूर्ण गुण कलाकार में आवश्यक रूप से विद्यमान होने चाहिए। क्रियाशील तानें एवं विभिन्न लयकारियां तथा भावुकता के साथ स्वरों का यथा प्रयोग आदि सृजनात्मकता को दिग्दर्शित करते हैं। इस गुण का पंडित छन्नूलाल मिश्रा जी ने पूर्ण रूपेण अपने गायकी में प्रयोग किया है तथा परंपरावादी तत्व को अपनी मूलता से कभी दिग्भ्रमित नहीं होने दिया। परंपरागत संगीत एवं स्वयं की सृजनात्मकता का अनूठा संगम आपके गायकी में दृष्टिगत होता है, तानों में रचनात्मकता दिखती है जो रसोत्पादन में अभूतपूर्व सहायक हैं।[291]

[291] प्रोफेसर विजय शंकर मिश्र द्वारा लिए गए साक्षात्कार पर आधारित

आपके द्वारा प्रदर्शित अनेक प्रकार के कार्यक्रम जिनमे "दिल्ली के राजघाट पर गांधी जयंती" के अवसर पर कार्यक्रम जो की केंद्र सरकार द्वारा आयोजित था, इस आयोजन में अपने अपने पुत्र पुत्री तथा शिष्यों के साथ मिलकर विशेष प्रस्तुति दी। इस कार्यक्रम में अपने शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, भजन,तथा संदेश प्रवाह जैसे अनेक विधाओं को प्रदर्शित किया। इस कार्यक्रम में अपने अनेक स्वयं की स्वरबद्ध एवं सृजनात्मक रचनाओं को प्रदर्शित किया, तथा पुरातन धरोहर को नवीनतम रूप में प्रस्तुत किया। "देश के सम्मानीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी" भी आपकी इन्हीं क्षमताओं पर विश्वास करते हैं तथा आपका सम्मान करते हैं।

"कलाकारों के बारे में एक बात प्रसिद्ध है की आरंभ में हर कलाकार अपने गुरु के बताएं मार्ग पर चलता है किंतु एक समय के उपरांत उसके स्वयं की भावनाएं जागृत होती हैं तथा वह अपनी क्रियात्मकता को लेकर आगे बढ़ने लगता है पर यह क्रियात्मकता सृजनात्मक रूप में तभी संभव होती है जब कलाकार अहंकार से मुक्त हो तथा गुरु के मार्गदर्शन के साथ समर्पित तथा उदार हृदय के साथ रचना करे। कई कलाकार केवल गुरुओं द्वारा बताई गई बंदिश तथा सरगम आदि गाते रहे, और कभी अपनी आंतरिक भावनाओं तक नहीं पहुंच पाए। आपकी कला आपकी स्वयं की अनुभूति होनी चाहिए जिसमें गुरु के ज्ञान के अतिरिक्त आपका समर्पित भाव तथा क्रियात्मक मस्तिष्क का उपयोग भी होना जरूरी है। जब आपका क्रियात्मक मस्तिष्क विचार करता है की स्वरों का स्वरूप कैसा होना चाहिए तब कहीं जाकर संगीत में नवीनता उत्पन्न होती है तभी वह संगीत एक प्रार्थना शक्ति से युक्त होगा और नवीनता का प्रसार करेगा।"

पंडित छन्नूलाल मिश्र सृजनशील तथा क्रियाशील कलाकार हैं उपज को विशेष महत्व देते हैं तथा नवीनीकरण के प्रयास में कभी ऐसी क्रिया नहीं करते जो परंपरा के विरुद्ध हो तथा किसी विवाद को जन्म दे यही कारण है कि आपने हमेशा

पारंपरिक संगीत में सृजनात्मकता को शामिल किया है और यही आपकी गायकी का विशेष गुण भी है।[292]

शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण एवं गायन में सौंदर्य

हिंदुस्तानी संगीत में साहित्य एवं सौंदर्य बंदिश का प्राण तत्व होता है किसी भी गायक अथवा संगीतकार के लिए यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण है कि उसके द्वारा वर्णित बोलों का उच्चारण स्पष्ट तथा शुद्ध हो, बंदिश की सुंदर रचना तथा उसका साहित्य तभी प्रभावशील होता है, जब उसमें सौंदर्य तत्व हो तथा बोलो में स्पष्टीकरण हो, बोलो का उच्चारण जब तक शुद्ध नहीं होगा तब तक कलाकार साहित्य के सौंदर्य तथा अपने भावों को श्रोताओं तक प्रसारित नहीं कर सकता। अगर कलाकार श्रोताओं के समक्ष उचित तथा सक्षम प्रदर्शन नहीं करेगा तो वह श्रोताओं के समक्ष उपहास का पात्र बनकर रह जाएगा। पंडित छन्नूलाल मिश्र शास्त्रीय अथवा उपशास्त्रीय प्रस्तुतियां मूलतः बंदिश रचना साहित्य एवं सौंदर्य के आधार पर प्रदर्शित करते हैं ,और इसके प्रति वह सचेत तथा सजग हैं। अपने शिष्यों को भी शब्दों पर समान वजन देने, भावपूर्ण उच्चारण करने तथा स्पष्टीकरण पर विशेष जोर देते हैं। बंदिश के एक-एक शब्द पर समान वजन भाव तथा स्पष्ट के कारण आपकी बंदिश एवं गायकी में सौंदर्य तत्व के दर्शन होते हैं। आपकी बंदिश गायकी में शब्दों का सही स्पष्ट एवं भावपूर्ण प्रयोग होता है, तथा वह आपकी कलात्मक का महत्वपूर्ण अंग है, यही कारण है की राग क्रिया को आप बहुत ही सुंदरता से प्रस्तुत करते हैं, कई पुरानी बंदिश है जिनमें राग भाव बिल्कुल पृथक हैं उस राग में निहित

[292] प्रोफेसर विजय शंकर मिश्र द्वारा लिए गए साक्षात्कार पर आधारित

बंदिश के शब्द उस भाव से कोई तालमेल नहीं रखते आपने ऐसे रागों में अपने कलात्मकता एवं रससिद्धता से इस रिक्त स्थान को परिपूर्ण किया है।[293]

कला तथा भाव प्रवर्धन को प्रोत्साहन

कला तथा भाव एक दूसरे के पूरक शब्द हैं परंतु वर्तमान समय कलाकार वर्ग में चमत्कार एवं तैयारी दिखाने का है। कुछ समय तक तो यह क्रिया आकर्षक प्रतीत होती है, परंतु कुछ समय उपरांत वह अपना स्थान खो देती है, और वह प्रस्तुति अशांत तथा शोरगुल प्रतीत होने लगती है। पंडित छन्नूलाल मिश्र के अनुसार "कला के साथ समान रूप से भाव को भी स्थान देना चाहिए क्योंकि यह सांगीतिक प्रदर्शन में एक अनिवार्य तत्व है, इस तत्व के बिना कला श्रीहीन तथा रूखी प्रतीत होगी कला तथा भाव जब एक साथ प्रयोग किए जाते हैं तो यह रसोद्दीपक होती है।"

पंडित छन्नूलाल मिश्र जी की गायकी भाव तथा कला पक्ष से परिपूर्ण होती है तथा दोनों पक्षों में सुंदर समन्वय दृष्टिगत होता है। ऐसे ही पक्षों के तालमेल से आपकी गायकी परिपूर्ण गायकी कहलाती है। आपके अनुसार "कला यदि शरीर है तो भाव उसका प्राण तत्व है।

यह सर्व विदित है कि "आज पंडित जी विश्व भर में बनारसी उपशास्त्रीय गायन परंपरा मुख्यतः ठुमरी गायन के पर्याय बन चुके हैं । कहीं ठुमरी की बात हो और पंडित छन्नूलाल मिश्र की चर्चा ना हो यह असंभव है। आज अपने भावपूर्णता तथा कल्पनाशीलता के कारण आपने बनारस के उपशास्त्रीय संगीत को विश्व स्तर तक स्थापित किया है।[294]

---

[293] डॉ निशा झा H.O.D. संगीत विभाग तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय बिहार

[294] डॉ निशा झा H.O.D. संगीत विभाग तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय बिहार

प्रसिद्ध बांसुरी वादक पंडित राजेंद्र प्रसन्ना जी कहते हैं "मैंने अनेक कलाकारों को सुना है, पर मैं छन्नूलाल जी के साथ अनेक बार बजा चुका हूं ,उनकी गायकी से मैं आश्चर्य चकित हो जाता हूं क्योंकि उनकी गायकी में परंपरिकता के साथ-साथ क्रियात्मक स्वरूप भी है, तथा भाव पक्ष इतना सशक्त है कि ऐसा लगता है की साहित्य तथा भाव सामने दृश्य बना रहे हो" जुगलबंदी जैसी है क्रिया के दौरान भी उनका पक्ष कभी कमजोर नहीं पड़ता,राग गायन में जैसे ही राग विस्तार करते हैं,कभी तान, आलाप, बोल आलाप या लयकारियों जैसी क्रिया करते हैं, मैं अचंभित हो जाता हूं कि कला पक्ष तथा भाव पक्ष का ऐसा सुंदर सम्मिश्रण मैंने कहीं नहीं देखा, इसमें छन्नूलाल मिश्र का जवाब नहीं है।[295]

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में यह कहां जा सकता है कि पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के प्रदर्शन में सृजनशीलता, बंदिश के बोलो का तथा साहित्य का सही चुनाव, उपज, ताल पर प्रभुत्व एवं रागों के प्रकृति एवं स्वभाव के अनुसार भाव एवं कला पक्ष का सुंदर तालमेल आदि गुणों ने उन्हें प्रतिष्ठित कलाकारों के श्रेणी में प्रतिष्ठित किया है। पंडित छन्नूलाल मिश्र ने अपनी कलात्मकता एवं प्रवीणता का प्रदर्शन न केवल श्रोताओं के समक्ष प्रदर्शन के लिए किया है, बल्कि राग की मूल भावना से अपने अंतःकरण को जोड़कर भावनात्मक रूप से प्रदर्शित किया है ।उनका प्रदर्शन समर्पण की प्रबल भावना एवं मौलिकता के लिए ओजस्वी निपुणता का प्रमाण है, तथा उनमें परंपरा के प्रति अंतर निहित सम्मान की भावना भी है।

आपकी गायकी अत्यंत संतुलित है,जिसमें परंपरागत एवं सृजनशीलता का प्रभाव है। तानों स्पष्ट लयकारी का अनूठा अंदाज, बेजोड़ तिहाईयां तथा भावुकता पूर्ण

[295] बांसुरी वादक राजेंद्र प्रसन्ना द्वारा लिए गए साक्षात्कार पर आधारित

गायन आपकी गायकी में स्पष्टतया दृष्टिगत होता है,यही कारण है कि रसीले एवं सुरीले कंठ माधुर्य के द्वारा आपने श्रोताओं को सदैव आनंदित किया है, तथा शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय संगीत को विश्व धरातल पर स्थापित कर, परंपरा का संरक्षण एवं संवर्धन किया है ।अपने अपने साधना लगन एवं निष्ठा द्वारा अपने कुल की सांगीतिक परंपरा के आप सशक्त हस्ताक्षर बने हैं, और इसी निरंतरता को आप अपनी आने वाली पीढियो में भी प्रसारित कर उन्हें भी भारतीय संगीत को विश्व पटल पर लाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

4.1 - पंडित छन्नूलाल मिश्र का जी ख्याल गायन

कोई भी साधना कभी निराधार अथवा निरालम्ब नहीं होती, यह मार्ग गुरु द्वारा प्रदत्त होता है तथा मार्ग प्रशस्त हो इसके लिए गुरु का अस्तित्व एवं मार्गदर्शन बहुत आवश्यक है। गुरु का शाब्दिक अर्थ है- अंधकार से प्रकाश,अलौकिक प्रकाश का मार्गदर्शक। शब्दों में गुरु शब्द की उत्पत्ति दो व्यंजन गु+रु अर्थात 'गु' का तात्पर्य अंधकार तथा 'रु' तात्पर्य प्रकाश से है। एक योग्य गुरु का अंतःरण ज्ञान रूपी तेज से और पद ओतप्रोत होता है, जो अंधकार को अपने ज्ञान द्वारा भस्मित करने में सक्षम होता है। गुरु वह ज्ञान की ज्योति है,जो अपने ज्ञान रूपी प्रकाश द्वारा शिष्य के मार्ग में आने वाले समस्त विघ्न बाधाओं को चीरते हुए उसका निरंतर मार्गदर्शन करता है तथा शिष्य के ज्ञान तथा व्यक्तित्व का वर्धन अपना कर्तव्य समझकर करता है। सांगीतिक जगत में 'गुरु'शब्द का विशेष स्थान है क्योंकि संगीत में "गुरु

शिष्य परंपरा" तथा "गुरुमुखी विद्या" का प्रावधान है, और बिना गुरु शिष्य परंपरा के यह कला क्षमता विहीन है।[296]

पंडित छन्नूलाल मिश्र को यह क्षमता अपने गुरु तथा परंपरावादी पिता एवं सांगीतिक परिवार मे सांस्कृतिक माहौल द्वारा प्राप्त हुई।

एक ओजस्वी गुरु जिन्होंने उनकी क्षमता तथा प्रतिभा को पहचान कर सांगीतिक मार्गदर्शन प्रदान किया। अपने गुरु के प्रयासों के फल स्वरुप है पंडित जी ने अन्य विधाओं के साथ-साथ ख्याल गायन शैली के प्रवर्धन में भी विशेष योगदान दिया है। मध्यकाल में ध्रुपद से पहले जो संगीत प्रचलित था वह मार्गी संगीत कहलाता था संगीत शास्त्र के निर्माण अनुसार मार्गी शुद्ध तथा उसकी भाषा संस्कृत होती थी शास्त्रीय जटिलता तथा भाषा की कठिनाई के कारण मार्गी संगीत का प्रचार प्रसार कम हुआ। राजा मानसिंह तोमर ने अपनी सृजनता से भारतीय संगीत में एक नवनिर्माण किया, उन्होंने शुद्ध शास्त्रीयता की कठिनाई को कम करते हुए संस्कृत के स्थान पर सामान्य भाषा को प्रचलित किया तथा लोक रुचि के अनुसार उन्होंने शुद्ध राग के स्थान पर कई रागों का सम्मिश्रण किया। इस प्रकार मार्गी संगीत के स्वरूप में किंचित परिवर्तन करके उन्होंने नवीन गायन शैली परिष्कृत की जिसे ध्रुपद गायन शैली कहा जाता है, जो मुलतः भरत संगीत के मतानुसार था।

तानसेन के काल के पश्चात ध्रुपद का प्रचार प्रसार कम होने लगा तथा नवीन परिष्कृत शैली "ख्याल गायन" का प्रचार आरंभ हुआ। वर्तमान शास्त्रीय गायन में ख्याल गायकी को प्रमुखता दी जाती है यह दूसरे शब्दों में कहें तो "ख्याल गायकी को शास्त्रीय संगीत का पद प्रदान किया गया है"।

---

[296] डॉ निशा झा H.O.D. संगीत विभाग तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय बिहार

आज गुरु शिक्षा हो अथवा विश्वविद्यालय स्तर पर शास्त्रीय संगीत के तौर पर शिक्षा प्रदान की जाती है।

[297]ख्याल एक "फारसी" भाषा का शब्द है ख्याल का अर्थ हिंदी भाषा में "कल्पना" है। इस गायन विधा में गायक कलाकार को पूर्ण स्वतंत्रता दी जाती है। लय की दृष्टि से इसे दो भागों में विभाजित किया गया है--

1. बड़ा ख्याल (विलंबित ख्याल)
2. छोटा ख्याल (मध्य लय)

बड़ा ख्याल-

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से ख्याल के उद्भव के विषय में विभिन्न मतभेद हैं अनेक संगीतज्ञों के मतदान अनुसार जौनपुर के सुल्तान हुसैन को ख्याल की उत्पत्ति का श्रेय प्रदान किया जाता है। कुछ संगीतज्ञ नियामत खाँ (सदारंग)का नाम लेते हैं,कहते हैं कि "तानसेन की पुत्री के वंशज नियामत खाँ थे, यह अपने समय के श्रेष्ठ वीणा वादक थे साथ ही ध्रुपद गायक भी थे, तथा अपनी बंदिशों की रचना में सिद्ध हस्त थे। इन्होंने हजारों ख्याल की बंदिशों की रचना की, वह बंदिश है आज भी "सदारंग"के नाम से गई जाती हैं वर्तमान समय में अधिकतर संगीतज्ञ सदारंग को "ख्याल" का निर्माता मानते हैं तथा बहुत से विद्वान "अमीर खुसरो" को भी ख्याल का जन्मदाता मानते हैं परंतु ऐतिहासिक प्रमाण और उनके ख्याल की बंदिशें वर्तमान में नहीं मिलती, अतः यह कथन अनुचित है कि ख्याल का निर्माणकर्ता अमीर खुसरो थे।

ख्याल गायन विद्या में संगीत की प्रतिभा दिखाने का उद्देश्य न होने के कारण इसमें काव्य की गंभीरता नहीं पाई जाती है इसलिए पुरातन काल में ध्रुपद को काव्य एवं

---

[297] रमाकांत द्विवेदी संगीत स्वरित पृष्ठ संख्या 237 238

स्वर् लय की दृष्टि से उच्च स्तरीय गायन विधान मानते थे, यही कारण था कि सदारंग अदारंग स्वयं ध्रुपद गाते थे।

ख्याल गायन विधा में कण, मुर्की, मींड,लयकारियां इत्यादि का प्रयोग विशेष कर होता है। विलंबित ख्याल में लय धीमी गति में होती है इसलिए बड़े ख्याल की प्रकृति गंभीर होती है, विलंबित ख्याल की बंदिशें संक्षिप्त होती हैं तथा गीत के दो ही खंड होते हैं -स्थाई तथा अंतरा।[298]

विलंबित ख्याल में स्वरों की सजाने की पूरी व्यवस्था होती है। बड़े ख्याल के प्रारंभ में राग अनुरूप मुख्य स्वरों को या एक दो स्वर् समूह कहकर बंदिश आरंभ कर दी जाती है, बंदिश की स्थाई एक या दो बार गाकर अथवा बंदिश के मुखड़े के शब्दों को लेकर छोटे-छोटे टुकड़ों में राग स्वरूप दिखाकर आलाप तथा तिहाईयों द्वारा सम पर आते हैं, इस प्रकार राग की अवधारणा करते हुए सप्तक के विभिन्न स्थानों में प्रदर्शन करते हैं। इस गायन शैली में संगत के लिए अधिकतर एकताल, झूमरा, आडाचारताल, तिलवाड़ा, रूपक विलंबित आदि तालों को बजाया जाता है।

छोटा ख्याल -

इस इस गायन शैली को मध्य लेकर तुलना में थोड़ी तेज गति में गया जाता है वर्तमान में यह बहुत लोकप्रिय है। छोटा ख्याल की उत्पत्ति के संबंध में विद्वानों में अनेक मतभेद हैं कई विद्वान मानते हैं की कव्वाली विधा के आधार पर अमीर खुसरो ने छोटे ख्याल का निर्माण किया तथा कुछ विद्वान कहते हैं कि जौनपुर के सुल्तान हुसैन शर्की इस विधा के आविष्कारक थे। वर्तमान में मध्यलय की बंदिशें अनेक रूपों में दृष्टिगत होती हैं । इनमें चंचलता तथा श्रृंगार रस की प्रधानता होती है, परंतु छोटा ख्याल की बंदिश को आध्यात्मिक रूप देने का श्रेय पंडित विष्णु दिगंबर

[298]संगीत निबंध संग्रह प्रो. हरिश्चंद्र श्रीवास्तव पृष्ठ संख्या 113

पलुस्कर को जाता है पंडित जी ने संगीत को अच्छे समाज में पुन स्थापित करने के लिए जनरुचि के अनुसार सूरदास, मीरा तुलसी आदि के पदों को बंदिश रूप देकर संगीत का प्रचार प्रसार किया छोटा ख्याल मध्य लय के तालों में गाए जाते हैं जैसे तीन ताल झपताल एक ताल रूपक आदि।[299]

इस गायन के प्रचलित होने के पीछे महत्वपूर्ण कारण है एक तो यह आसान है तथा इसमें गायकी को प्रदर्शित करने के क्षेत्र ज्यादा हैं तथा श्रृंगार पूर्ण है।

पंडित जी का संगीत के प्रति व्यक्तिगत एवं नवीन दृष्टिकोण है, यह दृष्टिकोण उन्हें स्वयं की साधना , गुरुओं द्वारा प्रदत्त शिक्षा एवं विभिन्न विद्वानों के मार्गदर्शन द्वारा प्राप्त हुई। पंडित जी हमेशा कहते हैं "राग को उतनी ही देर गाना चाहिए जब तक उसमें श्रोता का अनुराग रहे" जब राग से वैराग होने लगे तो उसे बंद कर देना चाहिए।

श्री तुलसीराम देवांगन जी के अनुसार "संगीत परिवर्तनशील कला है क्योंकि उसका संबंध समाज से है, इसलिए सामाजिक प्रवृत्तियां, व्यवहारों आवश्यकताओं और रीति रिवाज के परिवर्तन का उस पर गहरा प्रभाव पड़ता हैं। मूलतः संगीत का विकास लोक रंजन पर आधारित है, और यही कारण है कि समय अनुकूल रंजन तत्वों को आवश्यकता अनुसार समावेश करते हुए संगीतज्ञों ने भी उसमें प्राचीन काल से वर्तमान तक अनेक परिवर्तन किए हैं और यही कारण है कि नवीन गीतों के उपादेयता हर समय बनी रहती है।

'पंडित जी'गायन शैली में इस प्रकार के परिवर्तनों के पक्षधर हैं "उनका कहना है कि संगीत हमेशा अनुरागी होना चाहिए अगर श्रोताओं के रुचि तथा उनके मानसिक

---

[299] रमाकांत द्विवेदी संगीत स्वरित पृष्ठ संख्या 237 238

स्तर को समझ कर अगर प्रदर्शन किया जाए तो यही कला की उचित व्यवस्था है"।[300]

खयाल गायन शैली भी एक ऐसी ही रसपूर्ण गायकी है, भले ही यह ध्रुपद के बाद विकसित हुई,जैसे ध्रुपद सर्वाधिक प्राचीन गायकी है जो एक सुदृढ़ तथा सशक्त है, इसमें अनेक रसों के दर्शन होते हैं,इसी प्रकार ख्याल गायकी भी है जिसमें आलाप, बोल आलाप, तान, मींड गमक आदि सुंदर क्रियांगों का उपयोग होता है।

जिस प्रकार 'ख्याल' का अर्थ है 'कल्पना' इससे शैली में कल्पनाशीलता कलाकार की कल्पना शक्ति पर निर्भर करती है कलाकार जितना स्वर का तथा अनुभवों का पक्का होगा यह गायन शैली उसके ही अधीन चलेगी।

साहित्य तथा संगीत का अंतरसंबंध

साहित्य और संगीत भारतीय संस्कृति के दो ऐसे आधारभूत स्तंभ हैं, जिनके माध्यम से मानव की अनुभूतियों, संवेदनाओं तथा सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति होती है। साहित्य शब्दों के माध्यम से भावों का संप्रेषण करता है, जबकि संगीत स्वर, लय एवं ताल के माध्यम से उन्हीं भावों को श्रव्य सौंदर्य प्रदान करता है। भारतीय परंपरा में इन दोनों कलाओं का संबंध अत्यंत प्राचीन एवं अभिन्न माना गया है। वैदिक काल से ही मंत्रों का उच्चारण निश्चित स्वरों में किया जाता रहा है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि साहित्य और संगीत का विकास समानांतर न होकर परस्पर पूरक रूप में हुआ है।[301]

---

[300] डॉ निशा झा H.O.D. संगीत विभाग तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय बिहार

[301] पं. शारंगदेव, संगीत रत्नाकर अध्याय 1 पृ. 12–15।

साहित्य संगीत का प्राणतत्त्व है, क्योंकि किसी भी गायन शैली में प्रयुक्त पद, ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी, भजन अथवा लोकगीत का आधार साहित्य ही होता है। यदि शब्दों में भाव, अर्थ और रस का अभाव हो तो संगीत की अभिव्यक्ति अधूरी प्रतीत होती है। दूसरी ओर संगीत साहित्य को ऐसी प्रभावशीलता प्रदान करता है कि वह श्रोता के हृदय में स्थायी छाप छोड़ देता है। इस प्रकार साहित्य अर्थ का संवाहक है तथा संगीत उस अर्थ की भावात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम है।[302]

भारतीय संगीतशास्त्र में रस सिद्धांत का विशेष महत्व है। साहित्य और संगीत दोनों का अंतिम उद्देश्य रसोत्पत्ति तथा सौंदर्यानुभूति माना गया है। श्रृंगार, करुण, वीर, भक्ति अथवा शांति—इन सभी रसों की अभिव्यक्ति साहित्य में शब्दों द्वारा तथा संगीत में स्वरों द्वारा संपन्न होती है। जब उपयुक्त राग, ताल और भाव के साथ साहित्य का समन्वय होता है, तब कलात्मक अभिव्यक्ति अपने सर्वोच्च स्तर पर पहुँच जाती है।[3]

भक्ति आंदोलन के काल में साहित्य और संगीत का संबंध और अधिक सुदृढ़ हुआ। सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई, कबीर तथा विद्यापति जैसे संत-कवियों की रचनाएँ आज भी विभिन्न रागों में गाई जाती हैं। इनकी काव्यात्मकता और संगीतमयता ने भारतीय समाज में आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना का व्यापक प्रसार किया। इसी प्रकार ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी तथा टप्पा जैसी गायन शैलियों में प्रयुक्त बंदिशें साहित्यिक सौंदर्य एवं संगीतिक उत्कृष्टता का अद्‌भुत उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।[4]

आधुनिक युग में भी साहित्य और संगीत का संबंध निरंतर विकसित हो रहा है। शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, फिल्म संगीत तथा लोकसंगीत सभी में साहित्य की केंद्रीय भूमिका विद्यमान है। एक ओर साहित्य संगीत को विचार, भाव और भाषा

---

[302] डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग, *निबंध संगीत*, पृ. 48–50।

प्रदान करता है, वहीं संगीत साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम बनता है। अतः यह कहा जा सकता है कि साहित्य और संगीत का संबंध केवल सहायक या पूरक नहीं, बल्कि परस्पर आश्रित एवं अविभाज्य है। भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के संरक्षण, संवर्धन तथा मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा में इन दोनों की संयुक्त भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है और भविष्य में भी बनी रहेगी।

भारत की संस्कृति कलात्मक एवं आध्यात्मिक संस्कृति रही है भारतीय संस्कृति की आत्मा आध्यात्मिक स्वर एवं धार्मिक अभिव्यंजना से अनुप्राणित रही है। कलात्मक दृष्टिकोण से प्राकृतिक सौंदर्य की अनुभूति से मानव के अंतःकरण में उठने वाला आनंद तथा उसकी दुर्दुम्य लालसा इनका संगम ही कला को जन्म देता है,और यही कला तथा संस्कृति उन्नत समाज के विकास का कारण बनती है।[303]

भारतीय संस्कृति में कलात्मक खोज केवल एक व्यक्ति की चेष्टा नहीं, वरन विश्व के समस्त आत्मा की खोज है। एक अव्यक्त असीम अनुसंधान के विविध कलाओं के रूप में इसने स्वयं को स्थापित किया है। शब्दों में बिखर कर, काव्य में व्यक्त होकर, मूर्ति कला , स्वर राग में स्थित होकर संगीत इन रूपों में उस परम नाद मय लीला का गान प्रवाहित हुआ "सत्यम शिवम सुंदरम" का साक्षात्कार करने वाली इन्हीं कलाओं का नामकरण "ललित कला" के नाम से हुआ। मानव के सहज, सरल एवं स्फूर्ति प्रेरणा को यथार्थ रूप में प्रकट करने की क्षमता सिर्फ इन्हें में थी, मानव की भावनाओं का यथार्थ व्यक्तीकरण,शब्द तथा स्वर इन्हीं माध्यमों से हो सका और यही है कला की सर्वश्रेष्ठता का प्रमाण।

साहित्य तथा संगीत का संबंध पुरातन काल चला आ रहा है ,इनका संबंध विच्छेद एक असंभव सी बात है। हमारे वैदिक कालीन मंत्र की ऋचाएं भारतीय संगीत के

[303] हरिश्चंद्र श्रीवास्तव संगीत निबंध संग्रह पृष्ठ संख्या 58

मधुर स्वरों में थिरक पड़ी। आदिम वेद "ऋग्वेद" का उदात्त,अनुदात्त तथा स्वरूप में अंकित पाया जाना साहित्य तथा संगीत के परस्पर पुरातन संबंध की पुष्टि करता है।

ईश्वर ने संसार में उदार हृदय से प्राकृतिक सुषमा को बिखरा है फिर भी मानव अतृप्त है। साहित्य तथा संगीत सरस्वती के आंचल में क्रीड़ा करने वाली दोनों के अंतर मन में स्वर्ण मोह है,सहज प्रेम है, दोनों ने मानो आपस में विचार विमर्श कर अपने लिए शोभावर्धन एवं अनुकूल अलंकार का निर्माण किया है। साहित्य वही तत्व है, जो राग के रस को निर्धारित करता है तथा राग साहित्य को निर्धारित नहीं कर सकता।[304]

जिस प्रकार लोगों ने धारणा बनाई कि 'यह श्रृंगार रस से परिपूर्ण राग है, उसी प्रकार श्रृंगार रस के राग में वीर रस से संबंधित बंदिश भी प्राप्त होती है, और जब वीर रस की बंदिश गाई जाती है, तो रस अनुसार ही प्रदर्शित होती है, इसमें भक्ति रस, श्रृंगार रस, वीर रस तथा करुण रस का भी निष्पादन संभव है।

पंडित जी कहते हैं -साहित्य वह है जो मर्यादित स्वरूप में राग दर्शन करा दे" तथा दूसरी बात यह है कि "राग को यदि मर्यादा तथा धर्म के अनुसार मानकर आप सही रूप में प्रदर्शित करते हैं तो, राग स्वयं आपको रास्ता दिखाएगा और यदि राग को आप स्वयं से बड़ा समझते हैं तो राग वह तत्व है जो आपको ऊंचे आसमान से जमीन पर गिरा सकता है, हमने अपने संगीत की यात्रा में लोगों को अर्श से फर्श पर आते देखा है।"[305]

---

[304] हरिश्चंद्र श्रीवास्तव संगीत निबंध संग्रह पृष्ठ संख्या 58

[305]डॉ.इंद्रेश मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

साहित्य ही वह सीढी है जिसके माध्यम से आप राग की ऊंचाई तक पहुंच सकते हैं।

कुछ कलाकार बड़े-बड़े अप्रचलित राग उठा लेते हैं तथा बिना उसका स्वरूप समझे उसे गाने का प्रयास करते हैं उन्हें लगता है कि संगीत स्वर हमारे कंठ में बसा है, परंतु संगीत वह है जो शुद्ध तथा सात्विक है, तथा उसके साहित्य को सुनकर वही भाव हृदय में अंकित हो जाए जिस भाव से कलाकार गा रहा है।

कजरी की एक पारंपरिक रचना जिसमे साहित्य के माध्यम से श्रृंगार प्रस्तुत होता है--

स्थाई- बरसन लागी बदरिया रूम झूम के
आयो सावन अति मनभावन
झूम झूम के सखियां गावे कजरिया
घूम घूम के बोलन लागी कोयलिया।।

अंतरा- झूलत हरि संग राधे पलना
पहीने कुसुम रंग चुनरिया रे
गावत राग मल्हार सजीले
झमकी झुलावत सुंदरिया रे।।[306]

पंडित जी कहते हैं कि "अगर आपका गाना दर्शकों के समझ में नहीं आ रहा तो आपका गाना बेकार है, आपका गाना एक कहानी की तरह लगना चाहिए"

[306] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

"पिताजी संगीत साधना कराते थे, तो मेरी उम्र बहुत छोटी थी और वह बहुत गंभीरता से इस तथ्य को समझाने का प्रयास करते थे, आज बड़े बुजुर्गों के आशीर्वाद, गुरु के मार्गदर्शन तथा स्वयं के अनुभव से साहित्य तथा संगीत को समझ कर गाता हूं, "आज जब लोग यह कहते हैं की छन्नूलाल मिश्र जिस प्रकार शब्दों का प्रयोग करते हैं तथा साहित्य का विश्लेषण करके गाते हैं वह अन्य कोई कलाकार नहीं करता।"[307]

रागों का समय सिद्धांत

पंडित छन्नूलाल मिश्र शास्त्रोक्त विधि से संगीत के समय सिद्धांत का पूर्णरूपेण अनुकरण करते हैं। अपने दैनिक साधना एवं सांगीतिक प्रस्तुतीकरण में भी समय सिद्धांत का विशेषतः पालन करते हैं।" मानव की समस्त जीवन शैली प्रकृति प्रदत्त तथा निर्धारित है। सूर्योदय के समय जब हल्की लालिमा आती है तो नभ में एक अलग ही रंग उपस्थित होता है और फिर जैसे-जैसे सूरज की तीव्रता बढती होती जाती है,और तेज होते होते वह अस्त होता है इसका तात्पर्य यही है की हम मानव प्रजाति की समस्त जीवन शैली सूर्य उदय तथा सूर्यास्त के आसपास ही घूमती है। दिन के 12:00 बजे वातावरण में तीव्रता होती है तथा थोड़ा मिजाज गरम होता है, उस समय इस प्रकार के रागों को निर्धारित किया गया कि कौन सी श्रुति से स्वर् कोमल, तीव्र तथा शुद्ध स्वर किस प्रकार और कैसे हमारे कानों मे मधुरता का संचार करेंगे?[308]

[307] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित
[308] पंडित भोलानाथ मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी

वर्तमान में लोग समय सिद्धांत का अनुकरण नहीं करना चाहते ,यह सिद्धांत परंपरागत है, अत्यंत प्राचीन है तथा हमारे ऋषि मुनियों एवं ज्ञानी शास्त्रकारो ने अत्यंत शोध के पश्चात इस प्रकार की खोज की।

ऋषि मुनियों के अनुसंधान से यह तथ्य सिद्ध हुआ- ग म ग म पमप, ग म ध_ प, की राग भैरव में कोमल ध_ तथा कोमल रे_ को ही क्यों आंदोलित किया जाता है, क्योंकि वातावरण में सूर्योदय पूर्ण रूपेण नहीं हुआ है सूरज की हल्की लालिमा छाई है।

पंडित जी कहते हैं "हर राग का अपना एक अंग, स्वरूप, स्वभाव तथा एक निश्चित समय है। रागों को सीखने के लिए भले ही कोई निश्चित समय ना हो किंतु जब रागों का प्रस्तुतीकरण करना हो तो समय सिद्धांत का विशेष ध्यान रखना चाहिए, मेरा मानना है संगीत सीखने तथा अभ्यास के लिए समय का कोई बंधन नहीं है, परंतु हर राग का एक निश्चित समय है,जिसके आधार पर राग को गाना चाहिए, ऐसा विधान हमारे शास्त्रों में दिया गया है, परंतु सीखने में कभी कोई बुराई नहीं है"

शास्त्रीय संगीत एवं अभिजात संगीत

भारतीय संगीत परंपरा में **शास्त्रीय संगीत** तथा **अभिजात संगीत** ऐसे शब्द हैं, जिनका प्रयोग प्रायः समान अर्थ में किया जाता है, किंतु इनके आशय में सूक्ष्म भिन्नता विद्यमान है। शास्त्रीय संगीत वह संगीत है जिसका स्वरूप निश्चित शास्त्रीय सिद्धांतों, राग-व्यवस्था, ताल-पद्धति तथा प्रस्तुति के नियमों पर आधारित होता है। दूसरी ओर अभिजात संगीत उस उच्चकोटि के संगीत को कहा जाता है, जो केवल शास्त्रीय नियमों का पालन ही नहीं करता, बल्कि सौंदर्य, परिष्कार, कलात्मक उत्कृष्टता तथा गंभीर सांगीतिक चिंतन का भी परिचायक होता है। इस प्रकार प्रत्येक अभिजात संगीत शास्त्रीय होता है, किंतु प्रत्येक शास्त्रीय प्रस्तुति अभिजात स्तर की

हो, यह आवश्यक नहीं है।[309]इन सभी में राग की शास्त्रीय मर्यादा, स्वर-साधना, लयकारी तथा रचनात्मकता का संतुलित समन्वय दिखाई देता है। कलाकार अपनी कल्पनाशीलता का प्रदर्शन भी शास्त्रीय नियमों की सीमाओं के भीतर रहकर करता है, जिससे संगीत की गरिमा अक्षुण्ण बनी रहती है।[310]

कला के क्षेत्र में "कलाकार तथा कला पारखी" के दोनों को समान महत्व दिया जाता है ,एक के अभाव में दूसरा अपना स्वयं का अस्तित्व खो देता है, कला की उन्नति में जब तक पारखी योग नहीं देते ,तब तक कला फल -फूल नहीं सकती। कलाकार दीर्घकाल तक अपने घोर साधना में रत रहकर जो माधुर्य और चमत्कार की सिद्धि प्राप्त करता है,उसे वह अपने तक ही सीमित नहीं रखता बल्कि अपने उस अलौकिक आनंद को मानव लोक में वितरित कर देता है, कलाकार अपने कला में जितना रसपान वह स्वयं करता है उतना ही उस रस के द्वारा दूसरों को आनंदित करता है। कलाकार के हृदय में आनंद की असीम धारा लोगों को अपने रसात्मकता का बोध कराने के लिए स्वतः उमड़ पड़ती है, और जब कला पारखी आनंद की उस कल्लोलिनी में अवगाहन कर रससिक्त नहीं हो जाते, तब तक कलाकार को संतोष की प्राप्ति नहीं होती।

प्रत्येक गायक यही चाहता है कि उसकी कला श्रोताओं को आनंद की उस भूमि पर ले जाए जहां कलाकार स्वयं पहुंचा है और कलाकार स्वयं का उद्देश्य भी यही है।

पंडित छन्नूलाल मिश्र के अनुसार "संगीत एक विशुद्ध शास्त्रीय परंपरा है तथा इस परंपरागत संगीत को वह इस स्वरूप के साथ सहेज कर प्रस्तुत करने में सहज हैं, उनका मानना है यदि कोई कलाकार प्राचीन परंपरागत शास्त्र में मनमानी ढंग से

---

[309] डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग, *निबंध संगीत*, पृ. 30–34।

[310] डॉ. अशोक कुमार, भारतीय शास्त्रीय संगीत का इतिहास एवं सिद्धांत पृ. 101–107।

प्रस्तुति दे या अपने विचार अनुसार परिवर्तन करें तो इसमें कोई दोष नहीं है, बस उसे शास्त्रीय संगीत नहीं बल्कि अभिजात संगीत की संज्ञा प्रदान करनी चाहिए। सृजनशीलता अच्छी बात है कलाकारों को करनी चाहिए, परंतु सृजनात्मकता शास्त्रीयता के आधार पर हो नहीं तो वह अभिजात संगीत का रूप धारण कर लेगा।[311]

पंडित जी कहते हैं कि आजकल जो संगीत गाया बजाया जा रहा है,उसमें अभिजात संगीत का अधिक प्रभाव है ।आज की संगीत मे कलाकार स्वर एवं लय के नियमों का पालन नहीं करते तथा मनमाने ढंग से स्वरों का प्रयोग करते हैं, राग की शुद्धता की ओर ध्यान न देते हुए केवल तैयारी की तरफ उनका ध्यान आकृष्ट होता है। गीत के शब्द कभी-कभी इतने अस्पष्ट होते हैं कि बंदिश के बोलो का पता नहीं चलता।जबकि शास्त्रीय संगीत क्रमबद्ध तथा नियम के अनुसार प्रस्तुत होता है ,फिर लय बढ़ाकर बोल बांट, स्थाई भंजनी, रूपक भंजनी, सरगम एवं बोलतान के पश्चात आकार में ताने गाकर ,तिहाई देकर समाप्ति होती है। छोटा ख्याल के बंदिश के बाद लयकारी छोटी-छोटी ताने फिर तैयार ताने सरगम, बोलना और तिहाई के साथ समाप्त करना चाहिए । स्वरों के साथ शास्त्र सम्मत लयकारी का भी प्रयोग सुंदरता एवं चतुर्य के साथ करना चाहिए।

संयोजित स्वरावली

भारतीय शास्त्रीय संगीत में स्वर, लय तथा भाव की समन्वित अभिव्यक्ति ही संगीत की आत्मा मानी जाती है। स्वर केवल निश्चित ऊँचाई का संकेत नहीं देता, बल्कि उसके उच्चारण की शैली, बल, कोमलता, तीव्रता तथा भावात्मक उतार-चढ़ाव भी उसके सौंदर्य को निर्धारित करते हैं। इन्हीं भावात्मक और ध्वन्यात्मक परिवर्तनों को

[311] श्रीमती विष्णु प्रिया प्रसिद्ध गायिका से प्राप्त जानकारी के अनुसार

प्राचीन संगीतशास्त्र में **'काकु'** कहा गया है। संयोजित स्वरावली में काकु का प्रयोग स्वरों को अधिक प्रभावशाली, सजीव तथा रसानुकूल बनाने के लिए किया जाता है।[312]

संयोजित स्वरावली से आशय ऐसी स्वर-रचना से है जिसमें विभिन्न स्वरों का क्रमबद्ध एवं कलात्मक संयोजन हो। जब गायक किसी स्वरावली का प्रस्तुतीकरण करता है, तब वह केवल स्वरों का यांत्रिक उच्चारण नहीं करता, बल्कि प्रत्येक स्वर में भावानुकूल परिवर्तन लाता है। यही परिवर्तन काकु के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। काकु के प्रयोग से स्वर में कभी मधुरता, कभी गंभीरता, कभी करुणा तथा कभी वीरता का संचार होता है। इस प्रकार काकु स्वरावली को केवल तकनीकी अभ्यास न रहने देकर उसे भावप्रधान बना देता है।

मानव जीवन जब से प्रारंभ हुआ संगीत का आरंभ भी तभी से माना गया है। वातावरण में जब खग विचरते हैं,तो उससे भी स्वर उत्पन्न होते हैं, जब झरने का पानी कल- कल बहता है, तो उससे भी संगीत की उत्पत्ति होती है हवाओं में भी एक प्रकार का राग है। एक ही शब्द को "काकु भाव" से बोला जाए तो उसका अर्थ बदल जाता है। इस संसार में रहने वाले हर प्राणी तथा प्रत्येक स्थान में स्वर स्थित है,यह ईश्वर की कृपा है। "हम भाग्यवान है हमारे वंशज जिन्होंने हमें इतनी बड़ी संपदा हमें प्रदान की और इस संपदा को हम स्वयं में तलाश कर रहे हैं अथवा अनुसंधान करते जा रहे हैं की पता नहीं यह कहां कब और कैसे मिलेगी"।
पंडित जी अनुभवों के आधार पर कहते हैं "शास्त्रीय संगीत वह है जिसमें ऋषियों के मत से अर्थात शास्त्रों के मत से स्वरों का प्रयोग हो जिसमें स्वरों द्वारा शब्दों को रचाया जाए तथा 15 प्रकार के गमकों का निरंतरता के साथ प्रयोग करते हुए माधुर्य

[312] भरतमुनि, *नाट्यशास्त्र*, अध्याय 17, पृ. 335–338।

तथा मिठास से उसे आलंबित करना चाहिए। राग विशेष में लगने वाले स्वरों में एक स्वर से दूसरे स्वर तक हर बार नवीन प्रयोग के ढंग से जाया जाए जिसमें खंडमेरू तथा मेरूखंड़ का बराबर प्रयोग होता रहे वही शास्त्रीय संगीत है।[313]

स्वरावली का संयोजित रूप में प्रयोग हो तथा स्वस्थान के नियम भी विशेषतः पालन होने चाहिए। शास्त्रीय संगीत में स्वस्थान के नियम आलाप चारी का एक व्यवस्थित नियम है, जिसमें राग विशेष में लगने वाले सभी स्वरों को चार भागों में विभाजित कर दिया जाता है। इन सभी नियमों के पालन के साथ गाने से संगीत से माधुर्य का ह्रास नहीं होता।

"नियम का पालन करते हुए अगर राग गाया जाए तो एक जीवन में एक राग सिद्ध नहीं हो सकता, तो और कितने राग गा पाएंगे।"

रागो के आलाप में शास्त्रोक्त नियम तथा "यमन" में गांधार और "तोड़ी" का ऋषभ लग जाए तो समझ लेना कि जीवन सफल हो रहा है ऐसी स्थिति में आप कितने राग गा लेंगे, और क्या कर लेंगे, और करके भी क्या करेंगे? फिर क्या कितने ही कांगड़ा के प्रकार गाऐगे और उससे क्या करेंगे ,केवल एक सुर ऐसा लगाओ और श्रोताओं के दिल में उतर जाओ तुम वहीं सफल हो तथा वही तुम्हारा संगीत है"।

पिता तथा गुणी जनों ने हमेशा एक ही बात सिखाई "संगीत वही गाओ जो सैद्धांतिक हो, पारंपरिक हो तथा नियमबद्ध हो और जब उसे प्रदर्शित करो तो वहां श्रोताओं में आनंद का संचार करे उन्हें समझ में आए। अगर खूब तैयार गायकी दिखाए अगर वह शास्त्रोक्त ना हुआ और श्रोताओं को समझ में नहीं आया तो गाना बेकार है,ऐसे में अब यही समझ आता है की जीवन में निरंतर सुधार आवश्यक है, हर राग को संभाल कर तथा समझ कर गाना है। हर राग अपना रंग दिखाता है। शुद्ध कल्याण, भूपाली,तोड़ी, भैरवी, नंद बहुत राग हैं, तथा ऐसे रागों को गाने वाले लाखों

[313] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

कलाकार गाकर चले गए, पर राग खत्म नहीं हुआ,वह राग और उनके स्वर यह आज तक कायम हैं। जब शिष्यों में ज्ञान को प्रसारित करते हैं,तब अनुभूति होती है,कुछ नवीन प्रयोग होता है, तो लगता है यह बात दिमाग में पहले क्यों नहीं आई? तब यही महसूस होता है राग हमसे बहुत बड़ा है हम उसके सामने बहुत छोटे हैं,उसकी ही आराधना करें,प्रार्थना करें गुरु के चरण में नतमस्तक हो जाए तब जाकर शायद वह राग हमें आत्मसात करे।

स्वर लगाव के प्रति दृष्टिकोण

स्वर लगाव एक ऐसी क्रिया है,जो प्रत्येक घराने तथा कलाकारों के अनुसार भिन्न-भिन्न होती है। हर कलाकार के एक अपनी विशेषता होती है जो उसे अन्य दूसरों से भिन्न बनती है किसी भिन्नता के आधार पर ही भारतीय शास्त्रीय संगीत में अलग-अलग घराने निर्मित हुए तथा सभी घराने अपनी अलग-अलग विशेषताओं तथा स्वर् लगाव के कारण ही अस्तित्व में आए। स्वर लगाव केवल अनिवार्य नहीं है बल्कि स्वरों का स्पष्टतया उच्चारण भी अति आवश्यक है।[314] पंडित छन्नूलाल मिश्रा जी की गायन शैली में स्वर लगाव स्पष्ट होने के साथ-साथ भाव पक्ष से भी परिपूर्ण होता है, इस तत्व पर उन्होंने विशेष तौर पर ध्यान दिया है, की स्वर ऐसा हो जिससे गीत की छवि श्रोताओं के हृदय में अंकित हो जाए यदि स्वर हृदय स्पर्शी होगा तभी उसकी भावपूर्ण अभिव्यक्ति कलाकार द्वारा संभव है।

ऐसे ही विशेष गुणों आप अपने शिष्यों में प्रसारित करते हैं तथा सहज भाव से उन्हें शिक्षा प्रदान करते हैं।स्वरों को कहां कितना खोलना है,कितना बंद करना है, स्वर पर किस प्रकार वजन देना है, तथा कैसे मींड, गमक, मुर्की आदि का प्रयोग करना है, यह सारी क्रियाएं आप शिष्यों को स्वर् विस्तार तथा स्वर् लगाव के अंतर्गत

[314] पंडित साजन मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

समझाते हैं ।अंतरे की उपज, स्थाई की उपज, किस प्रकार होगी या स्वर् विस्तार तथा भावुकता पूर्ण प्रदर्शन अपने पिता के साथ अभ्यास से ग्रहण किया, अब जैसे एक-एक पंक्ति को पिताजी गाते थे और हम उनके पीछे-पीछे दोहराते थे इस प्रकार धीरे-धीरे अपने ज्ञान अपने कलात्मक सोच तथा अपनी उपज को बढ़ाते गए।

संगीत में साधना का महत्व

कवि वृंद द्वारा एक प्रसिद्ध एवं सिद्ध कहावत है—

"करत करत अभ्यास से जड़मति होत सुजान
रसरी आवत जात से सिल पर परत निसान"[315]

कठिन परिश्रम एवं अभ्यास मूलक तत्व मानव को परिपक्व एवं पूर्णता प्रदान करता है। जीवन में एक निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठोर परिश्रम तथा लगन निष्ठांत आवश्यक तत्व है ।[316]शास्त्रों में कहा गया है 'ईश्वरीय देन अच्छे गुरु का मार्गदर्शन तथा कठिन साधना हो तो ऐसा विद्यार्थी निश्चित रूप से पारंगत होता है। घरानेदार परंपरा में इस तथ्य पर पूर्ण रूप से विचार किया जाता है तथा अक्षरतः पालन किया जाता है। एक ऐसी अभ्यास विधि जिसमें कड़े अभ्यास का संकल्प गुरु द्वारा सिखाया जाता है। इस क्रिया में कहा जाता है कि व्यक्ति जीवन में अगर कर "चिल्ला" अभ्यास कर ले तो वह कलाकार बन जाएगा एक "चिल्ला" 40 दिन तक 8 घंटे का

[315] ग्रंथ नीति के दोहे (वृन्द)

अभ्यास यह सारे तथ्य इसी तत्व की ओर इशारा करते हैं कि अभ्यास ही सफलता की कुंजी है।

पंडित छन्नूलाल मिश्र जी कहते हैं "रियाज के दौरान भगवान के प्रति हृदय में विशेष आस्था होनी चाहिए तथा गुरु के चरण का ध्यान होना चाहिए गुरु का कर्तव्य है की शिष्य को इस प्रकार तराशे,पारंगत करें कि शिष्य स्वयं की कमजोरी को पहचान कर अपने कंठ संस्कार को बनाए।हमें खुद का एक अनुभव है कि हमारे गुरु ने हमको ऐसी तालीम तथा शिक्षा प्रदान की है कि हमने जीवन भर राम जी की तस्वीर को सामने रखकर रियाज किया तथा गुरु के आशीर्वचनों का जीवन भर पालन किया तभी हम संगीत का आनंद ले रहे हैं क्योंकि हम जब भी सीखे श्रोता बनाकर सीखे यही प्रयास का प्रथम चरण है"।[317]

राग प्रस्तुतीकरण की संकल्पना

भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का महत्वपूर्ण स्थान है। राग कोई स्वर समुदाय अथवा तर्ज नहीं है, यह स्वयं अपने आप में एक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व है। संगीत शास्त्रों में रागों को अनेक प्रकार से परिभाषित किया गया है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग केवल स्वरों का समूह नहीं है, बल्कि वह एक ऐसी सांगीतिक संरचना है जिसमें निश्चित स्वर, चलन, वादी–संवादी, विशिष्ट स्वर-संगति तथा भावात्मक अभिव्यक्ति का समन्वय होता है। किसी राग के स्वरूप, सौंदर्य और भाव को शास्त्रीय नियमों के अनुरूप श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत करने की प्रक्रिया को **राग प्रस्तुतीकरण** कहा जाता है। राग प्रस्तुतीकरण का उद्देश्य केवल राग के लक्षणों का प्रदर्शन करना

[317] पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्रद्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित सूचना

नहीं, बल्कि उसके अंतर्निहित रस, भाव और कलात्मक गरिमा को प्रभावी रूप से अभिव्यक्त करना भी है।[318]

राग प्रस्तुतीकरण की आधारशिला राग के व्याकरण पर आधारित होती है। प्रत्येक राग का अपना आरोह–अवरोह, वादी–संवादी, पकड़, विशिष्ट स्वर-समूह तथा गायन-समय निर्धारित होता है। कलाकार इन तत्वों का पालन करते हुए अपनी साधना, कल्पनाशक्ति तथा सौंदर्यबोध के माध्यम से राग का विस्तार करता है। इस प्रक्रिया में आलाप, बोल-आलाप, तान, मींड, गमक, खटका, मुरकी तथा अन्य अलंकारों का संतुलित प्रयोग राग के स्वरूप को स्पष्ट और प्रभावशाली बनाता है।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में राग का प्रस्तुतीकरण सामान्यतः विलंबित लय से प्रारम्भ होकर क्रमशः मध्य और द्रुत लय की ओर विकसित होता है। प्रारम्भिक आलाप के माध्यम से राग का स्वरूप स्थापित किया जाता है, तत्पश्चात बंदिश के आधार पर राग का विस्तार किया जाता है। कलाकार राग के भावानुकूल स्वरों का चयन करते हुए कल्पनाशीलता का परिचय देता है, किन्तु वह राग के मूल स्वरूप और शास्त्रीय मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं करता। यही संतुलन राग प्रस्तुतीकरण की सफलता का प्रमुख आधार माना जाता है।

राग प्रस्तुतीकरण में भावाभिव्यक्ति का विशेष महत्व है। प्रत्येक राग का एक विशिष्ट मनोवैज्ञानिक एवं सौंदर्यात्मक प्रभाव होता है। उदाहरणतः राग भैरव में गंभीरता और आध्यात्मिकता, यमन में शांति एवं माधुर्य तथा मालकौंस में गंभीर एवं गूढ़ भावों की अभिव्यक्ति प्रमुख होती है। कलाकार जब स्वर, लय और भाव का

[318]पं. शारंगदेव, *संगीत रत्नाकर*, अध्याय 4 (राग-विवेचन), पृ. 142–151।

समन्वय करता है, तब राग अपने पूर्ण सौंदर्य के साथ श्रोता के हृदय में प्रभाव उत्पन्न करता है।

पंडित शारंगदेव ने *संगीत रत्नाकर* में राग के लक्षणों तथा उसके शास्त्रीय स्वरूप का विस्तार से विवेचन किया है, जबकि पंडित विष्णु नारायण भातखंडे ने आधुनिक युग में रागों के क्रमबद्ध अध्ययन एवं प्रस्तुतीकरण की वैज्ञानिक पद्धति विकसित की। पंडित ओंकारनाथ ठाकुर ने भी राग की भावात्मक अभिव्यक्ति को संगीत की आत्मा माना है। इन संगीताचार्यों के विचार स्पष्ट करते हैं कि राग प्रस्तुतीकरण केवल तकनीकी दक्षता का विषय नहीं, बल्कि साधना, संवेदनशीलता और कलात्मक परिपक्वता का परिणाम है।

संगीत समय सार में राग की परिभाषा दी गई है--

"स्वर वर्ण विशिष्टेन ध्वनि भेदन व पुनः
रंजयते पेन सचिच्तम स रागः सम्भतः सताम।।[319]

अर्थात स्वर और वर्ण अथवा विशेष ध्वनि से सज्जनों के चित्त का रंजन हो वही राग है।

अर्थात एक ऐसी विशेष ध्वनि जो स्वर तथा वर्ण से विभूषित हो जिसके द्वारा जन मन रंजन हो वही राग कहलाता है। प्रत्येक राग का स्वरूप निश्चित होता है जिससे यह जाना जाता है कि किसी राग विशेष में आप अवरोह में कौन-कौन से स्वर

[319] वंदना चौबे गायन के विभिन्न घराने एवं उनकी विशेषताएं संगीत घराना अंक जनवरी फरवरी 1982 पृष्ठ 47

प्रयुक्त होते हैं तथा उन्हें किस प्रकार क्रियान्वित करते हैं। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में जितने भी प्रचलित राग हैं उनमें अनेक रागों के स्वरूपों के बारे में शास्त्रकारों के भिन्न-भिन्न मत है, जिसके कारण प्रायः विद्यार्थी, शिक्षक एवं जिज्ञासुओं को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है उनके लिए यह निश्चित करना कठिन होता है कि प्रचलित राग कौन सा स्वरूप सही है तथा कौन सा स्वरूप गलत है।

विद्वानों ने समस्त मत एवं मतदानों का अध्ययन करके ही सही स्वरूप को स्थापित करने का प्रयास किया है, किंतु वर्तमान काल में आधुनिक संगीतज्ञ अपनी सुविधा अनुरूप रागों के नियमों में उलट फेर करके उसे अपनी कलात्मकता की संज्ञा देते हैं। प्राचीन संगीत के परंपरागत नियमों को बदला जा रहा है, बड़े-बड़े कलाकारों में इस प्रकार की भावना ज्यादा गहरी है, वह इस तथ्य को लेकर चिंतित नहीं है कि जो राग गा अथवा बजा रहे हैं उसका स्पष्ट व, नियमबद्ध स्वरूप सामने रखा जाए और उसका प्रदर्शन ऐसा हो कि राग का मौलिक तत्व नष्ट न होने पाए, परंतु अधिकांश गायक अपनी गले की सुविधा के अनुसार राग का स्वरूप परिवर्तित अथवा नष्ट कर अपने ढंग से गायन करते हैं। जब कोई कलाकार राग प्रदर्शित करता है तो वह इस तथ्य पर कम ही ध्यान देता है कि वह जो राग गा रहा है वह शुद्ध हो तथा मौलिक हो। अधिकांश लोग सीधे तथा सरल राग लेकर गायन आरंभ करते हैं, भारतीय शास्त्रीय संगीत में अगर गुणात्मक तौर पर देखा जाए तो कोई भी राग सरल नहीं है वह बस अपने चलन के कारण कठिन होता जाता है। प्रत्येक राग में स्वरों का लगाव का एक अपना परंपरागत तरीका होता है और स्वरों के के परंपरागत चलन का विशेष महत्व होता है।

"पंडित छन्नूलाल मिश्र रागों को उसके स्वयं के स्वरूप के साथ प्रस्तुत करते हैं तथा राग प्रस्तुतीकरण के समय उसका समय निर्धारण तथा उसका स्वभाव एवं ऐसी

स्वर रचना जिससे राग भाव को पूर्णतः परिलक्षित किया जा सके ऐसे तथ्यों का विशेष तौर पर ध्यान रखते हैं"।

मंच प्रस्तुति करण के दौरान पंडित जी का कोई जोड़ नहीं है आपके कार्यक्रम का आरंभ रागो द्वारा होता है तथा अपने 100 से अधिक राग परंपरागत तरीके से गाए हैं जैसे-[320] राग हंसध्वनि, राग केदार,राग यमन,काफी, मिश्र काफी, राग नंद,दरबारी,तोड़ी, भैरव,खमाज, हमीर,मारवा,मुल्तानी,श्री,मेघ,मारु बिहाग, कलिंगड़ा,बसंत, बहार, जोग, वृंदावनी सारंग,छायानट,भटियार, शुद्ध कल्याण, राग पूरिया, कोमल ऋषभ आसावरी, गोरख कल्याण, भीमपलासी, दुर्गा, गुर्जरी तोड़ी, मालकोश, कौशिक कान्हड़ा बैरागी, ललित, अनेक रागों को आपने अपने कार्यक्रम के दौरान परंपराओं का पालन करते हुए प्रस्तुत किया है, तथा बनारस के चारों पट के गायकी तथा किराना घराने की परंपरा को एकसार करने का नवीन कीर्तिमान स्थापित किया है।

किराना घराने के ख्याल गायन शैली की परंपरा के उन्नतशील प्रचारक के रूप मे -

किराना घराना अनेक गायक एवं वादकों का घराना रहा है इस घराने में अनेक प्रख्यात कलाकारों ने सुनहरे हस्ताक्षर दिए हैं। पंडित छन्नूलाल मिश्र ने अथक प्रयासों के माध्यम से किराना गायन शैली को विशिष्टता प्रदान की है उनके समर्पित प्रयासों के कारण किराना का ख्याल गायन प्रतिष्ठित स्तर पर है। आप चारों पट के गायन में प्रवीण है, उपशास्त्रीय गायन आपकी पहचान है, परंतु आप शास्त्रीय तथा उपशास्त्रीय दोनों ही गायकी को समान स्थान प्रदान करते हैं। आपके अनुसार

[320] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

गायकी की मिठास एवं भाव का संयोजन आपके दोनों ही प्रकार की गायकी में विद्यमान है ।अन्य भी ख्याल गायक हैं परंतु आपकी गायकी में अन्य कलाओं का समन्वय होते हुए भी ख्याल की मधुरता विशेष रूप से दृष्टिगत होती है और यही अनुठापन आपको अन्य कलाकारों से भिन्न बनाता है। आपकी गायकी मे रस ,भाव सौंदर्य ,मिठास आदि का उचित संतुलन है।

आपकी गायन शैली में बनारस तथा किराना दोनों ही घरानों का सम्मिश्रण है।

आप अनेक विधाओं में सिद्धहस्त हैं, उनमें से एक ख्याल गायन शैली भी है। आपने अनेक शैलियों का प्रचार करते हुए ख्याल गायन शैली काभी प्रमुखता से प्रचार प्रसार किया। किराना घराना की बंदिशें आप उन्मुक्त तरीके से प्रेषित करते हैं तथा एक प्रखर प्रचारक के रूप में एक पल के लिए भी आप अपने लक्ष्य से नहीं भटके और आज अपने लक्ष्य को इसी निरंतरता के साथ प्राप्त किया है, तथा किराना घराने के गायन शैली संगीत जगत में आपके प्रयासों से प्रतिष्ठित हुई।

किराना घराने में और भी कई प्रसिद्ध गायक हुए जैसे पंडित भीमसेन जोशी, उस्ताद रजब अली खान,सवाई गंधर्व आदि, इन प्रतिष्ठित कलाकारों ने भी संपूर्ण नियमावली का पालन करके किराना घराने की देखरेख की। पंडित जी के प्रथम गुरु "उस्ताद गनी खाँ" किराना घराने के प्रतिष्ठित कलाकार थे, तथा दरभंगा दरबार में राज गायक के पद पर सुशोभित थे,उनकी शिक्षा दीक्षा के कारण ही आपने किराना घराने की ख्याल परंपरा को अपनाया तथा गुरु की आज्ञा का अक्षरतः पालन किया और आपके महत्वपूर्ण योगदान से आपने इस घराने को विश्व स्तर तक प्रतिष्ठित किया है।

आध्यात्म एवं संगीत का उचित संयोजन

भारतीय संस्कृति में संगीत और अध्यात्म का संबंध अत्यंत प्राचीन, गहन तथा अविभाज्य माना गया है। भारतीय चिंतन परंपरा में संगीत को केवल मनोरंजन का

साधन नहीं, बल्कि आत्मा की शुद्धि, ईश्वर की उपासना तथा आत्मानुभूति का प्रभावशाली माध्यम स्वीकार किया गया है। यही कारण है कि प्राचीन काल से ही संगीत को योग, साधना तथा आध्यात्मिक चेतना के साथ जोड़ा गया है। भारतीय मनीषियों का विश्वास रहा है कि जब स्वर, लय और भाव का समन्वय पूर्ण निष्ठा एवं एकाग्रता के साथ होता है, तब संगीत साधक को आत्मिक शांति तथा परम चेतना के निकट ले जाता है।

भारतीय दर्शन में **'नाद ब्रह्म'** का सिद्धांत संगीत और अध्यात्म के संबंध का मूल आधार है। इस सिद्धांत के अनुसार सम्पूर्ण सृष्टि नाद से उत्पन्न हुई है और वही नाद ब्रह्म का स्वरूप है। जब साधक संगीत की साधना करता है, तब वह केवल स्वरों का अभ्यास नहीं करता, बल्कि उस अनाहत नाद की अनुभूति का प्रयास करता है, जिसे आध्यात्मिक साधना का सर्वोच्च लक्ष्य माना गया है। इसीलिए भारतीय शास्त्रीय संगीत में रियाज़ को साधना का रूप दिया गया है।[321]

वैदिक काल में सामवेद के मंत्रों का गायन संगीत और अध्यात्म के अद्वितीय समन्वय का प्रमाण प्रस्तुत करता है। यज्ञ, उपासना तथा धार्मिक अनुष्ठानों में मंत्रों का सस्वर उच्चारण केवल धार्मिक विधि नहीं था, बल्कि मन, वाणी और चेतना को एकाग्र करने का माध्यम भी था। आगे चलकर भक्ति आंदोलन के संतों—कबीर, सूरदास, मीराबाई, तुलसीदास तथा गुरु नानक—ने संगीत को ईश्वर-प्राप्ति का सरल और प्रभावी मार्ग बनाया। उनके भजन और पद आज भी भक्तिभाव एवं आध्यात्मिक अनुभूति के श्रेष्ठ उदाहरण माने जाते हैं।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रत्येक राग का अपना विशिष्ट भाव और मनोवैज्ञानिक प्रभाव माना गया है। जब कलाकार पूर्ण तन्मयता के साथ किसी राग का

---

[321] पं. शारंगदेव, *संगीत रत्नाकर*, अध्याय 1, पृ. 11–18।

प्रस्तुतीकरण करता है, तब वह स्वयं भी आध्यात्मिक आनंद का अनुभव करता है और श्रोताओं को भी उसी भावलोक में ले जाने का प्रयास करता है। यही कारण है कि संगीत का उद्देश्य केवल कानों को सुख देना नहीं, बल्कि मन को निर्मल करना, चित्त को स्थिर करना और आत्मा को परमात्मा से जोड़ना भी है।

पंडित जी कहते हैं "जब संगीत में आध्यात्म को संयोजित किया जाएगा, तो कभी हानि नहीं होगी।[322]
"भगवत गीता" के आठवें अध्याय में भगवान श्री कृष्ण ने अपने स्वरूप अर्थात जीवात्मा को ही आध्यात्म कहा है।

"परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते"

अर्थात आध्यात्मिक का शाब्दिक अर्थ है- अपने भीतर के चेतन तत्व को जानना या आत्मप्रज्ञ होना। आध्यात्म की अनुभूति वास्तव में समस्त प्राणियों में निरंतरता प्रदान करती है, क्योंकि स्वयं की खोज हर कोई कर रहे हैं प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष, रूप मे यह चेतना का अध्ययन ही आध्यात्म का विषय है ।यही परमार्थ ज्ञान है, चिन्मय में सत्ता का ज्ञान है।आध्यात्मिक जीवन जीने का अर्थ है 'हमारे गुण, धर्म, कर्म,स्वभाव तथा संपूर्ण व्यक्तित्व में परिवर्तन।
आध्यात्मिक उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए भी संगीत एक सशक्त माध्यम है तथा संगीत एक ऐसी दिव्या कला है,जिसकी शरण में आते ही साधक का लक्ष्य पूर्ण हो जाता है।यह अमूल्य निधि तथा अटूट परंपरा एक शक्तिमान स्तंभ की भांति एक सुदृढ़ व्यक्तित्व का निर्माण करती है। पंडित जी के पारिवारिक वातावरण तथा जीवन यात्रा में आध्यात्मिक "ब्रह्म स्वरूप गुरु महाराज"का योगदान मिला उनके

[322] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार से उतरित

सानिध्य के फलस्वरूप पंडित जी अध्यात्म तथा संगीत के पवित्र संगम बन गए। उनके गायन तथा व्यक्तित्व में जिस दिव्यता ने प्रवेश किया उसने पंडित जी को "संगीत संत" के रूप में आसीन किया है।अपने गुरु महाराज के वचन अनुसार की आध्यात्मिकता का अभ्यास करने के लिए अतिरिक्त परिश्रम अथवा विशेष प्रशिक्षण आवश्यक नहीं है बस अपने अंतर्मन तथा अपने विचारों को गुरु मार्ग का अनुयाई बना लेना चाहिए। जब मैं मंच पर गाता हूं तो अपने शब्दों से श्रोताओं को भी यह तथ्य समझने का प्रयास करता हूं कि यह विषय अत्यंत महत्वपूर्ण है तथा हमारा जीवन इससे गहराई से जुड़ा हुआ है।[323]

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में यह कहां जा सकता है कि पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी ने जीवन की सांगीतिक यात्रा के दौरान अनेक प्रकार की भूमिका का निर्वहन करते हुए प्राचीन तथा पारंपरिक कलाके सारथी के रूप में उत्कृष्ट भूमिका निभाई है। वह योग्य गुरु, प्रबुद्ध चिंतक, निस्वार्थ प्रचारक, संगठन कर्ता एवं उच्च कोटि के प्रयोगकर्ता एवं सफल रचनाकारों की श्रेणी में उनका विशेष स्थान है।इतनी सारी विलक्षणताओं एवं विविधताओं से संपूर्ण होने पर भी उनका व्यक्तित्व साधारण एवं सादगी संपूर्ण है, उनका कृतित्व एवं योगदान संगीत जगत के लिए अनुकरणीय है।

[323] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार से उतरित

4.2 - पंडित छन्नूलाल मिश्र का उपशास्त्रीय गायन

"नादब्रह्मेति विख्यातं नादे सर्वं प्रतिष्ठितम्।
नादेन विना लोके न किञ्चिदपि विद्यते॥"

भारतीय संगीत परंपरा में उपशास्त्रीय संगीत वह सशक्त विधा है, जिसमें शास्त्रीय संगीत की गरिमा तथा लोक-संगीत की सहजता का अद्भुत समन्वय दृष्टिगोचर होता है। ठुमरी, दादरा, कजरी, चैती, झूला, होरी जैसी विधाएँ इस परंपरा की अमूल्य धरोहर हैं। इन विधाओं को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा प्रदान करने वाले कलाकारों में पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्होंने बनारस घराने की **पूरब-अंग ठुमरी** तथा अन्य उपशास्त्रीय विधाओं को अपनी विलक्षण स्वर-साधना, भावाभिव्यक्ति और रागात्मक सौंदर्य के माध्यम से नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया।

पंडित जी की उपशास्त्रीय गायकी का सबसे प्रमुख आधार **पूरब-अंग ठुमरी** है। उनकी ठुमरियों में शब्द और स्वर का ऐसा संतुलन मिलता है जिसमें साहित्यिक सौंदर्य, राग की मर्यादा तथा भावाभिव्यक्ति का अद्भुत सामंजस्य दिखाई देता है। वे प्रत्येक शब्द का उच्चारण अत्यंत स्पष्टता से करते थे तथा बोल-बनाव की शैली के माध्यम से श्रोताओं के समक्ष भावों को सजीव कर देते थे। यही कारण है कि उनकी ठुमरी केवल संगीत नहीं, बल्कि भावानुभूति का माध्यम बन जाती थी।

ठुमरी के अतिरिक्त उन्होंने दादरा, कजरी, चैती, होरी, झूला जैसी उपशास्त्रीय विधाओं को भी विशिष्ट गरिमा प्रदान की। विशेष रूप से काशी की लोक-संगीत परंपरा से जुड़े कजरी और चैती के गायन में उन्होंने शास्त्रीयता और लोक-संवेदना का ऐसा संतुलन स्थापित किया, जो बनारस घराने की प्रमुख विशेषता माना जाता

है। उनकी गायकी में राग की शुद्धता के साथ-साथ लोकभाषा की आत्मीयता भी समान रूप से विद्यमान रहती थी। उनकी गायकी में संगीत केवल स्वरों का विन्यास नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और लोकजीवन का समन्वित स्वरूप था। विशेष रूप से तुलसीदास कृत *रामचरितमानस* के पदों, शिव-स्तुतियों तथा भक्ति-रचनाओं के उनके गायन में आध्यात्मिक चेतना का विलक्षण स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। उनकी प्रस्तुतियाँ श्रोताओं के लिए संगीत के साथ-साथ आध्यात्मिक अनुभूति का भी माध्यम बन जाती थीं।

मानव हृदय विरंजकता के प्रति आसक्त है,जीवन का कोई भी अध्याय किंचित मात्र भी रंजकता से पूर्ण हो तो मानव स्वभाववश अविलंब उस ओर आकर्षित हो जाता है। मानव मन केवल माधुर्य प्रेमी है,तथा पौराणिक ग्रंथो तथा ऐतिहासिक उपलब्ध पुस्तकों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि संगीत मानव समाज की कलात्मक उपलब्धियां और सांगीतिक, सांस्कृतिक परंपराओं का मूर्तिमान प्रतीक है।यह आदिम काल से जन जीवन के आत्मिक उल्लास और सुखानुभूतियों की ललित अभिव्यक्ति का मधुरतम माध्यम रहा है।[324]

शास्त्रीय संगीत के संबंध में --

"गीतम वाद्यम तथा नृत्यं त्रयं संगीत मुच्यते"

गायन, वादन तथा नर्तन की त्रिवेणी ही संगीत है।

इन त्रि विधाओं में संगीत कला को ही सर्वोपरि माना गया। यही वह कला जिसमें रस तथा भाव निष्पादित होते हैं। प्राचीन काल में अनेक प्रकार की गायन विधा प्रचलित हुई। प्रथम शास्त्रीय जो शास्त्र सम्मत तथा नियमों पर आधारित था तथा द्वितीय लोक संगीत जो लौकिक समारोह तथा उत्सवों पर प्रयुक्त होता था जिसका

[324] हरिश्चंद्र श्रीवास्तव संगीत निबंध संग्रह पृष्ठ संख्या 71

मुख्य उद्देश्य केवल लोगों का मनोरंजन करना था । प्रथम धारा "मार्ग"कहलाई तथा दूसरे को "देशी" की संज्ञा दी गई, दोनों का मूलाधार या स्रोत लोक संगीत था,केवल अंतर यही था की प्रथम को संस्कार, परिष्कार तथा शास्त्राधार प्राप्त होने के कारण शास्त्रीय संगीत को उच्च श्रेणी या स्थान प्राप्त हुआ तथा वहीं दूसरी ओर लोक रुचि के अनुकूल विकसित होने के कारण यह सर्वसाधारण में विशेष रूप से लोकप्रिय हुआ। क्योंकि यह लोक संगीत से प्रेरित था लोक संगीत से ही शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति मानी जाती है। उपशास्त्रीय संगीत में अपेक्षाकृत कम नियमों का प्रयोग तथा लोक पुट की प्रधानता के कारण यह प्रचलित हुआ क्योंकि माना जाता है उपशास्त्रीय संगीत की शैलियां जैसे- ठुमरी, टप्पा, कजरी, चैती, होरी, दादरा सब के मूल रूप में लोक संगीत है और वर्तमान में भी इन्हीं रूपों में प्रचलित है।

उप शास्त्रीय संगीत में रागों की शुद्धता से अधिक भाव सौंदर्य एवं रस माधुर्य को महत्व दिया जाता है।उप शास्त्रीय बंदिशें में स्वर् की योजना, लगाव की शैली, रखाव का ढंग, लय की योजना, तालों का चयन शब्दों का कम तथा अधिक प्रयोग इस प्रकार की अन्य की विशेषताएं परिलक्षित होती हैं। इस गायन विधा मे स्वर से ही भावों को स्पष्ट किया जाता है, इसमें श्रृंगारिता की भावना अधिक है, तथा शैली रसीली है ।इसके गीत शैलियों में गंभीर राग प्रयुक्त नहीं होते, संगीत में नियमों का शिथिल प्रयोग संगीत को चमत्कारी एवं विशिष्ट रूप प्रदान करता है, इसमें भाव प्रधान मुर्की, पुकार, बहलावा, सहजता ,हृदयग्राही रस इन क्रियाओं द्वारा कलाकार श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर देता है।

ठुमरी उपशास्त्रीय संगीत की परंपरा के अंतर्गत है,यह मानवीय भावनाओं की कलात्मक सृष्टि है, ख्याल में भावाभिव्यक्ति का जितना सुंदर प्रदर्शन किया जा सकता है, उसका सही रूप ठुमरी है।[325]

---

[325] लक्ष्मी नारायण गर्ग,निबंध संगीत पृष्ठ संख्या 20

गायक अथवा गायिकाओं के अंतर मन में जो भाव उत्पन्न होते हैं उसे,तत्क्षण विभिन्न स्वर समुदाय के माध्यम से ठुमरी, दादरा आदि शैली में व्यक्त करना संभव है। ठुमरी में एक सौंदर्य तत्व है, सौंदर्य वही है जहां प्रतिक्षण नवीनता हो।

शास्त्रकारों के अनुसार- नदी वही होती है परंतु उसमें प्रतिक्षण मचलती हुई लहरिया नवीन होती हैं इसीलिए कला प्रेमी का अंतर मन उनमें सदा ही रमता है। सौंदर्य अनंत है, तथा उसकी अभिव्यक्ति के साधन भी अनंत हैं,सौंदर्य बोध से प्राप्त होने वाला आनंद भी अनंत है ,अतः सौंदर्य और उसकी अनुभूति से प्राप्त होने वाले आनंद के रूपों और प्रकारों पर विचार करने वाला शास्त्र भी अनंत की ओर इंगित करता है और हमें चिंतन करने में समर्थ बनाता है।[326]

* पंडित भातखंडे के अनुसार " ध्रुपद ख्याल, ठुमरी, दादरा, गजल, चैती, मल्हार, होरी कोई भी विधा क्यों ना हो, उसमें स्वर, भाषा, ताल और मार्ग यह चार तत्व अवश्य विद्यमान होते हैं। 'स्वर से तात्पर्य राग पक्ष' 'भाषा से तात्पर्य शब्द'और अर्थ अर्थात विषय भी इसी के अंतर्गत है ताल से तात्पर्य विशिष्ट 'गति' और 'यति' से युक्तता और मार्ग से तात्पर्य अंदाज अथवा चलन से है।[327]

पंडित भातखंडे कहते हैं कि "इस गायन शैली में रागों के नियम आवश्यक नहीं है, यदि कोई ठुमरी राग खमाज में है तो, उसमें भी गायक भैरवी, पीलू, सिंध तथा बिहाग आदि रागों के स्वर प्रयोग कर लेते हैं। यह क्रिया बहुत कर्णप्रिय लगती है इसमें ताने बिखरे हुए फूलों की भंति प्रतीत होते हैं। यद्यपि अनेक विद्वानों ने ठुमरी को निम्न कोटि का गायन माना है, किंतु ठुमरी ने शास्त्रीय संगीत के रागों के कठिन बंधनों को बंधन मुक्त करके मानवीय संवेदनाओं को सही अर्थ में छूने का प्रयास किया है एवं उसको सर्वसाधारण के योग्य बनाया है। बहुत समय तक ठुमरी का

---

[326] लक्ष्मी नारायण गर्ग निबंध संगीत पृष्ठ संख्या 11

[327] स्व. विष्णु नारायण भातखंडे क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 4 पृष्ठ 50

प्रयोग किया जाता रहा किंतु यदि ठुमरी को कलात्मक दृष्टिकोण से देखें तो यह विशेष विधा है।

स्वर्गीय पंडित विष्णु नारायण भातखंडे ने ठुमरी के प्रति अपने उदगार व्यक्त करते हुए लिखा है कि—

"ठुमरीये गायन गर्हणीय गुष्ठीर्च नाहीं इतकेंच की,
ठुमरी उत्तम रीत्तनें गातां मात्र आलि पहीजे।"[328]

अर्थात ठुमरी का गाना घृणित कदापि नहीं है, सिर्फ इतना ही है कि वह उत्तम रीति से गाई जाए।

ठुमरी एक ऐसा सांगीतिक प्रकार है,जिसे संगीत सभा में प्रायः सभी प्रकार के श्रोता पसंद करते हैं। यह श्रृंगार युक्त चपल तथा चंचल गायन शैली है, इसमें साहित्य तथा शब्दों के भाव विभिन्न प्रकार के प्रकट किए जाते हैं यह रसात्मकता से परिपूर्ण होता है इसमें श्रृंगार रस के अलावा शांत तथा करुण रस में प्राप्त होते हैं यह एक श्रृंगार तथा भाव प्रधान गायकी है तथा इस गायन शैली में कलाकार अपनी कलात्मकता के द्वारा, अपनी उपज एवं रचनात्मक के द्वारा ठुमरी,दादरा को प्रभावशाली बनाता है।[329]

ठुमरी के तत्व एवं उनका सांगीतिक विवेचन

ठुमरी को परिभाषित करते हुए पंडित जी बताते हैं, "ठुमरी दो शब्दों के संयोग से बनी है ठुम -री । 'ठुम'का अर्थ है -ठुमकती हुई चाल,और 'री' का अर्थ है -रिझाना।" शाब्दिक अर्थ के दृष्टिकोण से यह अर्थ सही प्रतीत होता है। [330]

---

[328] क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 4 पंडित विष्णु नारायण भातखंडे पृष्ठ संख्या 50

[329] लक्ष्मी नारायण गर्ग निबंध संगीत पृष्ठ संख्या 20

[330]पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

संगीत का प्रयोजन सांसारिक चिंताओं में दबे हुए या थके हुए मानव को अनंत चिंताओं से मुक्त कराकर अलौकिक सुख की प्राप्ति करना ही है, जिसमें यह गुण व्याप्त हो उसे ही भली भांति गाया या संगीत सम्यक कहना चाहिए, अन्यथा वह कोई गीत अथवा गान नहीं है, केवल कोलाहल मात्र है भले ही वह कोई शैली अथवा प्रकार क्यों ना हो। स्वर, भाषा, ताल व मार्ग का आश्रय लेकर गीत मानव की भावना को व्यक्त करना जानता है, वादन गीत का सहायक होता है तथा नृत्य उस भावना का मुहूर्त रूप होता है, इसलिए सांगीतिक परिभाषा के अनुसार गायन, वादन तथा नृत्य का परस्पर संयोग ही संगीत है।

भारतीय संगीत का इतिहास एक लंबी श्रृंखला प्रस्तुत करता है। वैदिक काल से लेकर मध्यकाल तथा आधुनिक काल तक भारतीय संगीत ने अनेक प्रकार की गायन शैलियों तथा विविध प्रवृत्तियों एवं संस्कृतियों से प्रेरणा ली है।[331] भारत का शास्त्रीय संगीत धर्म तथा राज्य संरक्षण के दो चक्र पर घूमता रहा है, दोनों ही रूढ़ियों ने जब संगीत को क्रमशः रूढ़ीगत बंधनों में जकड़ना प्रारंभ किया, तो प्रक्रिया स्वरूप ठुमरी गायन का जन्म हुआ।बहुत प्राचीन समय से ही उत्तर भारत में कई विभिन्न प्रकार की गायन शैलियों प्रचलित रही हैं जैसे- ध्रुपद धमार,ख्याल आदि इन्हीं क्रम में जब शास्त्रीय संगीत दो भागों में बंटा ,तो शास्त्रीय और उपशास्त्रीय के प्रकारों में उपशास्त्रीय संगीत के वर्ग में ठुमरी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। ठुमकने या नाच के साथ जुड़ी यह शैली आज विशेष रूप से लोकप्रिय है। इसका जन्म स्थान लखनऊ दरबार माना जाता है, शब्दों का मूल्य महत्व यहां बढ़ने के साथ ही शब्दों को श्रृंगारिक ढंग से सजाया जाना, इस गायन के प्रमुख विशेषता है ।सामान्य रूप से भैरवी, खमाज, पीलू, काफी, गारा, तिलंग आदि रागों में ठुमरियां

---

[331] शत्रुघ्न शुक्ला ठुमरी की उत्पत्ति विकास और शैलियों पृष्ठ संख्या 32

गाई जाती हैं। शुद्धता की दृष्टिकोण से इसे थोड़ा कम आंका जाता है, इसलिए ठुमरी में मिश्र खमाज, मिश्र, काफी, मिश्र पीलू आदि रागों के नाम चलन में रहते हैं। गायन के संबंध में बनारस के पंडित जालपा प्रसाद मिश्र का कहना है कि "ठुमरी गाते समय स्वर में माधुर्य, लोच और नृत्य का अनिवार्य अंग है। नृत्य और अभिनय युक्त इस संगीत को नृत्य ,संगीत अथवा अभिनय संगीत के संज्ञा प्रदान कर सकते हैं, ठुमरी के जिन भावों को एक नर्तक जैसे अपने हाव-भाव से व्यक्त करता है, उसी प्रकार एक गायक उन्ही भावों को अपने कंठ द्वारा व्यक्त करता है जो की थोड़ा मुश्किल काम है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से ठुमरी की परंपरा पर अगर ध्यान दें, तो पाते हैं कि भारतीय संगीत के इतिहास में गीत के साथ नृत्य की परंपरा रही है।

ठुमरी उत्पत्ति एवं विकास-

नृत्य और गीत का संबंध प्राचीन काल से चला आ रहा है परंतु प्राचीन काल में ठुमरियां नृत्य गीत नहीं थी, वह विशेषतः लोक संगीत थे जो विशेष प्रकार के सरल एवं रसात्मक गीत थे, जिनमें जनसाधारण लोगों की भावनाएं व्यंजित होती थी, उनका प्रभाव जनसाधारण पर विशेष रूप से पड़ता था, निस्संदेह जब यह गीत, नृत्य के साथ गाए जाते थे तो बहुत ही प्रभावशाली होते थे, नृत्य के साथ गायन से इनमें अधिक प्रभावोत्पादक क्षमता होती थी और इस प्रकार के गायन से नृत्य की गतियों के प्रभाव उत्पन्न होने लगे और यह ठुमरी के निकट हो गई। इसका अर्थ यह है इस प्रकार से ठुमरी के उद्भव की भूमिका तैयार हो गई और बाद में ऐसी ठुमरियां रची गई जो पूर्णतया नृत्य की गतियां के साथ-साथ गाई जा सके जिनमें उनके भावात्मक पक्ष का स्पष्टीकरण हो सके।[332] "ठाकुर प्रसाद" जो कथक नृत्य

[332] उपशास्त्रीय संगीत अंक जनवरी 2003 पृष्ठ संख्या 93

के "जन्मदाता एवं प्रवर्तक" माने जाते हैं वह लखनऊ दरबार में नियुक्त थे, तथा वह नवाब के नृत्य के पूज्य गुरु भी थे। इन्हीं के प्रतिभाशील पुत्र बिंदादीन महाराज थे। ठुमरी और कत्थक नाच का "चंदन और पानी" के समान संबंध रहा है,और इस गायन शैली ने दरबारों का आश्रय पाकर बहुत उन्नति की।[333]

वस्तुतः ठुमरी का विकास अवध के दरबार में हुआ, इसलिए दरबार का विलास मे वातावरण तो पोषक हुआ ही साथ ही रीतिकालीन काव्य का इस पर विशेष प्रभाव पड़ा। गीत के बोल के साथ विभिन्न अंगों द्वारा अभिनय से उन भावों को प्रकट करना ठुमरी के लिए आवश्यक था, इसी कारण से नर्तकियों ने भी इसके प्रचार प्रसार में विशेष भूमिका निभाई। समय के साथ-साथ कला तथा संस्कृति में भी लोक रुचि के अनुसार परिवर्तन होता है, तथा कला और संस्कृति में वृद्धि होती है।ध्रुपद से धमार, ख्याल, ठुमरी दादरा, टप्पा इत्यादि शैलियों भी इसी परिवर्तन का परिणाम रहे हैं। शब्द अनुकूल अर्थ रूप से ही स्पष्ट है कि ठुमरी में नृत्य और अभिनय का संबंध स्पष्टतया दृष्टिगोचर होता है।

कथक एवं ठुमरी का संबंध

उपरोक्त विवरण से यह पूर्णतया स्पष्ट है कि नृत्य के साथ गाए जाने वाले गीतों की परंपरा प्राचीन काल से रही है, जिसमें [334]कथक नृत्य शैली से ठुमरी का घनिष्ठ संबंध रहा है। उत्तर भारत में वेश्याओं, भांडों तथा कथकों द्वारा ठुमरी गायन के साथ कथक नृत्य शैली के माध्यम से उसकी भाव भी व्यक्ति की परंपरा रही है। यह प्रथा कथक नर्तक वर्तमान काल में भी प्रसारित करते हैं। ब्रह्मपुराण भरतनाट्

[333] श्रीमती लीला कारवल ठुमरी परिचय पृष्ठ संख्या 18

[334] श्री के एस जैन कत्थक नटवरी नृत्य पृष्ठ संख्या 60

शास्त्रम, चतुर्भार्णी, दशरूपक तथा संगीत रत्नाकर आदि ग्रंथो से यह प्रमाणित है। आचार्य नंदीकेश्वर लिखते हैं -

कथक नृत्य में लयकारी एवं भाव प्रदर्शित करने की अलग-अलग शैलियां हैं जिन्हें दो भागों में विभक्त किया गया है-

1.सात्वती **(Classical**) जिसमें आकार, प्रकार, रूप विन्यास, सौंदर्य का प्रधान्य हो वह सत्वती वृत्ति अथवा शैली कहलाती है।[335]

2. कौशिकी **(Romantic)** जिसमें भाव की सूक्ष्मता और सुकुमारता का प्रधान्य हो, वह कौशिकी वृति अथवा शैली कहलाती है इसमें भाव अभिव्यक्ति की प्रधानता रहती है। 'कथक'या 'कथिक' शब्द जाति सूचक संज्ञा है जो कि गायन, वादन तथा नर्तकों की जाति विशेष के लिए व्यवहृत होता है। "कथक" शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के 'कथ' धातु से हुई है, जिसका अर्थ "कथाका"र अर्थात "कथन"करने वाला होता है। "कथन करें सो कथक कहिए" यह लोकोक्ति भी बहुत प्रसिद्ध है। ठुमरी का जन्म राज दरबारों तथा नवाबों के आश्रय में होने के कारण इसमें श्रृंगार रस की प्रधानता है।

ठुमरी का इतिहास बहुत प्राचीन है, जो अपनी लोच, कोमलता एवं स्वर माधुर्य के लिए प्रसिद्ध है। ठुमरी से संबंधित उल्लेखों के अंतर्गत ब्रज क्षेत्र में भी "रास" का आरंभ "भगवान श्री कृष्ण" से उद्धृत है। रस का सर्वप्रथम प्राचीन उल्लेख हरिवंश, विष्णु ब्रह्मा वैवर्त,कथा भागवत पुराणों में मिलता है।हरिवंश पुराण में इसे "हलिसक" या "छालिक्य गंधर्व" कहा गया है। यह सामूहिक रूप से गीत वाद्य

[335] श्री के एस जैन कत्थक नटवरी नृत्य पृष्ठ संख्या 60

सहित एक मंडल अथवा घेरे में किया जाता था। छालिक्य शब्द का अर्थ है- छलयुक्त शब्दों का प्रयोग।[336]

"हलीसक नृत्य" का विकसित रूप भागवत पुराण में मिलता है इसमें दशम स्कंध के 29 से 33 तक के पांच अध्याय में रास का वर्णन "रास पंचाध्यायी" के नाम से प्रसिद्ध है, जिसमें राधा और गोपियां तथा श्रीकृष्ण की विभिन्न लीलाओं का विस्तृत वर्णन है, इसलिए कृष्णा उपासक वैष्णव भक्तों के रास में गान और नृत्य के साथ कृष्ण की लीलाओं का भी अभिनय किया जाता है।

श्री प्रभु दयाल मित्तल के शब्दों में "राधा कृष्ण की दान, मान, चीर हरण आदि समस्त संयोगात्मक लीलाओं के माधुर्य भाव के चरम परिणति "रास" के रूप में हुई है, इसलिए इसे "रासलीला"कहा जाता है।

ठुमरी के बारे में पंडित जी कहते हैं कि "इंद्र देवता की सभा में नर्तकियो एवं गंधर्वों द्वारा भी प्रस्तुत किया जाता था, वहां से भगवान श्री कृष्ण इसे भूलोक पर ले आए और उन्होंने ही ब्रज की गोप गोपिकाओं मे प्रचार प्रसार किया। भगवान कृष्ण को मध्य में खड़ा करके दो सखियां हाथों में हाथ डालकर जिसने विधा को गाती थी, उसकी "असारित" जो वर्तमान में भाव नृत्य में प्रचलित है, तथा दूसरा "हल्लीसक" जिसमें सखियां बैठकर भगवान श्री कृष्ण को सामने बिठाकर भाव व्यक्त करके गाती थी इस गीत विधा की तुलना वर्तमान "गतभाव" ठुमरी से की जा सकती है।

"कथक नृत्य" को "नटवरी नृत्य" भी कहा जाता है इसमें 'नटवर' शब्द श्री कृष्ण को इंगित करता है। रासलीला में जिस प्रकार के बोल तथा कवित्त प्रयोग किए जाते हैं, वह कथक नृत्य में भी प्रचलित हैं।पद संचलन, मंडलों तथा कृष्ण लीला संबंधी गत भावों में समानता है।कथक नृत्य और रासलीला में विविध तबले की बोलो, संयुक्त

---

[336] पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्रद्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित सूचना

पदों प्रमीलू तथा तिहाईयां आदि के प्रयोग में भी समानता होती है।[337] संस्कृत काव्य नाटकों तथा जैन साहित्य में भी 'रास' का उल्लेख प्राप्त होता है।

ठुमरी के अंतर्गत निहित अवयव

ठुमरी अनेक तत्वों के संयोग से बनी है जिनमे काव्य, भाषा, विषय, ताल, लय,राग आदि ऐसे तत्व हैं जिनके आधार पर ही ठुमरी की रचना हुई है।
निबद्ध गान के स्वर, विरूद, पद, तेनक, पाट, ताल यह 6 अंग बताए गए हैं, इनमें गुण वर्णन व प्रशंसात्मक सार्थक शब्द, विरुद,अन्य विषयों वाले सार्थक शब्द, पद, मंगल सूचक निरर्थक शब्द, तथा वाद्य पर बजाए जाने वाले निरर्थक शब्द पाट है, यदि पंडित शारंग देव और सिंह भुपाल ने ध्वनि व्यंजन स्वर नामों को भी शब्द के अंतर्गत रखा है, परंतु स्वरों का विशुद्ध ध्वनि रूप शब्द के अंतर्गत नहीं आता, इस प्रकार देखा जाए तो वास्तव में स्वर् तथा ताल को छोड़कर शेष विरुद
पद, तेनक, पाट यह चार अंग सार्थक या निरर्थक के ही भेद पात्र हैं अतः निबद्ध गीतों की संरचना में 'पद' का विशेष तथा महत्वपूर्ण योगदान है।

काव्य – निबद्ध गान में प्रयुक्त होने वाले 6 अंगों में से विषय की दृष्टि से ठुमरी का काव्य 'पद' की श्रेणी में आता है। किसी भी काव्य में भाषा तथा विषय यह दो प्रमुख तत्व प्रमुख रूप से विद्यमान रहते हैं ,अतः ठुमरी की पद रचना या काव्य का पर्यवेक्षण भाषा तथा विषय इन दोनों दृष्टियों से करना अनिवार्य होता है। ठुमरी का "काव्य" अथवा "पद" का सबसे बड़ा गुण उसका भाव एवं कल्पना तत्वों से संपन्न होता है। इसमें शब्द योजना लयात्मक एवं प्रवाह पूर्ण होते हैं तथा राग तत्त्व की

[337]डॉ. शत्रुघ्न शुक्ल ठुमरी की उत्पत्ति, विकास और शैलियाँ

प्रधानता होती है, इसकी वाणी रसात्मक होती है, संगीत के अंतर्गत पद शब्दों का संयोजन काव्य के रूप में होता है, इसीलिए पद को गीत का मुख्य अंग माना जाता है। ठुमरी का काव्य भाव नहीं होता अर्थात ठुमरी की बंदिश किसी काव्य के गुणो से सुशोभित कविता के समान पढ़ने पर दर्शकों तथा पाठकों को काव्य का आस्वादन नहीं प्राप्त हो सकता। उदाहरण के लिए राग खमाज में बनारसी ठुमरी-

"ना मानूंगी ना मानूंगी ना मानूंगी उनके मनाएं बिना"

यदि उपरोक्त ठुमरी को सिर्फ काव्य रूप में पढ़ा जाए तो इस काव्य में उपस्थित भाव को श्रोता अनुभव नहीं कर सकता। यदि ठुमरी को गेय रूप में तथा भावात्मक रूप से प्रदर्शित किया जाए तथा संपूर्ण भाव गायकी के माध्यम से व्यक्त किया जाए,तो 'नायिका के अनुसार ना मानने का जो भाव है' वह विभिन्न स्वरों के माध्यम से ही प्रत्यक्ष हो सकता है।[338]

भाषा – भाषा भावना को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है। हमारे जीवन के प्रतिक्षण में जो भी घटनाएं घटित होती हैं, उसे हम भाषा द्वारा ही व्यक्त करते हैं। विभिन्न भावों को व्यक्त करने के लिए मानव शब्दों का आश्रय लेता है। भाषा के दो मुख्य भेद हैं -पहली बोली तथा दूसरी भाषा ,साधारण जन समुदाय द्वारा बोली जाने वाली देशी भाषा को बोली तथा प्रबुद्ध सुसंस्कृत व्यक्तियों द्वारा व्यक्त शब्दों को भाषा कहा जाता है। बोली का सीधा संबंध जनमानस विशेष कर ग्राम संस्कृति से होने के कारण उसकी प्रकृति सरल, स्वच्छंद एवं स्वाभाविक होती है। इन गुणों के कारण भाषा की तुलना में बोली अधिक माधुर्यपूर्ण तथा सरल होती है और वह

[338] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

सर्वजनप्रिय होती है। मैथिल कोकिल विद्यापति ने भी अपने ग्रंथ "कीर्तिलता" में कहा है कि -
"देसील बयना सब जन मिटठा" अर्थात देशी बोली सबको मीठी लगती है।[339]

यद्यपि संगीत के क्षेत्र में संगीत और काव्य अलग-अलग तत्व है संगीत में काव्य का संयोग होने पर या अधिक लोगों को प्रभावित करने की क्षमता रखता है, इसलिए भारतीय संगीत में वाद्य संगीत से ज्यादा काव्ययुक्त संगीत को विशेष महत्व दिया गया है। ठुमरी का काव्य वाच्य नहीं ,श्रव्य है। तात्पर्य यही है कि ठुमरी की रचना या बंदिश किसी काव्य के गुणों से सुशोभित कविता के समान पढ़ने पर वह रस की निष्पत्ति नहीं करेगा परंतु उस स्वर और ल के साथ गाया जाएगा तो वह एक मनमोहक सौंदर्य प्रस्तुत करेगा।

विषय – मनुष्य की भावनाओं को अभिव्यक्त करने में ठुमरी की रचनाओं का विशेष योगदान रहा है। कैशीकी वृत्तात्मक गीतभेद होने के कारण ठुमरी गीतों द्वारा स्त्रियोंचित श्रृंगारिक भावनाओं की अभिव्यंजना ठुमरी रचयिताओं का मुख्य उद्देश्य था, फलतः ठुमरी गीतों के शब्द रचना अधिकतर श्रृंगारपरक रही तथा उसमें प्रायः किसी स्त्री की प्रणय अथवा विरह की अभिव्यंजना दृष्टिगत होती है। इससे पता चलता है कि ठुमरी गीतों का काव्य स्त्री उचित व श्रृंगार प्रधान होता है श्रृंगार के दो भेद हैं -संयोग तथा वियोग। जिनमे क्रमशः संयोग श्रृंगार तथा विप्रलंभ श्रृंगार भी कहा जाता है। मिलन ,प्रणय, प्रियतम का संग व हास -विलास आदि संयोग श्रृंगार

[339] https://share.google/lVRSTCzRhFw4YR5Y3

तथा प्रियतम से मान,विछोह व प्रवासजन्य वियोग आदि विपलंभ श्रृंगार के विषय हैं।[340]

ठुमरी में दोनों ही पक्ष से संबंधित गीतों की प्राप्ति होती है ज्यादातर बंदिशें श्रृंगार रस प्रधान होती हैं इसका मुख्य कारण यही है, कि प्राचीन समय में ठुमरी प्रायः सामंतो, राजाओं तथा नवाबों के दरबार में गाई जाती थी और वह श्रृंगार रस प्रिय थे।

भावनाओं के दृष्टिकोण से विभिन्न ठुमरी में प्रेम,भक्ति, अनुराग, हर्ष,शोक मान उपालंभ, आशा, निराशा इत्यादि अनेकों स्थाई तथा अस्थाई मनोभावों के अभिव्यक्ति दृष्टिगत होती हैं, इन सभी मनोभावों के मूल में या तो सुख या दुख की अनुभूति अंतर्निहित होती है। दुख की अनुभूति करुणा का विषय होने के कारण वियोग जन्य दुख की अभिवंजना के लिए करुण रस का आश्रय लिया जाता है, किंतु वहां भी प्रधानता श्रृंगार रस की ही होती है।

ताल – भारतीय संगीत का प्राण ताल है ।साहित्य एवं संगीत का यह एक ऐतिहासिक महत्वपूर्ण सत्य है ,कि साहित्य में छंद एवं संगीत में ताल का जन्म एक नैसर्गिक प्रक्रिया के रूप में हुआ है, विभिन्न चालों तथा गतियों को शास्त्रोक्त रूप में बांधने के लिए तालों का निर्माण एक स्वाभाविक तथ्य है।

किस प्रकार का छंद किस प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है तथा वह छंद की अवधि कितने काल में पूरी होती है, गणना के अनुसार उसके अनुरूप ही तालों का निर्माण किया गया जो मानव मस्तिष्क की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। वैज्ञानिक

---

[340] डॉ. शत्रुघ्न शुक्ल ठुमरी की उत्पत्ति, विकास और शैलियाँ

प्रमाणों भी यह सिद्ध है कि ब्रह्मांड भी एक निश्चित लय, गति से निबद्ध है ।अपने दैनिक जीवन को क्रमबद्ध करने के लिए जिस प्रकार मानव ने वर्ष , माह, सप्ताह दिन को एक निश्चित समय अवधि में निबद्ध कर प्रकृति के साथ अपना समन्वय स्थापित किया ठीक उसी प्रकार संगीत ने भी मानव के कला ज्ञान के लिए तालों का आश्रय लिया।

प्राकृतिक तौर पर लय का जन्म नैसर्गिक है परंतु ताल नैसर्गिक प्रक्रिया नहीं है, ताल का निर्माण मूलतः बौद्धिक है, तथा यह एक गणितीय प्रक्रिया है। लय एक महत्वपूर्ण तत्व है जो संसार के समस्त प्रकार के संगीत में अपना स्थान रखती है। ठाकुर जयदेव सिंह के अनुसार "वैदिक संहिता जब गंधर्व संगीत में विकसित हुई तब ताल का प्रयोग प्रारंभ हुआ होगा ।विद्वानों का यह कथन पूर्णतः उचित प्रतीत होता है कि अनिबद्ध अथवा ताल विहीन संगीत अरण्य अर्थात मानव समाज विहीन संगीत है और निबद्ध यह ताल युक्त संगीत सामाजिक है।

ताल विहीन संगीत मानव के अंतर ह्रदय में उल्लास यह एक प्रकार के उत्तेजना का संचार करने में असमर्थ होता है, अगर बिना ताल के संगीत सुना जाए तो उसमें एक प्रकार की विभक्ति तथा उदासीनता दृष्टिगत होने लगती है जिससे यह सिद्ध होता है कि व्यक्ति को प्रफुल्लित अथवा उत्साहित करने के लिए संगीत में ताल की सार्थक भूमिका है।

लय - लय वह महत्वपूर्ण तत्व है जिसके आधार पर ठुमरी व्यवस्थित है। चाहे बोल बांट हो या बोल बनाव, ठुमरी के दोनों प्रकारों में लय की प्रधानता होती है। लय के मुख्यतः तीन प्रकार माने गए हैं --विलंबित लय ,मध्य लय तथा द्रुत लय

प्राचीन काल से मुख्यतः ठुमरिया मध्य तथा द्रुत में गाई जाती थी ।गति प्रधान ठुमरी मुख्यतः मध्यलय में गाई जाती थी। मध्यलय की ठुमरी में श्रृंगार के संयोग एवं वियोग दोनों पक्षों को दर्शित किया जाता है, जबकि द्रुत लय की ठुमरिया अधिक चपल

होने के कारण केवल संयोग श्रृंगार का ही रूप प्रसारित करती है। ठुमरियों में लयकारी एवं बंदिश की प्रधानता रहती है ।द्रुत लय की ठुमरीयों में ताल विभिन्न लयकारियों के साथ ल़डंत की प्रवृत्ति में निहित होते हैं, जो बंदिश को और भी वह वैचित्र्यपूर्ण एवं रोचक बनाते हैं, जिसे सुनकर श्रोता मंत्र मुग्ध हो जाते हैं। मध्य तथा द्रुत लय में बोल बांट की ठुमरिया ही गाई बजाई जाती हैं। दोनों को विभिन्न लयों में बांटकर ताल के साथ गाने की परंपरा रही है। मध्यलय की ठुमरी में छोटी-छोटी तानों का प्रयोग होता है,तथा ऐसा माना जाता है कि ऐसी ठुमरिया अधिकतर कथक नृत्य के साथ प्रयोग की जाती थी किंतु वर्तमान समय में ठुमरी की मध्यलय में गाने की प्रथम प्रायः विलुप्त सी हो चुकी है। आधुनिक समय में विलंबित में ही ठुमरी गाने की परंपरा है, विलंबित लय में ठुमरी स्वर,शब्द व ताल के पूर्ण समन्वय के साथ ठहराव के साथ गई जाती है। तथा इसलिए में शब्दों का भावपूर्ण प्रदर्शन होता है, विलंबित में कलाकार अपनी प्रतिभा को दिखाने का पूर्ण अवसर प्राप्त करता है, कलाकार अपने कल्पना शक्ति के अनुसार विलंबित में गायन प्रस्तुत करता है।

राग - भारतीय संगीत में राग एक विशेष स्थान रखता है। राग शब्द की सर्वप्रथम व्याख्या "मतंग मुनि" ने "बृहतदेशी" में की है जो छठी शताब्दी ई.पू.की रचना है। भारतीय संगीत के प्रथम मान्य लेखक 'भरत मुनि' के काल में ग्राम मूर्छना, जाति का प्रचलन था इसलिए उन्होंने राग का वर्णन नहीं किया, ग्राम ,मूर्छना,जाति का स्थान धीरे-धीरे रागों ने लिया। मतंग के अनुसार "विशिष्ट स्वर वर्णों से विभूषित उस ध्वनि विशेष को राग कहते हैं जो सर्वसाधारण के मन को रंजित करता है।"
ठुमरी के राग मुख्यतः लोकधुनों से प्रेरित होते हैं विभिन्न विद्वानों तथा संगीतज्ञों ने लोक संगीत के दोनों को अपनी कल्पना शक्ति द्वारा शास्त्रीय संगीत का रूप प्रदान किया है। सरलता एवं सुंदरता के कारण लोक धुनें ठुमरी गायन शैली के प्रकृति के बहुत अनुकूल होती है, इसलिए ठुमरी के लिए प्रायः चपल चंचल तथा संकीर्ण रागों

का प्रयोग किया जाता है, किसी प्रमुख राग में अन्य रागों का मिश्रण ठुमरी के मुख्य विशेषता है। ठुमरी के रागों का मिश्रण उनकी प्रकृति के अनुसार अर्थात उनके मिलते-जुलते रागों के अनुसार करते हैं। ठुमरी गायन के लिए हमेशा ऐसे राग उपयोग किए जाते हैं जिनका स्वरूप सरल हो तथा अन्य रागो का मिश्रण सरलता पूर्वक किया जा सके। ठुमरी मुख्यतः खमाज, पहाड़ी, मांड, पीलू, काफी आदि जैसे रागों में गाई बजाई जाती है। ठुमरी गायन में रागों के साथ गायकी का विशेष महत्व होता है। इस गायकी में संवेदनशील, कोमल एवं भावुक स्वरों का प्रयोग किया जाता है।[341]

शब्द प्रधान गायन शैली होने के कारण ठुमरी में बोलो का विशेष महत्व है। बोल बनाव व बोल श्रृंगार के साथ भावों की अभिव्यक्ति के लिए इनमें मुख्य रागमें अन्य रागों के छाया का प्रयोग अधिक किया जाता है तथा अन्य रागों की छाया या विवादित स्वरों का प्रयोग शोभनीय होता है। बनारस घराने में खमाज, काफी जैसे रागों में ठुमरिया गाई बजाई जाती हैं जो इस घराने के मुख्य विशेषता है।

ठुमरी और बनारस

उत्तर भारत के पूर्वी भाग में स्थित बनारस शहर प्राचीन काल से ही देश का सुविचार धार्मिक स्थान होने के साथ-साथ सांस्कृतिक गतिविधियों का भी प्रमुख केंद्र रहा है। यहां के संगीतज्ञ के गायन,वादन और नर्तन के लिए प्राचीन युग से ही बड़े प्रसिद्ध रहे हैं, जिनका पता जातक कथाओं, जैन धर्म ग्रंथो आदि से चलता है। बनारसी ठुमरी की उत्पत्ति एवं विकास के संदर्भ में डॉ शत्रुघ्न शुक्ला लिखते हैं "बनारस के संगीतज्ञों में बहुत समय से कत्थक जाति के गायक वादक एवं नर्तक हुए हैं जो

[341] श्री के एस कत्थक नटवर नृत्य पृष्ठ संख्या 1,12

संगीत प्रदर्शन करने वाले तथा गणिकाओं आदि को नृत्य तथा अभिनय की शिक्षा प्रदान करते आए हैं। इन कथकों के अनेक परिवारों से श्री बिंदादीन महाराज और उनके परिवार के लोगों के रिश्तेदारियां होने के कारण बनारस के अन्य लोगों ने ठुमरी गायन तथा कथक नृत्य की शिक्षा ग्रहण की। श्री बिंदादीन महाराज के छोटे भाई कालिका प्रसाद ने बनारस में रहकर अपने शिष्य शिष्यों को ठुमरी गायन की शिक्षा दी।[342]

ठुमरी के तीन अंगों "पूरब अंग, पंजाब अंग एवं गया" में से पूर्व अंकित ठुमरी को दो उप भागों में विभाजित किया जाता है-बनारस अंग एवं लखनऊ अंग। इसे बनारसी शैली एवं लखनवी शैली के नाम से भी जाना जाता है।[343]

वाजिद अली शाह के समय लखनऊ में ठुमरी गायन का विशेष प्रचार प्रसार हो गया था 19वीं शताब्दी के अंत तक लखनऊ को ही ठुमरी गायन का एकमात्र केंद्र समझा जाता था, इसलिए परवर्ती युग में गाई जाने वाली ठुमरी के बोल बांट व बोल बनाव भेदों का मूल्यांकन क्षेत्रीय एवं प्रादेशिक प्रचार के दृष्टि से लखनऊ को ही केंद्र माना गया था। लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह के दरबार में गायिका नृत्य करते हुए एवं बैठकर भाव बताते हुए ठुमरी के दोनों प्रकार का प्रदर्शन किया करती थी इस प्रकार आरंभ में दोनों ही प्रकार के ठुमरीयों का प्रचार था। लखनऊ के ठुमरी गायकी तथा बोल पर अधिक ध्यान दिया कलायुक्त बोल बनाव शैली की विशेषता रही , ठुमरी का निरालापन एवं विशेष आकर्षण बोल बनाव में ही है, जिसके लिए भावुक उच्चारण एवं शब्दों का पुकार आवश्यक है। सहृदय एवं भावुक कलाकार ही ठुमरी को गा सकता है।

जिस प्रकार सदारंग के कारण "ख्याल गायकी" का प्रादुर्भाव हुआ ठीक उसी प्रकार भैया गणपत राव की बदौलत ठुमरी गायन हर कलाकार के अंतर मन में स्थापित

---

[342] शत्रुघ्न शुक्ला ठुमरी की उत्पत्ति विकास और शैलियों पृष्ठ संख्या 286

हुआ।[344] उस्ताद मोजुद्दीन खान साहब इन्हीं के शिष्य थे, बनारस की विदुषी बड़ी मोती बाई ठुमरी गायन के क्षेत्र में उस्ताद मौजुददीन खाँ की ही शिष्या थीं तथा बड़ी मोती बाई को भैया गणपत राव के परंपरा का प्रतीक कहा जाता है।

"पंडित छन्नूलाल मिश्र के परदादा पंडित जगदीप महाराज जी जो आजमगढ़ जिले के हरिहरपुर ग्राम के निवासी थे उन्होंने बनारस में ही स्थाई तौर पर निवास किया वह ठुमरी गायन के क्षेत्र में ख्याति लब्ध गायक एवं विद्वान कलाकार थे। लोग उन्हें ठुमरी, दादरा जैसी उपशास्त्रीय गायन शैली का बादशाह मानते थे। बनारस एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश में ठुमरी [345]एवं दादरा का प्रचार प्रसार करने में "पंडित जगदीप महाराज" का विशेष योगदान था।

लखनऊ के उस्ताद मौजुददीन खाँ साहब ने उनके गायन सुना तो वह इतने प्रभावित हुए कि बनारस आकर उनसे "गंडा बंधन" करवा कर परंपरागत तौर पर उनके शिष्य बन गए तथा उनसे ठुमरी एवं दादरा गायन शैली की तालीम हासिल की तथा कालांतर में उपशास्त्रीय गायन शैली के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बनारस के ख्याति लब्ध कलाकारों में उस्ताद सादिक अली खाँ, भैया गणपत राव, जगदीप मिश्र, उस्ताद मोजुद्दीन खाँ, पंडित बिंदादीन महाराज एवं उनके परिवार तथा शिष्य शिष्यों द्वारा बनारस में ठुमरी गायन का प्रचार विशेष रूप से हुआ।

इन्हीं कलाकारों के योगदान से कालांतर में ठुमरी के बनारस शैली के विकास की नींव पड़ी, आगे चलकर बनारस की ठुमरी में पूर्वी प्रदेश की बोली एवं लोकगीतों तथा लोकधुनों का विशेष प्रभाव पड़ा अतः आगे चलकर बनारस में बोल बनाव

---

[344] शत्रुघ्न शुक्ला ठुमरी की उत्पत्ति विकास और शैलियों पृष्ठ संख्या 286

[345] पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से प्राप्त जानकारी के अनुसार

ठुमरी तथा ऐसे स्वरूप का विकास हुआ जिस पर ब्रजभाषा के साथ-साथ अवधी, भोजपुरी एवं मगही आदि बोलियों विशेष रूप से प्रभाव पड़ा।

ठुमरी के तीनों अंगों के विद्यमान होने के बावजूद, बनारस की ठुमरी में मुख्यतः गान प्रधान एवं बोल बनाव ही विशेष रूप से रहा एवं आगे चलकर ठुमरीयों की दो शाखाओं में लखनऊ एवं बनारस में बनारसी ठुमरी ही पूरब अंग की ठुमरी के रूप में विशेष रूप से प्रसिद्ध हुई।

यद्यपि बनारसी शैली के योगदान में अनेक गायक गायिकाओं का योगदान रहा जैसे –

पंडित जगदीप मिश्र, उस्ताद मौजुददीन खाँ, मिठाई लाल, रामसेवक, दरगाही जी, सियाजी, बड़े रामदास जी, धीरेंद्र बाबू , श्री चंद्र मिश्रा, श्री महादेव मिश्र, पंडित भोलानाथ भट्ट,पंडित छन्नूलाल मिश्र एवं गायिकाओं में विदुषी हुस्ना, मैना, विद्याधारी देवी, विदुषी राजेश्वरी देवी, चंपा बाई, शिव कुमारी, भागीरथी, काशीबाई, रसूलन बाई, कमलेश्वरी, दुर्गेश, बिट्टो, श्यामा आदि। इनके अतिरिक्त प्राचीन परंपरा की गायिकाओं में विदुषी बड़ी मोती बाई, रसूलन बाई, श्रीमती सिद्धेश्वरी देवी, गिरिजा देवी तथा माणिक वर्मा आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। बनारसी ठुमरी, दादरा के मुख्य विशेषता यह है कि उत्तर प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र के लोक संस्कृति तथा परंपरा से अधिक प्रभावित है इसमें बोल बनाव करते समय बोलो के कहन अथवा लहजे में पूर्वी बोली के विशिष्ट उच्चारण के मिठास के साथ-साथ स्वर सनिन्वेशों के प्रयोग में विशेषता होती है।[346] बनारस की संगीत परंपरा में यह मुख्य विशेषता रही है कि यहां पुरुष एवं महिला कलाकारों के समानांतर एवं समृद्ध धारा रही है। ठुमरी गायक एवं गायिकाओं की परंपरा देश के कोने-कोने में फैली हुई है, इन गुणी कलाकारों ने ठुमरी गायन शैली को जन- जन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका

[346] पंडित विजय शंकर मिश्र से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

निभाई। इन सुधी कलाकारों के सृजनशीलता से धीरे-धीरे ठुमरी के अन्य प्रकार भी प्रचार में आने लगे।

काशी कहे या बनारस, आज पाश्चात्य संस्कृति के दौर में भी अपनी मिट्टी की सुगंध अपनी कला संस्कृति और संस्कार के लिए यह आज भी अडिग खड़ा है। घंटा - घड़ियाल तो सभी स्थानों पर बजते हैं,किंतु जब कोई वाद्य यंत्र यहां बजता है, तो उसकी अपनी एक अलग मिठास होती है। बनारस के पुराने रइसों ने संगीत को संपूर्ण संरक्षण प्रदान किया, इस संदर्भ में बनारस के पुराने रईस संगीत प्रेमी श्री किशोरी रमन जी का कहना है- भारतीय संगीत को इस देश के राजाओं रईसों वह जमींदारों ने ही संरक्षण देकर सुरक्षित रखा, हिंदू रईसों के यहां बाग बगीचों में महफिले सजती थी, ठुमरी, दादरा, टप्पा और चैती का जो दौर चलता था तो, सुबह भैरवी होने की बाद समाप्त होता था। सारनाथ, महमूरगंज, दुर्गाकुंड के आसपास के क्षेत्र में रईसों के बाग बगीचे होते थे जिसमें सावन के दिनों में झूले पड़ते थे, और कजरी मल्हार जैसी गायकी सुनने को मिलती थी।

काशी के धनाढ्य लोग एवं साहित्य जगत के गण्यमान्य लोग ऐसे आयोजनों में कलाकारों को पूरे मान सम्मान के साथ आमंत्रित करते थे।[347]

संगीत जगत में एक बात प्रचलित है कि कुछ ख्याल गायक ठुमरी को निम्न स्तर का गायन समझते हैं, पता नहीं कैसे भ्रांति का जन्म हुआ ? कुछ लोग ठुमरी को "सैंया गुइयां"वाला गाना कह कर इसे तुच्छ बताते हैं, परंतु शायद वह भूल जाते हैं की विरह, पीड़ा, वात्सल्य, श्रंगार आदि मनोभावों का निरूपण ठुमरी द्वारा बेहद मर्म स्पर्शी होता है और यही कारण है कि जब ध्रुपद, ख्याल रस भाव से च्युत हो गए तो "रसभरी ठुमरी"का निर्माण हुआ, बनारस की ठुमरी एवं दादरा पर लोक संगीत का विशेष प्रभाव है, तथा लोकगीतों की स्वतंत्र प्रवृत्ति भी इस लोकप्रिय शैली

[347] पंडित भोलानाथ मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी

में प्रवेश कर गई है, अतः बनारस की ठुमरी में लोक संगीत का रस है। बनारस वह मिर्जापुर की चैती, कजरी ने इस ठुमरी को प्रभावित किया है बनारस की ठुमरी में वहां का स्वतःरस है । ठुमरी के स्वरों के लगाव में एक अल्हड़पन एक प्रकार की स्वाभाविक स्फूर्ति अथवा छेड़छाड़ होती है, जो बनारस की ठुमरी तथा दादरा में ही पाई जाती है। बनारस शैली जैसा कि नाम से ही अवगत कराता है। [348]

उपरोक्त विवरणों से स्पष्ट है कि बनारस उपशास्त्रीय संगीत का गढ़ रहा है, इस तथ्य में कोई मतभेद नहीं है अनेक कलाकारों ने यहां के संगीत को उच्चतम स्थान प्रदान किया है।

यह सर्व विदित है कि पंडित छन्नूलाल मिश्र बनारसी उपशास्त्रीय गायन परंपरा पर्याय बन चुके हैं, जहां ठुमरी गायन शैली की बात हो और पंडित छन्नूलाल मिश्र का जिक्र ना आए यह असंभव है।

पंडित जी की ठुमरी गायन शैली

पंडित छन्नूलाल मिश्र कहते हैं "मेरे परदादा स्वर्गीय जगदीप महाराज जी थे जो की हरिहरपुर गांव के निवासी थे उनके ही नाम से हमारे गांव को "कलाकारों का गांव" नाम दिया गया है। वह ठुमरी, दादरा के बादशाह थे और वही पारिवारिक संस्कार निश्चित ही मेरे अंदर विद्यमान थे, इसीलिए मेरी कल्पनाशीलता तथा मेरा रुझान ठुमरी गायन शैली की तरफ हुआ ,मैं पिछले 50 सालों से बनारस में रहकर उप शास्त्रीय गायन शैली ठुमरी, दादरा, चैता, चैती, घाटो, टप्पा, होरी कजरी,सावनी,लावणी, झूला, सोहर, बधइया, जैसे अनेक गायन शैलियों के प्रचार प्रसार में संपूर्ण समर्पण के साथ लगा हूं, तथा निशुल्क प्रशिक्षण के माध्यम से भी मैं

[348] विष्णु नारायण भातखंडे क्रमिक पुस्तक मालिका तीसरी पुस्तक पृष्ठ संख्या

आने वाली पीढ़ी को बनारस की धरोहर से परिचित कर रहा हूं। बनारस की संगीत को संजना हम कलाकारों का परम दायित्व है।

पंडित छन्नू लाल मिश्र कहते हैं "बनारस का संगीत आनंद देने वाला है यदि सुनने वालों को आनंद आ गया तो समझिए प्रभु का दर्शन हो गया"।[349] पंडित जी संपूर्ण भारतवर्ष में एकमात्र ऐसे कलाकार हैं जो पूरे 10 प्रकार की ठुमरी को मंच पर प्रदर्शित करते हैं साथ ही सभी ठुमरीयों की विस्तृत व्याख्या करके श्रोताओं को संदर्भ भी समझते हैं।संगीत गायन परंपरा की हर एक विधा हर एक शैली में पारंगत पंडित जी एकमात्र कलाकार है। ध्रुपद, ख्याल से लेकर ठुमरी,चैती, कजरी, गीत, भजन, गजल, गीत हर प्रकार का लोक संगीत गाने में पंडित जी सक्षम हैं।

पंडित जी द्वारा वर्णित ठुमरी के प्रकार

पंडित जी ने अपने पिता गुरु एवं अपने शस्त्र पक्ष के गुरु ठाकुर जयदेव सिंह एवं अपने कलात्मक अनुभवों एवं अनुसंधान के माध्यम से ठुमरी के कुल 10 प्रकारों को वर्णित किया है पंडित जी एक ऐसे ठुमरी गायक भी हैं जो संस्कृत भाषा में भी ठुमरी गाते हैं ठुमरी के इन प्रकारों का नाम वह एक उदाहरण निम्न प्रकार से है--

1. संस्कृत की ठुमरी**--** केसी मथन मुदारम सखी हे। मिश्र खमाज जत ताल

2. हल्लीसक ठुमरी**--** कागा रे जा रे जा रे पिया से सनेसा मोर कहियो जाए। मिश्र खमाज, अद्धाताल।

3. आसारित ठुमरी --रोको ना डगर मोरे श्याम मैं तो जात अपने धाम, राग तिलक कामोद एकताल।

[349] पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से प्राप्त जानकारी के अनुसार

4. बोल बनाव ठुमरी-विलंबित लय, एरी व्याकुल भई ब्रज बाम अब ना बजाओ श्याम बंसुरिया, मिश्र खमाज जत ताल।

5. बोल बनाव ठुमरी मध्य लय-- लागे तोसे नैना पियरवा देखे बिना कलना पड़त दिन रैना, मिश्र नट आद्धाताल।

6. गत भाव ठुमरी --देखो देखो कैसी करत है यह रार लपट झपट में टूटो गयो हार, मिश्र विहाग तीन ताल

7. भाव नृत्य ठुमरी -रंग रंगीली रसीली छबीली ब्रजनार, वह तो नैन की सैन से मारत बान, मिश्र खमाज तीन ताल।

8. बंदिश की ठुमरी-- नैन बान तान तकि तकि मारे, एरी नटवर छैला, मिश्र गौड सारंग तीन ताल।

9. घनाक्षरी ठुमरी --सांवरो लंगरवा मोरी गगरिया गिराई। निपट ना माने है हठ ठानी मग में कन्हाई,मिश्र बिलावल तीन ताल।

10. बोल बांट ठुमरी --हटो जाओ जी ना छेड़ो सैयां, मोरी बैयां ना छुओ बरजोरी विनती करूं मैं लागू पैंया, मिश्र खमाज एकताल।[350]

निष्कर्ष

पंडित जी ठुमरी, दादरा के ख्याति लब्ध कलाकार हैं, उन्होंने चारों पट अर्थात ध्रुपद, धमार, ख्याल,ठुमरी आदि विशेष गायन शैलियों पर समान अधिकार रखते हुए भी उपशास्त्रीय संगीत में विशेष तौर पर ख्याति अर्जित की है विशेषतः भारतवर्ष में पंडित जी ठुमरी गायन के पर्याय के रूप में जाने जाते हैं। इन्होंने संगीत में एक उच्च स्तरीय मानदंड स्थापित किया है, जिससे इनका संपूर्ण सांगीतिक व्यक्तित्व दृष्टिगत होता है, इन्होंने मानव के मनोभावों से प्रेरित होकर उपशास्त्रीय संगीत को नई दिशा दी है तथा अथक परिश्रम द्वारा उपशास्त्रीय संगीत को समृद्ध किया है,

[350] पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से प्राप्त जानकारी के अनुसार

वहीं ठुमरी, दादरा जैसी गायन शैली को जनसाधारण से जोड़ने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। परिणामतःउनके इस प्रयास द्वारा एक जो नकारात्मक सोच जो उपशास्त्रीय संगीत के प्रति प्रचलित थी उसमें बहुत बड़े बदलाव आए तथा उपशास्त्रीय संगीत को भी बड़े मंचों पर सम्मानजनक स्थान मिला तथा संगीत के क्रियात्मक स्वरूप के अलावा जो सैद्धांतिक स्वरूप इन्होंने प्रचलित किया वह बनारस के उपशास्त्रीय संगीत तथा पंडित जी के व्यक्तित्व को विशेष रूप से गौरवान्वित करता है। आज उनके प्रयासों के फलस्वरूप बनारस का संगीत एवं उप शास्त्रीय ने संगीत बाजार के महफिलों से लेकर बड़े-बड़े संगीत समारोह तक का सफर तय किया है और यह इनकी कलात्मकता, सृजनात्मकता एवं पूर्ण समर्पण का परिणाम है।

4.3 - पंडित छन्नूलाल मिश्र का भक्ति गायन

"नादब्रह्मेति विख्यातं नादे सर्वं प्रतिष्ठितम्।
नादेन विना लोके न किञ्चिदपि विद्यते॥"

भारतीय संगीत की परंपरा मूलतः आध्यात्मिक चेतना पर आधारित है। यहाँ संगीत को केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि, ईश्वर-साक्षात्कार तथा आत्मानुभूति का प्रभावी माध्यम माना गया है। भारतीय दर्शन के अनुसार प्रत्येक जीव में परमात्मा का अंश विद्यमान है। जब मनुष्य अपने अंतर्मन को राग-द्वेष, मोह, अहंकार और विषय-वासनाओं से मुक्त कर एकाग्र चित्त से आत्मचिंतन करता है, तब वह सत्य के समीप पहुँचकर दिव्य आनंद की अनुभूति करता है। संगीत इसी आत्मिक यात्रा का सशक्त साधन है।

भारतीय संगीत की परंपरा आध्यात्मिक है, प्रत्येक मानव शरीर में परमात्मा अर्थात परब्रह्म का अंश विद्यमान है, यही कारण है कि जब मनुष्य को ज्ञान होता है तो सांसारिक राग, द्वेष से मुक्त होकर अंतर मन से सत्य के नजदीक जाता है, तो उसे दिव्य आनंद की अनुभूति होती है अध्यात्म में ही कर्म, ज्ञान, उपासना का विशेष स्थान है इसलिए भारतीय धर्म में आध्यात्मिकता का मूल आधार एकाग्रता है।[351]एकाग्र होने से ही आत्मा में अतींद्रिय सुख का संचार होता है, इसलिए संगीत के स्वर मन को एकाग्र करके इतना अधिक तल्लीन,तन्मय और स्थिर कर देते हैं कि स्वर साधना करने से ही संगीतकार की एकाग्रता बन जाती है जिससे संगीतकार की आध्यात्मिकता का मार्ग प्रशस्त हो जाता है।
राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद के शब्दों में-

---

[351] पं. शारंगदेव, *संगीत रत्नाकर*, अध्याय 1, पृ. 11–18

"इतिहास से विरासत में आपको भारतीय संगीत जैसी अमूल्य निधि मिली है। अन्य देशों के संगीत की अपेक्षा इसमें विशेषता है, वह मान्यताओं के कारण है जो संगीत के संबंध में हमारे पूर्वजों ने की थी, भारत में संगीत क्षणिक आमोद- प्रमोद व अतृप्त तृष्णा की वस्तु न होकर समस्त ब्रह्मांड अथवा व्यक्त जगत से एक्य का आभास है।चिरानंद प्रदान करने वाली आध्यात्मिक साधना है, और सांसारिक दुखों से मुक्ति प्रदान करने एवं ब्रह्म तक मानव को ले जाने का मार्ग है। संगीत के इस स्वभाव और ध्येय को हमारे पूर्वजों ने हमारे सभ्यता के प्रभाव से पहचान लिया था, और जानबूझकर संगीत का विकास इन्हीं आदर्श के अनुकूल किया था, उन्होंने संगीत और जीवन में किसी प्रकार की खाई नहीं खोदी, किसी प्रकार की दीवार नहीं खड़ी की, अतः यह कहना अनुचित न होगा कि उन्होंने संगीत को हमारे जीवन में इस प्रकार बना दिया कि सहस्त्र शताब्दियों के पश्चात भी उसका अभिन्न अंग बना हुआ है संसार में संभवतः ऐसा अन्य कोई देश नहीं जहां संगीत इतने पुराने युग से जनजीवन तथा जनसाधारण में व्याप्त है ,जितना कि भारत में सहस्त्रों वर्षों से रहा है भारत में सभी जातियों की अपेक्षा भारतवासियों के कहीं अधिक संगीत प्रेमी होने का प्रमाण "मेगास्थनीज"में भी दिया गया है ईसा मसीह पूर्व 150 लगभग लिखे गए "इंडिका" नामक अपने ग्रंथ में आर्य ने "मेगास्थनीज" का यह कथन उद्धृत किया है कि सब जातियों के अपेक्षा भारतीय लोग संगीत की अधिक प्रेमी हैं, सहस्त्रों वर्षों से हमारे घरेलू एवं दैनिक जीवन में लगभग सभी काम किसी न किसी संगीत के प्रकार से ही आरंभ होते रहे हैं।"[352]

जन्म से लेकर मृत्यु तक संगीत हमारे साथ होता है जिस दिन बालक संसार में अपनी आंखें खोलता है उस दिन से ही संगीत से उसका परिचय आरंभ हो जाता

352

https://www.google.com/search?q=%E0%A4%A1%E0%A5%89+%E

है। भारतीय रीति रिवाज में नामकरण, यज्ञोपवीत, मुंडन, विवाह आदि ऐसे सामाजिक एवं पारंपरिक आयोजन होते रहते हैं, ऐसा कोई त्यौहार नहीं होता अथवा ऐसा कोई पर्व नहीं होता जिसमें संगीत ना हो, घर ही क्यों भारतीय संस्कृति में खेत, चौपाल,चक्की चलाने,धान कूटने आदि दैनिक क्रियो में भी संगीत समाहित है, अतः यह कहना उपयुक्त होगा कि हमारे जन जीवन को उल्लास प्रकट करने का यह प्रभावी साधन है ही एवं उसकी गतिमान बनाने का भी अस्त्र है संगीत उनको रचनात्मक कार्यों में अग्रसर होने की सामूहिक स्फूर्ति और प्रेरणा प्रदान करता है,और उनको वह शक्ति देता है जो उन्हें उन कामों को करने के योग्य बनाती है जो अकेले अथवा समूह में संगीत की प्रेरणा के बिना नहीं कर पाते। भारतीय संगीत पुरातन काल से मोक्ष प्राप्ति एवं साधना का एक मार्ग है।[353]

भारतीय संगीत की आधारशिला आध्यात्मिक है, तथा भारत धर्म प्रधान देश है। भारतीय विचारधारा प्राचीन काल से आदर्श की प्रतिभूमि रही है, जिसका प्रमुख उद्देश्य लोक कल्याण रहा है, यहां की धरती में राम ,कृष्ण, बुद्ध रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद, तथा महावीर की आत्मा कण-कण में समाहित है। सत्य, अहिंसा,ब्रह्मचर्य, आस्तेय और अपरिग्रह इन पांच महाव्रतों को इस देश के निवासी युगों युगों से आत्मसात करते आ रहे हैं। भारतीय संगीत सदा से धर्म प्रधान रहा है, यहां की समस्त कलाएं, चिंतन, दर्शन आदि इसी दिशा में उन्मुख रहे हैं,यही कारण है कि धर्म से संगीत का परस्पर एवं घनिष्ठ संबंध है।

संगीत की उत्पत्ति के संबंध में भी धार्मिक दृष्टिकोण के अनुसार संगीत की उत्पत्ति वेदों के निर्माता ब्रह्मा द्वारा हुई तथा ब्रह्मा ने शिव को, शिव ने सरस्वती को, तथा

[353] लक्ष्मी नारायण गर्ग निबंध संगीत पृष्ठ संख्या 505

सरस्वती ने नारद को तथा नारद द्वारा यह कला स्वर्ग के गंधर्व व अप्सराओं को प्राप्त हुई, इस प्रकार संगीत के विकास का क्रम आगे बढ़ा।

आध्यात्मिक के अंतर्गत एक अन्य मत के अनुसार संगीत का उद्गम 'ओम' शब्द से है। इस परंपरा का कहना है कि परमात्मा को -"इको हम बहुश्याम" इस प्रकार का संकल्प होता है तो ब्रह्मांड में एक विचित्र प्रकार का कंपन होता है, यह कंम्पन संगीत का प्रथम किरण है, और ब्रह्मांड को कंम्पित करके जो स्वर निकलता है वही "प्रणव नाद" है इसी प्रणव से ही समस्त ज्ञान एवं कलाएं उत्पन्न हुई हैं। "मनुस्मृति" में कहा गया है कि ऋग्यजुःसाम से ही क्रमशः अ-उ-म इन तीनों अक्षरों को लेकर "ओम" शब्द बना है इस ओम शब्द में तीन गुणों की सृजनात्मक शक्तियां विराजमान है इसमें सृष्टि कर्ता ब्रह्मा, का पालक विष्णु का तथा म संघारक महेश का प्रतीक है।[354]

भारतीय संगीत में नाद को उपासना का माध्यम माना गया है,ब्रह्मांड की प्रत्येक एक चराचर वस्तु में नाद व्याप्त है,नादब्रह्म से ही संगीत की उत्पत्ति हुई है ।संगीत के महत्व को बताते हुए दामोदर पंडित कहते हैं--

"धर्मार्थ काम मोक्षणा मिदमेवेक साधनम्।
नाद विद्या परांलब्धवा सरस्वतयाःप्रसादतः।।"
(दामोदर पंडित संगीत दर्पण अ-1 श्लोक 21)

अर्थात धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति का साधन संगीत को माना गया है। नाद परम श्रेष्ठ है, और इसे सरस्वती देवी की कृपा से ही प्राप्त किया जा सकता

[354]डॉ. रमाकांत द्विवेदी संगीत स्वरित पृष्ठ संख्या 4

है।संगीत का आधारभूत तत्व ही नाद है, नाद को ही चैतन्य आनंदात्मक ब्रह्म इत्यादि बताते हुए नाद के विषय में नारद ने पद्म पुराण में कहा है—

"नाहं वसामि बैकुण्ठे योगिना ह्रदये न च।
मदभक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारदः।।"[355]

(अहोबल संगीत पारिजात पृष्ठ श्लोक 15)

संगीत रत्नाकर में पंडित शारंगदेव ने नाद के विषय में कहा है "नाद से वर्ण, वर्ण से शब्द शब्द से वाक्य और वाक्य से इस जगत के व्यवहार व्यंजित होते हैं,अर्थात समस्त जगत नाद के अधीन है।जीवन में चेतना का प्रतीक भी स्पंदन के रूप में नाद है। संपूर्ण सृष्टि ही नादात्मक है,योगी एवं महर्षियों ने इसे निर्गुण ब्रह्म का सगुन स्वरूप कहा है, इसकी अनुभूति "ओम" की साधना से प्रमाणित होती है।

रामायण कालीन संगीत के अंतर्गत वाल्मीकि रामायण के अध्ययन से संगीत संबंधी ऐसे अनेक सूत्र प्राप्त होते हैं जिससे उस काल में भी प्रचलित गीत,वाद्य एवं नृत्य की विभिन्न श्रेणियां एवं उनके प्रयोग के अवसर तथा जन्म मानस में उनके प्रति अभिरुचि के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।राजा दशरथ की अंत्येष्टि के समय सामवेदियों ने शास्त्रीय पद्धति के अनुसार साम गायन किया था तथा उत्तराकांड में रावण को साम स्रोतों से शंकर भगवान की स्तुति करते दिखाया गया है। संगीत का एक प्रकार वर्ण संगीत भी प्रचार में था जो वर्णमाला के लघु और दीर्घ अक्षरों में विद्यमान मात्रा ध्वनि और उच्चारण काल के भेद त्रय पर आधारित था ।"तालापचरा"नामक कलाकार ताल के विशेषज्ञ माने जाते थे जो अपने शरीर के अंगों का गान के साथ संचालन में सिद्ध थे। ताल वाद्य को इंगित करने के लिए "पाणिक वादक"भी होते थे। महर्षि भारद्वाज ने भरत और उनके सेवा के स्वागत में

[355] पंडित ओमकारनाथ ठाकुर प्रणव भारती पृष्ठ संख्या 7

संगीत उत्सव किया था उसमें साम में तथा ताल देने के लिए संगीतज्ञ का एक अलग दल नियुक्त था।[356]

लव और कुश की योग्यता संगीत में अद्भुत थी यह दोनों भाई गांधर्व विद्या के तत्वज्ञ, संस्थान और मूर्छना के जानकार, मधुर स्वर से संपन्न तथा गंधर्व के समान सुंदर थे। वेदव्यास रचित "आध्यात्म रामायण" के उत्तरकांड में कहा गया है कि लव और कुश का गान अपूर्व, पाठ, जाति, सम, प्लुत, श्रुति, काकु आदि से युक्त था।

नृत्य, नृत्त और लस्य इन तीनों का उल्लेख भी वाल्मीकि रामायण के अंतर्गत प्राप्त होता है। श्री राम के राज्याभिषेक के समय नटों, नाटकों तथा गायको के प्रदर्शनों द्वारा जनता आनंदित हो रही थी इससे प्रतीत होता है की रामायण कालीन युग भी महर्षि भारत के सिद्धांतों से प्रभावित था।

पंडित छन्नूलाल मिश्र कहते हैं कि "मैं स्वयं आध्यात्मिक विचारधारा का धारणी हूं, और मेरे परिवार का वातावरण अत्यंत धार्मिक रहा है, इसलिए मेरे दैनिक जीवन एवं मेरे व्यक्तित्व मे आध्यात्मिक प्रभाव दृष्टिगत होता है। मेरे माता-पिता अत्यंत धार्मिक विचारों के थे माता हर सुबह "रामायण तथा रामचरितमानस" जैसे धार्मिक पुस्तकों का नित्य पाठ किया करती थीं रामायण तथा रामचरित मानस के कथानकों को सुन- सुन कर मेरा बचपन बीता।

पंडित जी स्वयं अपने गुरु महाराज से साक्षात्कार तथा गुरु दीक्षा के बाद ऐसे राम भक्त हुए की उनका संपूर्ण जीवन है राममय हो चुका था। आज भी पंडित जी को रामायण कथा रामचरितमानस जैसे ग्रंथों श्लोक कंठस्थ है।

रामायण कालीन संगीत के विषय में पंडित जी अनेक प्रकार से चर्चा करते हैं-

---

[356] लक्ष्मी नारायण गर्ग निबंध संगीत पृष्ठ संख्या 505 506 507

रामायण काल में संगीत मनोरंजन का सर्वाधिक साधन था। सभी कलाओं में संगीत सबसे अधिक मिश्रित था। राजा- प्रजा, नर-नारी,आर्य, वानर ,राक्षस, समाज के सभी वर्गों में संगीत को प्रश्रय मिलता था। रामायण में संगीत विषय जो अनेक रूपक एवं उत्प्रेक्षय प्राप्त होते हैं, उससे पता चलता है कि सामाजिक और साहित्यिक जीवन कितना संगीतमय होता था। संगीत शास्त्र को गांधर्वों के संज्ञा दी जाती थी। संगीत नागरिक जीवन का अभिन्न अंग था उत्सवों तथा स्वागत समारोह का ही नहीं नागरिक के दैनिक जीवन का भी सामान्य लक्षण था।[357]

पंडित जी ने आध्यात्मिक गुरुओं एवं से ज्ञान अर्जन किया उसके आधार पर कहते हैं कि संगीत आदि काल से है, और जीवन के संस्कार में निहित है, और ऐसा होना चाहिए क्योंकि व्यक्ति अगर संस्कारी नहीं होगा, तो उसके विचार उसके कर्म तथा व्यक्तित्व में अहंकार आ सकता है,और यही अहंकार उसके जीवन का संपूर्ण बाधक बन सकता है।

अपने आध्यात्मिक गुरु से गुरु दीक्षा प्राप्त करने के संबंध में बताते हैं कि [358]"एक बार में मुजफ्फरपुर बिहार में पड़ोस के मंदिर में एक पेड़ के नीचे बैठे हुए संगीत की स्वर लहरियों में खोया हुआ था उस समय मेरी अवस्था 22 वर्ष की रही होगी, और अचानक ही मेरी दृष्टि एक दिव्य एक अलौकिक संत पर पड़ी, जो अपने शिष्यों एवं अन्य संत समाज के साथ सामने से आ रहे थे यह दिव्य संत वास्तव में मुजफ्फरपुर से 80 किलोमीटर दूर वेजलपुर नामक गांव के अपने आश्रम से अपने शिष्यों के साथ पदयात्रा पर आए हुए थे उनका नाम था "गुरु महाराज महंत श्री नरसिंह दास जी महाराज" जो (मौनी बाबा)के नाम से विख्यात थे तथा "संत श्री

---

[357]लक्ष्मी नारायण गर्ग निबंध संगीत पृष्ठ संख्या 506, 507, 508

[358] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

करपात्री महाराज" जी के परम मित्र तथा समकालीन थे मार्ग से आते हुए जब मेरी दृष्टि उन पर पड़ी तो उनके मुख्य आभा और आकर्षक से मैं इतना मंत्रमुग्ध हो गया कि भावुकता और व्याकुलता मेरे अंतरमन में समाहित हो गई और मैं भागता हुआ उनके चरणों में जाकर नतमस्तक हो गया। उन्होंने प्रेम से मुस्कुराते हुए मुझे उठाया वह स्वयं हमेशा मौन धारण करके रहते थे अतः इशारों से अपने शिष्यों द्वारा मुझे अपने मठ पर आने का आदेश दिया और प्रेम पूर्वक बहुत सारा आशीर्वाद देकर आगे बढ़ गए।

गुरु महाराज का आश्रम बैजलपुर गांव मुजफ्फरपुर से लगभग 80 किलोमीटर की दूरी पर था और वहां जाने के लिए कोई उपयुक्त साधन भी नहीं था, किंतु मुझे रहा नहीं गया और अधिकांशतः पैदल ही सफर तय करते हुए शीघ्र ही गुरु महाराज जी के आश्रम पहुंच गया तो उस दिव्य तथा शांत वातावरण ने अत्यंत सुखद अनुभूति प्रदान की और मेरी सारी थकान मिट गई। जब मैं आश्रम पहुंचा और गुरु महाराज से मिला तो गुरु महाराज कहते हैं कि मैं "तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था और मुझे पता था कि तुम जल्दी ही आओगे"[359]

मैं गुरु महाराज के व्यवहार तथा उनके ज्ञान से इतना प्रभावित हुआ और कहां कि मुझे अपना शिष्य बना लीजिए और मेरे मार्गदर्शक बन जाइए उसके बाद गुरु महाराज ने संपूर्ण विधि विधान से मुझे "गुरूमुख" किया गुरु महाराज जो स्वयं वैष्णव संप्रदाय की राम भक्ति शाखा के अनुयाई थे, उन्होंने मुझे "राम" नाम का ही गुरु मंत्र दिया और मेरा संपूर्ण जीवन राममय बना दिया। गुरु महाराज से दीक्षा प्राप्त करने पूर्ण समर्पण विधि से गुरु मंत्र प्राप्त किया तथा "राम" नाम को ही एवं भक्ति को ही ईश्वर प्राप्ति का एकमात्र साधन मानते हुए स्वयं को पूर्णतः राममय कर लिया और भगवान के चरण में नतमस्तक हो गया आज भी गुरु द्वारा प्रदत

[359] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

परंपरा का पालन करते हुए मैंने अपने जीवन में कभी भी "शालिग्राम भगवान"को भोग लगाए बगैर भोजन नहीं किया है। संगीत के प्रति पंडित जी का दृष्टिकोण सांगीतिक तथा धार्मिक दोनों ही पक्षों से जुड़ा है।संगीत एवं धार्मिकता को सत्य के उत्कृष्ट साधक के रूप में अपनी आत्मा में भगवत भक्ति तथा उसके अर्थों को आत्मसात कर लिया है, और वह अपनी इसी बहुमूल्य अर्जित भाव में प्रसन्नता के साथ श्रोताओं को भी सहभागी बनाते हैं, जो संगीत के माध्यम से प्राप्त करने के लिए उनके पास आते हैं। पंडित जी कहते हैं कि गुरु महाराज द्वारा प्राप्त ज्ञान तथा अपने माता-पिता द्वारा में संस्कारित हुआ । ईश्वर ने हमें केवल माध्यम के रूप में चुना हम बहुत सौभाग्यशाली हैं, जैसे-जैसे उम्र बढ़ती गई मैं आध्यात्मिक तथा संगीत में और भी गहरा उतरता चला गया और यह कृपा भी ईश्वर की अनुकंपा से ही प्राप्त होती है।

संगीत का एकमात्र घराना : शिव का घराना

भारतीय संगीत के क्षेत्र में अगर ख्याल गायन की चर्चा हो तो घराना का विस्तृत स्वरूप स्वतः ही दृष्टिगत हो जाता है,किंतु पंडित जी मानते हैं कि "वह एक ऐसे घराने के वंशज तथा शिष्य हैं जिनके रचयिता भगवान शिव हैं।"

संगीत की उत्पत्ति के संबंध में भी जब यह कहा जाता है कि शिव जी के डमरू से 14 सूत्र स्वर् एवं शब्द की उत्पत्ति हुई है, "ऊँ" को प्रणव अक्षर की उत्पत्ति शिव के स्वरूप ऊँ से मानी गई है तो क्यों ना संगीत का भी एक ही घराना माना जाए और वह शिव का घराना कहलाए, आज भी यदि कोई कलाकार कहता है कि मैं घरानेदार शास्त्रीय कलाकार हूं तो लोग स्पष्टतया प्रथम प्रश्न यही पूछते हैं कि 'आप किस घराने से संबंध रखते हैं? यह आपने किस घराने से शिक्षा प्राप्त की है आगरा, किराना, ग्वालियर, दिल्ली जयपुर, पटियाला या फिर कोई और? वास्तव में घराने

की परंपरा तो 200 साल पूर्व प्रसार में है, जबकि संगीत तो अनादि और अनंत काल से चला रहा है, संगीत के अनेक प्रकार भी बहुत प्राचीन है, फिर इसे घरानों की परिधि में कैसे रखा जा सकता है?[360]

यूं तो पंडित जी स्वयं महान गुरु उस्ताद अब्दुल गनी खान के शिष्य हैं जो किराना घराना के मूर्धन्य कलाकारों में गिने जाते हैं, किंतु पंडित जी के गायन में सभी घराना की विशेषताएं परिलक्षित होती हैं। हर घराने की खूबसूरती को लेकर उन्होंने अपने गायन में सजाया है,कई बार घराने की आड़ लेकर लोग अपनी कमियां छुपाते हैं, कमी होना गलत नहीं होता, लेकिन उसे किसी घराने का नाम लेकर आगे करके और अपने गुरु एवं वंशज कलाकारों पर दोषारोपण करना सरासर गलत बात है। आध्यात्मिक संदर्भ में बताते हुए पंडित जी कहते हैं – "एक बार में अपने गुरु जी के पास बैठा था और अन्य से मैंने उनसे पूछा जी यह घराना क्या होता है? और क्यों होता है?इस पर उस्ताद जी ने थोड़ी देर विचार करने के पश्चात कहा कि "यह जो टोपी पहन रखी है उसे दाहिनी और झुका दिया और पूछा यह क्या है? मैंने कहा यह आपकी टोपी है,दाहिनी और झुकी हुई, फिर गुरु जी ने टोपी को बांई ओर झुका दिया, और पूछा अब बताओ? कहा कुछ नहीं बस आपकी टोपी और खिसक गई है, फिर उन्होंने टोपी को माथे की तरफ झुका लिया और फिर मुझसे पूछा हो कि अब यह क्या है? मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था मैंने हिचकिचाहट के साथ कहा कुछ नहीं हुआ बस अब आपकी टोपी सामने की ओर झुक गई है,अब उस्ताद जी ने मुझे समझाते हुए कहा कि देखो, ना तो मेरा सर बदला और ना ही मेरी टोपी बदली, सिर्फ पहनने का तरीका बदल गया यही बात घरानों के साथ होती है, ना स्वर बदलते हैं,ना परिवर्तन होता है बस स्वर को लगाने का तरीका,लय को कम

[360] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

या अधिक रखना,विस्तार में थोड़ा बहुत परिवर्तन करके हम लोग कहते हैं कि "मैं फलां घराने का कलाकार हूं, और मेरा ही घराना उत्तम है, ऐसा करना नितांत अनुचित है संगीत का केवल एक घराना होना चाहिए और वह शास्त्रीय घराना जो भी शास्त्र सम्मत गायन की प्रस्तुति दे, वही शास्त्रीय कलाकार की उपाधि से नवाजा जाए इस प्रकार से घरानों का मतभेद खत्म हो जाएगा तथा कलाकारों में शास्त्रगत अध्ययन की जिज्ञासा विकसित होगी।"

पंडित जी द्वारा वर्णित कथा से कितना सुंदर तथ्य निकलकर सामने आया कि संगीत के क्षेत्र में कोई मतभेद नहीं होना चाहिए,क्योंकि हम सभी केवल संगीत के धारणी है, और अपनी-अपने विचारधारा के माध्यम से हमें संगीत को बढ़ाना चाहिए।

पंडित जी कहते हैं कि यह बांटने का विचार तो कलाकारों के मन में तब आना चाहिए जब कोई यह कहे की 12 शुद्ध एवं विकृत स्वरों के अतिरिक्त हमारे घराने से प्रतिपादित हुआ या फिर कोई नया स्वर सुनाकर बताएं, फिर संगीत, ख्याल को घराना में बांटने की बात करे। और जहां तक आध्यात्म का संबंध है तो संगीत आध्यात्म के भाव को प्रदर्शित करने का सशक्त माध्यम है। हमारे संगीत का उच्चतम लक्ष्य, भाव एवं सार को अभिव्यक्त करना है, जिसे वह प्रतिबिंबित करता है, राग उन माध्यमों में से है, जिसके द्वारा यह सार समझाया जा सकता है कि मनुष्य संगीत के द्वारा ईश्वर तक पहुंच सकता है। संगीत, कला व साहित्य मनुष्य को लौकिक एवं भौतिक वृत्तियों से निवृत्ति दिलाकर उच्च आध्यात्मिक ऊंचाइयां तक ले जाने की क्षमता रखता है जो कि मनुष्य को आत्मज्ञान प्रदान करने में बेहद सहायक है।

पंडित जी कहते हैं कि जैसे ईश्वर एक है और उसने सभी मनुष्यों को एक समान रचा है और कभी उसमें भेद नहीं किया, उसी प्रकार संगीत भी एक है तथा ईश्वर तक पहुंचाने का मार्ग भी एक है, और वह है संगीत ।

अध्यात्म : पंडित छन्नूलाल मिश्र का दृष्टि मे

आध्यात्मिक दृष्टिकोण के अंतर्गत पंडित जी कहते हैं कि बिना वेदों अथवा पुराणों के अध्ययन के बिना सार्थक नहीं होता। वेदों का ज्ञान तथा धार्मिक दृष्टिकोण एवं चारित्रिक आत्मसात यही आध्यात्म है। गीता के आठवें अध्याय में भगवान श्री कृष्ण ने अपने स्वरूप अर्थात जीवात्मा को ही आध्यात्म कहा है--

"परमं स्वभावो**S**ध्यात्ममुच्यते"

अर्थात आध्यात्म का अर्थ है-अपने भीतर के चेतन तत्व को जानना या आत्मप्रज्ञ होना। आध्यात्मिक अनुभूति वास्तव में समस्त प्राणियों में समान रूप से निरंतर होती रहती है,क्योंकि स्वयं की खोज तो सभी कर रहे हैं प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से चेतना का अध्ययन ही अध्यात्म का विषय है। आध्यात्म परमार्थ ज्ञान है चिन्मय सत्ता का ज्ञान है, आध्यात्मिक जीवन जीने का अर्थ है हमारे गुण, कर्म एवं स्वभाव में उचित बदलाव। किसी उद्देश्य की पूर्ति में संगीत एक महत्वपूर्ण माध्यम है संगीत कला दिव्य कला है, जिसके शरण में आते ही साधक का रोम- रोम दिव्य अनुभूतियों से संजीव होता है।[361] संगीत और आध्यात्म आपस में इतने जुड़े हुए हैं बात बस इतनी है कि आप सच्चे भाव के साथ आप अपने काम में पूरी तरह डूब जाते हैं, कि उसमें पूरी तन्मयता से शामिल होते हैं, तो आध्यात्मिक प्रक्रिया वहीं से आरंभ होती है। सबसे पहले यह जानना आवश्यक है कि आध्यात्मिक प्रक्रिया है क्या? किसी भी चीज को सतही तौर पर जानना सांसारिकता है,और उसे ही गहराई तक जानना आध्यात्मिकता है। किसी ने आध्यात्मिक को ईश्वर से जोड़ा तो किसी ने संगीत से। पंडित जी का मानना है कि "आध्यात्म जीवन शैली है, आध्यात्म दिनचर्या है, विचारों का एक समूह है, आध्यात्म जिसके जिसमें मात्र सुविचारों के लिए ही स्थान होता है। पंडित जी के जीवन में वैसे जन्म से ही अध्यात्म जुड़ा था

[361] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

किंतु ब्रह्म स्वरूप गुरु महाराज का सानिध्य प्राप्त होने के पश्चात पंडित जी अध्यात्म और संगीत के पवित्र संगम बन गए। उनके गायन तथा व्यक्तित्व मे जिसे दिव्यता ने प्रवेश किया उसने पंडित जी के व्यक्तित्व को "संगीतज्ञ संत"के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। ईश्वर तत्व की परिभाषा एवं उसकी अभिव्यक्ति का उनका अपना अलग ही दृष्टिकोण है, उनके अपने अनुभव,अध्ययन एवं गुरु महाराज से प्राप्त ज्ञान के कारण उन्होंने संगीत तथा अध्यात्म का एक विशेष अध्याय प्रारंभ किया जो उन्हें अन्य कलाकारों से अलग बनाता है।[362]

पंडित जी कहते हैं "गुरु महाराज ने उन्हें कोई विशेष साधना नहीं करवाई, उन्होंने हमेशा यही सिखाया की आध्यात्म का अभ्यास करने के लिए विशेष प्रशिक्षण या अतिरिक्त श्रम की आवश्यकता नहीं होती, बस अपने जीवन में आध्यात्म को समाहित करना होता है ।अपनी हर सोच ईश्वर को समर्पित करनी होती है, हर कर्म, हर वचन, हर विचार ,हर प्रकृति से पहले बस ईश्वर का ध्यान करके उनको समर्पित करके जीवन जीना आध्यात्मिक का शुद्ध एवं वास्तविक स्वरूप है।प्रातः काल उठने से लेकर रात्रि में सोने से पूर्व तक अपना हर कारण भगवान को समर्पित करके उन्हें धन्यवाद देते रहना ही वास्तविक आध्यात्मिकता है, और ऐसे संस्कार मुझे भी अपने गुरु एवं माता-पिता से मिले हैं।

पंडित जी तो कई बार अपने संगीत में श्रृंगार रस को भी भक्ति रस में परिवर्तित करने का प्रयोग करते हैं।ख्याल की स्वरचित बंदिश हो या ग़ज़लों के शेर, उनमें ईश्वर तत्व या आध्यात्मिक रूप को ढूंढ ही लेते हैं तथा उसके शब्दों को महसूस करके और उस भाव को आत्मसात करके जब अपनी प्रस्तुति देते हैं तो श्रोताओं के मन में बिल्कुल वैसे ही भावनाएं पहुंचती है जिस प्रकार वह भेजना चाहते हैं।

---

[362] श्री अमन कुमार शिष्य से प्राप्त जानकारी के अनुसार

रामचरितमानस के प्रसंग का तो ऐसा वर्णन एवं जीवंत रूपन करते हैं कि" लगता है मानो साक्षात सामने प्रसंग के रूप में दृश्य चल रहा हो।"

गुरु मंत्र "राम" नाम की अनूठी व्याख्या

पौराणिक वेद पुराणों आध्यात्मिक ग्रंथ आदि में 108 अंक का विशेष महत्व माना जाता है। भारतीय ज्योतिषीय प्रणाली में भी इस अंक को पूर्ण तथा शुभ अंक माना जाता है। मंत्रों का 108 बार जप करना अथवा जप माला में 108 मोतियों का होना तथा परिक्रमा आदि में भी 108 अंक का वर्णन होना ऐसे कुछ विशेष उदाहरण है।कहते हैं भगवान शिव के तांडव नृत्य में कुल 108 नृत्य मुद्राएं होती थी। शिवजी के गणों की संख्या भी 108 थी वृंदावन में 108 गोपियों का वर्णन सुनने को मिलता है, तथा रुद्राक्ष की माला में भी 108 मनके होते हैं। कहते हैं हिंदू धर्म की सबसे पवित्र नदी गंगा 12 डिग्री के देशांतर और 9 डिग्री के अक्षांश पर फैली हुई है जिसका गुणनफल करने पर 108 अंक प्राप्त होता है।[363] इस प्रकार अगर शोर किया जाए तो 108 अंक विशेष रूप से महत्व पाता है। पंडित जी रामचरितमानस का नियमित पाठ करने वाले विशुद्ध वैष्णव सनातनी ब्राह्मण है गुरु द्वारा राम मंत्र मिलने के पश्चात उन्होंने स्वयं को राम के लिए समर्पित कर दिया, उनके अनुसार भगवान 'राम ही परम ब्रह्म' है, 'राम से बड़ा राम का नाम'। असंख्य संत महात्मा ने राम का नाम जपते जपते मोक्ष प्राप्ति कर लेते है। राम भक्त हनुमान, लक्ष्मण,सुग्रीव से लेकर कबीर, तुलसी और गांधी जी तक सभी राम का नाम जपते रहे हैं, यही नहीं रावण ने भी अपने अंतिम समय में राम का नाम ही पुकार कर अपना परलोक सुधारा।राम नाम की महिमा से पत्थर भी तैरने लगते हैं तो फिर यह सांसारिक जीवन पर क्यों नहीं होगा इसलिए मेरे गुरु ने मुझे राम मंत्र दिया।

---

[363] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

इसी संदर्भ में पंडित जी एक बहुत ही सुंदर विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि-

"रकार निर्विकार निराकार ब्रह्म सारमय
मकार महातत्व प्रकृति शक्ति है समान की।।
रकार मे है विधि हरि हर सिद्धि साध्य सब
मकार मे उमा रमादी होत हैं कितान की।।

रकार और मकार की अपार रघुनाथ गाथ
पावत नहीं पर शेष शारदा बखान की।।

उपासना अखंड एक नाम की रहे सदा[364]
रकार रामचंद्र हैं मकार मातु जानकी।।[365]

पंडित जी की व्याख्या के अनुसार राम नाम में "र" रकार भगवान राम हैं तथा मानकर माता सीता है अतः इन दोनों के मध्य में जो आकर है वही हम जीव हैं अतः यदि हम भगवान राम एवं माता सीता को स्वयं को समर्पित करें तो प्रभु अवश्य हमें हृदय से लगाएंगे। गुरु द्वारा प्रदत्त जीवन दर्शन पर आधारित रामचरितमानस की पंक्तियां-

आये का हर्ष नहीं, गए का सोच नहीं
कैसो निर्द्वंद भयो समझने की बात है।

[364] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित
[365] डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी

देह नेह नेरे नहिं, लक्ष्मी को हेरे नहिं
मन को कहूं फेरे नहि, पाहन सम गात है।।

लोकन को रीत नहिं,काहू से प्रीत नहिं
हार नहिं जीत नहिं ,नहिं वर्ण नहीं जात है।।

ऐसो जब ज्ञान होत,तबही कछु ध्यान होत
राम के समान होत राम में मिलात है।।[366]

इन पंक्तियों के सार को पंडित जी ने अपने जीवन का सिद्धांत बना लिया। राममय जीवन जीने के साथ ही उन्होंने रामचरितमानस के सिद्धांतों एवं जीवन दर्शन को पूर्ण रूप से अपने जीवन का आधार बनाया। रामायण एवं रामचरितमानस की समस्त पंक्तियों को संगीत में बनाकर स्वरबद्ध तरीके से हमेशा साधना की तथा अपने विचारों एवं आध्यात्मिक मान्यताओं से आध्यात्मिक संगीत के क्षेत्र में भी विशेष योगदान दिया।

पंडित जी का विचार है कि "साकार ब्रह्म का मंदिर तो बहुत मिल जाता है परंतु निराकार ब्रह्म का मंदिर वही होता है,जहां स्वरों के द्वारा ईश्वर का आह्वान किया जाता है"।

इस प्रकार पंडित जी संगीत एवं आध्यात्मिक को अलग करके नहीं बल्कि सम्यक रूप से देखते हैं।संगीत और अध्ययन पर सत्संग एवं चर्चा पंडित जी का प्रिय विषय

[366] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

है। पंडित जी को जाने वाले सभी लोग उन्हें संगीतज्ञ के होने के साथ-साथ संत के रूप में भी मानते हैं।उनके आध्यात्मिक संगीत एवं उसे संगीत के वर्णन ने उन्हें "संत संगीतज्ञ" के आसन पर सुशोभित किया है ऐसी छवि भारत वर्ष में किसी अन्य कलाकार की नहीं है, जो संगीत के साथ-साथ आध्यात्मिक की भी अच्छा बारीकियों का इतनी सहज व्याख्यात्मक प्रदर्शन करते हैं।

"भक्ति तात अनुपम सुख मूला
मिले जो संत होही अनुकूला"

अर्थात जब तक किसी संत की दृष्टि हमारे अनुकूल न हो तब तक सुखों के मूल भगवत भक्ति को प्राप्त करना संभव नहीं है। घर का वातावरण धार्मिक होने के कारण बचपन से ही आपकी रुचि आध्यात्म मे थी। धार्मिक ग्रंथ- रामायण, रामचरितमानस, गीता, मनुस्मृति, तुलसीदास कृत विनय पत्रिका, कवितावली, दोहावली, सूरदास, कबीरदास, मीरा आदि भक्तिकालीन कवियों के रचनाओं में विशेष रूप से आपका मन रमता था। आपने भगवान और संगीत को जोड़कर अद्वितीय परिकल्पना के साथ अपने संगीत के पक्ष को प्रस्तुत किया है।आज जहां अधिकांश संगीत को मनोरंजन के रूप में प्रयोग किया जाता है, वही आपका संगीत "भवभय भंजन'' के लिए है जिसका मुख्य उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति है।

पंडित जी का गायन पूर्ण रूपेण आध्यात्मिक है उनके अनुसार स्वर द्वारा ही मोक्ष की प्राप्ति सुगमता से हो सकती है, इसलिए प्राचीन काल से ही संतों ने स्वरों का सहारा लिया है।कला पक्ष एवं भाव पक्ष ही नहीं अपितु अलौकिक और अलौकिक संगीत के भी वर्तमान समय की महत्वपूर्ण कड़ी है पंडित जी। इन्होंने तथ्यों द्वारा यह सिद्ध किया है कि 7 स्वर ही ईश्वर तक पहुंचाने की सात प्रमुख सीढ़ियां हैं--

"सत्य प्रबंध सुभग सोपना, ज्ञान नयन निरखत मनमाना"

यहां रामायण के साथ कांडों को ही सात प्रबंध कहा गया है। मंदिरों में यदि साकार ब्रह्म की छवि दृष्टिगत होती है, तो लय एवं स्वर अर्थात संगीत में निराकार ब्रह्म की अनुभूति होती है। स्वर दृष्टिगत नहीं होते किंतु इनका प्रभाव हर चल- अचल पर अवश्य होता है।भारतीय संगीत ग्रंथो में भी कभी साध्य नहीं माना गया अपितु अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सदैव उसे साधन के रूप में स्वीकार किया गया है। संगीत का प्रयोग विरेचन के लिए किया जाता है और विरेचन से तात्पर्य है- स्तुति,भजन, आरती, गुरुवाणी,मंत्र उच्चारण, के समय व्यक्ति छल, कपट, झूठ,अहंकार, क्रोध, लोभ आदि जो दुर्गुणों से ऊपर उठता है, यही विरेचन है और संगीत द्वारा इसकी पूर्ति अवश्य होती है।

पंडित जी कहते हैं- स्वर् लय के साथ नाम का गुणगान करना ही सच्चे अर्थों में भक्ति है। पंडित जी शास्त्रीय संगीत में अनेक स्वरचित बंदिशे गाते हैं, वह सभी अध्यात्म आधारित होती हैं।

*राग पूरिया विलंबित ख्याल

ए करतार तुम हो उदार, तेरो गुण अपरंपार[367]

[367] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

* राग यमन का द्रुत ख्याल

दर्शन बिनु नैना तरसे
तुम चले आओ बेगी दरस दो
इतनी अरज सुन हरी सों।।

* राग हंसध्वनि का द्रुत ख्याल
जय दुर्गे जगदंब भवानी
सकल अमंगल हरनी दयानी।।

* ठुमरी मध्य लय बोल बनाव

श्याम बिना चैन ना आवे
सखी री उनके दरस बिनु[368]
मैं का कछु ना सुहावे ।।[369]

* राग अहीर भैरव द्रुत ख्याल

ए जोगिया आ तेरे द्वारे

---

[368] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित
[369] श्रीमती कुमुद दीवान द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार

आयो रे एक बाला जोगी।।

* राग पूरिया का द्रुत ख्याल

अरज सुनो दस्तगीर पीर मोरी
आन पड़ी मोपे भीर पीर मोरी।।

* चैती आध्यात्मपरक कला पक्ष निर्गुण

कइसे सजन घर जइबे हो रामा, समझ ना आवे।।

* केवट संवाद रामचरितमानस प्रसंग
मैं ना ली हों प्रभु तेरी उतराई।।

* जटायु संवाद रामचरितमानस प्रसंग

जात जटाई रथ पर, निरखत जात जटाई
करुणा करत चली वैदेही शरण शरण गुहराई
ऐसा कोई वीर अयोध्या में होवै रथ से लेत छुड़ाई
रथ पर निरखत जात जटाई।।
* भोजपुरी गीत

भजन बिनु देहिया आवे कौने काम

पूरी मिठाई रुचि रुचि खइल, कबहूं ना लेहल राम के नाम।

ऐसे कुछ उदाहरण है उनके द्वारा रचित बंदिशें एवं गीत शैलियों का उनके पास अपार भंडार हैं जो उनके गीतों में ईश्वर एवं जीव तत्व के संबंध को दर्शाते हैं।

पंडित जी को गंगा से अगाध प्रेम है ।अपने कार्यक्रमों में भी "गंगा सफाई अभियान से जुड़ने की बात हो अथवा धार्मिक दृष्टि से उसके महत्व की चर्चा, पंडित जी ने हर प्रकार से अपना धार्मिक, सामाजिक एवं सांगीतिक योगदान दिया है। "माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने जब गंगा सफाई अभियान का आरंभ किया तो अपने नवरत्नों में पंडित जी को भी शामिल किया" गंगा महोत्सव ध्रुपद मेला, गुलाब बाड़ी बुढ़वा मंगल,आदि अनेक विश्व प्रसिद्ध सांस्कृतिक आयोजन गंगा मां के पावन तट पर बहुत वर्षों से होते आए हैं, तथा पिछले 60 से 70 वर्षों से पंडित जी इन मंचों पर प्रस्तुति देते आ रहे हैं।[370]
मोक्षदायिनी मां गंगा का महत्व बताते हुए पंडित जी एक रचना प्रस्तुत करते हैं, कि किस प्रकार कवि केशव ने मां गंगा के नाम रूप, लीला और धाम को एक ही पद में समाहित एवं वर्णित किया है-

नाम लिए कितने तरि जात, प्रणाम किये सुरलोक सिधारी।।
तीर गए तो तरे तो कहा,कितने तरी जात तरंग निहारी।।
जानवी तेरो सुभाव इहै, कवि केशव तो उर में प्रण धारी।।

[370] श्रीमती कुमुद दीवान द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार

भागीरथी हम दोष भरे , है भरोसा इहै के परोस तिहारी।।

पंडित जी कहते हैं - मां गंगा हम सब की मां है और मां को निर्मल करने के लिए हम सबको कटिबद्ध होना पड़ेगा यदि मन दुखी है तो बच्चा सुखी कैसे हो सकता है माता गंगा का बहुत बड़ा महत्व है। इसी से पता चलता है कि भगवान राम ने भी रामचरितमानस में उनकी स्तुति एवं वंदन की है भगवान शिव के सिर पर उनके जटाओं में विराजमान मां गंगा काशी नगरी का प्राण तत्व है।

पंडित जी की मान्यता के अनुसार संगीत गुरुमुखी विद्या है तथा यह बिना गुरु के संभव नहीं है। आज कहीं संसाधनों का आविष्कार हो चुका है, जिससे सीखने सिखाने की कोशिश की जा रही है, किंतु यह अभिजात संगीत में आएगा,शास्त्रीय संगीत की श्रेणी में नहीं। गुरु की छाया में बैठकर अनमोल सीखों का प्रसाद मिलता है,गुरु हमें कल्पना के आकाश में उड़ना सिखाते हैं। संगीत के अलौकिक राशियों को जानने समझने की आत्म शक्ति का संचार करते हैं, जाने अनजाने में शिक्षक के जीवन पर पड़ता ही है, क्योंकि गुरु के हर शब्द का कोई ना कोई अर्थ होता है जो कई बार हमें बाद में समझ में आता है।

संत कबीर दास का भजन जो पंडित जी द्वारा स्वरबद्ध है, तथा उनके हृदय के अत्यंत करीब है-

भाई रे, सो गुरु सत्य कहावै कोई नैनन अलख लखावे
डोलत डिगै ना बोलत बिसरै, अस उपदेश दृढावै।।[371]
जप- तप- योग- क्रिया- तें न्यारा, सहज समाधि सिखावे।।
काया कष्ट भूली नहीं देवैं, नहिं संसार छोड़ावै।।
यह मन जाए जहां-जहां कहां-कहां परमात्मा दर्शावे।।

[371] डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

कर्म करें निष्कर्म रहे कछु, ऐसी जुगति बतावै।।
सदा विलास त्रास नहीं मन में, भोग में जोग जगावे।।
भीतर बाहर एक ही देखें, दूजा दृष्टि ना आवे।।
कहीं कबीर कोई सतगुरु ऐसा, आवागमन छुड़ावै।।[372]

पंडित जी ने कहा कि जब मेरी उम्र 8 साल की रही होगी, तभी मुझे जीवन में "गुरु" संज्ञा शब्द का बोध हो गया था ।कहते हैं "गुरु कभी मरते नहीं है आज भी मेरे सपने में आते हैं मैं आज भी उनसे सीखता हूं और वह मेरी आत्मा में सदा बसे रहते हैं। अपने शिष्यों को भी सीखते समय बातों में इस प्रकार की सूचना बातें समझा देते हैं कि यदि कोई वास्तव में आत्मसात ले, तो जीवन और संगीत दोनों ही संवर जाए। बाल्यावस्था में ही मुझे रामायण और सुंदरकांड का पाठ करवाया जाता था तथा आज इसी का परिणाम है कि मुझे साहित्य तथा आध्यात्मिक दोनों ही पक्षों का ज्ञान है। मैं गांव के बुजुर्गों के पास बैठकर उनसे बहुत प्रश्न पूछता था, और हर कोई मुझे अपने अनुसार ज्ञान देता था मैं उसके सार को अपने हृदय में धारण करता था ,रटा हुआ ज्ञान भले ही समय के साथ भूल जाए, किंतु सुना, समझा व्यवहारिक ज्ञान अंतिम समय तक कंठ में रहता है। गांव में अपने घरों में काम करते हुए गुनगुनाते हुए बड़ी बूढियों को भी ध्यान से सुनता था ,"लिखा हुआ गाना पेटी में बंद रहता है जबकि सीखा हुआ गाना हमेशा के लिए दिमाग में बस जाता है" इसलिए हमेशा प्रत्यक्ष ज्ञान को ही प्राप्त करने का प्रयास किया।
और इस प्राप्त ज्ञान को अपने आध्यात्मिक भावों से पिरोकर अपनी कलात्मक क्षमता बढ़ाई और सामाजिक एवं आध्यात्मिक स्तर पर प्रचार प्रसार किया।

[372] डॉ इंद्रेश मिश्रा से प्राप्त जानकारी के आधार पर

पंडित छन्नूलाल मिश्रा के प्रमुख भजन, कैसेट एवं म्यूजिक एल्बम

1.केवट संवाद रामचरितमानस 2005 देवी फाउंडेशन

2.विंधेश्वरी चालीसा 2018, देवी फाउंडेशन

3 ठुमक चलत रामचंद्र राग मिश्र बिलावल 2018

4. राम रंग देवी फाउंडेशन 2018

5. डिमिक-डिमिक डमरू कर बाजे, शिव विवाह, देवी फाउंडेशन 2018

6. कबीर भजन, माया महा ठगी हम जानी, देवी फाउंडेशन 2018

7. नमामि भक्त वत्सलम, राम रंग 2018

8. अयोध्या कांड रामचरितमानस 2005 लिविंग इंडिया मीडिया लिमिटेड

9. जाए ना बरनी मनोहर जोड़ी, राग मिश्र पीलू 2019

10. कबीर, संगीत एल्बम देवी फाउंडेशन 2018

11. टेसू के फूल, देवी फाउंडेशन,

12. शिव विवाह देवी फाउंडेशन 2018

13. अंजलि, देवी फाउंडेशन, 2018

14. दुनिया दर्शन का है मेला, देवी फाउंडेशन 2018

15. भये प्रगट कृपाला दीन दयाला राम भजन 2006

16. श्री दुर्गा चालीसा अंजलि देवी फाउंडेशन 2018

17. कृष्ण माधव भजन श्रीधर 2018 देवी फाउंडेशन

18. कृष्णा निनाद म्यूजिक कंपनी 2022

19. स्वर उत्सव म्यूजिक टुडे 2001

20. संकट मोचन संगीत समारोह वाराणसी

21. स्पिरिट ऑफ़ बनारस अहमदाबाद

22. भजन संध्या मुंबई

23. द इकोस का बनारस म्यूजिक टुडे

24. द रेन रागा लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड दिल्ली

25. सुंदरकांड भाग 1 2 3 देवी फाउंडेशन दिल्ली 2016[373]

निष्कर्ष

पंडित जी काशी तथा हरिहरपुर के दोनों घरानों से ज्ञान प्राप्ति के बावजूद चारों पट के गायन में निपुण हैं,तथा इन्होंने संगीत के हर पक्ष की भांति आध्यात्मिक संगीत में भी उत्तरोत्तर स्थान प्राप्त किया है। श्रोतागण इन्हें "संगीत संत" की संज्ञा से भी विभूषित करते हैं।पंडित जी का भावपूर्ण गायन एवं व्याख्या पूर्ण प्रदर्शन तथा अपने गायन में समस्त धार्मिक कवियों की रचनाओं को सम्मिलित करते हुए उन्होंने आध्यात्मिक संगीत को जन -जन तक प्रसारित किया है तथा इन्होंने भाषाई तौर पर भी हर क्षेत्र में स्वयं को सिद्ध किया है। इन्होंने पारंपरिक संगीत तथा अनेक ख्यातिलब्ध कवियों की रचनाओं को अपनी कलात्मक एवं संगीतात्मक रचनाओं द्वारा हर मंच पर प्रसारित किया है। आपने अपनी गायकी के प्रस्तुतीकरण के माध्यम से श्रोताओं को आध्यात्मिक एवं अलौकिक शांति की तृष्णा तृप्ति करवाना आपके गायन का मुख्य उद्देश्य रहा है। आपका संगीत साधना, समर्पण एवं कर्मशीलता आपके कलात्मक व्यक्तित्व को स्पष्ट करता है ईश्वर आपको दीर्घायु प्रदान करें,ताकि बनारस एवं हरिहरपुर की हर प्रकार की गायन शैली की अमूल्य धरोहर, संपदा एवं परंपरा के उन्नतशीलता में आप हमेशा सक्रिय एवं सकारात्मक भूमिका अदा करते रहें तथा नवीन पीढ़ी का भी मार्ग प्रशस्त करते रहें।

---

[373] डॉ नम्रता मिश्रा से प्राप्त जानकारी के आधार पर

4.4 - पंडित छन्नूलाल मिश्र का पार्श्वगायन एवं लोक गायन

पारिभाषिक तौर पर जो संस्कृति लोक की होती हैं, लोक के लिए होती है तथा लोक के द्वारा होती है, उसे लोक संस्कृति कहा जाता है। प्रत्येक लोक संस्कृति की उत्पत्ति 'लोक मानस' द्वारा होती है।[374]

प्रत्येक जनपद प्रदेश या एक क्षेत्र विशेष के अपने विश्वास, विचार, भाव, धारणा, मान्यताएं, परंपराएं, रीति रिवाज, रहन-सहन के तरीके, खान-पान तथा पहनावा अधिकार ढंग होता है इन्हीं का समुच्चय ही लोक संस्कृति कहलाता हैं।

लोक संस्कृति तो संस्कृति का ही जीवंत रूप होती है। [375]डॉक्टर रामानंद तिवारी ने इस तथ्य को संदर्भित करते हुए कहा है "लोक संस्कृति को लोकप्रिय और जीवंत रूप कहना चाहिए, लोक संस्कृति में जीवंतता आती है और इसकी सहजता, सरलता, स्वाभाविकता एवं व्यापकता से"

लोक संगीत एक ऐसी विधा है जिसकी जड़ संगीत जगत में गहराई से जुड़ी हैं। लोक संगीत मानव का चिरसंगी संगीत है, यह एक ऐसी भाषा है जिसका प्रयोग आदिकाल से अनंत काल तक होता रहेगा इतने समय के अनेक थपेड़ों तथा उतार-चढ़ाव सहने के बाद इनका प्रभाव आज भी दृष्टिगत है।

भारतीय संगीत में शास्त्रीय संगीत तथा लोक संगीत दोनों ही सांगीतिक वृक्ष की दो शाखाएं हैं। संगीत के यह दोनों ही पक्ष अनादि काल से एक दूसरे के समक्ष चलते आए हैं, तथा एक दूसरे से प्रेरणा ग्रहण करते रहे हैं।वैदिक कालीन संगीत के श्रवण से यह प्रतीत होता है कि उस काल में लोक तथा शास्त्रीय संगीत में कोई भेद नहीं

---

[374] संगीत निबंध संग्रह हरिश्चंद्र श्रीवास्तव पृष्ठ संख्या 82

[375] डॉ रामानंद तिवारी, हमारी जीवंत संस्कृति पृष्ठ संख्या 18

था, भेद तब उत्पन्न हुआ, जब समाज के सांस्कृतिक तथा सामाजिक स्तरों में भेद होने लगा।जन मानस ने संगीत की एक पद्धति अपनाई और संगीत की विशिष्ट प्रेमियों ने दूसरी शैली को प्राप्त किया, और धीरे-धीरे यह भेद बढ़ता ही गया।

यह सर्वविदित है कि लोक संगीत एवं शास्त्रीय संगीत एक दूसरे के विकसित रूप नहीं है ,दोनों ही स्वरूप एक साथ अंकुरित एवं विकसित हुआ, और दोनों ही एक दूसरे से प्रेरणा ग्रहण करते रहे,मोटे तौर पर लोक संगीत संगीत का लोक पक्ष या जनमानस का पक्ष है,और शास्त्रीय संगीत उसका वह पक्ष है जो व्यक्ति विशेष की प्रतिभा के अनुसार विशिष्ट शास्त्रों में निबद्ध है।

इन तथ्यों में एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि लोक संगीत कभी शास्त्रीय पक्ष को प्राप्त नहीं करता और ना ही शास्त्रीय संगीत कभी लोक पक्ष को प्राप्त होता है।शास्त्रीय गीत को सुगम कर देने से उसमें तान, मुर्कियां, पलटे एवं स्वर संबंधी रचनात्मक हटाकर गाने से भी वह कभी लोक संगीत नहीं बन जाता और ना ही लोकगीत को स्वर्,तान,पलटे जैसी चीजों से बांध देने से शास्त्रीय संगीत बन सकता है।

पंडित छन्नूलाल मिश्र कहते हैं कि "यह दोनों ही भारतीय संगीत की कड़ियां हैं जो भले ही अलग हैं लेकिन एक साथ जुड़ी हुई भी है। शास्त्रीय संगीत बुद्धिजीवियों विद्वानों तथा विशिष्ट सामाजिक स्तर के लोगों का है, और लोक संगीत सामान्य एवं निर्धन जनों की धरोहर है, जिसे समाज ने अपने धार्मिक रीति-रिवाज एवं परंपराओं के माध्यम से सहेज कर रखा है।

शास्त्रीय संगीत जैसा कि नाम से स्पष्ट है शुद्ध, शास्त्रीय तथा निजी शास्त्र है। प्रत्येक गायक और वादक को शास्त्र के नियमों का पालन करना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य होता है।शास्त्रीय संगीत राग प्रधान है तथा रागों के कुछ निश्चित नियम होते हैं, उनके स्वर तथा स्थान में निश्चित होते हैं, इसके अतिरिक्त स्वरों का चलन वादी संवादी , उत्तरांग- पूर्वांग इत्यादि कुछ परंपरागत नियम होते हैं और इनका

पालन करते हुए रचना करना शास्त्रीय संगीतज्ञ का परम कर्तव्य है, वहीं दूसरी ओर लोक संगीत भाव का संगीत है इसमें केवल स्वर और ताल तथा भाव का होना पर्याप्त है।[376]

यह दोनों भाव एक दूसरे से स्वतंत्र हैं। शास्त्रीय संगीत का प्रेरणा स्रोत व्यक्ति एवं शास्त्र है, और यह शास्त्रीय नियमों में बंधा स्वतंत्रता पूर्वक विचरण करने का अधिकारी नहीं है, वही लोक संगीत का प्रेरणा स्रोत जनमानस है, उसका विकास और संरक्षण क्षेत्र अधिक विस्तृत है। शास्त्रीय संगीत के प्रयोग एवं परिक्षण के लिए शास्त्र ज्ञान की आवश्यकता होती है,तथा विशिष्ट अभ्यास क्रम से गुजरने की जरूरत है, परंतु लोक संगीत के प्रयोग के लिए किसी अभ्यास की आवश्यकता नहीं है ।शास्त्रीय संगीत व्यक्ति साधना का प्रतीक है तथा लोक संगीत सामुदायिक साधना का।

शास्त्रीय एवं लोक संगीत के नियम भले ही अलग-अलग हो लेकिन दोनों ही एक वृक्ष शाखा है।शास्त्रीय संगीत ने लोक संगीत से जो प्राप्त किया है, वह कल्पनातीत है। अनादि काल से भारतीय संगीत मे शास्त्रों की चर्चा है।संगीत रचनाऐं जब प्रौढ़ता को प्राप्त होती हैं, तभी उन पर शास्त्र बनते हैं पहले रचनाएं होती हैं, उनमें अनेक प्रकार के वाद विवाद, प्रकार, उपप्रकार,क्रिया प्रतिक्रियाएं चलती रहती हैं,तब जाकर शास्त्रों का आधार लिया जाता है।उच्छृंखल रचनाओं को नियंत्रित करने के लिए शास्त्र दिशा निर्देश करता है।प्रारंभ में शास्त्र सरल, सुगम तथा संक्षिप्त होता है,बाद में रचना क्रम के विस्तार के साथ पेचीदा होने लगता है,अनेक नियम उपनियम धाराओं उपधाराओंकी सृष्टि होती है। प्रारंभिक संगीत कैसा रहा होगा इसकी कल्पना "सामवेद" के ऋचाओं से की जा सकती है। सामवेद में राग

[376] लक्ष्मी नारायण गर्ग, निबंध संगीत कृष्ण संख्या 69 70 71

रागिनियो की बारीकियो का समावेश नहीं है, उसके बाद के सभी शास्त्र क्लिष्ट तथा पेचीदा होते गए। भरत मुनि का "नाट्यशास्त्र" जो भारतीय संगीत में "पंचम वेद" के नाम से प्रचलित हुआ सामवेद से भी अधिक जटिल है। और उसके बाद के ग्रंथ "संगीत रत्नाकर" जैसे शास्त्रीय ग्रंथ प्रारंभिक शास्त्रों में दोनों ही समकक्ष तथा समानांतर हुए हैं। कभी-कभी तो रचना स्वयं ही शास्त्र बन गई और शास्त्र ही रचना बन गया , यही कारण है कि उस समय के साहित्य, संगीत तथा नाट्य शास्त्र अलग-अलग नहीं थे, एक ही शास्त्र सबके लिए प्रयुक्त होता था।उनमें अलग-अलग स्तुति की कल्पना कठिन थी,परंतु शनैः -शनैः उनका सामंजस्य जैसे कम होता गया और संगीत का अपना एक अलग शास्त्र अस्तित्व में आया तत्पश्चात ही लोक तथा शास्त्रीय पक्ष अलग-अलग हो गए। ऐसी स्थिति में शास्त्रीय संगीत को अपने मूल प्रेरणा स्रोत लोक संगीत से बहुत कुछ सीखना था, पहले जब उन दोनों का संयुक्त अस्तित्व था, तब उनके राग स्वभावतः रचयिता के भावों अनुभावों के साथ घुले मिले थे,उस समय जो गीत जनता में प्रचलित थे, वह सरस, सरल तथा भावनात्मक रूप से संचालित होते थे।वह उत्सव, समारोह, हर्ष उल्लास के समय सामूहिक रूप से गाए जाते थे।[377]

धार्मिक उत्सवों पर त्योहारों एवं पूजा पाठ आदि के अवसर पर विशिष्ट सिद्धांत के अनुसार ध्वनि तथा स्वास्थ्य के उतार चढ़ाव के साथ जो गीत गाए जाते थे यह विशेष प्रकार के होते थे।उनकी गान विधि विशिष्ट नियमों से बंधी थी। संगीत में यह दो ही प्रारंभिक भेद थे-प्रथम शैली में संगीत में स्वतंत्रता सामूहिक अभिव्यक्ति के रूप में मानव की उन्मुक्त भावनाएं स्वरूप शब्दों के रूप में गूंथकर मुखरित हुई थी, उस समय यह दोनों पक्ष स्पष्ट थे, और ऐसा जान पड़ता है कि पहला पक्ष लोक संगीत के रूप में तथा दूसरा पक्ष शास्त्रीय संगीत के रूप

[377] निबंध संगीत लक्ष्मी नारायण गर्ग पृष्ठ संख्या 69

में विकसित हुआ।यही क्रम सहस्त्र वर्षों तक चलता रहा। शास्त्रीय संगीत का शास्त्र पक्ष संगीत के विकास और प्रचलन के साथ प्रबल रूप धारण करता गया तथा लोक संगीत से उसे शाश्वत प्रेरणा मिलती रही।

लोकगीतों का संगीत के विकास में योगदान

"देशे देशे जनानां यद् रुच्या गायनं भवेत्।
तदेव लोकसंगीतं संस्कृतेः प्रतिबिम्बकम्॥"

भारतीय संगीत की विकास-यात्रा में लोकगीतों का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं आधारभूत रहा है। लोकगीत किसी क्षेत्र विशेष की सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक जीवन, धार्मिक विश्वास, उत्सव, श्रम, प्रकृति तथा मानवीय संवेदनाओं की सहज अभिव्यक्ति हैं। शास्त्रीय संगीत जहाँ निश्चित नियमों एवं व्याकरण पर आधारित है, वहीं लोकगीत जनजीवन की स्वाभाविक अभिव्यक्ति के रूप में विकसित हुए हैं। यही कारण है कि भारतीय संगीत की अनेक राग-रागिनियाँ, धुनें तथा गायन-शैलियाँ लोकसंगीत से प्रेरित होकर समृद्ध हुई हैं।[378]

लोकगीतों की सबसे बड़ी विशेषता उनकी सहजता और भावात्मकता है। जन्म, विवाह, ऋतु-परिवर्तन, कृषि-कार्य, धार्मिक अनुष्ठान तथा पर्व-त्योहारों के अवसर पर गाए जाने वाले लोकगीत समाज की सांस्कृतिक स्मृति को सुरक्षित रखते हैं। इन गीतों में प्रयुक्त स्वर-विन्यास, लय, ताल तथा धुनों ने भारतीय संगीत को नवीन आयाम प्रदान किए। अनेक लोकधुनों को समय के साथ शास्त्रीय संगीतकारों ने

[378] डॉ. अशोक दामोदर रानाडे, *हिन्दुस्तानी संगीत : परंपरा और विकास*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 87–94।

परिष्कृत कर रागात्मक स्वरूप प्रदान किया, जिससे शास्त्रीय संगीत का भंडार और अधिक समृद्ध हुआ।[379]

सृष्टि के साथ ही साथ संगीत आत्म अभिव्यक्ति के सर्वोच्च साधन के रूप में जन-जन के लिए सम्माननीय रहा है। मनुष्य ही नहीं पशु पक्षियों ने भी संगीत की अलौकिक चिरंजीव तथा आनंदमई शक्ति का परिचय अपनी मधुर ध्वनि द्वारा एवं विशाल आह्लाद सिंधु में डूब जाने की आत्म विवशता से वैदिक वांगमय से लेकर आधुनिकतम संगीत का सर्व कलातिशयी महत्व निर्विवाद रहा है। संगीत मानव अंतरमन की संवेदनशील, भावुकता पूर्ण तथा लयदार वाणी है, जो चेतना के अति विशिष्ट आयाम को अभिव्यक्त कर युग विशेष, समाज विशेष, अथवा व्यक्ति विशेष की भावनाओं को क्रियात्मक स्वरूप द्वारा अभिव्यक्त करता है।संगीत विश्व व्यापी,विराट चेतना को ध्वन्यात्मक स्पंदन के साथ दिशा प्रदान करता है।
संगीत का मानव जीवन को सरस बनाने में महत्वपूर्ण योगदान है। यह मानव के लिए मात्र केवल मनोरंजन का साधन नहीं, अपितु मानव मन की कोमल भावनाओं को झंकृत, रंजित एवं उसमे देवत्व का उदय करने में संगीत विशेष पूर्ण भूमिका निभाता है।संगीत की मानव जीवन में उपयोगिता इसी तथ्य से समझी जा सकती है, कि यदि संगीत का अस्तित्व समाप्त हो जाए तो संसार बहुत निराश,दुखी, रुखा एवं कर्कश प्रतीत होने लगेगा। संगीत में शरीर, मन तथा आत्मा को पुष्ट बनाने वाले महत्वपूर्ण तत्व परिपूर्ण मात्रा में विद्यमान हैं, इसी कारण से भारतीय ऋषियों मुनियों तथा आचार्यवर ने सांगीतिक कलात्मकता पर विशेष जोर दिया है। चारों वेदों में "सामवेद" की रचना इसका प्रमाण है, भक्ति भावनाओं के विकास में संगीत का

[379] डॉ. प्रेमलता शर्मा, *भारतीय संगीत : एक ऐतिहासिक विश्लेषण*, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ. 132–140।

योगदान अद्भुत है।ऋग्वेद (9/85/3)मे कहा गया है- "अनेक मनीषी गण परमात्मा की ओर संगीतिक स्वर लगाते हैं और उसी के द्वारा उस पार ब्रह्म को प्राप्त करते हैं"।[380] पश्चिमी विद्वान कर्लाइल ने भी कहा है कि "संगीत के पीछे-पीछे खुदा चलता है"।

मध्यकालीन संतों ने परम ब्रह्म की प्राप्ति के लिए भी संगीत का क्रियात्मक प्रयोग किया। संगीत आनंद का आविर्भाव है, तथा आनंद ईश्वर का रूप है संगीत द्वारा दुखों का लेश मात्र संबंध न रखने वाला सुख प्राप्त होता है। संगीत ईश्वर स्वरूप होने के कारण जो लोग संगीत का अभ्यास करते हैं, वे लोग तब दान,योग,कर्म यज्ञ, आदि के कष्ट ना सहते हुए मोक्ष प्राप्त करते हैं।योग एवं ज्ञान के सर्वश्रेष्ठ आचार्य याज्ञवल्क्य हैं कि--

"वीणा वादन तत्वेज्ञः श्रुति जाति विशारद
तालज्ञश्चाप्रयासेन मोक्ष मार्ग प्रछाच्दति "

संगीत योग के यही मुख्य विशेषता है इसमें साध्य एवं साधन दोनों सुख स्वरूप हैं। स्वर या ध्वनि विशेष के कारण भक्ति, पूजा- पाठ या स्तोत्र आदि का उच्चारण चित्त को विशेष आह्लाद प्रदान करता है इसमें आत्मा का कलुष एवं कर्म कालिमा नष्ट होने लगती है तथा उत्तम क्षमा नार्दव-आर्जव आदि की परिणति सहज रूप में हो जाती है। संगीत का लक्ष्य श्रृंगार, नीति, वैराग्य एवं प्राकृतिक दृश्य को मूर्तिमान कर कोमल भावों के मधुरिमा द्वारा साधक को तानमय बनाता है।संगीत के दो प्रमुख खंड शास्त्रीय तथा लोक शास्त्रीय जो निज तथा शास्त्रोक्त है, वही लोग जनमानस में प्रचलित भावनात्मक संगीत है।

इन पंक्तियों में यह समझना परम आवश्यक है कि शास्त्रीय संगीत का प्रेरक लोक संगीत है, किंतु लोक संगीत का प्रेरक शास्त्रीय संगीत नहीं है शास्त्रीय संगीत यदि

---

[380] हरिश्चंद्र श्रीवास्तव निबंध संगीत पृष्ठ संख्या 69, 70

लोक संगीत की ओर उन्मुख होता है तो उसकी लोकप्रियता बढ़ती है,उसका भाव पक्ष सजीव तथा रसमय बनता है परंतु यदि लोक संगीत शास्त्रीय संगीत की ओर झुकता है तो शास्त्र के बोझ से वह अपने गुणों को खो देता है और स्थिति तब यह हो जाती है कि शास्त्रीय संगीत का लोकगीतों का प्रयोग करने लगता है और शास्त्र शैली में जाकर उसका स्वरूप बदल देता है जिससे उसकी मिठास तथा उसका भाव खत्म हो जाता है।

लोक संगीत की उत्पत्ति

लोक संगीत या भारत के जनमानस में प्रचलित संगीत है यह पारंपरिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी अक्सर मौखिक रूप से पारित किया जाता है। यह आम तौर पर अपनी सादगी के लिए जाना जाता है। इसमें पारंपरिक वाद्य यंत्रों का प्रयोग होता है तथा इसका विशेष एक संस्कृति के साथ संबंध होता है लोक संगीत सारे संसार में प्राप्य है और भारतीय लोक संगीत भारतीय संगीत के विकास की एक अनोखी कहानी है। विद्वानों का मानना है कि लोग संगीत सभ्यता जितनी पुरानी है, मध्य भारत का लोक संगीत पंडवानी महाकाव्य उतना ही पुराना माना जाता है।[381]

लोक संगीत को अनेक प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है। लोक संगीत को इसके मुख्य इकाई लोकगीत के आधार पर अधिक गहराई से समझा जा सकता है, यह प्राचीन परंपरा से होते हुए आधुनिक समय तक समाज में लोकप्रिय एवं रुचिकर हैं जिससे लोकगीत की पृष्ठभूमि को सहज ही मापा जा सकता है। लोकगीत जो परंपरा से हमारे बीच विद्यमान है उनके रचयिता का पता नहीं रहता इन गीतों को जब कभी भी किसी रचयिता ने रचा होगा उस समय उसने व्यक्तिगत भावनाओं के स्थान पर सामाजिक भावनाओं के द्वारा निरूपित किया होगा। इस

[381] https://share.google/TYFzZsa6IHwT6E7Py

प्रकार आम जनमानस द्वारा निज जीवन में गाए जाने वाले पारंपरिक गीतों को लोकगीतों की श्रेणी में रखा जाता है। इन गीतों की श्रेणियां गांव कस्बों, शहरों में अलग-अलग होती हैं तथा भाषा तथा क्षेत्र के हिसाब से इनमें अलग-अलग विशेषताएं होती हैं।

मानव समाज का लोकगीतों से गहरा नाता है। सर्व साधारण द्वारा प्रायोजित स्वाभाविक जीवन लोक जीवन है हमारे उत्सवों में लोक कला जीवित रहती है प्रत्येक युग विशेष में लोकगीत अपना अस्तित्व बनाए रखने में समर्थ रहे हैं लोकगीतों की विशेषता उनकी भाषा की कोमलता लयात्मकता एवं संगीतात्मकता है। हमारे जीवन में संवेदना के गहन तत्व लोकगीतों में समाविष्ट होते हैं, इसका उद्गम इन्हीं संकेतों द्वारा हुआ है।[382]

मानव के सभ्यता ने धीरे-धीरे विकास किया है। प्रारंभ में खानाबदोश जीवन यापन करने वाला मानव आज अपने संस्कृति सभ्यता तथा सफलता पर गौरवान्वित होता है। प्राकृतिक परिवर्तनों को जानने समझने एवं अन्वेषण करने की क्षमता ने मानव को विकासोन्मुखी बनाया है। हमारे सामाजिक जीवन एवं रीति रिवाज तथा परंपरा आदि की सहयोगात्मक दृष्टि से मानव ने लोक जीवन को अपने दैनिक जीवन में आत्मसात किया है।

समाज में विभिन्न स्वरूप में घटित होने वाली घटनाओं जैसे- हर्ष -विशाद,घात-प्रतिघात, सुख-दुख इत्यादि को मानव ने लोक जीवन में स्पष्ट रूप से समझा होगा। प्राकृतिक चेतनता से स्वचेतना को जागृत कर उसने अपने उत्सव में छोटी-छोटी पंक्तियों के माध्यम से संवेगों एवं भावनाओं को प्रकट किया होगा।

यह भावनात्मक उदार उस समय से चले आ रहे हैं जिस समय मानव को संस्कृति सभ्यता एवं शास्त्रों का पूर्ण ज्ञान भी नहीं था उनकी भावनाएं जो भाषागत एवं

---

[382] https://share.google/TYFzZsa6lHwT6E7Py

भावनात्मक तौर पर अंकित हुई, इन्हें लोक संगीत तथा लोक साहित्य के श्रेणी में रखा जा सकता है।

लोक संगीत मानव जीवन की वह अभिव्यक्ति है जिसे मानव ने अपने जीवन को सरस तथा आनंदमयी बनाने के लिए प्रयोग किया है।

भारत विविध संस्कृतियों परंपराओं और कलात्मक अभिव्यक्तियों का देश है।[383] जो इसकी समृद्धशाली का द्योतक है। भारत की सांस्कृतिक विविधता यहां की बोली, भाषा, रहन-सहन, त्योहार तथा पोशाकों है, किंतु इसका एक महत्वपूर्ण स्तंभ भारत के विभिन्न क्षेत्रों में सदियों से प्रचलित लोक संगीत है। यहां का लोक संगीत सांस्कृतिक धरोहर के रूप में प्रतिष्ठित है यह खुशहाल एवं समृद्ध होने का द्योतक है। किसी भी देश की लोग कला संस्कृति तथा परंपरा से उस देश की संस्कृत व्यवस्था व ऐतिहासिक विवरण प्राप्त होता है।

भारत के अनेक राज्यों तथा क्षेत्र में अनेक प्रकार की भाषाएं प्रचलित हैं। भाषा मनुष्य की प्रकृति प्रदत्त वह निःशुल्क उपहार है जिससे वह अपने संवेदनाओं को सहज ही प्रकट कर सकता है।भाषा के विकास से पहले शारीरिक भाषा के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करता था,जैसे आज पशु भी अपनी भावनाओं के व्यक्त करने के लिए शारीरिक भाषा का प्रयोग करते हैं। भाषा के ज्ञान के पश्चात मानव अभिव्यक्ति को विशेष बल मिला जिससे वह तुरंत प्रभाव उत्पन्न कर सकता है ।मनुष्य धीरे-धीरे अपनी इन्हीं अभिव्यक्तियों को लयात्मक छंदों के माध्यम से प्रयोग करने लगा और यह छंद ही साहित्यिक रूप में लोक संगीत बने।

भारत के अनेक क्षेत्रों की भांति उत्तर प्रदेश जिसे सांस्कृतिक राजधानी का क्षेत्र माना जाता है। यहां का लोक संगीत पुरानी परंपराओं में से एक है। उत्तर प्रदेश में हर जिले में खानपान बोली त्योहार धार्मिक प्रथाएं पूजा पाठ आदि में विभिन्नताएं हैं

---

[383] https://share.google/TYFzZsa6IHwT6E7Py

वैसे ही विभिन्नता लोक संगीत तथा लोकगीतों में भी देखने को मिलती हैं। उत्तर प्रदेश में पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश दोनों ही क्षेत्र की भाषा शैली एवं लोक गतिविधियों में अंतर है। परंतु भारतीय लोक संस्कृति विविधता में भी एकता की परिचायक है।

उत्तर प्रदेश के अनेक कलाकारों ने यहां के लोक संस्कृति को विश्व पटल पर रेखांकित किया है, जिनमे मालिनी अवस्थी, सिद्धेश्वरी देवी,गिरिजा देवी, पंडित छन्नूलाल मिश्र, पंडित भोलानाथ मिश्र आदि ऐसे अनेक कलाकार हैं जिन्होंने संगीत के हर पक्ष को भली भांति निर्वहन करते हुए लोक संगीत को विश्व पटल पर रेखांकित किया है।
वर्तमान परिदृश्य में केवल उत्तर प्रदेश ही नहीं बल्कि संपूर्ण भारतवर्ष में
छन्नूलाल मिश्र एक मात्र ऐसे कलाकार हैं जो 70 प्रकार के लोकगीत गाने में सक्षम हैं।[384]

पंडित छन्नूलाल मिश्र: लोक सांगीतिक अनुराग

पंडित जी की ग्रामीण पृष्ठभूमि से संबंध होने के कारण एवं जिज्ञासु स्वभाव के कारण इन्होंने संगीत के शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय पक्ष के अलावा लोग विधाओं के उन्नयन के लिए विशेष तौर पर प्रयास किया। पंडित जी कहते हैं की "कुछ कलाकार जब मंच पर शास्त्रीय संगीत गा रहे होते हैं तो ऐसे में लोक संगीत को समान मंच प्रदान करना हेय यह समझते हैं, और उनका कहना होता है कि लोक संगीत हर जगह गाने की चीज नहीं है"

[384] डॉ इंद्रेश मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

पंडित जी गांव जाते थे तो अपने गांव के बुजुर्ग महिलाओं के पास बैठकर पारंपरिक लोक संगीत सुना करते थे कहते थे कि "यह परंपरा अगर ढंग से नहीं संजोई तो उनके साथ ही चली जाएगी।"

लोक संगीत के अनेक प्रकार सोहर से लेकर निर्गुण तक ऋतुओं के अनुसार संस्कार अथवा पूजा पाठ के अनुसार जितने भी प्रकार के लोकगीत है सभी मुझे कंठस्थ हैं। पंडित जी कहते हैं कि हमारा शास्त्रीय संगीत जितना आदिकालीन है लोक परंपरा भी उतनी ही प्राचीन है, और शास्त्रीय संगीत जो विद्वानों का संगीत है वही साधारण जनमानस का लोक संगीत है,दोनों का अपना अपना महत्व है हमारे देश में जन्म से लेकर मरण तक के गीत गाए जाते हैं और यही हमारी प्राचीन परंपरा रही है। हमारे यहां साल के 12 मास होते हैं और इन 12 मासों में 12 अलग-अलग प्रकार के गीत गाए जाते हैं।

जैसे लोक संगीत मास और अवसर के अनुसार होता है वैसे ही या क्षेत्रीय तौर पर भी होता है।[385] लोक संगीत के बारे में थे इंटरनेशनल साइक्लोपीडिया ऑफ म्यूजिक एंड म्यूजिशियन में कहा गया है कि "जनसाधारण की अभिरुचियों चरित्र और जातिगत भावनाओं की सर्वप्रथम अभिव्यक्ति ही लोक संगीत है। इसे जनसाधारण अपने जीवन के रूढ घटनाओं को बिना किसी क्रम धुन या लय के बिना किसी शास्त्रीय अध्ययन के बनता है। जैसे-जैसे मानव जाति अपनी जंगली अवधारणाओं से उभरती गई वैसे-वैसे ताल और लय के आरंभिक चरणों का इतिहास बनता चला गया।[386]

पंडित जी के कथनानुसार "संगीत की परिभाषा "गीतम वाद्यम तथा नृत्यं" और गंधर्व के लक्षण "स्वरताल पदात्मक" दोनों ही शब्द का महत्वपूर्ण स्थान है और यह

---

[385] https://share.google/TYFzZsa6IHwT6E7Py

[386] https://share.google/TYFzZsa6IHwT6E7Py

दोनों ही परिभाषाएं अपने आप मे पुष्ट हैं किंतु हमारे भारतीय संगीत में एवं शास्त्रीय परंपरा में शब्द रचना को भिन्न करके संगीत की प्रबल सत्ता को स्वीकार नहीं गया है। गीत एवं संगीत एक दूसरे के पूरक हैं शास्त्रीय संगीत एवं लोक संगीत में गीतों के शब्दों के आधार पर ही इनके बीच का अंतर समझ जा सकता है लोक संगीत में शब्दों की प्रधानता होती है वह शास्त्रीय संगीत में शब्द गौण हो जाते हैं।वैसे भी शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत एक दूसरे के समानांतर ही रहे हैं जैसे अगर उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत और उपशास्त्रीय संगीत का अध्ययन किया जाए तो उसमें भोजपुरी भाषा के शब्द बहुतायत रूप मे देखे जाते हैं।

पंडित छन्नूलाल मिश्र के लोकगीतों में राग तत्त्व

उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में ज्यादातर भोजपुरी भाषा बोली जाती है यहां के लोक संगीत में एक मीठा रस प्रवाहित होता है और अगर शास्त्रीयता की बात की जाए तो यहां गाए जाने वाले भोजपुरी गीतों में भी राग तत्वदर्शित होते हैं। पंडित जी ने भाषागत तौर पर भी तथा शास्त्रीय तौर पर भी संगीत को समकक्ष प्रसारित किया है। उनके द्वारा गाए जाने वाले लोकगीतों में भी राग तत्वदर्शित होता है।

जैसे –

<u>राग पूर्वी के अंतर्गत</u> - पियरवा की बांह मोहे भावे- लागे गरबा ए पिया

<u>रागेश्री-</u> एरी मैं तो आस ना गैली, पास ना गैली लोगवा परै मैका नाव

<u>राग-गुणकली</u>- भोर भई आई तोरे देखन कै
सूरजवा उठ क्यों न निंदवा के आते
<u>राग शुद्ध कल्याण</u>-री अरिये मोरी मा
हम सन मह लगर महलवा।

उपरोक्त उदाहरण से यह सहज अनुमानित है कि इन लोकगीतों में भोजपुरी भाषा के साथ-साथ शास्त्रीय संगीत का पुट भी है।जैसे अन्य विधा ठुमरी, दादरा चैती, कजरी आदि अनेक लोकगीतों में भोजपुरी भाषा तत्व होते हैं और पंडित जी के गायकी में स्वर सौंदर्य एवं रंजकता को बढ़ाने के लिए ऐसी, शास्त्रीय और लोक दोनों का परस्पर प्रयोग दर्शित है। पंडित जी के अनेक लोकगीतों में शास्त्रीय संगीत तथा भोजपुरी शब्द की बहुतायता इनके घनिष्ठ संबंधों का प्रमाण है।[387]

शब्द ही किसी काव्य का मूल आधार होता है तथा शब्द में ही उसे रचना का अर्थ छुपा होता है। भावनाएं शब्दों द्वारा ही अभिव्यक्त की जाती है और मनुष्य की यही भावनाएं शब्दों के माध्यम से ही प्रतिबिंबित होकर पुष्ट करती हैं।

स्वर में लगने वाली श्रुतियां तीव्र वेग से अंतरात्मा तक पहुंचती है ।मनुष्य अपने भावों को स्वरों के माध्यम से ही व्यक्त करता है। भाव विशेष को दर्शाने के लिए शब्दों का सहारा लिया जाता है, लोकगीत लोक मानस की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है,जो कि शब्दों के सुंदर समायोजन पर आधारित होता है इसके द्वारा ही मनुष्य सरलता से अपने भावों की अभिव्यक्ति कर सकता है वहीं इसके ठीक विपरीत शास्त्रीय संगीत में कलात्मक व्यवस्था दर्शित होती हैं।

पंडित जी कहते हैं- कि भले ही दोनों प्रकारों का चलन अलग हो लेकिन संगीत में हमें दोनों प्रकार संभालने आने चाहिए जैसे सृष्टि के संचालन एवं सक्रियता में ब्रह्म एवं प्रकृति मिलकर काम करते हैं ठीक उसी प्रकार मनुष्य की विस्तृत भावनाओं के व्यक्त करने के लिए दोनों एक दूसरे के पूरक भूमिका निभाते हैं। शास्त्रीय में कलात्मकता दिखायी जाती हैं लोक संगीत में भावात्मकता दिखाई जाती है। लोक संगीत में भी शब्द तथा संगीत दोनों ही महत्वपूर्ण है।

---

[387] डॉ इंद्रेश मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

लोकगीतों का वर्गीकरण

जैसा कि उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है पंडित जी चारों पट के गायन मे प्रवीण हैं तथा साल भर के प्रत्येक मास अर्थात 12 मासों में गाए जाने वाले गीत विशेष भी उनकी कलात्मकता से जुड़े हैं। यूं तो वर्ष पर्यंत हमारे देश में कोई ना कोई पर्व त्यौहार या अवसर चलता रहता है जिसको गीत संगीत के माध्यम से मनाया जाता है, और ऐसा कोई मास हमारे पंचांग में है ही नहीं जो संगीतमय ना हो।

12 मास के अनुसार गए जाने वाले गीत

- चैत मास में भगवान श्री राम का जन्म हुआ था अतः इस मास में "चैता" गाया जाता है। यह उल्लास प्रेम तथा प्रकृति का गीत है इसकी भाषा भोजपुरी होती है इसे अर्थशास्त्रीय गीत विधाओं में सम्मिलित किया जाता है तथा इस गीत की हर पंक्ति के बाद "रामा" शब्द का प्रयोग किया जाता है। जैसे- "अवध में बाजेला बधाइयां हो रामा अवध नगरिया"।
- वैशाख मास में चैती गाई जाती है यह भी प्रकृति से संबंधित गीत है। जैसे- "चैत मास बोले रे कोयलिया हो रामा मोरे अंगनवां"
- जेठ मास में घाटों गाया जाता है। जैसे - "जोगी संगवा अरे, होइबे जोगिनियां हो रामा"
- आषाढ़ मास में सावनी गाई जाती है। जैसे- "आवे दे छैइल मोर सावनवा रे"
- सावन में कजरी गाई जाती है। जैसे- "सावन झर लागेला धीरे-धीरे"
- भादो मास में झूला गीत गाया जाता है। जैसे- "झूला धीरे से झुलाओ बनवारी अरे सांवरिया"

- आश्विन मास नवरात्र का होता है अतः उसमें देवी से संबंधित गीत गाए जाते हैं। इन्हें लांगुरिया भी कहा जाता है जैसे- "झूला झूल रही जगदंबे झोटा दे रहयो हो लांगुरिया"[388]
- कुआर मास में राजगद्दी गीत होता है जैसे- "भयों धुंध दलसाजी दशरथ सुत राम जी"।
- कार्तिक मास में है दीपावली गीत होता है जैसे- "पूजत दिवारी जगमग उजियारी" इस माह में विशेष कर छठ पूजा का महत्व होता है इन दिनों में सूर्य देव तथा प्रकृति वर्णन संबंधित लोकगीत गाए जाते हैं।
- अगहन मास में "राम विवाह" होता है अतः विवाह जैसे गीत गाए जाते हैं- जैसे "दूल्हा सलोना माई रघुवर राज" तथा विरह प्रधान बारहमासा जैसे लोकगीत गाए जाते हैं। जिनमे वर्ष भर के 12 महीनों में नायक नायिका के विरह तथा मिलन के कथाओं का वर्णन होता है।
- पौष मास में बिरहा लोक संगीत गाया जाता है जो मुख्य रूप से अहीर समुदायों से संबंधित है। यह बिरहा तथा पृथक्करण के अर्थ को व्यक्त करता है तथा खासकर प्रेम और अलगाव पर आधारित है।
- माघ महीने में उत्तर प्रदेश के ग्रामीण इलाकों में धार्मिक एवं पारंपरिक गीतों का प्रचलन होता है। जैसे -सुमंगली प्रभाती तथा देवी देवताओं के भजन इन गीतों में सर्दी और ठंड से जुड़े विषयों के साथ-साथ धार्मिक एवं सामाजिक विषयों का भी वर्णन होता है।[389]

पंडित जी कहते हैं कि साल के 12 मास के अतिरिक्त लोकगीतों का अन्य दो

[388] पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी
[389] पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी

प्रकार से भी वर्गीकरण किया जाता है-

1. शैलीगत वर्गीकरण

2. विषयगत वर्गीकरण।

1. शैलीगत वर्गीकरण - शैली की दृष्टि से लोकगीतों के निम्नलिखित भेद दिखाई देते हैं-

(क) नृत्य गीत

(ख) पद गीत

(ग) आवृत्ति गीत

क- नृत्य गीत

नृत्य के साथ गए जाने वाले लोकगीतों को नृत्य गीत कहा जाता है यह दो प्रकार के होते हैं- पुरुषों के नृत्य गीत तथा स्त्रियों के नृत्य गीत। वनवासी आदिम जातियों में स्त्री तथा पुरुषों का सम्मिलित सामूहिक नृत्य प्रचलित है जिसमें नृत्य के साथ गीत भी गया जाता है। हिंदी भाषा क्षेत्र में पुरुष के सामूहिक नृत्य कुछ जातियों में ही प्रचलित हैं जैसे -अहीरों का जांधिया नृत्य, पमड़िया नृत्य, धोबी नृत्य आदि कहरवा नृत्य, चमारवा नृत्य, धोबी नृत्य आदि इन सभी नृत्यों के साथ गीत भी गया जाता है यह गीत परंपरागत लय तथा ताल में बंधे होते हैं।

ख- पद गीत

पद गीत टेक युक्त एवं पद बंद होते हैं टेक का अर्थ है गीत कि वह प्रथम पंक्ति जो गाते समय पद के बाद दोहराई जाती है। इस शैली के गीत कई पदों में बंधे होते हैं प्रत्येक पद में एक या दो कभी-कभी अधिक पंक्तियां होती हैं उसके बाद पद का अंतिम चरण होता है जो टेक की पंक्ति के साथ समतुकांत होता है इसी पद को के पश्चात टेक की पंक्ति दोहराई जाती है।

ग- आवृत्ति गीत

आवृत्ति शैली के गीत में कुछ पंक्तियां अथवा पंक्तियों के अंश बार-बार दोहराए जाते हैं इस तरह विभिन्न पंक्तियों में कुछ ही नए शब्द होते हैं शेष सभी शब्द और वाक्यांश एक ही होते हैं जो बार-बार गए जाते हैं।[390]

स्वर सौंदर्य एवं रस निष्पादन

पंडित जी ने अपनी 5 वर्ष की आयु से ही सांगीतिक कार्यक्रमों के श्रृंखला आरंभ कर दी थी। ग्रामीण परिवेश से जुड़े होने के कारण जब संगीतिक क्रियाकलापों में जब सम्मिलित हुए तो लोक संगीत और शास्त्रीय संगीत का अद्भुत मेल अपने कार्यक्रमों में प्रस्तुत करने लगे।[391]शास्त्रीय संगीत तथा उपशास्त्रीय संगीत के साथ लोक संगीत का सफर सरल कार्य नहीं होता ।शास्त्रीय संगीत जहां उचित गंभीरता मांगता है, वही उपशास्त्रीय अथवा लोक शैली उचित भाव निष्पादन तथा स्वरों में लोक तथा श्रृंगारिकता का परिचायक है। और इस प्रकार का मेल किसी भी गायक की गायकी में तभी आता है जब उसने दोनों पक्षों को संभाल कर साधना की हो क्योंकि शास्त्रीय पक्ष में एक-एक स्वर का सही लगाव ना हुआ तो राग का रस कभी स्पष्ट नहीं होता है, और लोक संगीत में अगर भाव ठीक से परिलक्षित ना किया जाए तो उसका आनंद प्राप्त नहीं होता। इन दोनों पक्षों को एक साथ रखते हुए सहजता व सुकून आपकी गायकी में ही देखते बनती है।

---

[390] पंडित भोलानाथ मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी

पंडित जी ने शास्त्रीय मंचों पर भी लोक संगीत को शास्त्रीयता की चादर ओढ़ा कर प्रस्तुत किया, जिस मंच की शास्त्रीयता भी बनी रहे और लोक संगीत का आनंद भी।[392]

लय ताल का सुंदर प्रस्तुतीकरण

लोकगीत की धुन लय पर आधारित होती हैं, भारतीय लोकगीतों में भी ताल की प्रधानता होती है। इसके विपरीत अगर अन्य देशों के लोक संगीत से तुलना की जाए तो वहां लय की प्रधानता दी जाती है। ताल और लय के बिना किसी भी विधा में पूर्णता प्राप्त नहीं होती।ताल और लय संगीत के प्राण तत्व हैं। आपको अपने पिता द्वारा बाल्यावस्था से ही तबला वादन की अच्छी जानकारी थी अपने मंच प्रदर्शन के समय तबले पर संगत जैसी सुंदर क्रीडा भी प्रदर्शित की है, और आपको ताल लय का विशेष ज्ञान है। ऐसे ज्ञान का प्रयोग आपके प्रदर्शन को अत्यंत चमत्कारिक रूप प्रदान करता है। लोक संगीत के पारंपरिक धुन के साथ आपने शास्त्रीयता एवं तकनीक साथ उपज करना जैसी अनेक विशेषताएं आपकी गायकी को विशेष बनाती हैं,आपने एक ही लोक धुन को अनेक लय तथा तालों में गाया है।

लोक संस्कृति की परंपरा को संजोने का दृढ़ निश्चय

परंपरा एक ऐसी व्यवस्था है जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलती है इस व्यवस्था को धरोहर के रूप में समझाने का कार्य कठिन होता है और ऐसा काम ही लोग कर पाते हैं। पंडित जी ने लोक संगीत की हर प्रकार की परंपरा को अपना मूल माना है, ऐसे भूले बिसरे लोक संगीत जो पश्चात्य सभ्यता के प्रभाव में आकर बहिष्कृत अथवा विलुप्त होती जा रही थी इस प्रकार की गायन शैली को अपने अनुरूप ढालकर

[392] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

उचित मंच पर प्रसारित कर लोक संस्कृति को हर प्रकार से संरक्षित एवं संदर्भित किया है।[393]

उनके अनुसार हमारे बड़े बुजुर्ग बड़े ज्ञानी थे तथा लोक संगीत का प्रचुर भंडार हमारे बड़े बूढ़ों के पास था, उन लोगों का पारंपरिक ज्ञान दैनिक जीवन के अलावा धार्मिक अवसरों आदि पर प्रसारित होता है। अब कुछ लोग जो समझते हैं कि केवल शास्त्रीय संगीत ही सुनने की चीज है, तो हमारा कहना यही है कि "संगीत तो बहुत प्रकार का है, और उसका प्रचार प्रसार आवश्यक है, और हर किसी को भारतीय संगीत के विविधता के जानकारी होनी चाहिए हम उस प्राचीन धरोहर को अगर हम संभाल कर प्रसारित नहीं करेंगे तो कौन करेगा? हम संगीतज्ञों का यही कर्तव्य है" आजकल पाश्चात्य संस्कृति की हवा है आधुनिकता समाज में बढ़ रही है रॉक म्यूजिक, पॉप म्यूजिक, फ्यूजन म्यूजिक, अब ऐसी स्थिति में हमारा चाहे शास्त्रीय हो अथवा लोक संगीत हर प्रकार के संगीत को संभालने के लिए हमें ही तैयार होना होगा और यही शब्द पंडित जी की पूंजी हैं और यही उनका आकर्षण है अपने परंपरा एवं धरोहर को संभालने के लिए तटस्थ हैं और आज भी प्राचीन परंपरा का प्रचार प्रसार समर्पण के साथ कर रहे हैं।

[393] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

पंडित छन्नूलाल मिश्र का पार्श्वगायन

पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के अनुसार -सन 2011 में एक आरक्षण नाम की फिल्म आई थी इस फिल्म में "शंकर एहसान लाय " ने संगीत दिया था, गाने के शब्द हमें बहुत पसंद है।जब उनका फोन आया तो हमने हां कर दी क्योंकि शंकर महादेवन जी से हमारे बहुत अच्छे संबंध रहे अनेक "अवॉर्ड फंक्शन" उनसे हमारी मुलाकात हुई वह हमसे पुत्रवत तथा शिष्यवत व्यवहार करते हैं। प्रसून जोशी जिनका व्यवहार हमारे प्रति इतना मधुर है कि जब भी हम उनसे मिलते हैं तो ऐसा लगता है जैसे कितनी पुरानी जान पहचान है। इस फिल्म में श्रेया घोषाल तथा मोहित चौहान ने भी गाया है और "प्रसून जोशी" ने जो लिखा है उनकी काव्यात्मक अभिव्यक्ति बहुत ही सुंदर होती है। इस गाने का संगीत बहुत अच्छा बना तथा फिल्म की कहानी भी बहुत अच्छी थी जो भारतीय समाज से प्रेरित थी। साउंडट्रैक "कौन से इस डोर" के साथ इस गाने ने इतिहास रच दिया।इस गीत में पंडित जी की गायकी का तत्व है तथा श्रेया घोषाल ने भी बहुत अच्छा सहयोग दिया। बताने की जरूरत नहीं है कि यह गाना अतुल्य है और इस गाने को शास्त्रीय तथा सुगम दोनों ही पक्ष के लोगों ने बहुत पसंद किया तथा यह गाना गीतात्मक, संगीतात्मक एवं गायन की दृष्टि से बहुत शक्तिशाली है, और निश्चित रूप से नए युग के लिए एक शास्त्रीय कृति बनने की राह पर है। इसके अलावा भी फिल्म "मोहल्ला अस्सी" मे कजरी और दादरा जैसी चीजों को भी बहुत सुंदर तरीके से गाया है तथा "मनस्वी"फिल्म जिसमें संगीत उनके परिवार के सदस्यों तथा उनके शिष्यों द्वारा दिया गया है।[394]

फिल्मों में पार्श्वगायन के अलावा यूट्यूब प्लेटफार्म पर भी अनेक एल्बम तथा गाने प्रसारित किये , जिसने भारतीय शास्त्रीय उपशास्त्रीय तथा लोक संगीत को जन जन तक प्रसारित किया है।

---

[394] https://share.google/vBBHq5had2WPd3kR6

निष्कर्ष

विलक्षण योग्यता तथा बहुमुखी प्रतिभा के धनी ऐसे कलाकार सदियों तक याद रखे जाते हैं। भारतीय शास्त्रीय लोक अथवा आध्यात्मिक संगीत के क्षेत्र में पंडित छन्नूलाल मिश्र ऐसे सुप्रसिद्ध एवं सूत्र गायक हुए हैं जो अपने विलक्षण, मधुर एवं कर्णप्रिय आवाज के रूप में संगीत जगत में विद्यमान है। उन्होंने अपनी शास्त्रीय संगीत के अलावा ठुमरी, दादरा,चैती, कजरी,होरी,सोहर, बधाई अथवा आध्यात्मिक संगीत से हर प्रतिष्ठित कलाकार तथा सामान्य जनमानस के दिलों में अपनी जगह बनाई है।

आजमगढ़ के छोटे से गांव हरिहरपुर से एक गरीब परिवार से निकले तथा पिता और गुरु द्वारा प्रेरित होकर हिंदुस्तानी शास्त्रीय उपशतरिया तथा चारों पट के गायन में अपना अप्रतिम कीर्तिमान स्थापित किया है, इसके अलावा चित्रपट संगीत के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया तथा पार्श्वगायन के क्षेत्र में भी अपनी शास्त्रीयता को परिलक्षित किया है।

भारतीय संगीत जगत में संगीत का एक ऐसा विकास क्रम दिखाने वाले ऐसे विशिष्ट कलाकार आज भी संगीत के हर क्षेत्र में अपनी कलात्मकता द्वारा संगीत को संरक्षित एवं संदर्भित कर रहे हैं।

4.5 - पंडित छन्नूलाल मिश्र: एक सृजन धर्मी कलाकार

सृजनशीलता एक ऐसी चुनौती है जिसके अभाव में भारतीय संगीत का कोई अस्तित्व नहीं कहते हैं- Nothing can be created out of nothing.

There perhaps, no more dangerous man in the world than the man with the sensibilities of an artist but without creative talent "Barry Humphries."

सृजनशीलता एक ऐसी चुनौती है जिसके अभाव में भारतीय संगीत का कोई विकास संभव नहीं है इसमें अन्य विधाओं को भी सम्मिलित किया जा सकता है।
अमर मानव विशाल हिंदी शब्दकोश के अनुसार- इसका अर्थ निर्माण शक्ति, निर्माण प्रियता, रचना शक्ति है। सामान्यतः सृजन का अर्थ होता है- रचना करना अर्थात निर्माण करना।
सृजन वास्तव में ज्ञान पर आधारित शैक्षणिक व्यवसायिक दृष्टि है यह एक ऐसा नैसर्गिक गुण है जिसे सिखाया नहीं जा सकता परंतु देखकर,सुनकर, व समझ कर अवश्य उत्पन्न किया जा सकता है।कलात्मक सृजनता और वातावरण विकास क्रम में परिवर्तन की दिशा निर्धारित करता है।[395]
मनोवैज्ञानिकों के अनुसार प्रत्येक मनुष्य में आत्मा अभिव्यक्ति तथा सहज क्रियात्मक कृति अवश्यंभवी है जो उसकी जन्मजात प्रवृत्ति है और इसी के स्वरूप व रचना भी करता है जब कोई वस्तु का देखता है, सुनता है तो उसके हृदय के भीतर एक आंदोलन उत्पन्न होता है उसके सहज क्रियात्मक प्रवृत्ति उस अनुभव को व्यक्त करने के लिए उसे प्रोत्साहित करती है, इस प्रकार मनुष्य अपने प्रदर्शन

[395] पंडित विजय शंकर मिश्र भारतीय संगीत के नए आयाम पृष्ठ संख्या 123 124

द्वारा अच्छे अनुभव की अभिव्यक्ति करता है। इसमें वह परंपरागत के साथ स्वयं के अमूर्त भावों को भी मूर्त रूप से प्रदान करता है यही सृजनशीलता है।

किसी भी विषय में ज्ञान को सुरक्षित एवं क्रिया बनाए रखने के लिए परम आवश्यक होता है कि उसे विद्या तथा अध्ययन को अभ्यास के साथ प्रसारित किया जाए और यदि ऐसा नहीं किया गया तो प्राचीन गौरवमयी भव्य ज्ञान परंपरा से नितांत समाज वंचित रह जाता है।संगीत साहित्य तथा कला के क्षेत्र में यह तथ्य विशेष रूप से कार्य करता है।

भारतीय समाज में सृजन की परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है। और यह सृजनात्मकता संगीत में नए आयाम को जन्म देती है।[396] सृजनशीलता संभावना पर टिकी है संभावना शब्द सफलता की कुंजी है इसमें एक ऐसा दृष्टिकोण बनता है जो रचनात्मकता के अनुकूल होता है 'कोई कार्य संभव है' यह विचार मात्र पर्याप्त नहीं है बल्कि उसको सच में बदलने के लिए 'कैसे आगे बढ़े'? यह सोचना ज्यादा महत्वपूर्ण है ऐसे प्रेरणादाई शानदार शब्द हमारी शक्तियों जो प्रयोगशीलता रोमांच और समृद्धि के लिए पर्याप्त होते हैं। इन शब्दों में जादुई आकर्षण छुपा होता है जो अवचेतन मन में नया जोश भर देता है। भारतीय संगीत जगत में स्थापित होने के लिए यह एक सुगम मार्ग है। रचनात्मक संगीत का आधार है हर धुन गीत और ताल के माध्यम से बुना जाने वाला एक अदृश्य धागा है पंडित छन्नूलाल मिश्र कहते हैं "मैं याद कर सकता हूं, मैंने संगीत को जिया है, उसमें सांस ली है, ध्वनियों और लय की इस आकर्षक दुनिया में रचनात्मकता की परिवर्तनकारी शक्ति का अनुभव किया है अपने शुरुआती दिनों से लेकर वर्तमान तक जीवन के हर क्षेत्र में मेरी यात्रा

[396] पंडित विजय शंकर मिश्र भारतीय संगीत के नए आयाम पृष्ठ संख्या 123 124

संगीत मय रचनात्मक द्वार खोले जाने वाली असीम संभावनाओं का एक सच्चा प्रमाण रही हैं।"

संगीत में सृजनात्मकता का सार

संगीत में रचनात्मकता का सार एक नृत्य की तरह है- संगीत अप्रत्याशित होता है, उत्साहवर्धक एवं अत्यंत व्यक्तिगत है,यह जादू है जब होता है तो कोई संगीतकार एक साधारण सिद्धांत को एक कहानी, एक भावना, एक पल में बदल देता है जो उनके दर्शकों के साथ प्रतिध्वनित होता है वह अथवा मंच हर प्रकार से यह परिवर्तन सम्माननीय होता है।

संगीत कला का संबंध मानवीय संवेदनाओं से है यह कला गायन, वादन तथा नृत्य तीनों विधाओं का समागम है। जब भावनाओं की अभिव्यक्ति स्वर,लय तथा ताल में निबद्ध करके की जाती है तब संगीत का जन्म होता है। संगीत एक ऐसी विशिष्ट ललित कला है जिसमें कलाकार अपने मनोगत भागों का कल्पनागत स्वर द्वारा सृजन माध्यम से परिलक्षित करता है। संगीत कला साधन भी है तथा साध्य भी,मूर्त, अमूर्त दोनों ही रूपों में विद्यमान है ।संगीत कलाकार प्रभाव चेतन तथा अचेतन पर समान रूप से पड़ता है इस कला का प्रभाव चिरकालिक तथा सर्वव्यापी भी है। संगीत कला के सर्वश्रेष्ठ होने का आधार संगीत कला में कल्पना तत्व का विद्यमान होना है ।कल्पना शक्ति वह शक्ति है जिसके माध्यम से कलाकार अपनी कला का पूर्णतः एक नवीन तथा पृथक स्वरूप प्रदान कर सकता है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है, श्रोता सदैव कुछ परिवर्तन तथा नवीन श्रवण की इच्छा से प्रेरित होकर संगीत कार्यक्रमों में आता है।किसी कलाकार के ऊपर का काम उसकी कल्पना शक्ति तथा सृजनात्मकता की क्षमता पर निर्भर करता है तथा कलाकार का अभ्यास एवं उसकी साधना उसकी कल्पनाओं का मूर्त रूप प्रदान कर नवीन सृजन कर कुछ नया श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत करने में

सहायक होती है।कलाकार की श्रेष्ठता तथा किसी भी संगीत कार्यक्रम में सफलता उस कलाकार के कल्पना तथा सृजनात्मकता पर निर्भर करती है।[397]

संगीत मानव जीवन को सर्वाधिक प्रभावित करने वाली कला है, इसका प्रभाव स्थाई होता है। संगीत को अंतर्राष्ट्रीय भाषा तथा समग्र मानव जाति की भाषा के रूप में स्वीकारा जाता है। यह भावनाओं के आदान-प्रदान का सर्वाधिक सशक्त माध्यम है संगीत के संदर्भ में कहा जाता है कि यह अंतःकरण का भोजन है जो परिस्थितियों के द्वारा विकृत मानव जीवन में आए हुए ध्वंसक संकल्पना का उन्मूलन कर उसकी 'सत्यम शिवम सुंदरम' का मार्ग अवलोकित कर जीवन को अलंकृत करता है।

यह ध्यातव्य है कि यह परिवर्तन सदैव संगीत में बाह्य स्वरूप में तथा अभिव्यक्ति के स्वरूप में होता है ना की सांगीतिक आत्मा के द्वारा ।संगीत के दार्शनिक के आधार सदैव स्थिर रहते हैं तथा कला के मूल तत्व भी निश्चित रहते हैं। कलाओं में ललित कलाओं को श्रेष्ठ माना जाता है तथा ललित कलाओं में भी संगीत प्रस्थान सर्वोपरि है। मानवीय भावनाओं के स्वर लेकर माध्यम से व्यक्त करने वाली अविरल धारा ही संगीत है। संगीत की विशेषता का एकमात्र कारण या भी है कि अन्य कलाओं में सौंदर्य बाह्य साधनों के माध्यम से डाला जाता है परंतु संगीत एकमात्र ऐसी कला है जिसमें सौंदर्य स्वतः विद्यमान रहता है। संगीत कला के अंतर्गत कला तथा श्रोता दो पक्ष होते हैं जिनके मध्य भावों का आदान-प्रदान होता है। भावों के इस आदान-प्रदान का आधार होता है कलाकार तथा श्रोता के कल्पना, और इन दोनों की कल्पना में एक्य स्थापित हो जाता है तभी श्रोताओं के हृदय में वास्तविक सौंदर्य उत्पन्न होता है। कल्पना मानव का विशेष तथा मौलिक गुण है। वास्तव में या मनुष्य के अंतःकरण में निहित एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। इसके माध्यम से

---

397 https://www.google.com/search?q=%E0%A4%85%E0%A4%B2%E0

व्यक्ति अपने पूर्व अनुभव के आधार पर नवीन निर्माण करता है। उग्लीव ने कल्पना के संदर्भ में लिखा है "मनोविज्ञान में कल्पना शब्द का प्रयोग हर प्रकार की प्रतिभाओं के निर्माण में व्यक्त करने के लिए किया जा सकता है"। इसी प्रकार रिचर्ड्स ने कहा है "कल्पना मनोवैज्ञानिकों को जगाती है, कल्पना बिंदु की सृष्टि करती है, कल्पना से ही कला अलंकृत होती है, कल्पना नवीन रचना में सुंदरता व विभिन्न तत्वों में एकता उत्पन्न करती है। कल्पना में दो विरोधी तत्वों के समाहार की स्थिति होती है"।अतः पूर्व निर्मित से अपनी स्मरण इच्छा तथा अभ्यास शक्ति के माध्यम से नवीनता उत्पन्न करना ही सृजनशीलता है।

कल्पना जहां एक और आंतरिक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है वहीं दूसरी ओर सृजनात्मक इस आंतरिक प्रक्रिया की बाह्य अभिव्यक्ति है। सृजनात्मकता एक मानसिक प्रक्रिया है प्रत्येक कल्पना सृजन का रूप धारण कर अभिव्यक्त रूप में प्रकट नहीं हो पाती हैं परंतु प्रत्येक सृजन के पीछे कल्पना का ठोस आधार आवश्यक रूप से होता है। कल्पना के अभाव में सृजन संभव ही नहीं है प्रत्येक व्यक्ति में कल्पना शक्ति किसी ना किसी रूप में अवश्य ही विद्यमान होती है प्रत्येक व्यक्ति में सृजन क्षमता हो यह भी आवश्यक नहीं है।[398]

भारतीय संगीत गायन वादन तथा नृत्य तीनों ही विधाओं का एक्य रूप है। भारतीय संगीत को रागदारी संगीत कहा जाता है,अर्थात भारतीय संगीत में रागों की प्रधानता है, तथा कलाकार राग गायन के माध्यम से रस की निष्पत्ति करता है। कलाकार राग गाने से पूर्व उस राग के सौंदर्य की पूर्व कल्पना करता है, तदुपरांत अपनी साधना तथा अभ्यास के बल पर अमुक राग को एक नवीन तथा बाह्य स्वरूप प्रदान करता है, और इसी स्वरूप के माध्यम से रस का प्रसार करता है। कलाकार अपने

[398] पंडित विजय शंकर मिश्र भारतीय संगीत के नए आयाम पृष्ठ संख्या 123 124

साधना, कल्पनाशीलता तथा सृजन शक्ति के माध्यम से राग में नित्य नवीन चेतना तथा सौंदर्य का संचार करता है।किसी भी कलाकार की श्रेष्ठता इसी तथ्य पर निर्भर करती हैं कि वह कितना अधिक कल्पनाशील है। रागदारी संगीत के अंतर्गत यद्यपि नायकी तथा गायकी दोनों ही कल्पना का विशेष महत्व है तथापि यह माना जाता है कि गायकी में नायकी की अपेक्षा कल्पनाओं का आकाश अधिक बड़ा होता है। गायकी के अंतर्गत कलाकार विभिन्न आलाप,तान, मुखड़े ,कण, मींड, गमक, मुर्की, खटका आदि के माध्यम से अपनी कल्पनाओं को बाह्य सृजन के रूप में अभिव्यक्त करता है जिससे श्रोताओं को आनंद की अनुभूति प्राप्त होती है।[399]

कला, कलाकार तथा सृजनशीलता

"कला नाम मनुष्यस्य भावानां सुसंस्कृता अभिव्यक्तिः।"

कला मानव-जीवन की सृजनात्मक चेतना का सर्वोच्च रूप है। यह केवल सौन्दर्य की अभिव्यक्ति नहीं, अपितु मनुष्य के अंतर्मन में निहित अनुभूतियों, संवेदनाओं, कल्पनाओं तथा जीवन-दृष्टि का साकार रूप है। आदिकाल से ही कला मानव सभ्यता के विकास की सहचरी रही है। भारतीय संस्कृति में कला को सत्य, शिव और सुंदर की साधना का माध्यम माना गया है। इसी कारण भारतीय दर्शन में कला का संबंध केवल मनोरंजन से नहीं, बल्कि संस्कृति, अध्यात्म, नैतिकता तथा लोकमंगल से भी स्थापित किया गया है।[400]

[399]अलका सिंह, संगीत में कल्पना तथा सृजन का महत्व, लेख 2020

[400] डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल, *भारतीय कला*, पृ. **31–39**।

कलाकार वह सृजनधर्मी व्यक्तित्व है जो अपनी प्रतिभा, साधना, अनुभव और कल्पनाशक्ति के माध्यम से समाज के समक्ष नवीन सौंदर्य-बोध का सृजन करता है। कलाकार केवल प्रकृति का अनुकरण नहीं करता, बल्कि वह अपनी अनुभूतियों को कलात्मक रूप देकर उन्हें सार्वभौमिक अर्थ प्रदान करता है। भारतीय परंपरा में कलाकार को साधक की संज्ञा दी गई है, क्योंकि उसकी कला निरंतर अभ्यास, अनुशासन और आत्मसमर्पण का परिणाम होती है। संगीत, नृत्य, चित्रकला, मूर्तिकला और साहित्य—सभी कलाओं का मूल आधार कलाकार की सृजनशील चेतना ही है।

सृजनशीलता कला का प्राणतत्त्व है। सृजनशीलता से तात्पर्य उस मौलिक क्षमता से है जिसके द्वारा कलाकार परंपरा का सम्मान करते हुए नवीन अभिव्यक्ति का निर्माण करता है। भारतीय कलात्मक परंपरा में नवीनता का अर्थ परंपरा का परित्याग नहीं, बल्कि उसके भीतर निहित संभावनाओं का सृजनात्मक विस्तार है। इसी कारण भारतीय संगीत में रागों की मर्यादा का पालन करते हुए कलाकार आलाप, तान, मींड तथा गमक के माध्यम से अपनी मौलिक प्रतिभा का परिचय देता है। इस प्रकार सृजनशीलता अनुशासन और स्वतंत्र कल्पना का संतुलित समन्वय है।सृजनशीलता एक ऐसा गुण है जो भारतीय संगीत में कला रूप का दिग्दर्शन कराता है। कोई भी विधि हो अथवा शैली हो यह कला व कलाकार दोनों के विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। संगीत एक उच्च कोटि की कला है इसके माध्यम से कलाकार तथा श्रोता दोनों के मस्तिष्क के प्रभावित होते हैं तथा वास्तविक कला का सृजन होता है। मानसिक तौर पर किया गया संगीत का सृजन ही आनंद की उत्पत्ति का मुख्य कारण होता है।संगीत कला के लौकिक अस्तित्व का माध्यम कलाकार है, कलाकार स्वयं एक मनुष्य है मनुष्य ने अपने आनंद तथा सुविधा के लिए अनेक वस्तुओं का निर्माण किया है इनका आधार उसकी क्रियात्मक अभिवृत्ति

है। अतः कला का कार्य करने वाले व्यक्ति को कलाकार कहा जाता है अथवा किसी कला को जानने वाला या उससे जीविकोपार्जन करने वाला व्यक्ति कलाकार कहलाता है।ललित कला के संदर्भ में यह शब्द विशेष रूप से प्रयुक्त होता है- जो व्यक्ति सभी व्यक्तियों जैसा ना हो, जिसमे कोई विलक्षण रचना रचना की क्षमता हो, जो सत्यम शिवम सुंदरम का ज्ञाता हो वही कलाकार है। कला का कार्य करना मनुष्यत्व है। मनुष्य की सुकृति विकास , प्रगति तथा जीवन सभी कला पक्ष पर आधारित होती है। कलाकार के लिए अपेक्षित है कि वह शिक्षित ज्ञानी सामंजस्यपूर्ण व्यक्तित्व वाला एवं रचनात्मक प्रवृत्ति का हो।[401] "आत्मख्यापन" मनुष्य की मौलिक प्रवृत्ति है। सभी की इच्छा होती है कि उसका वैशिष्ट्य प्रकट हो। हमें स्वयं को संगीत जगत के समक्ष प्रस्तुत करने व परिवर्तन के लिए संसार मे पांच अंगों को देखना होगा-आस्था, आत्मविश्वास, इच्छा शक्ति, वह अनुप्रेक्षा अभ्यास।

यह तत्व सृजनशीलता की नींव होते हैं इस पर ही खड़े होकर ही सृजनात्मकता के चमत्कार को देखा जा सकता है। सांगीतिक क्रिया संचार की ऊर्जा से ही हमारे भाव उत्पन्न होते हैं यदि सीखी हुई क्रियाएं हमें अपने विचारों अथवा भागों के अनुरूप उचित प्रतीत नहीं होती है तब हम अपने विचरण रूप उन्हें परिवर्तित करने हेतु स्वतंत्र होते हैं। यह परिवर्तन ही सृजन है पतंजलि ने कहा था "हमारे सूक्ष्म विचार ही सृजनशीलता की शक्ति हैं"।

[401]अलका सिंह, संगीत में कल्पना तथा सृजन का महत्व, लेख 2020

सृजनशीलता के महत्वपूर्ण बिंदु

* उचित व्यावसायिक प्रशिक्षण
* गुणवत्ता पर विशेष ध्यान
* कार्य परिमाण
* अग्रणी दृष्टि
* सर्वश्रेष्ठ दायित्व पर बल
* आधुनिक विचार या तकनीक

पंडित छन्नूलाल मिश्र कहते हैं "विधा चाहे कोई भी हो प्रदर्शन तथा प्रस्तुतीकरण गुरुजनों से प्राप्त विद्या और स्वयं के अभ्यास,चिंतन एवं विचारों के माध्यम से किया जाता है अर्थात किसी भी कला का ज्ञान प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम विशिष्ट विद्या की अच्छी तालीम बहुत जरूरी है।" प्राप्त ज्ञान को स्थायित्व प्रदान करने के लिए अभ्यास का आश्रय लिया जाता है जैसे-जैसे अभ्यासक्रम की निरंतरता स्थायित्व लेती है कार्य विचार व चिंतन प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है। शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त किसी बिंदु का प्रस्तुतीकरण जब कोई कलाकार अपनी प्रतिभा के स्पर्श से जागृत करता है तब सृजन चलता का जन्म होता है। भारतीय संगीत की कोई भी विधा मात्र प्रतिकृति के सहारे मंच पर प्रतिष्ठित नहीं होती है। किसी भी तालीम को मंचीय अस्तित्व प्रदान करने के लिए सृजनशीलता आवश्यक है। हमारे मन में आए सूक्ष्म विचार कल्पना शक्ति को गति प्रदान करते हैं। किसी भी रूप में सृजनात्मक प्रयास के लिए व्यक्ति का एकाग्र होना आवश्यक है। सृजन कार्य करने का कोई विशेष सूत्र नहीं होता बल्कि यह पूर्णतः एक व्यावहारिक पक्ष है जो क्रमशः धीरे-धीरे अपना रूप लेता है।संगीत जैसे प्रदर्शन वाले क्रियाकलापों में अनावश्यक भय अथवा

तनाव का कोई काम नहीं होता है, अतः निर्भय होकर कलाकार को अपने कलात्मकता तथा सृजनात्मकता का परिचय देना चाहिए।[402]

कला व हुनर ईश्वर की देन है जब कोई प्रतिभाशाली विलक्षण बुद्धि संपन्न कलाकार अपने हुनर से एक विशाल जन समूह को प्रभावित एवं आकर्षित कर लेता है तो कहीं ना कहीं वह उसकी सृजनशीलता का ही परिणाम होता है। कलाकार मात्रा अनुकरण नहीं करता बल्कि अपनी कल्पना शक्ति का अपने प्रदर्शन में समावेश कर सुंदर प्रदर्शन का परिचय प्रस्तुत करता है।

सृजनात्मक द्वारा आनंद तथा सौंदर्य की सुंदरतम अभिव्यक्ति ही कला है। और अभिव्यक्तिकार कलाकार कहलाता है। हृदय पर अंकित सौंदर्य की भावनाओं को कलाकार विभिन्न स्वरूपों द्वारा सज्जित करता है। प्रत्येक कलाकर का जीवन उच्च आदर्श, कल्याणकारी मूल्य एवं उसके गौरव गरिमा का मापदंड होता है। प्रत्येक व्यक्तित्व की एक स्वतंत्र आकृति होती है वही आकृति प्रेरणादायक, प्रभावकारी एवं संजीव होती है जो श्रोताओं को प्रभावित कर लेती है जिसमें आशा एवं उपलब्धियां की छवि बनकर आती है वही लोक कल्याणकारी सिद्ध होती है। समाज को व्यक्ति का सामर्थ्य युक्त स्वरूप ही अधिक भाता है जब व्यक्तित्व शौर्य के साथ-साथ शांति, स्नेहा दया एवं कल्याण की सभी आलोकित करता है तभी वह सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। [403]

---

[402] पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से प्राप्त जानकारी के अनुसार

[403] अलका सिंह, संगीत में कल्पना तथा सृजन का महत्व, लेख 2020

पंडित छन्नूलाल मिश्र की सांगीतिक सृजनशीलता

पंडित जी एक ऐसे कलाकार में से हैं जिनम संत भावना निष्णात रूप से समाहित है। कहते हैं सच्चा कलाकार अपनी अमीरी एवं फकीरी में सदा एक सा रहता है। यही उसका सच्चा स्वरूप माना जाता है। सच्चे कलाकार तो संत होते हैं,भोग उनके जीवन का लक्ष्य कभी नहीं बनता, योग में ही उनकी सतत निष्ठा एवं चेष्टा होती है। सच्चा कलाकार ईश्वर की तरह एक ऐसा वृत्त है जिसकी परिधि कहीं नहीं होती और उसका केंद्र सर्वत्र होता है। पंडित जी की सृजनशीलता भी ऐसे ही तत्व का परिणाम है। जैसे पांच ज्ञानेंद्रिय -यथादृष्टि, श्रवण, प्राण, रसना तथा स्पर्श अदि सक्रिय रहती है, वैसे ही कलात्मकमकता के क्रियात्मक स्वरूप में मानव की भावना, शक्ति, कार्य, कुशलता, कार्य कौशल इत्यादि का महत्व होता है।

धार्मिक ग्रंथ "रामचरितमानस" को अपने सृजनशीलता से एक एक श्लोक तथा पदों को अपने शास्त्रीय रीति से निबद्ध शैली के रूप में प्रस्तुत किया, यह सृजनशीलता का ही प्रमाण है।परंपरागत लोक शैलियां तथा दैनिक जीवन में समाहित संगीत को अपनी कलात्मकता एवं सृजनात्मकता द्वारा प्रसारित किया मंच तथा श्रोता के हिसाब से अपने संगीत में रस को समाहित कर प्रसारित किया है।

यह उनकी सृजन शीलता का ही परिणाम है कि वैसा संगीत जो मंच पर हेय दृष्टि से देखे जाते थे तथा परंपरागत शैलियों की जो दशा वर्तमान काल में हो रही थी उसे अपनी कलात्मकता द्वारा संजोकर नवनिर्मित शैली में प्रस्तुत किया, और यही संगीत लोगों ने बहुत पसंद किया और उसमें एक नयापन था तथा लोगों को एक नई अनुभूति हुई। अपनी प्रत्येक साधना में एक नए युग का श्री गणेश करते हैं और कला क्षेत्र में दक्षता को कलाकार के व्यक्तित्व का मापदंड माना जाता है। पंडित जी ने अपनी कला दक्षता के साथ-साथ उत्कृष्ट प्रतिभा, स्नेह,शालीनता,

कल्पनाशीलता एवं सृजनता के बल पर संगीत की सौंदर्य पूर्ण शैली को संगीत जगत में उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित किया है।[404]

ताल, लय संबंधी सृजनात्मकता

कलाकार को संगीत के तीनों विधाओं का ज्ञाता विशेष कर गायन वादन दोनों ही विधाओं में निष्णात होना चाहिए। और पंडित जी अपने पारिवारिक वृद्धि जनों द्वारा प्रदत्त ज्ञान तथा गुरु के मार्गदर्शन द्वारा ताल एवं लय में विशेष रूप से पारंगत हैं ।उन्होंने अनेक प्रकार की ताल ने संबंधी कलात्मक प्रणालियों को मंच पर प्रदर्शित किया है।

एक बार सारनाथ में कार्यक्रम चल रहा था 'शिव प्रसाद मिश्र' तबले पर संगत कर रहे थे, कार्यक्रम बहुत अच्छा चल रहा था तभी 'शिव प्रसाद जी' का तबला कार्यक्रम के बीच में ही फट गया।सभी बोले अब क्या होगा? शिव प्रसाद भी बोले हैं "यहां अब तो प्रोग्राम नहीं हो पाएगा क्योंकि तबला तो फट गया।" मैंने पूछा यहां कोई ढोलक बजाने वाला है? सबसे पूछा तो दर्शक दीर्घा में "सुरजन सिंह" बैठे थे वह ढोलक लेकर आए लेकिन उन्होंने कहा, कि मैं ढोलक तो ले आया हूं लेकिन मुझे केवल दादरा और कहरवा ताल बजाना आता है।

पंडित जी ने कहा कोई बात नहीं मैं गा लूंगा आप संगत तो कीजिए मेरे साथ। फिर इसके बाद करीब डेढ़ घंटे तक कार्यक्रम चला और सारा कार्यक्रम ख्याल से लेकर हर प्रकार की शैली प्रस्तुत की वह भी सिर्फ दादरा और कहरवा ताल में कार्यक्रम बहुत अच्छा रहा श्रोता आयोजक और वहां उपस्थित सभी लोगों ने बहुत तारीफ की।सुरजन सिंह पंडित जी का पैर छूकर बोले कि "आनंद आ गया आप तो बहुत

[404] तबला वादक ललित कुमार जी से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी

लयदार कलाकार हैं पंडित जी आपने सब गाना इन्हीं दो तालों में गा लिया? मैंने कहा अगर लय समझ अच्छी हो तो हर ताल में गाना बजाना किया जा सकता है। "उस दिन मुझे अपने पिताजी की वही सीख याद आई कि एक ही बंदिश को अलग-अलग तालों में बारी-बारी से गवाते थे और कहते थे कि कलाकार को सृजनशील और कल्पनाशील होना चाहिए तभी वह मंच पर हर तरीके से गा सकता है आज उन्हीं की सीख के कारण मेरी कल्पनाशीलता इतनी विकसित है कि मैं एक ही बंदिश को अनेक तालों में गा सकता हूं"।[405]

स्वर संबंधित नवीन तकनीक

आपकी सृजनशीलता का मुख्य प्रमाण यह है कि जब आप अपनी प्रस्तुतियों को सुंदरता के साथ प्रस्तुत करते हैं तो मंच पर बैठते हैं एक अलग ही ऊर्जा का संचरण करते हैं जिससे श्रोताओं के मध्य संगीत का अद्‌भुत माहौल स्थापित हो जाता है। आपका और श्रोताओं का एक भावनात्मक संबंध जुड़ जाता है आपकी गायकी श्रोता वर्ग के साथ एक सामंजस्यपूर्ण तारतम्य जोड़ लेती है।

आप चारों पट के गायक हैं तथा आपकी गायकी में नूतनता तथा सृजनात्मकता सदा समाहित होती है,किसी भी प्रकार के पुनरावृत्ति से आप सदैव बचते हैं। गायन के बीच में सरगम का अधिक से अधिक प्रयोग मुर्की, खटका इत्यादि क्रियात्मक प्रयोग में आप नवीनता रखते हैं। कभी-कभी मंच पर तत्काल तानों का निर्माण करते हैं इस प्रकार की क्षमता आपके सृजनात्मक गुणों के द्वारा ही संभव है।

राग संबंधी नवीन प्रयोग

[405] पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से प्राप्त जानकारी के अनुसार

पंडित जी कहते हैं "लिखा हुआ गाना पेटी में बंद रहता है जबकि सीखा हुआ और आत्मसात किया हुआ गाना मन मस्तिष्क में सदा के लिए बस जाता है और अगर इस सीखे हुए गाने में अपने सृजन शक्ति का प्रयोग किया जाए तो वह संगीत जगत में बस जाता है"।[406]

"संगीत हमेशा व्यावहारिक तथा प्रत्यक्ष रूप में प्रयोग करना चाहिए क्योंकि मेरा मानना है जिनको संगीत से प्रेम है उन्हें समय गवाने के स्थान पर हर क्षण का सदुपयोग करना चाहिए, किसी भी विषय का चिंतन मनन, कुछ नया सीखने तथा मेरे नवीन विचारों ने मेरे जीवन को ही सतरंगी बना दिया। अपने गुरु से ही मैंने जाना की संगीत सागर की तरह विशाल है और शास्त्रीय संगीत उसकी एक बूंद है।[407]एक घरानेदार कलाकार अपने गुरु के संस्कारों से संस्कारित होता है और वह गायकी के परंपरा को अच्छे से निभाता है।अब शास्त्रीय संगीत मे गायन के विभिन्न शैलियां हैं।शुरुआत मैंने शास्त्रीय संगीत से ही की लेकिन कुछ समय बाद मुझे अनुभव हुआ शास्त्रीय संगीत में रागों का बहुत अधिक विस्तार है और उसकी गहराई में आम श्रोता नहीं उतर सकते जिससे मुझे एक निश्चित श्रोतागण तक सीमित रहना पड़ेगा इसलिए मैंने शास्त्रीय संगीत के अन्य रूपों ठुमरी, दादरा, होरी,चैती, कजरी के साथ बिरहा, भजन, लोक संगीत, गजल में भी स्वयं को आजमाया और अपनी कल्पना शक्ति के प्रयोग द्वारा मुझे ठुमरी से विशेष लगाव हो गया और यह गायन शैली संवेदनशीलता एवं लचीलेपन के कारण मशहूर है। एक कलाकार के कलात्मकता और सृजनशीलता तभी प्रमाणित होती है जब श्रोताओं की रुचि के अनुसार संगीत, भाषा, लय, स्वर, आदि मे आप बदलाव करने के लिए तत्पर हो।

---

[406] पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से प्राप्त जानकारी के अनुसार
[407] डॉ नम्रता मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी

संगीत का सौंदर्य तत्व इस बात पर निर्भर करता है कि आप स्वर और ताल के साथ किस प्रकार अपनी भावना को अभिव्यक्त करते हैं। मेरे गुरु ने यही सिखाया है कि नवीनता ही प्रदर्शन की पहली सीढ़ी है, और संगीत में एकरसता आ जाएगी तो रुचि खत्म हो जाएगी। इसलिए संगीत में लालित्य और सौंदर्य को बढ़ाने के लिए सृजनशीलता परम आवश्यक गुण है।

रागों को सही तरीके से गाना शास्त्रीय पद्धति में धर्म और मर्यादा समझा जाता है, राग आपको रास्ता भी दिखाता है,आप सृजन धर्मी कलाकार हैं और आपने और राग के विशुद्ध रास्ते पर चलकर अपनी कल्पना तथा सृजन तत्व को रखते हुए राग को प्रस्तुत किया है। राग कलाकार को अर्श से फर्श पर ला देता है, कारण यही है कि सृजनात्मकता आवश्यक है लेकिन राग द्वारा आनंद और रस का संचार करना यह कलाकार तथा उसकी कल्पना पर निर्भर करता है।

लोक संबंधी सृजनात्मकता

पंडित जी कहते हैं कि "हर प्रकार का संगीत आनंद देता है बस वह संगीत समझ में आना चाहिए"। आज पूरे भारतवर्ष में आप एक मात्र ऐसे कलाकार हैं जो 70 प्रकार का लोक संगीत गाने की क्षमता रखते हैं। यह क्षमता तब उत्पन्न होती है जब कलाकार में कलात्मकता, सृजनात्मकता, शक्ति , जिज्ञासा तथा संगीत के प्रति समर्पण हो।[408]

गांव की बड़ी बुजुर्ग जो 70, 75 साल पहले उन्होंने कोई लोक संगीत गाते हुए सुना वह आज भी उनकी स्मृति में प्रत्यक्ष है। सोहर से लेकर निर्गुण तक ऋतुओं के अनुसार संस्कार एवं पूजा पर्वों के अनुसार जितने भी लोक संगीत हैं सभी कंठस्थ

[408] पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से प्राप्त जानकारी के अनुसार

हैं। यह जिज्ञासा का ही परिणाम है उस जिज्ञासा को शास्त्रीयता से संबद्ध कर कलात्मक तौर पर प्रस्तुति करना ही सृजनात्मकता है।

हर प्रस्तुति को गाने से पहले गायन शैली का इतिहास उसकी उत्पत्ति एवं गायन संबंधी विशेषताओं को समझाकर साहित्य का समावेश करते हुए आप श्रोताओं के मध्य अपने प्रस्तुति देते हैं ।आम जनमानस भी आनंदमई भाव से सुनती है, यह आपके सृजनात्मकता का ही परिणाम है कि आपने हर गायकी को आम जनमानस के लिए भी सहज तथा सुगम बना दिया, यह आपकी कल्पनाशीलता का ही परिणाम है कि गायन के बीच में भी आपका वक्तव्य को श्रोता धीर गंभीर होकर सुनते हैं तथा आपकी चिंतन मनन संबंधी साधना को प्रत्यक्ष रूप से दर्शन करते है। उन्हें यह आभास होता है कि हर बार की तरह इस बार भी कुछ नवीन तथ्य उजागर होंगे। चैती, होली, कजरी, बधाई, सोहर, चौमासा,छमासा, बारहमासा या धार्मिक लोक संगीत, भले ही यह लोक संगीत के प्रकार कहलाते हैं किंतु आपने अपने कल्पना शक्ति एवं सृजन शक्ति द्वारा शास्त्रीयता से संबद्ध कर हेय समझी जाने वाली गायकी को भी उच्च मंच पर भी आसीन किया है।[409]

निष्कर्ष

प्राकृतिक सौंदर्य की अनुभूति से मनुष्य की हृदय में उठने वाला आनंद और उसकी दुर्दुम्य में लालसा इन दोनों का मिलन ही कला को जन्म देता है। आपकी कथनानुसार भी कि "राग तभी तक गाना चाहिए जब उसमें अनुराग हो जब विराग होने लग जाए तो राग गाना बंद कर देना चाहिए"। श्रोताओं में यह अनुराग तभी होता है जब कलाकार अपने कल्पनाशीलता और सृजनशीलता का प्रमाण प्रस्तुत करता है। आप वह कलाकार है जिसने अपनी कल्पना एवं सृजन शीलता के बल

[409] श्रीमती कुमुद दीवान द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार

पर शास्त्रीय,उपशास्त्रीय,लोक, आध्यात्मिक हर प्रकार की गायन शैली से स्वयं को जोड़कर अथवा श्रोताओं की भावना से जुड़कर प्रस्तुति दी है।

आपने भाषागत तौर पर भी अपनी कल्पना शक्ति द्वारा अनेक वक्तव्य दिए हैं,जो आपकी सृजनात्मक क्षमता का संचार करते हैं। आपने सृजन तथा समर्पण से अनेक प्रकार की लुप्त होती गायन शैलियों को भी पुनर्जीवित किया है।

आपकी रचना उच्च कोटि की है, आपने अनेक प्रकार के रचनाओं को संगीत दिया है तथा अनेक प्रकार की बंदिशे भी स्वयं रचित है और यह रचनात्मक कार्य बिना कल्पना के प्रभावी नहीं होते। निष्कर्षितः संगीत जगत में आपकी प्रतिष्ठा आपके कल्पनाशीलता का प्रमाण है, आपके इस समर्पण तथा सक्षम योगदान के लिए संगीत जगत आपका सदा आभारी है।

अध्याय 5
पंडित छन्नूलाल मिश्र का संगीत जगत में योगदान

कला क्षेत्र में किसी भी साधक की साधना निरालम्ब या निराधार नहीं हो सकते इसे आगे प्रशस्त करने के लिए सही मार्गदर्शन गुरू जीवन का एक अनिवार्य अंग होता है गुरु का शाब्दिक अर्थ है - अंधकार से प्रकाश अलौकिक रोशनी का मार्गदर्शक। पंडित छन्नूलाल मिश्र उन कलाकारों में से हैं जिन्होंने एक गुरु, एक शिष्य तथा एक प्रतिष्ठित कलाकार के रूप में भारतीय संगीत के क्षेत्र में विशेष कीर्तिमान स्थापित किया है।

पंडित छन्नूलाल मिश्र का संगीत जगत में सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह है कि उन्होंने शास्त्रीय, उपशास्त्रीय आध्यात्मिक तथा लोक संगीत हर पक्ष के संगीत जनमानस तक प्रसारित किया, और इस प्रारब्ध को पूर्ण करने के लिए उन्होंने संगीत की गरिमा से कभी कोई समझौता नहीं किया। संगीत के हर पक्ष को सरल व रूचिकर बनाकर दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत किया। सांगीतिक जगत में इन्हें महान योगदानकर्ताओं मे इन्हें गिना जाता है। उनका संगीत भावपूर्ण आवाज, अभिव्यक्ति तथा शास्त्रीय अर्थशास्त्रीय रूपों के मिश्रण के लिए बहुत प्रसिद्ध है।[410]

प्रदर्शन के तौर पर देखा जाए तो उनकी प्रतिष्ठा का मूल कारण है संगीत के प्रति आध्यात्मिक एवं सृजनशील दृष्टिकोण, लोक संगीत के लिए उदारता तथा शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय संगीत के लिए परंपरागत नियमों का पालन। उनकी गायकी ने श्रोताओं के कई वर्गों को प्रभावित किया है श्रोताओं, ने उनके संगीत को सराहा है। उन्होंने संगीत की हर शैली को एक नया स्तर प्रदान किया तथा यह सुनिश्चित किया

[410] विजय शंकर मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

की यही परंपरा आने वाली पीढियां के लिए भी जीवित रहे। उनकी गायन शैली चारों पट की रही है, तथा घराने के तौर पर उन्होंने किराना और बनारस,तथा हरिहरपुर तीनों घरानों का प्रतिपादन किया। इस दृष्टि से संगीत जगत सदैव उनका ऋणी है कि उन्होंने हर घराने से परंपरा का निर्वहन करके संगीत को पूर्णता प्रदान की।उनका व्यक्तित्व अगर देखा जाए तो आध्यात्मिक दृष्टिकोण एवं यौगिक अनुशासन, श्वास नियंत्रण एवं विभिन्न मुद्राओं का प्रयोग करके संपूर्ण शरीर की क्रिया चंचल भाव एवं लय की आनंदानुभूति को दर्शाता है।

पंडित छन्नूलाल मिश्र ने जीवन की विभिन्न धरातलों पर अपनी जीवन यात्रा में अनेक प्रकार की भूमिकाओं का निर्वहन करते हुए उत्कृष्ट कलाकार, योग्य गुरु, प्रबुद्ध चिंतक, निस्वार्थ प्रचारक एवं उत्कृष्ट संगठनकर्ता तथा उच्च कोटि के प्रयोगकर्ता की भूमिका निभाई है । इतनी सारी विविधताओं से भरपूर आपका व्यक्तित्व एवं कृतित्व आपकी विशेष विलक्षणता का प्रतीक है।[411] हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत को अभूतपूर्व ख्याति प्रदान की है।ख्याल, ठुमरी भजन, दादरा, कजरी,चैती आदि विशेष गायन शैली के लिए आपको जाना जाता है, आपकी कला क्षेत्र में दिए गए योगदान के लिए भारत सरकार ने सन 2010 में पद्म भूषण 2020 में पद्म विभूषण जैसे सम्मान से सम्मानित किया है।

आपके कलात्मक प्रयोग से भारतीय संगीत का नाम विदेशों में भी बड़े सम्मान से लिया जाता है। भारतीय संगीत में एक योगदान उनका यह भी है कि उन्होंने भारतीय संगीत जगत में एक नई सोच पैदा की, जहां लोग घरानों के सीमा में बंधे रहते थे वहीं कर बहुत से घरानों की विशेषताओं को आत्मसात तथा एक नई गायन शैली को जन्म दिया। हरिहरपुर बनारस तथा किराना घराने में एक तालमेल स्थापित किया तथा गायन की नई परंपरा आरंभ की, सिर्फ इतना ही नहीं परवर्ती

[411] पंडित साजन मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

पीढ़ी के कलाकारों को भी अपने अंदर नई विशेषता एवं नवीन प्रयोग करने पर बल देते हुए उत्साहवर्धन किया। इनके प्रमुख योगदानों में मुख्य योगदान यह है कि इन्होंने संगीत की हर विधा अर्थात शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, आध्यात्मिक तथा लोक सभी शैलियों का समन्वय किया। ग्रामीण पृष्ठभूमि निर्धन परिवार में जन्म लेने के बाद भी इन्होंने अनेक प्रकार से संघर्ष करते हुए संगीत की हर विधा को गाया और बढ़ाया। उत्तर प्रदेश की पूर्वी लोक परंपरा हो अथवा किराना घराने की ख्याल की गंभीरता या बनारस की ठुमरी की भावपूर्ण गायकी आपकी गायकी में हर प्रकार के अंग दृष्टिगोचर होते हैं।[412]

श्याम कल्याण राग हो अथवा "खेले मसाने में होरी" या बधाई के तौर पर "नंद घर बजे बधइयां" ऐसे गाने भुलाए नहीं जा सकते। इसके अलावा आरक्षण फिल्म का गाना बनारस के संगीत को बॉलीवुड तक पहुंचाया, ऐसा प्रयास था जिसमें पंडित जी की शास्त्रीयता का लोहा फिल्म जगत ने भी माना।

भारतीय संगीत प्रेमियों के लिए बड़ी संख्या में भजन, ठुमरी, दादरा, राग रागिनी लोक संगीत आदि अनेक गीत जो रिकॉर्ड रूप में संरक्षित जिसके द्वारा संगीत जगत उनके आवाज का रसास्वादन आज भी करता रहता है।

पंडित जी का मानना है कि "कल को आकार देना"ही हर संगीतज्ञ के का प्रथम दायित्व है। पूरब की मिट्टी में जन्मे पंडित जी स्वयं को भाग्यशाली मानते हैं कि उन्हें सांगीतिक पृष्ठभूमि वाले परिवार में जन्म मिला, योग्य एवं गुणी गुरुओं का मार्गदर्शन मिला,दुनिया के जाने-माने शास्त्रज्ञों सान्निध्य मिला, यह उनके लिए सौभाग्य के साथ-साथ एक उत्तरदायित्व भी है।[413]

---

[412] पंडित भोलानाथ मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

[413] पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से प्राप्त जानकारी के अनुसार

पंडित जी ने पूरे मनोयोग से उत्तर प्रदेश की उपशास्त्रीय गायन विधाओं तथा लोक संगीत को सजाया है तथा उन्होंने कई बार सरकारों से निवेदन भी किया कि बनारस में एक ऐसा संगीत प्रशिक्षण संस्थान बनाया जाए जहां योग्य भावी पीढ़ी को शास्त्रीय एवं बनारसी संगीत के निशुल्क शिक्षा दी जाए किंतु अपरिहार्य कर्म से संभव नहीं हो सका। बनारस की सांस्कृतिक परंपरा एवं संगीत को नवीन पीढ़ी में भी प्रसारित करने के लिए पंडित जी प्रबद्ध हैं, इसलिए उन्होंने "पंडित छन्नूलाल मिश्र म्यूजिक चैरिटेबल ट्रस्ट वाराणसी" एवं "शिवगंगा संगीत कला केंद्र एवं गुरुकुल" की स्थापना करके विशुद्ध शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय के साथ लोक संगीत को संरक्षित करने का बीड़ा उठाया है। पंडित जी विगत 50 वर्षों से संगीत की शिक्षा एवं प्रशिक्षण का कार्य करते आ रहे हैं उनकी कामना यही है कि संगीत का यह सिलसिला कभी ना रुके।

उनकी विशेष यही इच्छा है की हिंदुस्तानी संगीत का संरक्षण तथा संवर्धन हो, मां गंगा के पावन तट तथा काशी नगरी में अनवरत निवास करते हुए उन्होंने बनारसी संगीत ठुमरी, दादरा, होरी, चैती, कजरी जैसी गीत विधाओं का सतत विकास एवं प्रसार प्रसार किया।शायद ही कोई ऐसा राष्ट्रीय अथवा अंतरराष्ट्रीय मंच हो जहां प्रदर्शन करते हुए उन्होंने काशी की उपशास्त्रीय गायन विधाओं को सम्मिलित ना किया हो।

केवल इतना ही नहीं इसलिए 20 वर्षों से अपने घर को ही गुरुकुल का रूप देकर शिष्यों को प्राचीन गुरू शिष्य परंपरा के आधार पर संगीत प्रशिक्षण दे रहे हैं इस गुरुकुल में छात्र आवासीय शिक्षण संस्थान की तरह रहकर संगीत सीखते हैं तथा यह प्रशिक्षण पूर्णतः निशुल्क है।[414]

[414] पंडित भोलानाथ मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

उपरोक्त योगदान एक गुरु के तौर पर करने के अलावा 10 प्रकार की ठुमरी, 70 प्रकार का लोक संगीत विभिन्न प्रकार की चैती, बनारसी,मिर्जापुर या आजमगढ़ की कजरी भगवान शिव की होरी अथवा राधा कृष्ण की होली एवं अन्य गायन विधाओं को प्रत्यक्ष रूप से गाकर सुनाने एवं इसकी विस्तृत व्याख्या करने वाले पंडित जी आज देश के एकमात्र कलाकार माने जाते हैं।गायन विधाओं को उनके प्राचीन मूल स्वरूप के साथ प्रस्तुत करना पंडित जी के मंच प्रदर्शन की मुख्य विशेषता है,पंडित जी ने संगीत को मात्र गाया ही नहीं समझाया भी है जिससे उनका संगीत आम जनमानस के हृदय तक पहुंच पाया।

घरानों के बहुत से कलाकारों ने अनेक कार्यक्रम किये हैं तथा संगीत को निभाया भी है, परंतु पंडित छन्नूलाल मिश्र ने निष्ठा पूर्वक संगीत की साधना की है अपने कठोर परिश्रम तथा कलाभिव्यक्ति में तन्मयता के साथ संगीत को प्रतिष्ठित किया है।

पंडित जी कहते हैं "अगर आपका संगीत श्रोता को समझ में नहीं आए तो आपका गाना बेकार है"।

पंडित जी को पसंद करने वाले श्रोताओं में संगीत कला साधक की नहीं बल्कि ऐसे श्रोता वर्ग जिनका संगीत से कोई सरोकार नहीं जो अन्य व्यवसाय एवं सेवा आदि से जुड़े हैं- गरीब,अनपढ़,मजदूर, किसान, आम श्रोता संगीत का आनंद ले सकें तथा उनमें भी संगीत के प्रति लगाव और सीखने की इच्छा पैदा हो, इसके लिए पंडित जी श्रोताओं की पसंद का ध्यान रखते हैं तथा उनके अनुरूप ही मंच प्रदर्शन करते हैं।

पंडित जी द्वारा गाए गए संगीत से जहां एक संभ्रांत कलाकार, सुधि संगीत प्रेमी, झूमते हैं वहीं दूसरी ओर गंगा किनारे झुंड बनाकर सुनने वाले आम लोग भी

आनंदित होकर नाचते हैं, अतः यही कारण है की पंडित जी को लोग "जनता के कलाकार" के रूप में उपाधि प्रदान करते हैं।[415]

शास्त्रीय संगीत में योगदान

संगीत की सभी विधाओं की अपनी अपनी परंपरा चली आ रही हैं गायन घराने के विविध शैलियों के महान विभूतियों ने संगीत जगत में अपार लोकप्रियता एवं कीर्तिमान स्थापित कर संगीत जगत को को गौरवान्वित किया है, प्रसिद्ध संगीतज्ञों में पंडित छन्नूलाल मिश्र ने हर प्रकार की शैली को आत्मसात कर नए रूप में प्रस्तुत कर समग्र रूप से घराने को समृद्ध किया है। पंडित जी ने ख्याल गायन की परंपरा में किराना, बनारस तथा हरिहरपुर तीनों ही घरानों की परंपरा को आत्मसात कर अपने कलात्मक द्वारा प्रसारित किया है। घराने का आश्रय भले ही उन्होंने अनेक घरानों से लिया , किंतु अपनी कलात्मकता एवं सृजनात्मकता द्वारा बंदिशों मे सटीक स्वर तथा भावपूर्ण गायन के द्वारा शास्त्रीय संगीत को सामान्य जनमानस तक भी पहुंचने का प्रयास किया है।

पंडित जी एक विद्वान शिक्षक, शास्त्रकार, रचनाकार तथा कुशल कलाकार हैं। संगीत की अनेक विधाओं में भी उनकी गहरी पैठ है। उन्होंने रागों को नए-नए ढंग से रुपमान करना,राग विषयक पहलुओं पर गंभीरता पूर्वक मनन, तथा रागों की उपज को विभिन्न रंगों से वर्णित करना आदि गुण उन्हें विलक्षण बनाते हैं तथा ऐसी विलक्षणता ही उनके योगदान को परिलक्षित करती है।[416]

आपकी गायकी में परंपरा का मूल तत्व निहित होता है, ख्याल गायन शैली में आप अपने गुरुओं द्वारा प्रदत मार्ग का पूर्ण अनुसरण करते हैं। आपकी गायकी पूर्ण रूप

---

[415] पंडित भोलानाथ मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

[416] प्रसिद्ध तबला वादक साबिर हुसैन द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार

से भाव प्रधान है जिसमें एक-एक स्वर का लगाव तथा भाव आपकी गायकी विशेष रूप से प्रभावशाली दृष्टिगत होती है।मंच प्रदर्शन के दौरान भी कभी श्रोताओं से अलग प्रकार की फरमाइश आ जाती है अब ऐसे में एक-एक चीज का ध्यान रखते हुए गाना तथा श्रोताओं के अंतःकरण में उतर जाना आपकी गायकी के प्रमुख विशेषता है।[417]

उप शास्त्रीय संगीत में योगदान

इस तथ्य में कोई संदेह नहीं है कि किराना घराने की छत्रछाया में पले बढ़े पंडित छन्नूलाल मिश्र आज सांस्कृतिक राजधानी बनारस की संस्कृति को भली-भांति प्रसारित कर रहे हैं।

अपने पिता तथा गुरु से इस प्रकार दीक्षित हुए कि आजमगढ़, बिहार से लेकर बनारस एवं देश के कोने-कोने में आज इनकी सांगीतिक जय -जयकार होती है। यह सर्वविदित है कि आज पंडित जी दुनिया भर में बनारसी उपशास्त्रीय गायन परंपरा मुख्यतः ठुमरी गायन के पर्याय बन चुके हैं। ठुमरी का कहीं जिक्र हो और उसमें पंडित जी के चर्चा ना हो ऐसा संभव है। वर्तमान में पंडित छन्नूलाल मिश्र शास्त्रीय गायन शैली के मूर्धन्य कलाकार के रूप में गिने जाते हैं।

स्वयं पंडित जी के शब्दों में "मेरे परदादा स्वर्गीय जगदीप महाराज जी थे जो हरिहरपुर के निवासी थे उनके ही नाम से हमारे गांव को कलाकारों का गांव नाम दिया गया था कोई ठुमरी, दादरा के बादशाह कहलाते थे वही संस्कार निश्चित ही मेरे अंदर रक्त के समान प्रवाहमान है, इसलिए मेरा रुझान तथा मेरी कल्पनाशीलता उप शास्त्रीय संगीत की ओर विशेष रूप से आकृष्ट हुई।"[418]50 वर्षों से

---

[417]प्रसिद्ध गायक कैलाश खेर द्वारा किए गए साक्षात्कार से उद्धृत

[418] पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी से प्राप्त जानकारी के अनुसार

ठुमरी,दादरा, चैता, चैती, घाटों, टप्पा,तराना, तिरवट, चतुरंग, होरी कजरी, सावनी, लावणी, झूला, सोहर, बधइयां आदि अनेक गायन प्रचार प्रसार में पूरे समर्पण भाव के साथ लगे हैं। तथा इन गायन शैलियां तथा लोक विधाओं के गायन के लिए दुनिया भर में जाना जाता है।

आध्यात्मिक संगीत में योगदान

पंडित छन्नूलाल मिश्र का जीवन संतों से प्रभावित रहा है। उन्होंने संत, साहित्य तथा भारतीय संस्कृति से प्रेरणा ली है, तथा उन प्रेरणादायक तत्वों को अपने संगीत में शामिल किया है। भारतीय भारतीय संगीत के समस्त प्रकार के तत्व उनकी गायकी में समाहित हैं। उनका स्वयं का व्यक्तित्व आध्यात्मिक है, एवं आध्यात्मिक विचारधारा से प्रभावित होने के कारण, आध्यात्मिक संगीत को लोकप्रिय तथा व्यापक रूप से प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

पंडित जी के दिव्य संगीत की एक और महत्वपूर्ण विशेषता है उनका धार्मिक व्यक्तित्व। पंडित जी के अंतःरण का आध्यात्मिक स्तर विशेष रूप से जागृत है आभामंडल इतना अलौकिक एवं ओजपूर्ण है कि उनके सानिध्य में रहा व्यक्ति उस दिव्य प्रकाश को महसूस कर सकता है। इसका महत्वपूर्ण कारण यह भी है बाल्यावस्था से ही घर का वातावरण अत्यंत आध्यात्मिक एवं धार्मिक प्रवृत्ति का था। माता-पिता द्वारा दिए गए संस्कारों के कारण पंडित जी की आस्था हमेशा ईश्वर तथा संतों में रही है।[419]

दर्शक वर्ग उनकी आवाज में भजन सुनने से आध्यात्मिक शांति का अनुभव होता है, उनके गांव में भी लोग उनके 'रामायण' तथा 'रामचरितमानस' आदि का पाठ

[419] डॉ नम्रता मिश्रा से प्राप्त जानकारी के आधार पर

सुनने के लिए लालायित रहते थे।उनके दर्शक कहते हैं कि "उनका संगीत विशेष रूप से भजन हमें आध्यात्मिक गहराई में ले जाता है तथा ईश्वर से जोड़ देता है"। पंडित जी का मानना है "आध्यात्म जीवन शैली है,एक दिनचर्या है, विचारों का एक ऐसा समूह है जिसमें मात्र सुविचारों के लिए ही स्थान होता है"। उन्होंने जीवन भर आध्यात्मिक संगीत के प्रति समर्पण दिखाया, अपनी गायकी में अध्यात्मिक संदेश को भी शामिल किया उनके गायन एवं व्यक्तित्व में जिस दिव्यता ने प्रवेश किया, उसने पंडित जी को एक संगीत संत के रूप में प्रतिष्ठित किया। आजमगढ़ से लेकर बनारस तथा देश की कोने-कोने में उन्होंने आध्यात्मिक संगीत के उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके संगीत को लोग बहुत पसंद करते हैं ,दर्शकों ने उनको उनके आध्यात्मिक संगीत से प्रभावित होकर अनेक नाम दिए हैं जैसे- व्यास जी , आध्यात्मिक संत आदि।

लोक संगीत में योगदान

जैसा कि सर्व विदित है पंडित छन्नूलाल मिश्र चारों पट के गायक हैं तथा अनेक घरानों की परंपराओं का उन्होंने भली भांति निर्वहन किया है।

उनके महत्वपूर्ण योगदानों में सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह है कि लुप्त हो रही लौकिक विधा को जन-जन तक प्रसारित किया है।

भारत की लौकिक परंपरा अत्यंत समृद्धिशाली रही है। अनेक प्रकार के लोक संगीत, तथा लोक परंपरा भारतीय समाज एवं सामान्य जनमानस के जन जीवन में व्याप्त है। धार्मिक क्रियाकलापों सामाजिक रीति रिवाज अथवा अनेक अवसर पर इसके दिव्य दर्शन प्राप्त होते हैं, समाज की पुरानी पीढियों ने भी इस परंपरा का समुचित निर्वहन करने में विशेष योगदान दिया है। वर्तमान में पाश्चात्य सभ्यता का बोलबाला है, नवीन पीढ़ी के चाहे वह गायक हो अथवा सामान्य जनमानस उन्हें

अपने प्राचीन परंपरा के निर्वहन में शर्म महसूस होती है, यही कारण है कि भारत की अनेक प्राचीन लोक संस्कृति धीरे-धीरे विलुप्त हो रही है।

जहां तक संस्कृतिक प्रदर्शनों की बात है, अनेक प्रतिष्ठित कलाकार भी शास्त्रीय प्रदर्शन के साथ लोक विधा का प्रदर्शन करने को हेय दृष्टि से देखते हैं, जबकि भारतीय सांस्कृतिक प्रणाली में शास्त्रीय संगीत तथा लोक संगीत दोनों ही पक्ष एक दूसरे के समानांतर तथा पूरक रहे हैं। जब शास्त्रीय संगीत को मंच पर प्रतिष्ठा प्रदान की जा रही है तो लोक संगीत भी भारतीयता की पहचान है और इस संस्कृति के संरक्षण तथा संवर्धन में ही भारतीय संस्कृति की परंपरा निहित है।

पंडित छन्नूलाल मिश्र ने शास्त्रीय संगीत के साथ लोक संगीत को मिलाकर एक परिवर्तित रूप मंच पर प्रदर्शित किया जिससे बनारस तथा आजमगढ़ के संगीत को विश्व स्तर तक पहचान मिली। पंडित छन्नूलाल मिश्रा 70 प्रकार का लोक संगीत गाने वाले भारतवर्ष के एकमात्र गायक हैं। उनकी गायकी में भावुकता और गहराई है।

लोक सांस्कृतिक विधा मे सोहर,जतसार, विवाह के गीत, रीति रिवाज के गीत, होरी,चैती, कजरी, बधाई ऐसे अनेक प्रकार की उनकी प्रस्तुतियों बहुत लोकप्रिय हुई हैं।[420]

उनकी गायकी में विषय वस्तु के साथ भाव तथा संगीत संबंधी अनेक तथ्यों का उचित समावेश होता है जिससे उनका प्रदर्शन मंच पर निखरता है।

मंच पर प्रदर्शन के समय प्रस्तुति को बहुत ही खूबसूरती के साथ प्रस्तुत करते हैं मंच पर बैठते हैं एक अलग प्रकार की ऊर्जा का संरक्षण करते हैं जिससे श्रोताओं के मध्य संगीत का अद्भुत माहौल स्थापित हो जाता है।

---

[420] विजया भारती प्रसिद्ध लोक गायिका द्वारा प्राप्त जानकारी के आधार पर

लोक संगीत को गाते समय भी गायन शैली का इतिहास, विषय वस्तु, प्रासंगिकता,उत्पत्ति एवं गायकी संबंधी अनेक विशेषताओं को आप श्रोताओं को समझाते हुए जाते हैं। इस प्रकार के प्रदर्शन से आप श्रोताओं के साथ एक विशेष रिश्ता बना लेते हैं और श्रोता वर्ग आपसे एक विशेष तारतम्य जोड़ लेते हैं।

फिल्म संगीत में योगदान

चलचित्र अथवा चित्रपट किसी भी कलाकार के रचनात्मक प्रवृत्तियां क्षमता व रंगमंचीय विविधताओं को आत्मसात करने का सशक्त माध्यम है। चलचित्र जहां मानव के शाश्वत मनोरंजन का साधन है, वहीं किसी भी संस्कृति व धरोहर का संरक्षण व संवर्धन करने का सरल उपकरण भी है। चलचित्र मानव की साहित्यिक व सांकेतिक संवेदनाओं के रम्य चित्र अनुभूति तथा अभिव्यक्ति का प्रभावी स्रोत भी है। आज चलचित्र लगभग समाज के हर वर्ग के लोगों पर अपनी गहरी प्रभावी एवं अमित छाप अंकित करता हुआ एक प्रभावशाली दृश्य माध्यम के रूप में स्थापित है।मानव की कलात्मक तथा रचनात्मक कृतियों का सौंदर्य पूर्वक फिल्मांकन कर उसे जन समुदाय तक पहुंचाना ही चलचित्र का वास्तविक ध्येय होता है।

चित्रपट संगीत का उद्देश्य अल्प समय में मधुर संगीत देना श्रुति एवं स्वर द्वारा सामंजस्य कर जनरुचि को उजागर करना होता है।[421]

संगीत चलचित्र की आत्मा है बिना संगीत के किसी चलचित्र की कल्पना निरर्थक सिद्ध होती है चलचित्र का भविष्य भी एक तरीके से संगीत पर टिका हुआ है चलचित्र हमारे संस्कृति निहित क्रियो को दर्शाने का सबसे उत्कृष्ट माध्यम है बिना संगीत के संस्कृति का भी कोई अस्तित्व नहीं है।

---

[421] पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

भारतीय चलचित्र में भी राग और तालो का सुंदर प्रयोग किया जाता है। वर्ष 2011 में 'आरक्षण' नाम की फिल्म आई जिसमें 'सांस अलबेली' गाना पंडित छन्नूलाल मिश्र ने गाया, पंडित जी द्वारा गाए गए इस गाने ने बॉलीवुड में भी शास्त्रीय संगीत के पक्ष को बहुत मजबूती के साथ रखा। इसने 'रिश्तो के दर्द और उन्हें बांधने वाले नाजुक धागों' जैसे तथ्य को दर्शाया है इस फिल्म का संगीत' शंकर एहसान लॉय' द्वारा निर्देशित है। इस गीत को समीक्षकों के द्वारा भी बहुत सुंदर बताया गया है, तथा शानदार एवं मन को छू लेने वाला बताया गया समीक्षकों ने इस गीत को "सुंदर अभिव्यक्ति" के रूप में वर्णित किया है।

इस गीत के निर्देशक शंकर महादेवन जी कहते हैं कि "पंडित छन्नूलाल मिश्र एक बहुत महान कलाकार हैं,इन्होंने अगर दादरा, ठुमरी, कजरी और शास्त्रीय संगीत की वृहत जानकारी हासिल की है, उन्हें बहुत गहरा ज्ञान है, बहुत गहरी समझ है और यही कारण है की फिल्मी संगीत में भी उन्होंने इसी गहराई के साथ गाया है" फिल्म "मोहल्ला अस्सी" में भी इन्होंने शीर्षक ट्रैक गाया, यह गाना भी बहुत प्रसिद्ध हुआ। जब पंडित जी से पूछा जाता है कि आप सभी प्रकार के गाने गाते हैं तथा उस गाने के साथ आप उचित न्याय भी कर पाते हैं, तो पंडित जी का कहना होता है कि "अगर आपने संगीत को नियमानुसार सीखा है और आपके हृदय में अगर संगीत बसता है तो आप हर प्रकार के संगीत को गाने में सक्षम होंगे"।[422]

निष्कर्ष

निष्कर्षतः पंडित छन्नूलाल मिश्र सहज तथा सौम्य व्यक्तित्व के स्वामी हैं तथा कम शब्दों में प्रस्तुति तथा विचारों की वस्तुनिष्ठता सामने रखते हैं। गहनता के साथ शब्दों का चिंतन कर मंच पर क्रियात्मक रूप में उसे परिष्कृत करते हैं।

[422] https://share.google/Do3czbuGEFiA0Yib2

संगीत की अनेक विधाओं में तथा जीवन के विभिन्न धरातलों पर अनेक प्रकार की भूमिकाओं का निर्वहन करते हुए हर क्षेत्र में उत्कृष्ट भूमिका निभाई है।

चाहे वह बनारस की चंचलता हो अथवा किराने की गंभीरता या आध्यात्मिक तौर पर संदेश वाहक संगीत के रूप में, आपकी संगीतात्मकता हर प्रकार की भूमिका का निर्वहन करने में सक्षम है। आपका व्यक्तित्व एवं कृतित्व इतनी सारी विविधताओं के बावजूद विशेष विलक्षणता का प्रतीक है, अपने अनेक विषयों तथा विधाओं में अपनी समर्थकता व्यक्त की है जिससे भारतीय संगीत विश्व पटल पर स्थापित हुआ है आपके समस्त सुविधाओ में दिए गए योगदान के लिए संगीत जगत आपका हृदयेतर आभारी है।

5.1 पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा रचित एवं गेय रचनाएं

राग- ललित, **थाट** -पूर्वी, **जाति** - षाडव षाडव, **वादी स्वर** - मध्यम **संवादी स्वर** – षड़ज, **गायन समय** - रात्रि का अंतिम प्रहर[423]

आरोह—नि॒ रे॒ ग म, मं म ग, मं ध॒ नि ध॒ सां।

अवरोह—रें नि ध॒, मं ध॒ मं म ग, मं ग रे सा।

पकड़—नि रे॒ ग म, मं म ऽ ग, मं ग रे॒ सा।

[423]डॉ नम्रता मिश्रा से प्राप्त जानकारी के आधार पर

राग ललित—चौताल (विलम्बित)

स्थायी

																ग
																अ
सा										ग						ध़ं
नि़ं	रे़	ग	म	म	--	--	म	--	ग	--						मं
रे	ऽ	म	न	तू	ऽ	ऽ	भ	ऽ	ज	ऽ						रे
३		४		×		०		२		०						
		ग		ध़				ध़		नि						
ध़	मं	म	ग	मं	ध़	--	सां	--	सां	सां	सांनि़					
ऽ	भ	ज	ऽ	सा	ऽ	ऽ	हे	ऽ	ब	को	ऽऽ					
३		४		×		०		२		०						
	सां			ध़				ध़		ग						
रें़	नि	--	ध़	मं	ध़	--	मं	ध़	मं	म	ग					
ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	म,	अ					
३		४		×		०		२		०						

अन्तरा

ध़			ध़													
मं	ध़	--	सां	--	सां	सां	--	--	सांनि़	रें़	सां					
जा	ऽ	ऽ	का	ऽ	र	न	ऽ	ऽ	तोऽ	ऽ	हे					
×		०		२		०		३		४						

नि								नि							
सां	नि	|	रें	गं	|	रें	सां	|	सां	सांनि	|	रें	नि	|	--	ध
बि	ध	|	ऽ	ना	|	ऽ	र	|	चो	ऽऽ	|	ऽ	है	|	ऽ	ऽ
×			०			२			०			३			४			
								नि							
ध	मं	|	ध	सां	|	--	सां	|	सां	नि	|	रें	नि	|	ध	--
सो	ऽ	|	ऽ	तू	|	ऽ	न	|	क	र	|	ऽ	त	|	है	ऽ
×			०			२			०			३			४			
ध				ध					ग									
मं	ध	|	--	मं	|	ध	मं	|	म	ग							
का	ऽ	|	ऽ	ऽ	|	ऽ	ऽ	|	म,	अ							
×			०			२			०									

राग - बहार, **थाट** -काफी , **जाति**- षाडव षाडव, **वादी स्वर** - मध्यम **संवादी स्वर** - षड़ज, **गायन समय** - मध्य रात्रि[424]

राग बहार का आरोह अवरोह, स्वरुप

नि सा, ग म, प ग म, ध नि सां ।
सां नी प, म प, ग म, रे सा ।।

पकड़

म प ग म, ध नि सां

[424] प्रसिद्ध गायिका एवं शिष्या कुमुद दीवान द्वारा प्रदत्त जानकारी

बहार–एकताल (विलम्बित)

स्थायी.

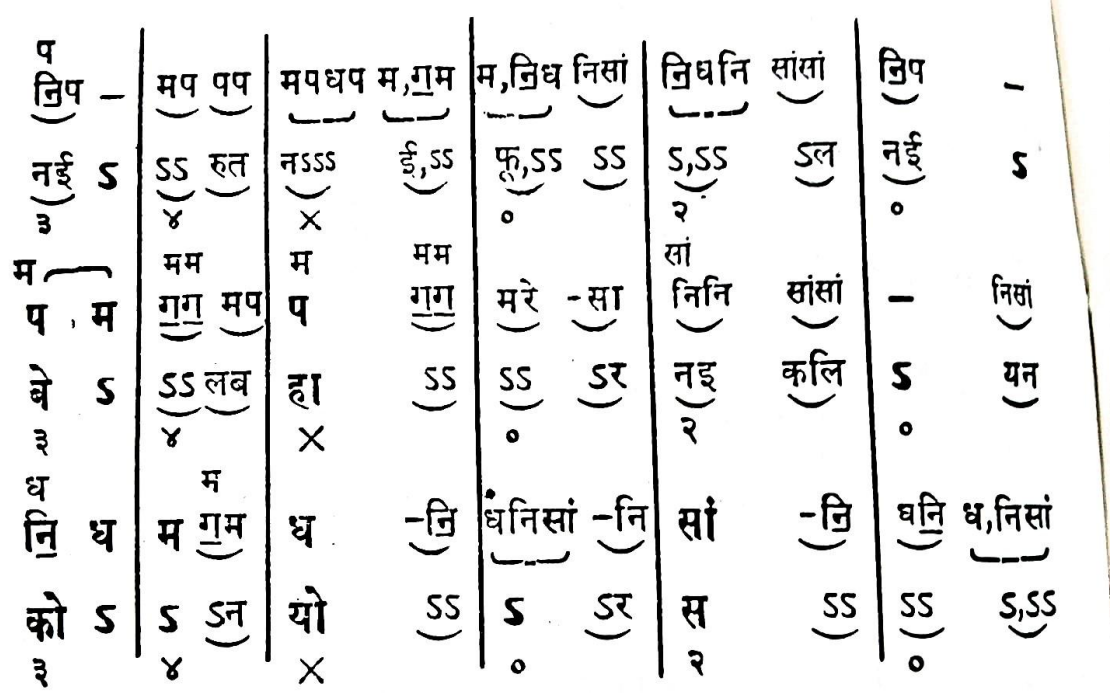

अन्तरा.

425

[425] प्रसिद्ध गायिका तथा शिष्या विष्णु प्रिया द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

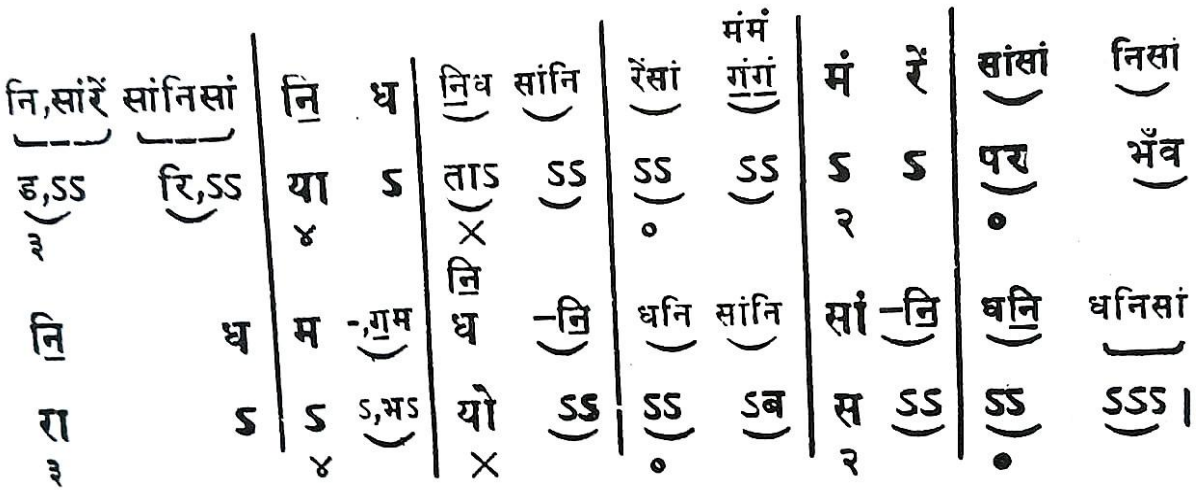

राग - अभोगी कान्हड़ा, **थाट** - काफी, **जाति**- औडव औडव, **वादी स्वर**- मध्यम , **संवादी स्वर** –षड़ज, **गायन समय**- रात्रि का दूसरा प्रहर

आरोह- सा रे ग म ध सां
अवरोह-सां ध म ग म रे सा
पकड़-ध़ सा रे ग,ग म रे सा

राग आभोगी कांहड़ा—रूपक (विलंबित)

स्थायी— जुगन जीवे लाल तेरो माई, देहों दान दरस को ।

अंतरा— गिरि कौलाश शिखर ते आयो 'रामरङ्ग' देखन तेरो बाल ।।

स्थाई

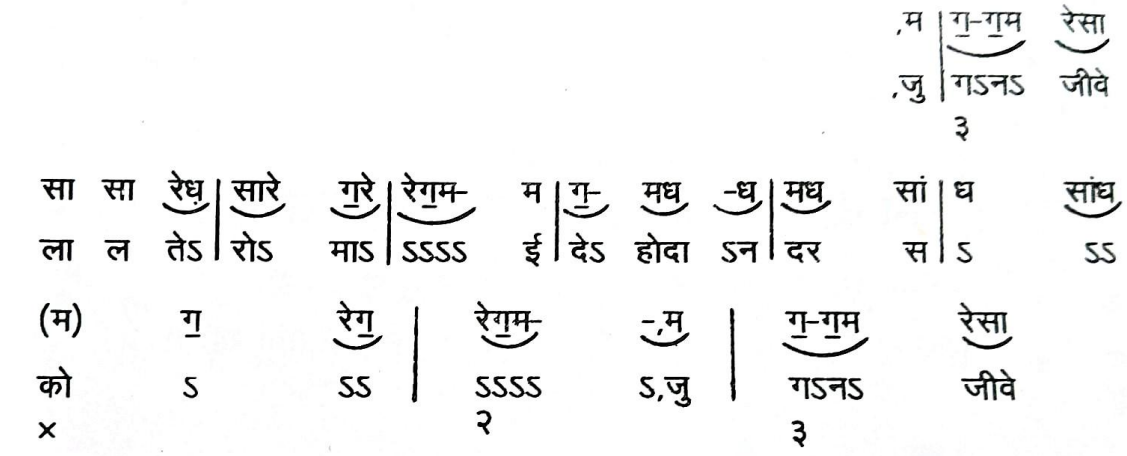

अंतरा

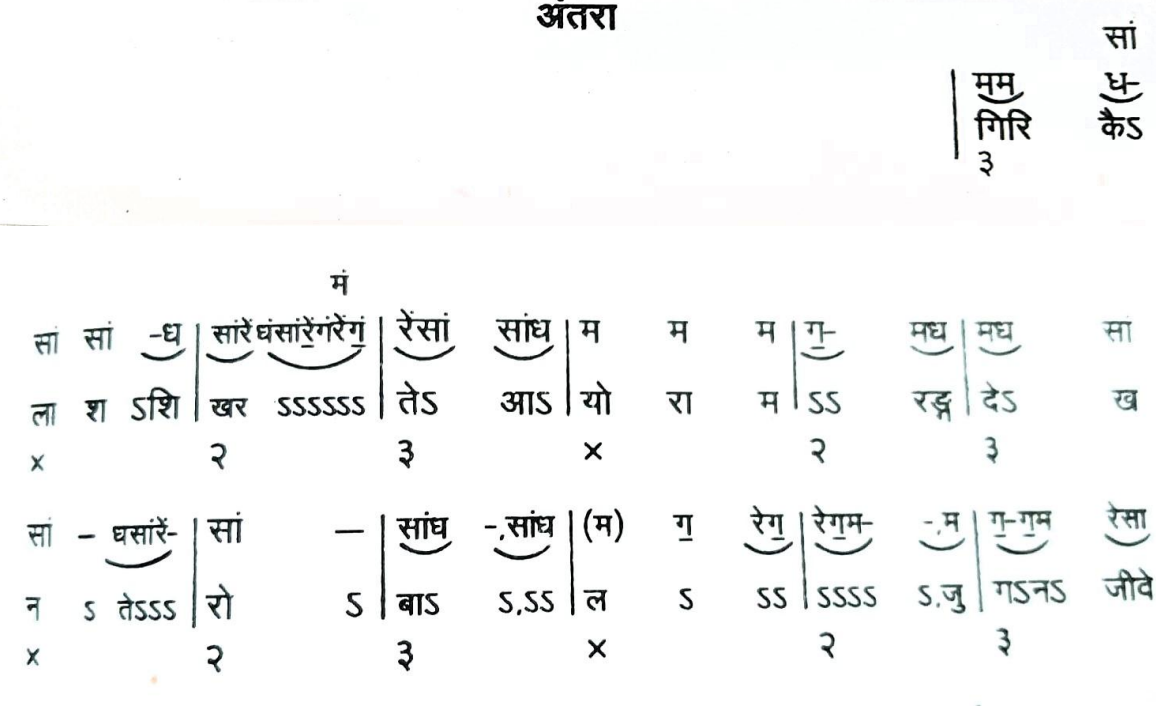

राग - जोग, **थाट-** खमाज, **जाति**- औडव औडव, **वर्जित स्वर**- ऋषभ, धैवत, **गायन समय** - रात्रि का द्वितीय प्रहर , **वादी स्वर** -पंचम

,

संवादी स्वर- षड़ज

आरोह -सा ग म प नि सां
अवरोह-सां नि_प म ग म ग_ सा
पकड़- ग म प नि_ प,म ग म ग_ सा

राग जोग—रूपक (विलम्बित)

स्थायी—जाने न देहों ऐरी तोहे, लेहों दान रस रीत की।

अंतरा—मद की माती रही इतराती 'रामरंग' देखि न जाय अनरीत की।

स्थायी

| – – –,ग॒सा	नि॒सागमप – प–
| ऽ, ऽ ऽ,जाऽ	ऽ ऽ नेऽऽ ऽ न ऽ
३	

प	ग,मपगम	ग॒सा |	-(सा),प॒नि	प॒नि॒सा- |	नि॒-साग॒सा-,ग॒सा-	-मप-
दे	ऽ,ऽऽऽऽ	होंऽ |	ऽ ए री ऽ	ऽतोहेऽ |	ऽऽऽऽऽऽ,ऽलेऽऽ	होऽऽ
x			२		३	

नि॒नि॒पमप – – –	मगम-	प॒निसां – – –,नि॒प |	म-प	ग,-म
दाऽऽऽ ऽ ऽ ऽ ऽ	नरसऽ	री ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ, त ऽ |	कीऽऽ	ऽ,ऽऽ
x			२	

साग॒सा,ग॒सा	नि॒सागमप-प- |
ऽ ऽ ऽ,जाऽ	ऽऽ नेऽ ऽऽनऽ |
३	

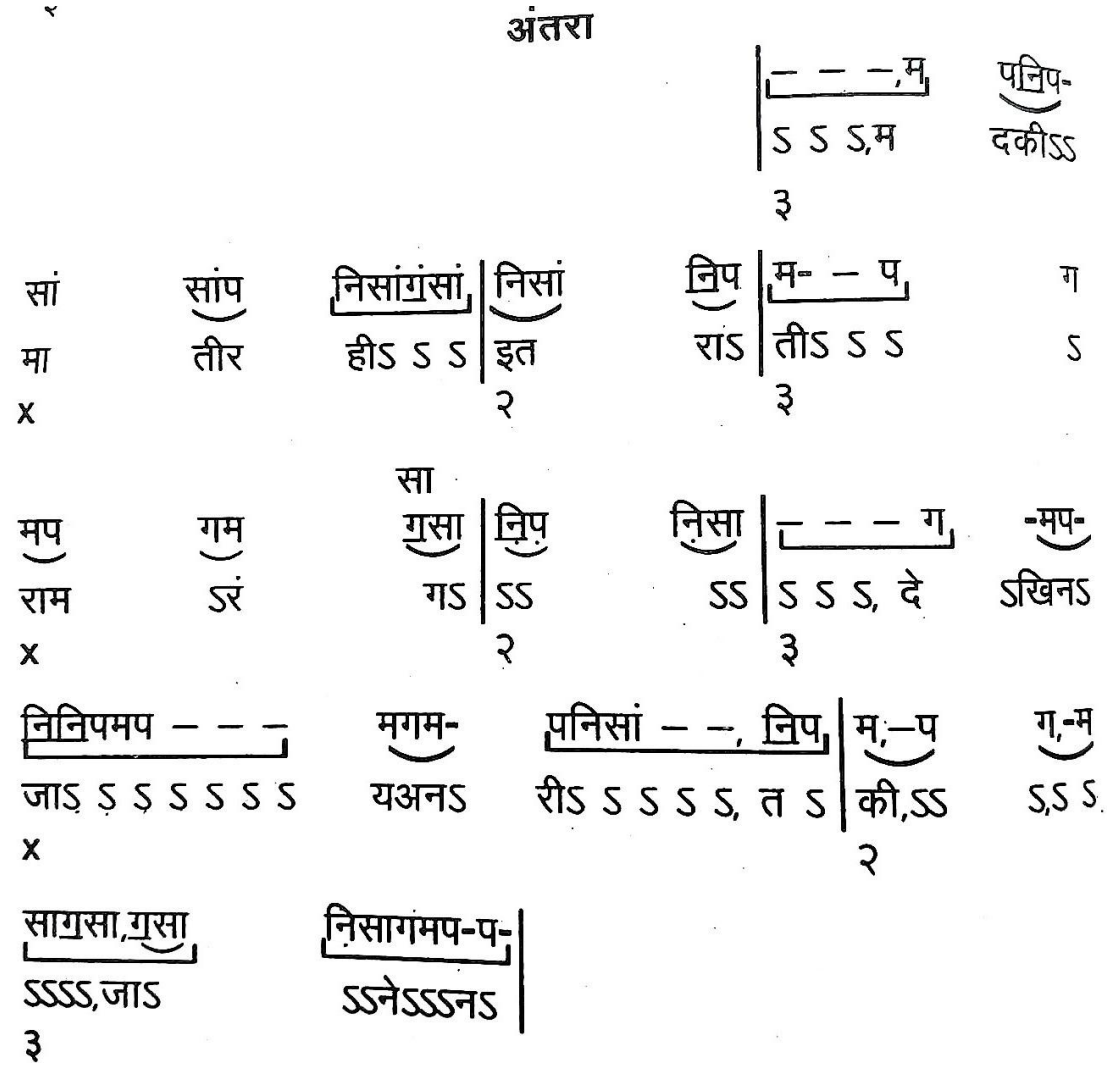

राग - नंद, **थाट** -कल्याण, **जाति**- षाडव वक्र संपूर्ण, **वादी स्वर** - षड़ज, **संवादी स्वर** – पंचम , **गायन समय** - रात्रि का द्वितीय प्रहर[426]

आरोह -सा ग म प,ग म प ध नि प,ध म' प सां
अवरोह-सां रें नि प,ग म ध प रे सा
पकड़- ग म ध प म' ग रे सा

5.2पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा रचित एवं गेय विलंबित ख्याल

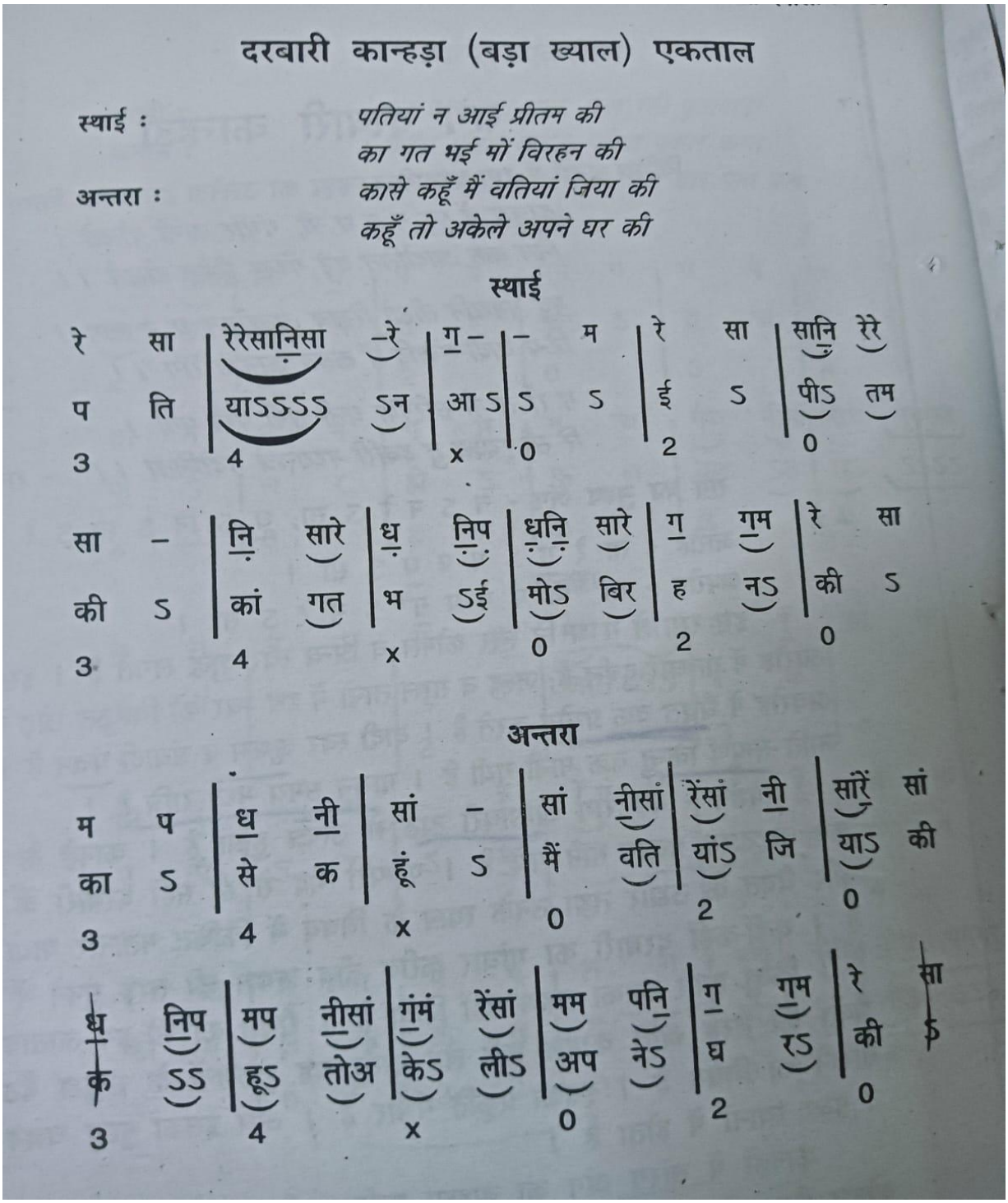

दरबारी कान्हड़ा (बड़ा ख्याल) एकताल

स्थाई : *पतियां न आई प्रीतम की*
का गत भई मों विरहन की

अन्तरा : *कासे कहूँ मैं वतियां जिया की*
कहूँ तो अकेले अपने घर की

स्थाई

रे	सा	रेरेसानिसा		रे		ग –		–	म	रे	सा	सानि	रेरे		
प	ति	याऽऽऽऽ		ऽन		आ ऽ		ऽ	ऽ	ई	ऽ	पीऽ	तम		
3		4				x		0		2		0			
सा	–	नि	सारे	ध	निप	धनि	सारे	ग	गम	रे	सा				
की	ऽ	कां	गत	भ	ऽई	मोऽ	बिर	ह	नऽ	की	ऽ				
3		4		x		0		2		0					

अन्तरा

म	प	ध	नी	सां	–	सां	नीसां	रेंसां	नी	सारें	सां				
का	ऽ	से	क	हूं	ऽ	मैं	वति	यांऽ	जि	याऽ	की				
3		4		x		0		2		0					
~~ध~~	निप	मप	नीसां	गंमं	रेंसां	मम	पनि	ग	गम	रे	~~सा~~				
~~क~~	ऽऽ	हूऽ	तोअ	केऽ	लीऽ	अप	नेऽ	घ	रऽ	की	~~ऽ~~				
3		4		x		0		2		0					

राग नन्द--एकताल (विलम्बित)

स्थायी–ए रंगीला आया बनरा मेरे घर व्याहन।

अंतरा–नैन कजरा गले मोतिन माला 'रामरंग' शीस सेहरा झुलाया।।

स्थायी

		मंग					ग									
गम	धप	रेसा	ग	म	-ग	प	–	मंप	गम	गमधप	रे	सा				
एऽ	ऽरं	गीला	आ	या	ऽऽ	ऽ	ऽ	बन	ऽऽ	ऽऽऽऽ	रा	ऽ				
४			x		०		२		०		३					
सारे	निप़	सा	सागमपगमप-			–	धनि	प	ध	मं	प	ग	सागमप			
मेऽ	रेऽ	घ	रऽ	ऽऽऽ	ऽऽऽ	ऽ	ब्याऽ	ऽ	ह	ऽ	न	ऽ	ऽऽऽऽ			
४		x				०		२		०		३				

मंग
गमधप रे सा |
ऽऽऽ,रं गीला |
४

अन्तरा

पप सांसां | सां -रें | सां – | पनिसारें सारें | नि प | गम पध |
नैन क ज | रा ऽग | ले ऽ | मोऽ ऽऽ तिन | मा ला | राम रंग |
४ x ० २ ० ३

धध मंग नि प
निनिध(प)गम धप | रे सा | मग पप | धनि प | ध मं | प ग,साग |
शीऽऽऽ ऽऽऽ ऽस | से रा | ऽऽ ऽझु | लाऽ ऽ | या ऽ | ऽ ऽ,ऽऽ |
४ x ० २ ० ३

मंग
मधप- रेसा |
ऽऽऽरंऽ गीला |
४

5.3 पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा गेय एवं रचित मध्य तथा द्रुत ख्याल

राग- दरबारी कान्हडा, **थाट-** आसावरी, **वादी स्वर-** ऋषभ, **संवादी स्वर -** पंचम, **गायन समय-** मध्य रात्रि[427]

आरोह—सा रे $^{रे}$ ग॒ ऽ म प ^{प} ध॒ ऽ नि॒ सां।

अवरोह—सां नि॒ ध॒ नि॒ प म प, ^{म} ग॒ म रे सा।

पकड़—सा रें $^{रे}$ ग॒ $^{रे}$ ग॒ म रे सा, नि॒ ध॒ ऽ नि॒ रे, रे सा।

राग दरबारी कान्हड़ा—एकताल (मध्य लय)

स्थायी

						--	रे
						ऽ	च
रे	-- | सा	सा | सा	रे | नि॒	सा | रे	ध॒ | नि॒	प॒
र	ऽ | न	श | र	न | आ	ऽ | ई	हूँ | ऽ	ति
×	०	२	०	३	४	
सा	सा | सा	सा | रे	ग॒ | --	म | प	नि॒ | प	म
हा	ऽ | री	ब | न	वा | ऽ	री | ब्र	ज | के	ह
×	०	२	०	३	४	
पनि	सां | सां	नि॒ | प	ग॒ | मप	गम | रेसा	निसा | रे,	रे
माऽ	ऽ | रि	प | त	रा | ऽऽ	ऽऽ | खिऽ	येऽ | ऽ,	च
×	०	२	०	३	४	

अन्तरा

म	-- | प	ध॒ | --	नि॒ | सां	-- | --	सां | --	--
टे	ऽ | र	सु | ऽ	नि | धा	ऽ | ऽ	ये | ऽ	ऽ
×	०	२	०	३	४	
सां	सां | नि॒	रें | --	सां | नि॒	सां | रें	ध॒ | नि॒	प
ब	स | ऽ	न | ऽ	ब | ढ़ा	ऽ | ऽ	ये | ऽ	ऽ
×	०	२	०	३	४	
ग॒	म | रे	सा | --	सा | नि॒	सा | रे	ग॒ | म	प
रा	ऽ | म	रं | ऽ	ग | ज	य | ज	य | क	हि
×	०	२	०	३	४	
म	पनि | सां	नि॒ | पं	प | ग॒	मप | गम	रेसा | निसा,	रे
सु	रऽ | ऽ	सु | म	न | ब	रऽ | ऽऽ	साऽ | येऽ,	च
×	०	२	०	३	४	

[427] डॉ इंद्रेश मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

राग - मियां- मल्हार**, थाट** -काफी, **वादी स्वर** -षड़ज, **संवादी स्वर**- पंचम , **जाति** - संपूर्ण षाडव, **गायन समय**- मध्य रात्रि

आरोह—सा म रे प, ग म रे सा, म रे प, म प नि ऽ ध नि सां।

अवरोह—सां ध नि म प, ग म रे सा।

पकड़—म रे प, म ग ऽ ग म रे सा, नि़ नि़ ऽ ध़ नि़ ऽ सा।

राग मियाँ मल्हार—त्रिताल (मध्य लय)

स्थायी

														सा	सा
														ब	र्सन्
म								म	म		रे				
ग	म	प	नि	म	प	सां	--	ग	ग	म	म	रे	रे	सा	--
ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	गि	रे	ऽ	ब	द	रि	या	ऽ
×				२				०				३			
								ध़							
नि़सा	रेम	रे	रे	सा	--	नि़	सा	नि़	ध़	नि़	--	सा	--	सा	सा
साऽ	ऽऽ	व	न	की	ऽ	अ	ति	का	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	अ	ति
×				२				०				३			
						म		म							
सा	—	रे	—	--	--	रे	प	ग	--	--	म	रे	--	सा	सा
भा	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	ड	र	पा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	व	न
×				२				०				३			
सा												रे			
नि़	सा	रे	म	प	नि	प	म	रे	सा	नि़	सा	नि़	सा	सा	सा
ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	गी	ऽ,	ब	र्सन्
×				२				०				३			

अन्तरा

रे							ध								
म	म	रे	प	प	प	नि	ध	नि	--	सां	--	सां	सां	सां	--
च	म	क	च	म	क	बि	जु	री	ऽ	या	ऽ	च	म	के	ऽ
०				३				×				२			
नि	नि	नि	नि					नि				सां			
ध	ध	ध	ध	नि	सां	सां	सां	सां	--	(सां)	--	ध	--	नि	प
सि	य	री	ऽ	प	व	न	ब	हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

राग- नंद, **थाट** -कल्याण, **जाति**-षाडव वक्र संपूर्ण, **वादी स्वर** -षड़ज, **संवादी स्वर** -पंचम, **गायन समय** -रात्रि का द्वितीय प्रहर[428]

आरोह—सा ग म प ग म प ध नि प, ध मं प सां।

अवरोह—सां रें नि प, ग म ध प रे सा।

मुख्य स्वर-समूह—ग म ध प मंग रे सा।

राग नन्द—एकताल (मध्यलय)

स्थायी—नन्द घर आनन्द की बधाई बाजे, यशुदा तिहारे आज भाग-राग जागे-जागे।

अंतरा—ऐसो लाल पायो री, जैसो कोउ पावे नाहि 'रामरंग' नयन मेरो दरस दान माँगे-माँगे।।

स्थायी

									मंग		
ग	—	म	ध	प	गम	ध	प	—	रे	—	सा
न	ऽ	न्द	घ	र	ऽऽ	ऽ	आ	ऽ	न	ऽ	न्द
x		०		२		०		३		४	

								ध			
ग	—	म	प	—	ध	नि	—	प	ध	मंध	प
की	ऽ	ब	धा	ऽ	ई	बा	ऽ	ऽ	जे	ऽऽ	ऽ
x		०		२		०		३		४	

[428] डॉ इंद्रेश मिश्रा से किए गए साक्षात्कार द्वारा प्रदत्त जानकारी

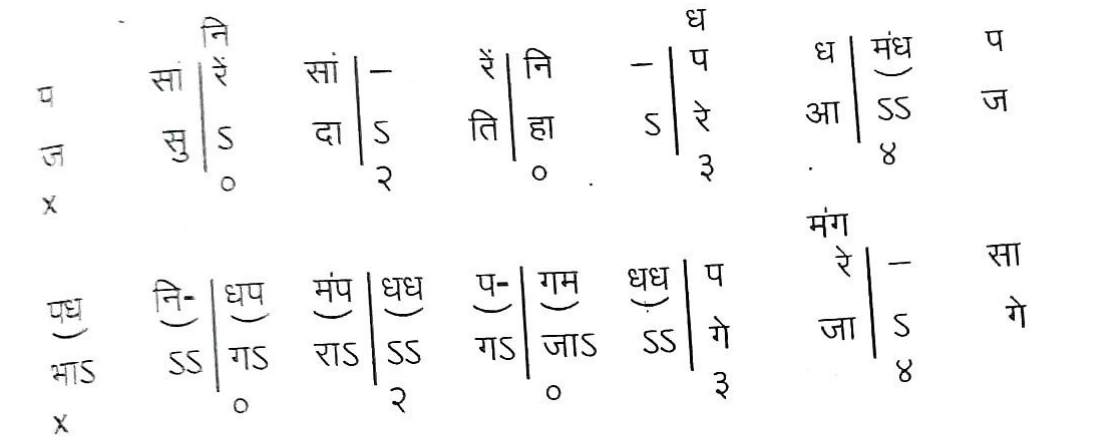

		नि						ध			
प	सां	रें	सां	—	रें	नि	—	प	ध	मंध	प
ज	सु	ऽ	दा	ऽ	ति	हा	ऽ	रे	आ	ऽऽ	ज
x		०		२		०		३		४	

									मंग		
पध	नि-	धप	मंप	धध	प-	गम	धध	प	रे	—	सा
भाऽ	ऽऽ	गऽ	राऽ	ऽऽ	गऽ	जाऽ	ऽऽ	गे	जा	ऽ	गे
x		०		२		०		३		४	

अंतरा

											ध
ग	म	प	सां	—	सां	सांरें	सांरें	—	नि	—	प
ऐ	ऽ	सो	ला	ऽ	ल	पाऽ	ऽऽ	ऽ	यो	ऽ	री
x		०		२		०		३		४	

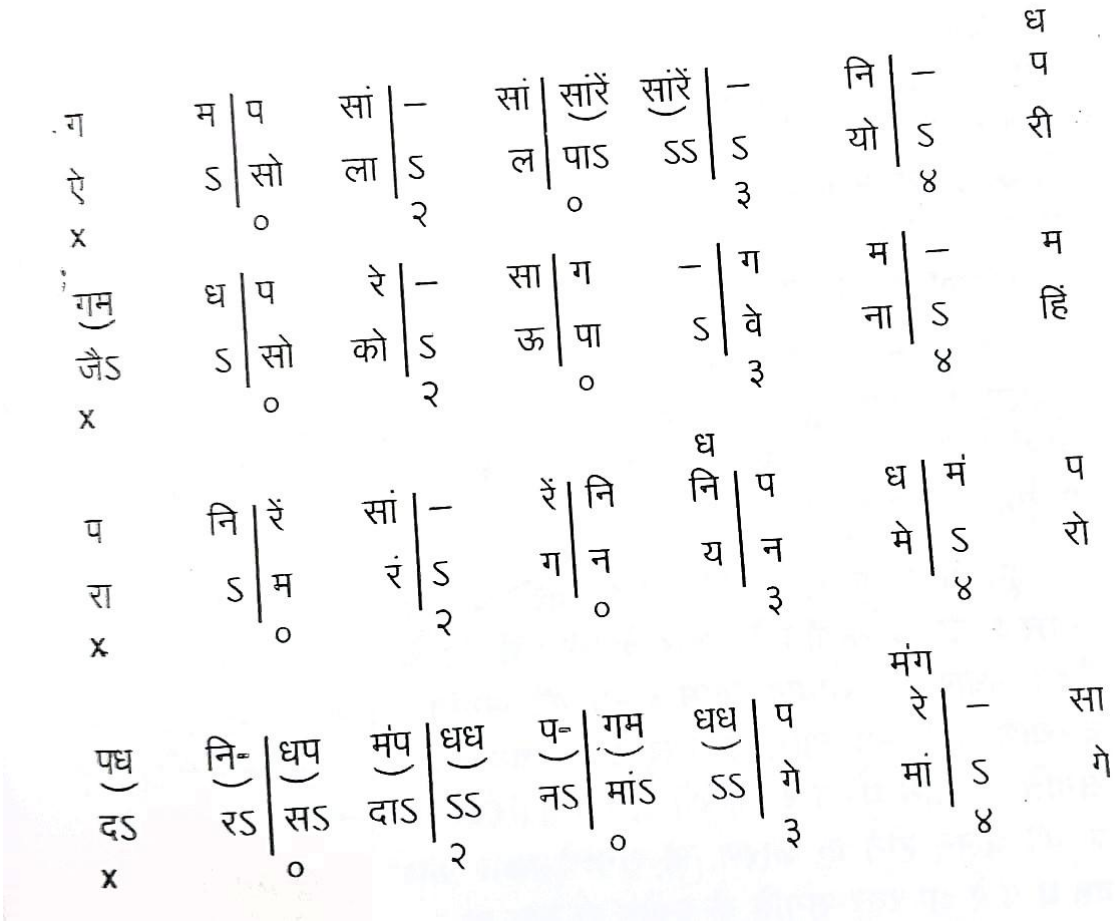

गम	ध	प	रे	—	सा	ग	—	ग	म	—	म
जैऽ	ऽ	सो	को	ऽ	ऊ	पा	ऽ	वे	ना	ऽ	हिं
x		०		२		०		३		४	

								ध			
प	नि	रें	सां	—	रें	नि	नि	प	ध	मं	प
रा	ऽ	म	रं	ऽ	ग	न	य	न	मे	ऽ	रो
x		०		२		०		३		४	

									मंग		
पध	नि-	धप	मंप	धध	प-	गम	धध	प	रे	—	सा
दऽ	रऽ	सऽ	दाऽ	ऽऽ	नऽ	मांऽ	ऽऽ	गे	मां	ऽ	गे
x		०		२		०		३		४	

राग – पूरिया, **थाट**- मारवा, **जाति**- षाडव-षाडव, **वादी स्वर** -गंधार, **संवादी स्वर** -निषाद , **गायन समय** - दिन का चौथा प्रहर

आरोह—सा, नि॒ रे॒ ग, मं ध नि रें सां।

अवरोह—रें नि, मं ध ग मं ग, रे॒ सा।

पकड़—ग मं ध ग मं ग, मं रे॒ ग रे सा, नि॒ ध॒ नि॒ रे॒ सा।

स्थाई- उन बिन कलना पड़त मोहे आलि,जब देखुं मोरे मन है सुरतिया।
अंतरा- घड़ी घड़ी पल पल कछु ना सुहावे, तड़पत बीतत हमरी रतिया।

राग पूरिया—त्रिताल (मध्य लय)

स्थायी

ग								सा							
मं	मं	ग	गमं	ग	रे॒	सा	सा	नि॒	ध॒	नि॒	--	सा	रे॒	--	सा
उ	न	बि	नऽ	क	ल	ना	प	र	त	मो	ऽ	हे	आ	ऽ	लि
०				३				×				२			
ध॒				नि॒				सा							
मं॒	मं॒	ध॒	--	सा	--	रे॒	सा	नि॒	रे॒	ग	मं	ग	रे॒	सा	--
ज	ब	दे	ऽ	खीं	ऽ	मो	रे	म	न	है	सु	र	ति	या	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

ग				ध								नि			
मं	मं	ग	ग	मं	मं	ध	मंध	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	--
घ	ड़ि	घ	ड़ि	प	ल	प	लऽ	क	छु	न	सो	हा	ऽ	वे	ऽ
०				३				×				२			
सां				ध											
नि	निरें	नि	ध	मं	ध	मं	ग	मं	रे॒	ग	मं	ग	रे॒	सा	--
त	रऽ	फ	त	बी	ऽ	त	त	ह	म	री	ऽ	र	ति	याँ	ऽ
०				३				×				२			

राग - तोड़ी, **थाट**-तोडी, **जाति**-संपूर्ण संपूर्ण, **वादी स्वर** -धैवत, **संवादी स्वर** - गंधार **गायन समय** - दिन का दूसरा प्रहर[429]

आरोह——सा रे ग, मं प ध, नि सां।

अवरोह——सां नि ध, प, मं ग, रे ग रे सा।

पकड़——ध, प, मं ग रे ग रे सा, नि ध।

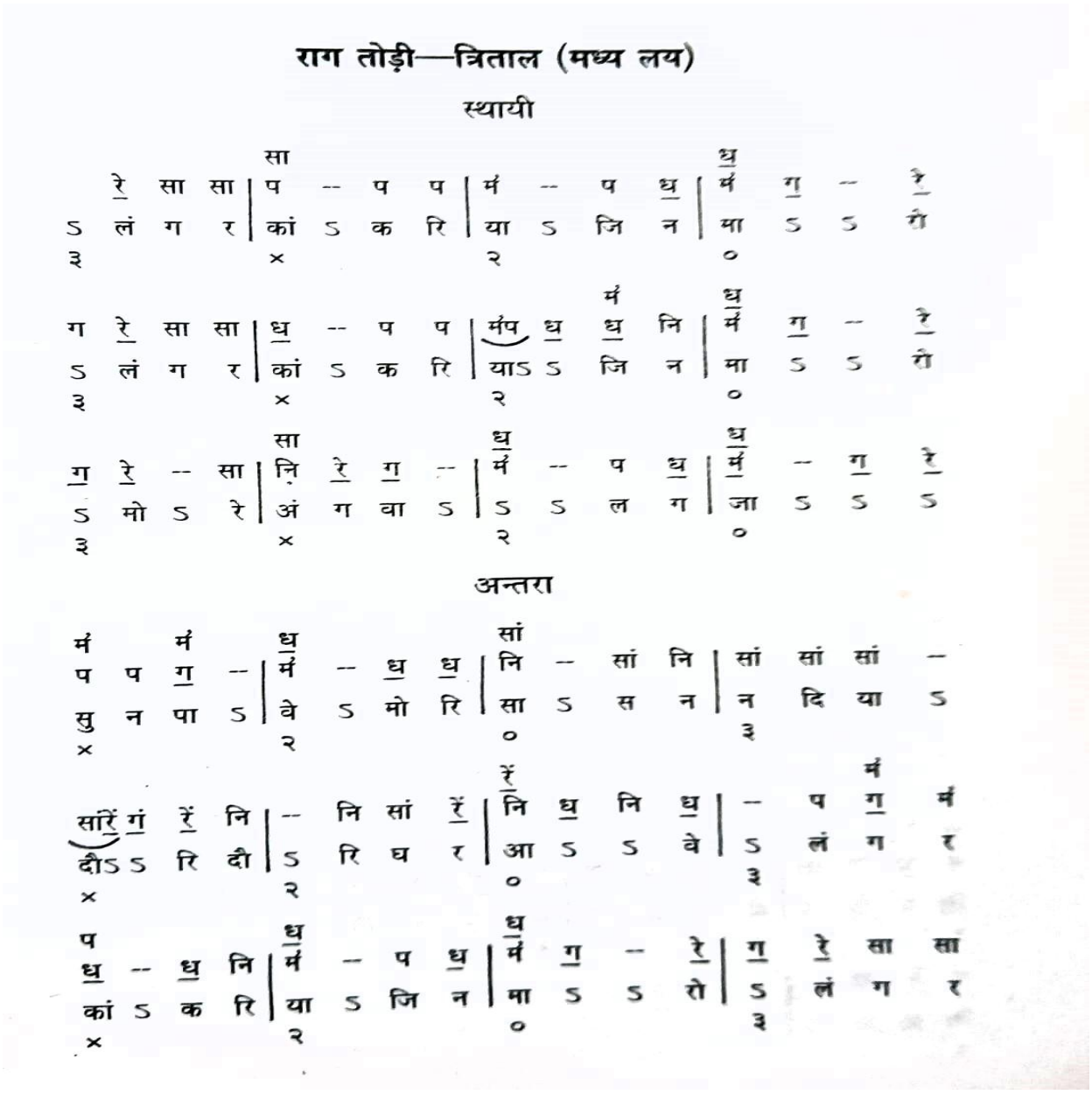

[429] मधुर स्वरलिपि संग्रह प्रो॰ हरिश्चंद्र श्रीवास्तव पृष्ठ संख्या 88

राग - रामकली, **थाट** -भैरव, **वादी स्वर** –धैवत, **संवादी स्वर**- रिषभ, **गायन समय** - प्रातः काल

आरोह— सा ग, म प, ध़ नि सां।

अवरोह— सां नि ध़ प, मं प, ध़ नि़ ध़ प, ग म रे़ रे़ सा।

पकड़— मं प ध़ नि़ ध़ प, ग म रे़ रे़ सा।

रामकली–त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी.

म															
गम	नि़	ध़	प	–	ध़	पमं	प	(प)	–	म	–	(प)	–	म	ग
सऽ	ग	रि	रै	ऽ	न	केऽ	ऽ	जा	ऽ	गे	ऽ	पा	ऽ	गे	ऽ
०				३				×				२			
ग								ग				ग			
म	ग	म	ग	रे़	रे़	म	प	म	ग	म	ग	रे़	रे़	सा	–
सु	घ	र	च	तु	र	सु	र	ज	न	वा	ऽ	ल	ल	मा	ऽ
०				३				×				२			
सा		म				म									
नि़	सा	ग	म	प	–	प	–	पध़	निसां	सांरें़	सांनि	धनि़	धप़	मग	म
भो	ऽ	र	हि	मे	ऽ	रे	ऽ	आऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ये।
०				३				×				२			

अन्तरा.

म				नि								सां			
प	प	प	प	ध़	–	नि	नि	सां	सां	सां	सां	नि	सां	सां	सां
बि	न	गु	न	मा	ऽ	ल	अ	ध		र	प	र	अं	ऽ	ज	न
०				३				×					२			
सां				गं				ध़							
रें़	–	गं	मं	रें़	रें़	सां	सां	धध़	निसां	सांरें़	सांनि		धनि़	धप़	मग	म
जा	ऽ	व	क	ति	ल	क	ल	गाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ		ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ये
०				३				×					२			

ध्रुपद

राग-भूपाली, ताल-चौताल

स्थायी

शुधे मुद्रा शुधे वाणी शुधे सुर संगत सों

शुधे ताल शुधे तान गावत गुणी जन।

अन्तरा

आरोही अवरोही आस्थाई संचारी

धरण मुरन गते भेदन उलट-पुलट ताल तान ॥

संचारी

सप्त सुर तीन ग्राम एकईस मूर्छना

बाईस सुरति एतेहि संगीत प्रमाण ॥

आभोग

कहे मियाँ तानसेन नाद भेद कही न जाने

जोहि धावे सोहि पावे कंठ वाणी बुद्धि ज्ञान ॥

स्थायी

प	ग	-	ग	-	ग	ग	ग	-	गरे	प	ग
शु	धे	ऽ	मु	ऽ	द्रा	शु	धे	ऽ	बाऽ	ऽ	णी
x		0		2		0		3		4	
ग	ग	रे	ग	प	ध	ग	रे	ग	रे	सा	-
शु	धे	ऽ	सु	ऽ	र	सं	ऽ	ग	त	सों	ऽ
x		0		2		0		3		4	
सा	सा	ध्र	सा	-	रे	ग	ग	-	प	रे	ग
शु	धे	ऽ	ता	ऽ	ल	शु	धे	ऽ	ता	ऽ	न
x		0		2		0		3		4	
सा	सा	-	ध	-	प	प	रे	ग	रे	सा	सा
गा	ऽ	ऽ	व	ऽ	त	गु	णी	ऽ	ज	ऽ	न
x		0		2		0		3		4	

अंतरा

ग	-	-	प	-	ध	सां	सां	-	सां	-	सां
आ	ऽ	ऽ	रो	ऽ	ही	अ	व	ऽ	रो	ऽ	ही
x		0		2		0		3		4	

संचारी

सा	ग	-	ग	-	ग	प	-	रे	ग	-	ग
स	म्र	ऽ	सु	ऽ	र	ती	ऽ	न	ग्रा	ऽ	म
x		0		2		0		3		4	
ग	प	-	ध	-	ध	प	ग	-	रे	-	सा
ए	क	ऽ	ई	ऽ	स	मु	र	ऽ	छ	ऽ	ना
x		0		2		0		3		4	
सा	-	ध्र	सा	-	रे	ग	ग	-	ग	परे	ग
बा	ऽ	ऽ	ई	ऽ	स	शु	र	ऽ	ति	ऽऽ	ऽ
x		0		2		0		3		4	

आभोग

ग	ग	-	प	-	ध	सां	-	सां	सां	-	सां
क	हे	ऽ	मि	ऽ	याँ	ता	ऽ	न	से	ऽ	न
x		0		2		0		3		4	
सां	-	ध	सां	-	रें	सां	ध	सां	ध	प	ग
ना	ऽ	द	भे	ऽ	द	क	हि	न	जा	ऽ	ने
x		0		2		0		3		4	
गं	-	गं	रें	सां	सां	ध	रें	सां	ध	प	ग
जो	ऽ	हि	धा	ऽ	वे	सो	ऽ	हि	पा	ऽ	वे
x		0		2		0		3		4	
ग	प	ध	सां	-	सां	रे	ग	रे	साध	रे	सा
कं	ऽ	ठ	बा	ऽ	णी	बु	ऽ	द्धि	ज्ञाऽ	ऽ	न
x		0		2		0		3		4	

छोटा ख्याल

राग - भूपाली, ताल - तीनताल

स्थायी

हे महादेव महेश्वर
त्रिशूल धरण त्रिपुरान्तक गणेश
तिनके जग वंदन।

अन्तरा

पाँच देव पंचानन पूजन
कर कपूर बाती
निर्मल जल बेलपत्र सों
निर्मल कमल कर वरे ॥[1]

स्थायी

X				2				0				3				
								सा	रे	ग	रेसा	सा	ध्र	सा	रे	
								हे	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	म	हा	
X				2				0				3				
प	-	ग	-	रे	गप	ग	रे	सा	रे	ग	रेसा	सा	ध्र	सा	रे	
दे	ऽ	व	म	हे	ऽऽ	श्व	र	हे	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	म	हा	
X				2				0				3				
ध्र	सा	ध्र	सा	-	-	रे	-	ग	-	-	-	प	रे	-	सा	
त्रि	शू	ल	ध	र	न	त्रि	पु	रा	ऽ	न्त	क	ग	णे	ऽ	श	
X				2				0				3				
प	ग	ग	प-	ध	सां	ध	प	पध	सारें	गंगं	रेंसां	धप	गरे	सा	रे	
ति	न	के	ऽऽ	ऽ	ऽ	ज	ग	वंऽ	ऽऽ	ऽऽ	दऽ	नऽ	ऽऽ	म	हा	
X				2				0				3				

अंतरा

								प	ग	प	प	सां	ध	ध	सां
								पाँ	ऽ	च	दे	ऽ	व	पं	ऽ
X				2				0				3			
सां	-	-	-	सां	निरें	सां	-	सां	ध	-	सां	-	-	-	रेंगं
चा	ऽ	न	न	पू	ऽऽ	ज	न	क	र	क	पू	ऽ	र	बा	ऽऽ
X				2				0				3			
रें	-	सांनि	रेंसा	ध	-	प	-	ग	-	प	ग	-	रे	सा	-
ति	ऽ	निऽ	रऽ	म	ल	ज	ल	बे	ऽ	ल	प	ऽ	त्र	सों	ऽ
X				2				0				3			
प	ग	प	-	ध	रें	सां	-	पध	सारें	गंगं	रेंसां	धप	गरे	सा	रे
नि	र	म	ल	क	म	ल	क	रऽ	ऽऽ	ऽऽ	वऽ	रेऽ	ऽऽ	म	हा
X				2				0				3			

5.4 उपशास्त्रीय रचनाएं- टप्पा, ठुमरी, चैती, होरी, कजरी

टप्पा

स्थायी

ओ मियाँ वे जाने वाले

अल्लादि कसम फेरी यां नैना वाले।

अन्तरा

आंदे जांदे तुसी दिल ले जांदे

आओ सजन गर लग जा मतवारे ॥

(शिष्य परम्परा से प्राप्त)

स्थायी

								निनि	धप	धनिसां	निप	रेम	गरेग	रे	सा
								ओऽ	ऽऽ	ऽऽऽ	मियाँ	वेऽ	ऽऽऽ	जा	ने
x				2				0				3			
ग	-	रे	रेग	मम	गरेग	रे	सा	रे	रे	म	म	प	प	नि	ध
वा	ऽ	ले	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽऽ	ऽ	ऽ	अ	ल्ला	दि	क	स	म	फे	री
x				2				0				3			
निध	पधनिसां	नि	प	म	प	ग	रे								
याऽ	ऽऽऽऽ	नै	ना	वा	ऽ	ले	ऽ								
x				2				0				3			

अन्तरा

-	ध	म	प	सां	-	सां	सां	नि	नि	सां	-	निसां	रेंरें	सांनि	धनि
ऽ	आं	दे	जाँ	दे	ऽ	तु	सी	दि	ल	ले	ऽ	जाँऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
x				2				0				3			
सांसां	निध	पध	प	-	ध	प	ध	म	प	नि	सां	रें	मं	गरें	सांनि
ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	दे	ऽ	आ	ओ	स	ज	न	ग	र	ल	ग	ज्ञाऽ	ऽऽ
x				2				0				3			
धप	मप	ध	प	म	प	ग	रे								
ऽऽ	ऽऽ	म	त	वा	ऽ	ले	ऽ								
x				2				0				3			

राग मांड—धीमा त्रिताल (ठुमरी)

स्थायी— सूनी नगरिया भई रे पिया बिन,
जुग सम लागे री उन बिन पल छिन ।

अंतरा— जा दिन ते सैयां देहरी निकस गये,
'रामरंग' हारी घड़ियां गिन-गिन ॥

स्थायी

—	रेम	-प	ध-	पधनि-	पध	प	—	पध	-म	म	(म)
ऽ	सूऽ	ऽनी	नऽ	गऽऽऽ	ऽरी	या	ऽ	भई	ऽऽ	रे	ऽ
३				×				२			
गरे	—	सारेग	सारे	सा	गरे	-म	म-	प	ध	सां	—
पिया	ऽ	ऽऽऽऽ	बिऽ	न	जुग	ऽस	मऽ	ला	गे	री	ऽ
०				३				×			
सांसांरेंगं,	सांरेंगं	गं	सांसां	धध	—	पध,नि	पप	धम,	-म	रे	म-प-
उनऽऽ	ऽ,ऽऽ	ऽ	बिन	पल	ऽ	ऽऽ,ऽ	छिन	ऽऽ,	सूऽ	ऽ	नीऽनऽ
२				०				३			

अन्तरा

—	धम	-प	ध	सां	—	सां	सां	—	धध	-,सांरें	गंरें	(सां)	—	धनि	प
ऽ	जाऽ	ऽदि	न	ते	ऽ	सै	यां	ऽ	देह	ऽ,रीऽ	ऽनि	कस	ऽ	ऽग	ये
३				×				२				०			
प															
—	मम	रेम	प	पधनि	सां	धप	—	—	पप	ध	ऽ,म-	रे	—	सारे	गरे
ऽ	राम	ऽरं	ग	हाऽऽ	ऽ	रीमैं	ऽ	ऽ	घड़ि	यॉं	ऽ,गिऽ	न	ऽ	ऽऽ	ऽगि
३				×				२				०			
सा,	रेम	प	-ध												
न,	सुऽ	ऽनी	ऽन												
३															

राग मिश्र मांड (ठुमरी)—जतताल (विलंबित)

स्थायी— तू जिन जावो परदेस पियरवा ।

अंतरा— कारी बदरिया छाय रही पिया,
जिन जा दूर नगरिया पियरवा ॥

स्थायी

ग	—	ग	म	प	ध	नि	सां	नि	—	धनि	सांनि	ध प	ध	प	प
तू	ऽ	जि	न	जा	वो	प	र	दे	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	स	ऽ
०				३				×				२			
मं	मंमं	(प)	गरे	सारे	मं	ग	—	सा	रेग	(प)	गरे	सा	रे	सा	—
पी	हर	वा	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

												ध	नि	प	ध
												का	ऽ	री	ब
												३			
सां	नि	सां	—	नि	—	निसां	रेंसां	नि	प	ध	प	मं	प	म	ग
द	रि	या	ऽ	छा	ऽ	यऽ	ऽर	ही	ऽ	पि	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				२				०				३			
ग	ग	ग	म	प	ध	नि	सां	सां	निध	नि	प	प	—	मं	मंमं
जि	न	जा	ऽ	दू	ऽ	र	न	ग	ऽऽ	ऽ	रि	या	ऽ	पि	हर
×				२				०				३			
							सा								
(ध)	(प)	गरे	सारे	मं	ग	रे	सा	ग	—	ग	म	प	ध	नि	सां
वा	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	तू	ऽ	जि	न	जा	वो	प	र
×				२				०				३			

राग खमाज दुमरी–जतताल (विलंबित)

स्थायी–तुम राधे बनो हम श्याम बिहारी, मेरो नाम धरो नंद नंदन,
तुम वृष भानु दुलारी।

अंतरा–तुम पहिरो चूनर टीका मणि, मैं पीतांबर धारी,
मैं मुरली कर मधुर बजाऊँ, तुम नाचो गिरिधारी।।

स्थायी

														ग	म
														तु	म
						रे	सा								
प	नि	ध	प	म	ग	रेग	म	प	–	प	पध	मग	प	म	ग
रा	ऽ	धे	ब	नो	ऽ	ऽह	म	श्या	ऽ	म	बिऽ	हाऽ	ऽ	री	ऽ
०				३				x				२			
ग	म	ध	नि	ध	–	ध	म	ध	–	ध	नि	धप	ध	प	प
मे	ऽ	रो	ऽ	ना	ऽ	म	ध	रो	ऽ	न	न्द	नऽ	ऽ	न्द	न
०				३				x				२			
												प			
ग	म	प	ध	प	ध	नि	सां	ध	सां	नि	ध	म	ग,	ग	म
तु	म	वृ	ष	भा	ऽ	नु	दु	ला	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ,	तु	म
०				३				x				२			

अन्तरा

ग	म	प	ध	नि	–	सां	–	नि	नि	सां	–	सांनि	रें	सां	सां
तु	म	प	हि	रो	ऽ	चू	ऽ	न	र	टी	ऽ	काऽ	ऽ	म	णि
०				३				x				२			

प	–	नि	–	नि	–	सां	सां	धनि	सां	निध	पध	प	–	–	–
मैं	ऽ	पी	ऽ	तां	ऽ	ब	र	धाऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				x				२			
ग	म	ध	ध	नि	धप	ध	प	ग	म	प	ध	मग	प	म	ध
मैं	ऽ	मु	र	ली	ऽऽ	धु	न	म	धु	र	ब	जाऽ	ऽ	ऊँ	ऽ
०				३				x				२			
ग	म	प	ध	प	ध	नि	सां	ध	सां	नि	धप	म	ग,	ग	म
तु	म	ना	ऽ	चो	ऽ	गि	रि	धा	री	ऽ	ऽऽ	री	ऽ,	तु	म
०				३				x				२			
					रे	सा									
पध	नि	ध	प	म	ग	रेग	म								
राऽ	ऽ	धे	ब	नो	ऽ	ऽह	म								
०				३											

राग तिलंग ठुमरी—जतताल (विलम्बित)

स्थायी— देखो जिया बेचैन, श्याम दरस बिन।

अंतरा— जब से गये मोरी सुघहू न लीन्ही, तड़पत हूँ दिन रैन ॥

स्थायी

ग	—	ग	म	पनि	मप	नि	सां	नि	—	प	प	गम	प	म	ग
दे	ऽ	खो	जि	याऽ	ऽऽ	बे	ऽ	चै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	न	ऽ
०				३				×				२			
ग	—	म	प	म	प	नि	प	(म)	—	ग	—	म	ग	सा	—
श्या	ऽ	म	द	र	स	ऽ	बि	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			

अन्तरा

ग	म	पनि	मप	नि	—	सां	नि	सां	—	—	नि	सां	—	—	—
ज	ब	सेऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग	ये	ऽ	ऽ	मो	री	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			
प	नि	सां	(सां)	नि	प	ग	म	ग	—	—	—	सा	ग	म	प
सु	ध	हु	न	ली	ऽ	ऽ	ऽ	न्ही	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
०				३				×				२			
ग	ग	ग	म	पनि	मप	नि	सां	नि	—	प	—	म	प	म	ग
त	ड़	प	त	हुँऽ	ऽऽ	दि	न	रै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ
०				३				×				२			
सा,	ग	ग	म	पनि	मप	नि	सां								
ऽ,	दे	खो	जि	याऽ	ऽऽ	बे	ऽ								
०				३											

राग तिलंग—दादरा

स्थायी— कहाँ गिरी रे मोरी माथे की बिंदिया ।

अंतरा— सास न जाने ननदिया न जाने, सैंया न जाने मोरी माथे की बिंदिया ।।

स्थायी

—	—	ग	ग	म	प	प	—	नि	प	ग	म
ऽ	ऽ	क	हाँ	गि	री	रे	ऽ	ऽ	ऽ	मो	री
×			०			×			०		
पनि	सां	नि	सां	नि	प	म	प	नि	म	ग	—
माऽ	ऽ	ऽ	ऽ	थे	की	बिं	दि	ऽ	या	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
सा	—,	ग	ग	म	प						
ऽ	ऽ,	क	हाँ	गि	री						
×			०								

अन्तरा

—	—	ग	म	पनि	मप	नि	—	—	सां	—	—
ऽ	ऽ	सा	ऽ	सऽ	नऽ	जा	ऽ	ऽ	ने	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
—	नि	नि	सां	नि	प	म	नि प	नि	(म)	ग	—
ऽ	न	न	द	ना	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ने	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
—	—	ग	—	म	प	प	—	नि	प	ग	म
ऽ	ऽ	सैं	ऽ	याँ	न	जा	ऽ	ऽ	ने	मो	री
×			०			×			०		
पनि	सां	नि	सां	नि	प	म	प	नि	प म	ग	—
माऽ	ऽ	ऽ	ऽ	थे	की	बिं	दि	ऽ	या	ऽ	ऽ
×			०			×			०		
सा	—,	ग	ग	म	प						
ऽ	ऽ,	क	हाँ	गि	री						
×			०								

राग खमाज–दादरा (दादरा ताल)

स्थायी–अजब मैं निहारी मधुबन में री।

अंतरा–पहिरे श्याम लहँगा अरू चूनर, राधे मुरली धारी।।

स्थायी

–	नि	निध	धप	म	ग	म	प	–	–	–	–
ऽ	अ	ऽज	बऽ	मैं	नि	हा	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
x			०			x			०		
–	–	ग	म	ध	ध	नि	धप	पध	निसां	नि	सां
ऽ	ऽ	म	धु	ब	न	में	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
x			०			x			०		
नि,	नि	निध									
री	अ	जऽ									
x											

अन्तरा

								ध		
–	–	प	प	नि	नि	सां	–	–	नि	–	–
ऽ	ऽ	प	हि	रे	ऽ	श्या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
x			०			x			०		
सां	–	–	–	प	प	नि	–	–	–	नि	नि
म	ऽ	ऽ	ऽ	ल	हं	गा	ऽ	ऽ	ऽ	अ	रू
x			०			x			०		
सां	नि	धप	ध	प	–	–	–	ग	म	ध	–
चू	ऽ	ऽऽ	न	र	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	धे	ऽ
x			०			x			०		
प	ध	–	पध	निसां	निसां	ध	सां	नि	–	ध	प
मु	र	ऽ	ली	ऽ ऽ	ऽ ऽ	धा	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ
x			०			x			०		
–	नि	निध	धप	म	ग						
ऽ	अ	जऽ	बऽ	मैं	नि						
x			०								

दादरा–खेमटा—छह मात्रा

सावन झरि लागे हो धीरे धीरे।
कि मोरे श्याम हो कहँवा से आई बदरिया।
कहाँ चली जाए हो धीरे धीरे।
कि मोरे श्याम हो पूरब से आई बदरिया।
पच्छिम चली जाए हो धीरे धीरे।
कि मोरे श्याम हो खोलऽ न बजरी केवड़िया।
चुनर मोरी भीजे हो धीरे धीरे।

स्थाई :

1	2	3	4	5	6	1	2	3	4	5	6
					ना	ना	रे	—	मा	नी	धा
					सा	व	न	ऽ	झ	रि	ऽ
ध	नी	ध	नी	रे	—	मा	मा	रे	—	ग	—
ला	ऽ	ऽ	गे	ऽ	ऽ	हो	ऽ	धी	ऽ	रे	ऽ
मा	—	मा	—	—	×						
धी	ऽ	रे	ऽ	ऽ	×						

अन्तरा :

साध	ध	मा	—	रे	म	ग
कि ऽ	मो	रे	ऽ	श्या	ऽ	म

1	2	3	4	5	6	1	2	3	4	5	6
म	—	—	म	—	—	म	म	म	प	म	—
हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	क	हँ	वा	ऽ	मे	ऽ
ग	रे	रे	ग	म	ग	मा	मा	—	मा	—	मा
ना	ऽ	ई	ऽ	ऽ	व	द	रि	ऽ	या	ऽ	क
मा	रे	—	मा	नी	मा	ध	नी	ध	नी	रे	—
हाँ	ऽ	ऽ	च	ली	ऽ	जा	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ऽ
मा	ना	रे	--	ग	—	मा	—	मा	—	—	×
हो	ऽ	धी	ऽ	रे	ऽ	धी	ऽ	रे	ऽ	ऽ	×

ताल : कहरवा - आठ मात्रा—मध्य लय;
बीच में-- रूपक ताल—सात मात्रा

अरे अहो रामा कहमा के कुम्हरा
रचले घयलिया हो रामा

कहमा के सुन्दर पनिहारिन हो राम।
अरे अहो रामा मथुरा के कुम्हरा

रचले घयलिया हो रामा
गोकुला के सुन्दर पनिहारिन हो राम।

स्वरलिपि :

1	2	3	4	5	6	7	8	1	2	3	4	5	6	7	8
						प	प	सां	—	सां	—	—	सां	—	सां
						अ	रे	अ	ऽ	हो	ऽ	ऽ	रा	ऽ	मा
सां	—	रें	सां	सां	नी	—	नी	प	—	प	ध	प	—	प	प
क	ऽ	ह	ऽ	ऽ	मा	ऽ	के	कु	ऽ	म्ह	ऽ	रा	ऽ	अ	रे

सां — गां —	— सां — गां	गां — रें गां	गां नी — नी
अ ऽ हो ऽ	ऽ रा ऽ मा	क ऽ ह ऽ	ऽ मा ऽ के
प — प ध	प — प प	नी — ध —	प — म म
कु ऽ म्ह ऽ	रा ऽ अ रे	र ऽ च ऽ	ले ऽ ऽ घ
प प प —	प प प ध	नी — ध —	प — म म
य लि या ऽ	अ हो रा मा	र ऽ च ऽ	ले ऽ घ ऽ
म — ग म	रे — सा सा	सा — सा —	— सा सा रे
ऽ ऽ य लि	ऽ ऽ हो ऽ	रा ऽ ऽ ऽ	ऽ म अ रे
ग — ग म	रे — रे ग	मा — सा —	सा — सा रे
क ऽ ह ऽ	मा ऽ के ऽ	सुं ऽ द र	ऽ ऽ अ रे
ग — ग म	रे — रे ग	सा — सा सा	सां — — —
क ऽ ह ऽ	मा ऽ के ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	हो ऽ ऽ ऽ
प प प ध	नी ध प म	— ग रे सा	सा — सा सारे
क ह मा के	सुं दर प नि	ऽ हा रिन हो	रा ऽ म अरे
ग — ग म	रे — रे ग	सा — सा सा	— — सा रे
क ऽ ह ऽ	मा ऽ के ऽ	सुं ऽ द र	ऽ ऽ अ रे
प प प ध	नी ध प म	— ग रे सा	सा — सा पध
क ह मा के	सुं दर प नि	ऽ हा रिन हो	रा ऽ म अरे

1 2 3	4 5	6 7	1 2 3	4 5	6 7
सां — सां	सां —	सां —	नी — ध	ध नी	नी —
अ ऽ हो	रा ऽ	मा ऽ	क ऽ ह	मा ऽ	के ऽ
प — प	प —	प ध	सां — सां	सां —	सां —
कु ऽ म्ह	रा ऽ	अ रे	अ ऽ हो	रा ऽ	मा ऽ
नी — ध	ध नी	नी —	प — प	प —	प ध
क ऽ ह	मा ऽ	के ऽ	कु ऽ म्ह	रा ऽ	अ रे
नी नी —	ध —	प म	प प प	प —	प ध

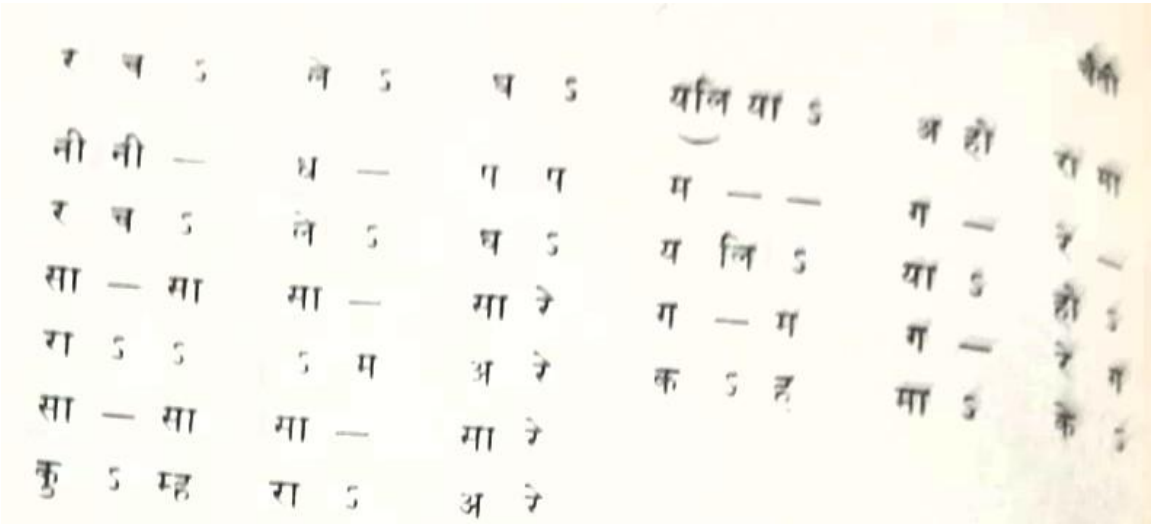
र च ऽ
नी नी —
र च ऽ
सा — सा
रा ऽ ऽ
सा — सा
कु ऽ म्ह
ले ऽ
ध —
ले ऽ
मा —
ऽ म
मा —
रा ऽ
घ ऽ
प प
घ ऽ
मा रे
अ रे
मा रे
अ रे
यलि या ऽ
म — —
य लि ऽ
ग — ग
क ऽ ह
अ हो
ग —
या ऽ
ग —
मा ऽ
रा मा
रे —
हो ऽ
रे ग
के ऽ

घाटो चैतार—ताल : रूपक—सात मात्रा; बीच में कहरवा ताल—आठ मात्रा—द्रुत लय

कौने मासे अमवा मंजरइले हो रामा
कौने मासे लगले टिकोलवा हो रामा।
फागुन मासे अमवा मंजरइले हो रामा
चैत मासे लगले टिकोलवा हो रामा।

स्वरलिपि :

1	2	3	4	5	6	7	1	2	3	4	5	6	7
ग	ग	—	ग	—	ग	—	ग	रे	—	ग	—	म	—
कौ	ने	ऽ	मा	ऽ	से	ऽ	अम	वा	ऽ	मं	ऽ	ज	ऽ
ग	ग	रे	रे	ग	ग	रे	सा	—	नी	ध़	—	ध़	—
र	इ	ऽ	ले	ऽ	हो	ऽ	रा	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ
ध़	ध़	—	ध़	—	नी	—	प़	—	—	प़	—	ग	—
कौ	ऽ	ऽ	न	ऽ	रे	ऽ	मा	ऽ	ऽ	से	ऽ	ऽ	ऽ
ग	ग	—	ग	—	ग	—	ग	रे	—	ग	—	म	—

कौ ने ऽ	मा ऽ	से ऽ	ल ग ऽ	ले ऽ	टि ऽ
ग ग रे	रे ग	ग रे	सा — नी़	ध़ —	— ध़
को ल ऽ	वा ऽ	हो ऽ	रा ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ म
ध़ ध़ —	ध़ —	नी़ —	प़ — —	प —	प —
कौ ऽ ऽ	ने ऽ	रे ऽ	मा ऽ ऽ	से ऽ	ऽ ऽ
प — प	प —	प —	प — —	प —	प —
हो ऽ ऽ	मो ऽ	रे ऽ	रा ऽ म	हो ऽ	ऽ ऽ
प — ।म	ग —	रे —	प — —	प —	प —
हो ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	हो ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ
ध़ ध़ —	ध़ —	ध़ —	प — ।म	ग —	ग —
हो ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	हो ऽ ऽ	रा ऽ	मा ऽ
प प —	प —	।म —	ग — —	रे —	रे —
कौ ऽ ऽ	ने ऽ	ऽ ऽ	मा ऽ ऽ	से ऽ	ऽ ऽ
प प —	प —	।म —	ग ग —	रे —	रे —
अ म ऽ	वा ऽ	ऽ ऽ	हो ऽ ऽ	रा ऽ	मा ऽ
नी नी —	नी —	ध़ —	प — ।म	ग —	ग —
आ म ऽ	मं ऽ	ज ऽ	र इ ऽ	ले ऽ	ऽ ऽ
रे — —	रे —	रे —			
हो ऽ ऽ	रा ऽ	मा ऽ			

चैती ताल दीपचन्दी

स्थाई–

चैत मास बोलैले कोयलिया हो रामा मोरे रे अंगनवा।।

अन्तराः–

कुहुक कुहुक करे
कारी रे कोयलिया
हूँक उठत मोरे मनवा हो रामा
मोरे रे अंगनवा।।

अन्तराः–

याद आवत जब
पिया से मिलन की
भरी–भरी आवेला नयनवा हो रामा
मोरे रे अंगनवा।।

चैती (पारम्परिक धुन) ताल दीपचन्दी

स्थाई

प प ध	सा – सा –	ग रे –	ग – ग –
चै ऽ त	मा ऽ रा ऽ	बो लो ऽ	ले ऽ को ऽ
ग ग रे	सा – नि नि	सा ग –	रे – – –
य लि ऽ	या ऽ ऽ हो	रा ऽ ऽ	मा ऽ ऽ ऽ
नि सा –	रे – प –	रे रे –	सा – – –
मो रे ऽ	रे ऽ अं ऽ	ग न ऽ	वा ऽ ऽ ऽ
X	2	0	3

ग रे –	ग – प –	प प –	प – प –
या ऽ ऽ	द ऽ आ ऽ	व त ऽ	ज ऽ ब ऽ
ग ग –	प – ध –	प नि ध	प – ग –
पि या ऽ	से ऽ मि ऽ	ल न ऽ	की ऽ ऽ ऽ
ग ग –	ग – म –	ग रे –	ग – म –
भ री ऽ	भ ऽ री ऽ	आ वे ऽ	ला ऽ न ऽ
ग ग –	सा – नि –	सा ग –	रे – – –
य न ऽ	वा ऽ हो ऽ	रा ऽ ऽ	मा ऽ ऽ ऽ
नि सा –	रेम प प –	रे रे –	सा – – –
मो रे ऽ	रे ऽ अं ऽ	ग न ऽ	वा ऽ ऽ ऽ
X	2	0	3

ताल : जत—चौदह मात्रा

कुसुमी लोढन हम जाएब हो रामा ।

हमरी चुनरिया पिया के पगरिया
एक ही रंग रंगाएब हो रामा ।

बारह बरिस पर पिया मोरा अइलन
हँसि हँसि गरवा लगाएब हो रामा ।

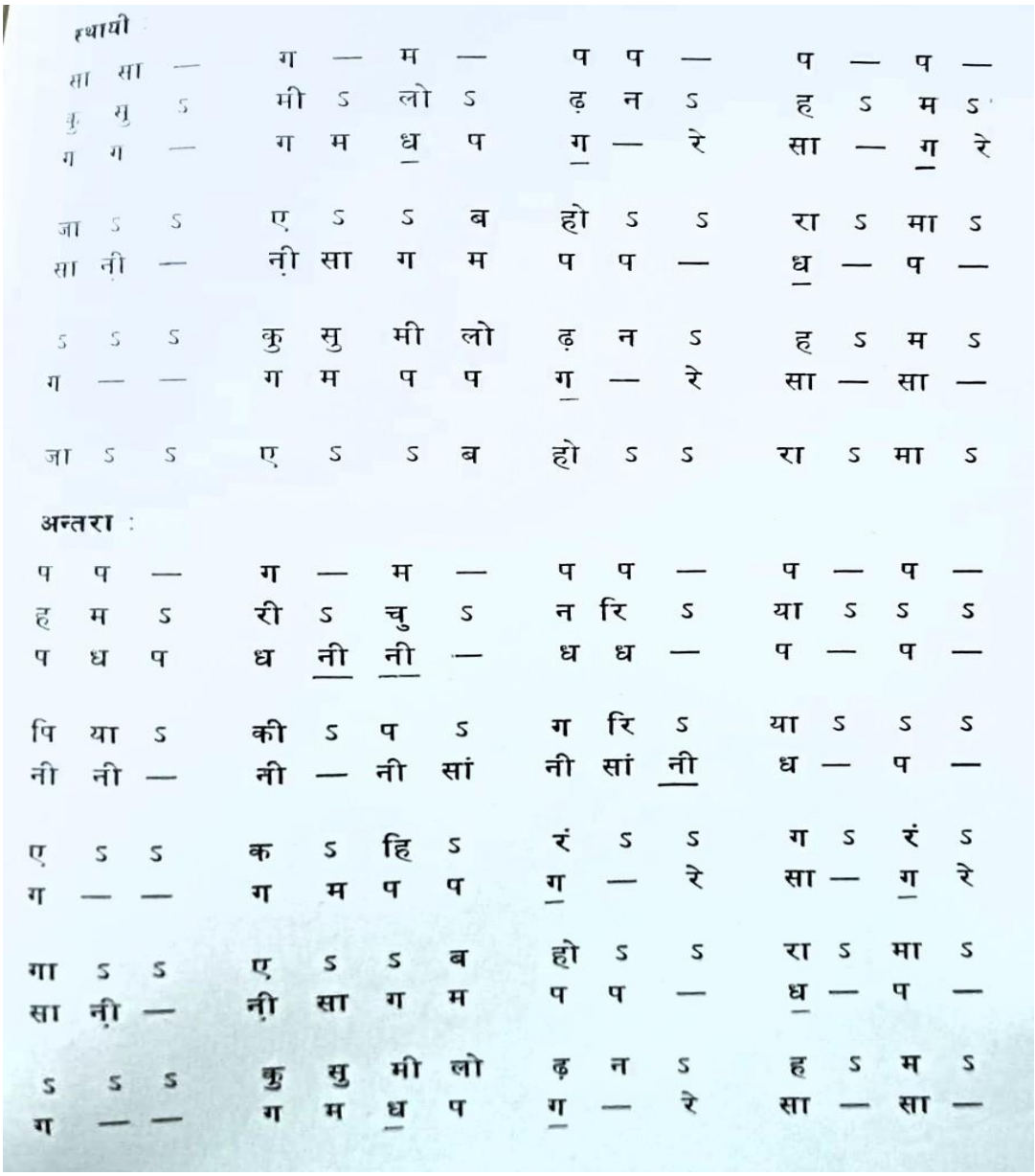

कजरी

कहरवा (दुगुन)

हरि बिन जियरा मोरा तरसे,
सावन बरसे घनघोर।

रूमझूम बादरवा छाये,
चहुँ दिसि नाचत मोर।

बैठी रैन बिहाय सोच में,
तड़प तड़प भई भोर।

पावस बीतो जाय श्याम कब,
अइहें भवन बहोर।

स्थाई :

1	2	3	4	5	6	7	8
				सा	रेसा	नी	ध
				ह	रि ऽ	बि	न
नी	रे	रे	—	रे	ग	म	प म
जि	य	रा	ऽ	मो	ऽ	रा	ऽ
ग	रे	ग	—	रे	सा	सा	सा
त	र	से	ऽ	सा	ऽ	ब	न
सा	रे	रे	ग	रे	सा	ध	नी
ब	र	से	ऽ	घ	ऽ	न	ऽ

1	2	3	4	5	6	1	2	3	4	5	6
×	×	नी	नी	नी	नी	सा	—	सा	—	रे	प
×	×	पि	या	वि	न	ला	ऽ	गी	ऽ	ना	ऽ
ग	ग	रे	सा	नी	—	सा	—	—	—	—	—
मो	री	ऽ	अँ	खि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा :

सा	सा	ग	ग	ग	म	प	—	—	प	—	—
चा	ऽ	ऽ	र	ऽ	म	ही	ऽ	ऽ	ने	ऽ	ऽ
ग	म	गम	पध	—	प	ग	ग	रे	सा	—	—
व	र	खा ऽ	ऽऽ	ऽ	के	आ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	ऽ
×	×	ग	ग	ग	ग	ग	रे	रे	सा रे	रे	ग
×	×	अ	ज	हूँ	न	आ	ऽ	ये	ऽ	ह	ऽ
सा	—	सा	सा	सा	रे	रेम	ग	—	रेग	सा	—
मा	ऽ	र	व	ल	ऽ	माऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
सा	ग रे	—	सा	नी	—	सा	—	सा	—	रे	प
पि	य	ऽ	बि	ना	ऽ	ला	ऽ	गी	ऽ	ना	ऽ
ग	ग	रे	सा	नी	—	सा	—	—	—	—	—
मो	री	ऽ	अँ	खि	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

कजरी

कहरवा—आठ मात्रा (दुगुन)

मोरे भैया अइले लेनिहार, लइके डोलिया कहार ,
सवनवाँ में ना जइहों ननदी ।
जाके कहऽ मोरे राजा ससुर से ,
अबकी नियरवा दीहें टार ।
सवनवाँ में ना जइहों ननदी ।।
जाके कहऽ मोरे वड़के भसुर से ,
अबकी नियरवा दीहें टार ।
सवनवाँ में ना जइहों ननदी ।।
जाके कहऽ मोरे लहुरा देवर से ,
अबकी नियरवाँ दीहें टार ।
सवनवाँ में ना जइहों ननदी ।।
जाके कहऽ मोरे वारे बलम से ,
बीति जइहें वरखा बहार ।
सवनवाँ में ना जइहों ननदी ।।

स्थाई :

1 2	3 4	5 6	7 8	1 2	3 4	5 6	7 8
×	प –	ध सा	– सा	सा	सा	रेग	सारे
×	मो ऽ	रे भैं	ऽ या	अइ	ले	ले ऽ	नि ऽ
ग	– ग	रे	रेग	सा	सा	रेग	सारे
हा	ऽ र	लइ	के ऽ	डो	लि	या ऽ	क ऽ
ग	ग	रे	ग	सा	सा	रेग	सारे
हा	ऽ	र	सा	व	न	वाँ ऽ	में ऽ
ग	म	रे	रेग	सा	सा	सा	—
ना	ऽ	जइ	हों ऽ	न	न	दी	ऽ
×	सा –	सा सा	–रे	म	म	म	म
×	ना ऽ	ऽ ज	इहों	न	न	दी	हो
×	प	धप	– म	ग	ग	रे	रेग
×	ना	ऽ ज	इहों	न	न	दी	सा ऽ
सा	सा	रेग	सारे	प ग	म	रे	रेग
व	न	वाँ ऽ	में ऽ	ना	ऽ	जइ	हों ऽ

1 2	3 4	5 6	7 8	1 2	3 4	5 6	7 8
सा	सा	नी ध़	नी प़	×	प़–	ध़सा	–सा
न	न	दी ऽ	ऽऽ	×	मो ऽ	रे मै	ऽ या
रेप	मप	–ग	–रे	सा	—	—	सा
अइ	ले ऽ	ले ऽ	ऽ नि	हा	ऽ	ऽ	र

अन्तरा :

×	मा–	सारे	–म	म	—	म	म
×	जा ऽ	ऽ के	ऽ क	ह	ऽ	मो	रे
म	—	प	—म	ग	ग	रे	रेग
रा	ऽ	जा	ऽ स	सु	र	से	ऽऽ
सा	सा	सा	सा	सा	सा	रेग	सारे
अ	ब	की	नि	यर	वा	दी ऽ	हें ऽ
ग	—	रे	रेग	सा	सा	रेग	सारे
टा	ऽ	र	सा ऽ	व	न	वाँ ऽ	में ऽ
ग	—	रे	रेग	सा	सा	सा	—
ना	ऽ	जइ	हों ऽ	न	न	दी	ऽ

कजरी (बनारसी)

पारम्परिक धुन

ताल–दादरा

स्थाई–

बरसन लागी बदरीया रूम झूम के,
आयो सावन अति मन भावन
झूम–झूम के सखियाँ गावें कजरिया
घूम–घूम के बोलन लागी कोयलिया।।

अन्तराः–

झूलत हरि संग राधे पलना
पहिने कुसुम रंग चुनरिया रे।।

अन्तराः–

गावत राग मल्हार सजीले
झमकि झुलावत सुन्दरिया रे।।

कजरी (बनारसी)

पारम्परिक धुन

ताल–दादरा

स्थाई–

1	2	3	4	5	6	1	2	3	4	5	6
								ग	ग	ग	म
								ब	र	स	न
ग	–	रे	सा	–	रे	नि़	नि़	–	सा	–	–
ला	ऽ	ऽ	गी	ऽ	ब	द	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ
ग	–	गरे	गम	प	म	ग	–	ग	–	म	–
रू	ऽ	मऽ	झूऽ	ऽ	म	के	ऽ	आ	ऽ	यो	ऽ
प	–	–	प	प	म	–	–	म	ध	ध	नि
सा	ऽ	ऽ	व	न	ऽ	ऽ	ऽ	अ	ति	म	न
ध	प	ध	प	प	–	ग	–	ग	प	म	म
भा	ऽ	ऽ	व	न	ऽ	झू	ऽ	म	झू	ऽ	म
ग	रे	ग	प	म	प	ग	–	रे	सा	–	रे
के	ऽ	स	खि	यां	ऽ	गा	ऽ	ऽ	वें	ऽ	क
नि़	नि़	–	सा	–	–	म	–	गरे	गम	प	म
ज	रि	ऽ	या	ऽ	ऽ	रू	ऽ	मऽ	झूऽ	ऽ	म
ग	–	–	–	–	–						
के	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ						
x			0			x			0		

अन्तरा

सा	–	रे	नि़	सा	–	रे	रे	–	रे	रे	–
झू	ऽ	ऽ	ल	त	ऽ	ह	रि	ऽ	सं	. ग	ऽ
सा	–	ग	–	ग	म	रे	ग	–	गरे	सा	–
ऽ	ऽ	रा	ऽ	धे	ऽ	प	ल	ऽ	नाऽ	ऽ	ऽ
प	प	प	–	–	प	प	ध	प	म	ग	–
प	हि	ने	ऽ	ऽ	कु	सु	म	ऽ	रं	ग	ऽ
म	ध	प	प	म	ग	रे		–			
चू	ऽ	न	रि	या	ऽ	रे		ऽ			
x			0			x			0		

शिव की होली

ताल–दादरा

स्थाई

ताल–

धा	धी	ना	धा	ती	ना	धा	धी	ना	धा	ती	ना
म	–	म	–	–	म	म	–	म	–	–	प
खे	ऽ	लें	ऽ	ऽ	म	सा	ऽ	ने	ऽ	ऽ	में
म	प	ग	–	–	ग	ग	–	ग	म	ग	–
हो	ऽ	री	ऽ	ऽ	दि	गं	ऽ	म	ब	र	ऽ
रे	–	सा	–	–	रे	ग	–	म	–	ग	–
खे	ऽ	लें	ऽ	ऽ	म	सा	ऽ	ने	ऽ	में	ऽ
रे	–	–	सा	–	–	–	–	–	–	–	–
हो	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	म	–	–	म	म	–	–	म	–	प
भू	ऽ	त	ऽ	ऽ	पि	शा	ऽ	ऽ	च	ऽ	ब
म	प	ग	–	–	ग	ग	–	ग	म	ग	–
टो	ऽ	री	ऽ	ऽ	दि	गं	ऽ	म	ब	र	ऽ
रे	–	सा	–	–	रे	ग	–	म	–	ग	–
खे	ऽ	ले	ऽ	ऽ	म	सा	ऽ	ने	ऽ	में	ऽ
रे	–	–	सा	–	–	–	–	–	–	–	–
हो	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

शिव की होली

ताल–दादरा

अन्तरा

–	–	सा	रे	रे	–	रे	रे	–	सा	रे	–
ऽ	ऽ	ल	खि	सुं	ऽ	द	र	ऽ	फा	ऽ	ऽ
ग	ग	–	–	–	म	ग	रे	ग	गरे	सा	–
गु	नी	ऽ	ऽ	ऽ	छ	टा	ऽ	ऽ	केऽ	ऽ	ऽ
–	–	सा	रे	रे	–	प	–	–	गरे	सा	रे
ऽ	ऽ	म	न	से	ऽ	रं	ऽ	ऽ	गऽ	ऽ	गु
ग	–	–	म	–	ग	रे	–	–	सा	–	–
ला	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ह	टा	ऽ	ऽ	के	ऽ	ऽ
–	–	म	म	म	–	म	म	प	म	प	ग
ऽ	ऽ	चि	ता	भ	ऽ	स्म	भ	री	झो	ऽ	री
ग	–	ग	ग	–	–	ग	म	–	धा	धा	–
ऽ	ऽ	दि	गं	ऽ	ऽ	ब	र	ऽ	पि	ता	ऽ
धा	धा	धा	प	म	–	म	–	प	–	–	म
भ	ऽस	म	भ	री	ऽ	झो	ऽ	री	ऽ	ऽ	दि
ग	ग	–	म	ग	–	रें	–	सा	–	–	रे
गं	ऽम	ऽ	ब	र	ऽ	खे	ऽ	लें	ऽ	ऽ	म
ग	–	म	–	म	–	रे	–	–	सा	–	–
सा	ऽ	ने	ऽ	मे	ऽ	हो	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ

होली गीत राग काफी तीन ताल

स्थाई- होरी खेलन चलो आलि री, सांवरिया कुंजन बजत ढप मृदंग धीरे-धीरे
नगिन तकिट तक धुमकिट तक, धा किट तकिट तका दित्ता तिटकत गदिगन धा

अंतरा -

झोलिन अबीर कर कमलन पिचकारी
गावत बजावत हसत सब दै दै ताली
नंद दुलारा रामदास का प्राण प्यारा
बंसी बजावे धूम मचावे चाचर गावे वह कारी[430]

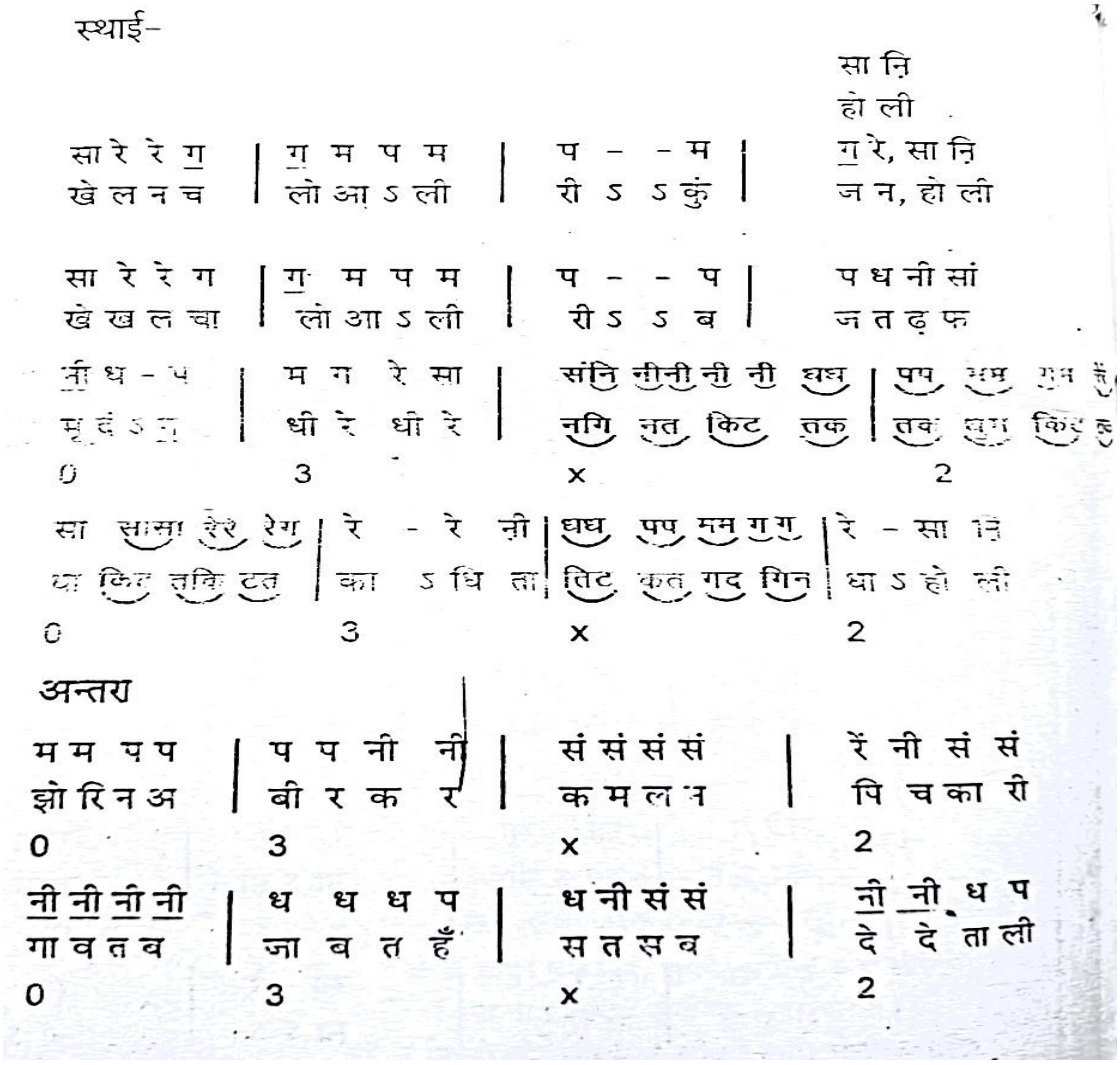

[430] डॉ नम्रता मिश्रा से प्राप्त जानकारी के आधार पर

5.5 पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा रचित एवं गेय आध्यात्मिक संगीत

भजन - मीराबाई

स्थाई
सिर धरे मटकिया डोले, कोई श्याम मनोहर लो रे

अंतरा
दधि को नाम विसर गई ग्वालन
हरि लो हरी लो बोले
कोई श्याम मनोहर लो रे

कृष्ण के रूप छकी हैं ग्वालन
और ही और बोले
कोई श्याम मनोहर लो रे

मीरा के प्रभु गिरधर नागर
चेरी भई बिन बोले
कोई श्याम मनोहर लो रे।[431]

राम भजन

स्थाई
जानकी नाथ सहाय करें जब कौन बिगाड़ करे नर तेरो

अंतरा
सूरज मंगल सोम बुध भृगु सुत और गुरु वरदायक तेरो
संग शनिचर होत हुचेरो
जानकी नाथ सहाय करें

[431] डॉ इंद्रेश मिश्रा से प्राप्त जानकारी के आधार पर

दुष्ट दुशासन विमल द्रौपदी
चीर उतार कुमंतर प्रेरो
ताकी सहाय करी करुणानिधि
बढ़ गए चीर के भार घनेरो
जानकी नाथ सहाय करें
जाकी सहाय करे करुणानिधि
ताके जगत मे भाग बढ़े रो
रघुवंशी संतन सुखदाई
तुलसीदास चरण को चेरो
जब जनकी नाथ सहाय करें तब कौन बिगाड़ करे नर तेरो

गुरु भजन

स्थाई
गुरु बिन कौन बतावे बाट
बड़ा विकट यम घाट
अंतरा
भ्रांति की पहाड़ी नदिया बीच में अहंकार की लाट
बड़ा विकट यम घाट

काम क्रोध दो पर्वत ठाड़े लोभ चोर संघात
बड़ा विकट यम घाट

मद मक्षर का मेधा बरसत
माया पवन बह जाए
बड़ा विकट यम घाट
कहत कबीर सुनो भई साधु क्यों तरना यह घाट
बड़ा विकट यम घाट

कबीर भजन

आया है तो जाएगा तू सोच ओ अभिमानी मन

चेत ओ अब चेत दिवस तेरो नियराना है
कर से करूं दान मांग,मुख से जपुं राम राम
वाहि दिन आवेगा जाहि दिन जाना है।
नदिया है अगम तेरी सूझत नहीं आर -पार
बुड़त हो बीच धार अब क्या पछताना है।
अरे अभिमानी मन झूठी माया संसारी गति, मुट्ठी बांध के आया है खाली हाथ जाना है।[432]

कबीरभजन

स्थाई

दुनिया दर्शन का है मेला अपनी करनी पार उतरनी
गुरु हुए चाहे चेला दुनिया दर्शन का है मेला

अंतरा

कंकड़ चुनी चुनी महल बनाया लोग कहे घर मेरा

ना घर मेरा ना घर तेरा, चिड़िया रैन बसेरा, दुनिया दर्शन का है मेला।
महल बनाया किला चुनाया खेलन को सब खेला
चलने की जब बेला आई सब तजि चला अकेला
दुनिया दर्शन का है मेला

ना कुछ लेकर आया बंदे ना कुछ है यहां तेरा
कहत कबीर सुनो भई साधु संग ना जाए धेला
दुनिया दर्शन का है मेला अपनी करनी पर उतरनी गुरु हुए चाहे चेला

[432] डॉ इंद्रेश मिश्रा से प्राप्त जानकारी के आधार पर

कबीर भजन

स्थाई
माया महाठगिनी हमजानी, निर्गुण फांस लिये डोले बोले मधुर वाणी

अंतरा
केशव के कमल होई बैठी, शिव के भवन भवानी
पंडा के मूरत होई बैठी,तीर्थ हूं मे पानी

योगी के जोगन होई बैठी, राजा के घर रानी
काहू के हीरा होई बैठी, काहु के कौड़ी कानी।

भक्तन के भक्ति होई बैठी ब्रह्मा के ब्राह्मणी
कहे कबीर सुनो भई साधु यह सब अकथ कहानी।

5.5 पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र द्वारा रचित एवं गेय लोक संगीत

सोहर

नंद घर बजत बधइया यशोदा घर सोहर हो
ललना जन्मे है कृष्ण कन्हैया तीनों ही कुल तारन हो

बोलहूं नगर से डगरीन नरिया कटावहुं हो
ललना ले आवहुं सोने के कठौतिया त कान्हा नहलावहुं कन्हैया नहलावहुं हो।

ले आवा बांस के सुपलवा कन्हैया नेहूंछाबहुं हो
ललना ले आवहुं पीहर पीतांबर कन्हैया, पहनवाहुं कान्हा पहनाहुं हो।

ले आवहुं सोने के मुकुटवा त मोर पंख लगावल हो ललना ले आवा हो पैर पैजनिया तो कान्हा पहनावहुं त कन्हैया पहनावहुं हो।

कान्हा के पांव पैजनिया तो बड़ा नीक लागेला
मनमा के भावेला हो ललना झूम झूम बजे पैजनिया अजब मन मोहेला।
ठुमकी ठुमकी कान्हा चाललन नंद राजा के आंगन हो ललना विहसी विहसी
मनमा मोहन यशोदा रानी धन्य भईलन हो।

ले आवहुं सोने के सिंहासन तो कान्हा बैठावहुं।
सुरही गाय के दुधवा तो कान्हा के पिलावहुं यशोदा घर बाजेला बधाइयां सखियां सब सोहर गावे हो ललना नंद लुटावत हीरा मोतिया तो कुल के तारन अयलन हो।[433]

चैता लोकगीत भोजपुरी

हे रामा चैत महीनवा कैली हम सोलहो सिंगार सैंयां नहीं अइले
बहे लगल झिरी झिरी पुरवा बयार हे रामा चैत महिनवा
लंबी कारी केसिया झरली लगाई तेल महाकौउवा
लाली बिंदिया सतली कजरा आंखी लहकउवा

हैया मोर डहके उठे हुकवा हजार
हे रामा चैत महिनवा
सरसों लगली झरे खेतवा गेहूं पके लागल
मुजराइल अमवा कुहू कोयल बोले लागल
महुआ कोचराइल छाईल बसंत बहार

हे राम चैत महिनवा

[433] श्रीमती मोहिनी मिश्रा से किए गए साक्षात्कारद्वारा प्राप्त जानकारी

झूमर लोकगीत

कवन रंग मुंगवा कवन रंग मोतिया
कवन रंग ननदी तोर भैया
लाल रंग मुंगवा सफेद रंग मोतिया सांवर रंग भौजी मोर भईया।
काने सोभे मोतिया गले सोभे मुंगवा
साथे सोभे ननदी तोर भैया

टूटी जैइहें मोतिया छितराई जइहें मंगवा
कि रूसी जईहें भौजी मोर भईया
चुनी लेबो मोतिया बटोरी लेबो मुंगवा
मनाई लेबो ननदी

झूला गीत

झूला पड़ियो है कदंब की डार
झुलावे बृज नारी बृज नारी सखिया सारी

रेशम की सखी डोरी पड़ी है
मोतियन से कैसी पटरी जड़ी है
वा में बैठे युगल सरकार
झुलावे बृज नारी झूला पड़ियो है कदंब की डार।

मधुर मधुर श्याम बंसी बजावत
बंसी बजावत रस बरसावत
नन्ही नन्ही पड़त है फुहार [434]
झुलावे ब्रज नारी झूला पड़ियो है कदंब की डार।

श्याम राधिका झूला झूले गोपी ग्वाल देखे फूले

[434] श्रीमती विष्णु प्रिया प्रसिद्ध गायिका से प्राप्त जानकारी के अनुसार

सब गावत है मल्हार झुलावे बृज नारी
झूला पड़ियो है कदंब की डार झुलावे ब्रज नारी।

अवधी लोकगीत

मोर पीछवरवा चंदन गाछ अवरो से चंदन हो
रामा सुघड़ बढ़ईया मारे छेवर ललन जी के पालन हो।

राम के गढ़उ खड़उआ लालन जी के पालन हो
राम जसोदा ठाड़ी झुलावे लालन जी के पालन हो।

झूलहूं ते लाल झूलहूं अवरो से झूलहूं हो रामा जमुना से जल भरी लाई ता
झुलवा झुलाईब हो।
रामा पिच्छा उलटी जो मैं चितवुं महल मुरली बाजल हो।
जमुना पहुंचूं ना पवयुं घड़ीलवो ना भर लुहूं हो।
जाहि दिना बहना मुरली बजावल हो।
चुप रहुं यशोमती चुप रहुं दुश्मन जानि लिहुं हो
और ईहें त कंस के मिरिहें गोकुला बसइहें हो।

अध्याय 6

6.1 - अध्ययन का सारांश विश्लेषण एवं निष्कर्ष

जीवन गाथा अथवा जीवनी किसी भी व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व एवं जीवन यात्रा के विभिन्न पहलुओं को मूल्यांकित एवं विश्लेषित करने का अनिवार्य एवं सशक्त माध्यम होता है। जीवन वृत्त एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे किसी भी व्यक्ति के जीवन से जुड़े समस्त क्रियाकलाप, गतिविधियां, संघर्ष, उतार- चढ़ाव तथा अन्य रोचक एवं आदर्श जानकारियां दृष्टिगत होती हैं। अनुसंधान के तौर पर विश्वविद्यालयों मे अनेक व्यक्तियों के सांगीतिक चरित्र, कृतित्व एवं जीवन वृत्त आदि पर शोध कार्य संपन्न हो रहे हैं। हिंदुस्तानी शास्त्रीय उपशास्त्रीय संगीत के प्रचार एवं प्रसार में अनेक महान कलाकारों ने अपना उल्लेखनीय एवं अतुलनीय योगदान दिया है जिन पर अनेक शोध उपलब्ध हैं। किसी व्यक्तित्व पर शोध कोई नवाचार नहीं है,सांगीतिक जगत में अनेक उदाहरण हमारे समक्ष प्रस्तुत हैं जैसे- पंडित बड़े रामदास मिश्र, सामता प्रसाद मिश्र, पंडित भीमसेन जोशी, पंडित जसराज,लता मंगेशकर तथा कविता कृष्णमूर्ति आदि।ऐसे अनेक प्रख्यात कलाकार हैं जिनकी सांगीतिक कथा को शोध कार्य के रूप में अनेक विश्वविद्यालयों ने रेखांकित किया है।

पद्मविभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के सांगीतिक की योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन मे पंडित छन्नूलाल मिश्र जी का योगदान सराहनीय सर्वविदित है।

उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिला तमसा के पावन तट पर स्थित यह ऋषियों की पावन पुण्य भूमि है। भौगोलिक दृष्टि से आजमगढ़ उत्तर प्रदेश के पूर्वी हिस्से में स्थित है। यह पावन पुण्य भूमि दुर्वासा ऋषि के आश्रम के लिए प्रसिद्ध है यह स्थान ज्ञान एवं शांति का प्रतीक माना जाता है। आजमगढ़ जिले में ही स्थित हरिहरपुर गांव तथा यहां की संगीत परंपरा इस क्षेत्र की धरोहर मानी जाती है। इस गांव में

करीब 25 घर मिश्र परिवारों के हैं जिनके पूर्वज संगीत साधक थे। यहां की संगीत परंपरा इतनी पुरानी है कि उसे एक घराने का नाम दिया जा सकता है आज भी इस घराने को यहां के कलाकार बढ़ा रहे हैं।

लोगों के कथनानुसार हरिहरपुर घराने के पूर्वज 'बाबा श्री गोविंद साहब 1008' और प्रति वर्ष श्री गोविंद साहब के स्थान पर लगने वाले मेले में अपने संगीत के कार्यक्रम से अपने गुरु को श्रद्धांजलि अर्पित किया करते थे, जिनका कार्यकाल लगभग 400 वर्ष पुराना है, और इसी समय आजमगढ़ के नवाब आजमशाह का कार्यकाल भी रहा जिनके द्वारा उस समय के संगीतज्ञ 'स्वामी श्री हरिदास' तथा स्वामी 'श्री सरनाम दास' यह दोनों भाई नेपाल नरेश के दरबार में राज गायक थे। जिनको आजमगढ़ के वंश परंपरा के अंतर्गत नवाब आजमशाह ने 989 बीघा जमीन जिसमें 7 गांव उनकी कला से प्रसन्न होकर नवाब ने उन्हें रहने के लिए प्रदान कर दिया था। इन्हीं भाइयों की वंश परंपरा से यहां संगीत की पीढ़ियां बनी जो देश के अलग-अलग हिस्सों में जाकर भारतीय संगीत का प्रचार प्रसार करती रही।

वहीं बनारस भी भारतीय संगीत तथा संस्कृति के क्षेत्र में एक सांस्कृतिक राजधानी के पद पर आसीन नगर है। यह सभी धर्म के पवित्र तीर्थ स्थल के रूप में प्रख्यात है बनारस को मंदिरों और घाटों का शहर कहा जाता है। इस घराने के प्रवर्तक स्वर्गीय पंडित दिलाराम मिश्र का उल्लेख महापुरुष के रूप में प्राप्त होता है। 1780 -1886 के काल में पंडित राम सहाय के द्वारा 200 वर्ष पूर्व बनारस को मुख्य तौर पर तबले के घराने के रूप में स्थापित किया गया। यहां के कलाकारों को चारों पट का गायक कहा जाता है क्योंकि यहां शास्त्रीय उपशास्त्रीय समस्त विधायें प्रचलित हैं जिनमें ठुमरी, चैती, टप्पा, तथा दादरा आदि विश्व प्रसिद्ध हैं। इसके अतिरिक्त बनारस में कथक नृत्य का भी विशेष प्रचलन है जिसने भारतीय नृत्य शैली में अमिट छाप छोड़ी है।

शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय गायन शैली का उद्भव एवं विकास भारत में विदेशी शासको के प्रवेश के साथ ही हुआ। मोहम्मद शाह रंगीले के दरबारी गायक सदारंग -अदारंग जो तानसेन के वंशज थे जिन्होंने ख्याल गायकी की विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई 18वीं शताब्दी को उत्तरार्ध में ख्याल गायन का प्रचार बहुत तीव्रता से हुआ । प्राचीन गायन शैली का आकर्षण कम होने लगा, इस क्रम में कुछ ऐसे घराने हुए जिन्होंने संपूर्ण विश्व में ख्याल गायकी को भारतीय संस्कृति तथा संगीत के प्रमुख अंग के रूप में प्रसारित किया। वही उपशास्त्रीय शैली ठुमरी जिसका जन्म स्थान तथा प्रसार स्थान लखनऊ दरबार माना जाता है।[435]

18 वीं शताब्दी के मध्य में जब मुगल साम्राज्य के पतन के बाद राजा स्वतंत्र होने लगे तथा दिल्ली के राज्य की शक्ति क्षीण होने लगी ऐसे में गायक वादक अन्य आश्रय तथा शरण की तरफ जाने लगे ऐसे में उप शास्त्रीय संगीत विधा ठुमरी विशेष तौर पर प्रचलित हुई। लखनऊ की ठुमरी विकास के क्रम में बनारस आई तथा यहां की भाषा तथा शैली में विशेष रूप से परिष्कृत हुई।

हरिहरपुर की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में जन्मे तथा बनारस जैसी कर्मभूमि में सक्रिय तथा समर्पित रसीद तथा लोकप्रिय कलाकार पंडित छन्नूलाल मिश्र विश्व विख्यात सृजन धर्मी एवं उत्कृष्ट गायक हैं जो भारतीय संगीत के इतिहास में एक सशक्त हस्ताक्षर के समान हैं।जो एक दिव्य ज्योति के रूप में प्रकाशित होकर संगीत के श्रोताओं तथा शिष्यों को संगीत रूपी आशीष प्रदान कर रहे हैं। पंडित जी की संगीतात्मकता चारों पट की है। इन्होंने बनारस, किराना तथा हरिहरपुर तीनों ही घरानों की परंपरा के निर्वहन एवं उन्नतशीलता में सक्रिय एवं क्रियात्मक भूमिका निभाई है।ठुमरी गायन के प्रातः स्मरणीय कलाकार स्वर्गीय पंडित जगदीप प्रसाद मिश्र के प्रपौत्र के रूप में पंडित छन्नूलाल मिश्र का जन्म 15 अगस्त 1936 को उत्तर

[435] https://share.google/fbgiPMvqRJdxDEfUL

प्रदेश के आजमगढ़ जिले में स्थित एक छोटे से गांव हरिहरपुर में हुआ। प्रतिष्ठित गायकों तथा वादकों कुल में इनका जन्म हुआ। इनकी परिवार में पीढियों से संगीत की परंपरा रही है तथा उनकी वंशजों ने भारतीय संगीत को उच्चता प्रदान की है। पंडित जी के पिता पंडित बद्री प्रसाद मिश्र कुशल गायक तथा वादक थे,बड़े चाचा चंद्रिका प्रसाद मिश्र कुशल सारंगी वादक थे, दूसरे चाचा श्यामलाल मिश्र कथक नृत्य में निपुण थे तथा सबसे छोटी चाचा मनिका प्रसाद मिश्र भी एक विख्यात तबला वादक थे। स्वर्गीय पंडित जगदीप प्रसाद मिश्र के वंश में होने के कारण संगीत परिवार को विरासत में मिला था तथा अनेक प्रख्यात कलाकार पंडित जी के परिवार की शोभा थे।

मानक नक्षत्रों की भांति पंडित छन्नूलाल मिश्र जी भारतीय संगीत के नभमंडल में शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय संगीत को दीप्तिमान करने का प्रशंसनीय कार्य करते हुए संगीतिक क्षेत्र में अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। धार्मिक एवं सांगीतिक परिवेश में जन्म लेने के कारण संपूर्ण वातावरण संगीतात्मकता के अनुकूल था। पिता की देखरेख में ही संगीत शिक्षण प्रारंभ हो गया था।पिता कुशल तबला वादक होने के साथ ही अन्य विधाओं के भी ज्ञाता थे।

माता स्वयं रामायण एवं रामचरितमानस आदि धार्मिक ग्रंथो का नियमित पाठ किया करती थी परिवार में लोकगीत तथा भजन आदि का सुंदर वातावरण था जिससे संगीत की आधारशिला का निर्माण आरंभ हो गया था।

संगीत की प्रारंभिक शिक्षा के पश्चात पिता ने अन्य गुरुओं से दीक्षित करने पर विचार किया तथा गायन रूपी बीज को वृक्ष का आकार देने के लिए बिहार के दरभंगा दरबार में उस्ताद अब्दुल गनी खान के शरण में लेकर पहुंचे। उस्ताद अब्दुल गनी खान साहब दरभंगा राज दरबार के महान दरबारी गायक तथा किराना घराने के सुप्रसिद्ध कलाकार थे उन्होंने नियमबद्ध तरीके से गंडा बंधन कर विधिवत प्रशिक्षण प्रारंभ किया। संगीत के प्रति विशेष समर्पण भाव होने के कारण सामान्य शिक्षा में

पंडित जी का मन नहीं लगा और गांव के स्कूल से केवल उन्होंने आठवीं तक की पढ़ाई की। किंतु सांगीतिक क्षेत्र में अनेक अनुभव होने के कारण संगीत प्रभाकर, विशारद, प्रवीण जैसे अनेक डिग्रियां हासिल की। इसके अलावा अनेक विश्वविद्यालयों ने उन्हें डॉक्टरेट जैसी मानद उपाधि से भी सम्मानित किया।

पिता तथा गुरु की देखरेख में पंडित जी ने लगभग 5 वर्ष की आयु से ही प्रस्तुतियां देनी प्रारंभ कर दी थी। अपने गांव में अनेक प्रकार के धार्मिक समारोहों में गाना प्रारंभ कर दिया था। अपने गुरु उस्ताद अब्दुल गनी खाँ से प्रशिक्षण के दौरान भी दरभंगा राज दरबार तथा अनेक सांगीतिक कार्यक्रमों में प्रदर्शन प्रारंभ कर दिया था जिससे आपकी संगीतात्मकता दिन प्रतिदिन बढ़ती रही। बाल्यावस्था से ही कुशल संगीत प्रशिक्षण पारिवारिक धार्मिक एवं संगीत में वातावरण तथा गुरु का मार्गदर्शन से तथा शास्त्रीय उपशास्त्रीय गायकी के विशेष नियमित साधना ने आपके संगीतिक मार्ग को विशेष तौर पर प्रस्तुत किया क्रमशः सांगीतिक क्षेत्र में प्रगति पथ पर अग्रसर होते हुए आप आजमगढ़, बिहार, बनारस तथा अन्य संगीत प्रेमियों के बीच चर्चित होते चले गए।

कालांतर में अपनी जीवन यात्रा मे विवाह के पश्चात आप बनारस पहुंचे तथा बनारस में आपकी अनेक रिश्तेदारी रही यहां तक कि आपका ससुराल भी बनारस में ही था तथा अपने रिश्तेदारों के सहयोग से और अपने कर्मठ व्यक्तित्व से अपने बनारस में अपनी एक खास जगह बनाई और वही बस गए। यहां अनेक कलाकारों से अपने पहचान बनाई तथा यहां के अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में आपको गाने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ जिससे आपकी गायकी दिन प्रतिदिन विख्यात होती गई। अनेक घराने तथा गायन शैलियों के सम्मिश्रण ने आपकी कला तथा गायकी में अद्‌भुत सौंदर्य का प्रसार किया इस सौंदर्य ने सांगीतिक जगत में चमक बिखेरनी प्रारंभ कर दी।परंपरा का पालन तथा मनमोहन गायन शैली के कारण अल्प समय में ही इस

प्रतिभावान कलाकार का नाम देश के सुप्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित गायको की श्रेणी में अग्रणी रूप से सम्मिलित हो गया।

पंडित छन्नूलाल मिश्र ने आकाशवाणी तथा दूरदर्शन आदि के माध्यम से अनेक सफल कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं।इन्होंने न केवल देश के सभी प्रांत व प्रमुख शहरों अपितु विदेश में भी भारतीय शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय संगीत की पताका फहराई है। अमेरिका नेपाल सिंगापुर आदि अनेक विदेश में कार्यक्रम करते हुए इन्हें "एयर एंड स्पेस ऑडिटोरियम वॉशिंगटन डीसी"द्वारा अति विशिष्ट "स्मिथ सोमियन" पुरस्कार भी प्रदान किया गया तथा भारत सरकार द्वारा देश का दूसरा सर्वोच्च सम्मान (पद्म विभूषण 2020) तथा तीसरा सबसे बड़ा सम्मान पद्म (भूषण 2010) से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान सर्वोच्च सम्मान है जो अपने आप में अत्यंत सराहनीय है।[436]

अपनी प्रतिभाशाली एवं उत्कृष्ट गायकी तथा संगीत के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए पंडित छन्नूलाल मिश्र जी को अनेक पुरस्कारों एवं सम्मानों द्वारा अलंकृत किया गया है। मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश में सरकार द्वारा नौशाद पुरस्कार (2008), संगीत नाटक अकादमी (2000), बिहार राज्यपाल द्वारा संगीत शिरोमणि पुरस्कार (2010), दिल्ली सरकार द्वारा डाॅ.राधाकृष्णन पुरस्कार(2011) मध्य प्रदेश सरकार द्वारा (तानसेन पुरस्कार) उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा (भातखंडे पुरस्कार) मुंबई द्वारा (सुरमनी पुरस्कार) काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा (पंडित मदन मोहन मालवीय) पुरस्कार वाराणसी प्रशासन द्वारा (काशी विद्या सम्मान) मध्य प्रदेश सरकार द्वारा (कालिदास संगीत सम्मान) संगीत रिसर्च अकैडमी कोलकाता द्वारा सम्मानित, स्वामी हरिदास संगीत सम्मेलन (मुंबई, दिल्ली, वृंदावन)द्वारा कई बार सम्मानित तथा दूरदर्शन के विभिन्न केंद्रों से सम्मानित, श्री हरिबल्लभ संगीत

[436] पंडित रामकुमार मिश्र द्वारा प्रदत्त जानकारी

समारोह पंजाब द्वारा सम्मानित, अलाउद्दीन खान संगीत समारोह भोपाल द्वारा सम्मान प्रदान किया जा चुका है। इसके अलावा सन 2014 में भारतवर्ष के न वर्तमान प्रधानमंत्री महोदय माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी ने जब काशी को अपनी कर्म भूमि बनाकर यहां के संसदीय क्षेत्र से चुनाव लड़ने का निर्णय लिया तो प्रस्तावक के रूप में उन्होंने पंडित मिश्र जी को ही चुना तथा पंडित जी के आशीर्वाद एवं शुभकामनाओं से देश के प्रधानमंत्री बने तथा आज भी पंडित छन्नू लाल मिश्र जी के साथ उनके आत्मीय संबंध हैं।

इन पुरस्कारों के अतिरिक्त देश की अनेक नामी कंपनियों के साथ उनकी 20 से अधिक ध्वनि मुद्रिकाएं प्रसारित हो चुकी हैं। जिनमें विशेष रूप से निनाद म्यूजिक कंपनी (मुंबई), देवी फाउंडेशन (दिल्ली), म्यूजिक टुडे, सोनी म्यूजिक (मुंबई), लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड (दिल्ली),क्रॉसवर्ड एंटरटेनमेंट(मुंबई), ओरिजिनल मोशन पिक्चर्स साउंडट्रैक राम संपत (मुंबई), आदि शामिल हैं।

इन एल्बमों में पूरब अंग, रामचरितमानस, कबीर,राम रंग, शिव विवाह, सुंदरकांड, कृष्ण माधव, होली के रंग, पुरवइया, अंजलि,बनारसी, बनारस द लैंड ऑफ़ लीजेंड, स्पिरिट ऑफ़ बनारस, लेट'एस टॉ, द रेन रागा, फ्रॉम द एनसीपीए अचीवर्स आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

पंडित छन्नूलाल मिश्र के व्यक्तित्व मे एक अलग प्रकार की विशेषताएं हैं।उनका विनम्र व्यवहार,आत्मविश्वास, दृढ़ संकल्प ,अनुशासन,सहृदय,प्रियता एवं धैर्यपूर्ण व्यवहार, परिवेश अनुसार जीने की कला, चतुरता,स्वविवेक तथा दयालु प्रवृत्ति विशिष्ट गुणों के मणिकांचन योग ने उनके संपूर्ण व्यक्तित्व एवं गायकी को निखारने में विशेष तौर पर योगदान दिया है।

पंडित छन्नूलाल मिश्र उत्कृष्ट तथा कुशल कलाकार हैं। उनमें सभी वह गुण विद्यमान है जो एक प्रतिभावान कलाकार में होने चाहिए। एक उत्कृष्ट कलाकार अपनी परंपरागत विद्या में अपने कलात्मक तथा नवीन सो द्वारा एक अभिनव सौंदर्य का

निर्माण करते हैं पंडित छन्नूलाल मिश्र ने संगीत के हर पक्ष के सौंदर्य शास्त्र को गहराई से समझा है तथा अपनी परंपरागत गायकी में उन गुणों को आत्मसात किया है। यही कारण है कि आपकी रसीली तथा सुरीले कंठ माधुर्य ने श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय संगीत को विश्व के धरातल पर सुंदर तरीके से स्थापित किया है। आपकी गायकी से यह पूर्णतया स्पष्ट होता है कि आपने अपनी तालीम तथा शिक्षण पद्धति को असाधारण गहराई के साथ अपने कंठ में आत्मसात किया है।रागो का सूक्ष्म से सूक्ष्म वर्गीकरण एवं जानकारी तथा शास्त्रीय मर्यादा के अंतर्गत कठिन से कठिन तालों के विभिन्न लयकारियों से सहजतापूर्ण क्रिया करना आपके विलक्षण गुणों को परिभाषित करता है। आपने अनेक रागों का सुंदर प्रस्तुतीकरण किया है- जिनमे प्रचलित रागों में ललित,मारू बिहाग, तिलक कामोद, भैरवी, भूपाली, यमन, मियां मल्हार, कल्याण, देश, बिहाग, भैरवी, आभोगी, हंसध्वनि ,जोग छायानट, दुर्गा, नट भैरव, मिया मल्हार, नंद, मेघ, गोरख कल्याण, दरबारी कांगड़ा, भटियारी, बहार, पुरिय, मारवा वृंदावनी सारंग,खमाज आदि प्रमुख हैं। खूबसूरत तराने, भावपुर्ण एवं लयदार ठुमरी, कजरी,चैती, बारहमासा, बधाई, होरी एवं भजन गायकी तथा क्लिष्ट तैयार गायकी के माध्यम से आपकी कलात्मकता चरमोत्कर्ष पर पहुंचती है।

पंडित छन्नूलाल मिश्र जी ने एक योग्य कलाकार होने के साथ-साथ एक मार्गदर्शन गुरू की भूमिका भी मुख्य रूप से निभाई है वह पारंपरिक नियमों का पालन करते हैं। अपने शिष्यों को भी परंपरागत बंदिशें को सिखाते हैं जिसके फलस्वरूप उन्होंने बनारस,किराना तथा हरिहरपुर घराने की शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय परंपरा का अभ्युदय करने का एक नूतन मार्ग प्रशस्त किया है। आपके शिक्षण प्रविधि पूर्णता गुरु शिष्य परंपरा के अनुसार है जिसमें शिष्यों को उनकी लगन, समर्पण तथा योग्यता के अनुरूप शिक्षा प्रदान की जाती है। इसी परंपरागत गुरु शिष्य की भावना से अभिभूत उनकी अंतरात्मा एक अनोखा संगीत उद्भूत करती है जो धार्मिक एवं

आनंददायक उत्तेजना से अनुप्राणित होकर श्रोताओं को अंतर्मुखी तथा मुग्ध कर देता है। गुरु शिष्य परंपरा के अंतर्गत शिष्य तथा शिष्याओं को अपना संगीत रुपी आशीर्वाद प्रदान किया है। उनके 150 से अधिक शिष्य हैं जिनमें कुछ प्रतिष्ठित तथा व्यावसायिक कलाकार के रूप में भी विख्यात हो चुके हैं। उनके प्रशिक्षण प्रणाली में राग दर्शन, तान निर्माण विधि एवं उसकी उपज सहित राग तथा उसके भाव को पूर्ण रूप से स्पष्ट करना बताते हैं। संगीत के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए बनारस में 'पंडित छन्नूलाल मिश्र म्यूजिक चैरिटेबल ट्रस्ट वाराणसी' एवं शिवगंगा संगीत कला केंद्र एवं गुरुकुल' की स्थापना की है।

पंडित छन्नूलाल मिश्र संगीत के प्रबुद्ध चिंतक,विचारक एवं एक उत्कृष्ट वक्ता भी हैं। समय-समय पर अनेक मंचों के माध्यम से संगीत की अन्य की जिज्ञासाओं के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत करते रहते हैं जिसमें- घराना, गायकी, साहित्य संगीत का अंतर संबंध, युवा पीढ़ी का परंपरिकता से दूर होना, संगीत के सिद्धांत, संगत तथा वाद्यों चयन, ठुमरी में भाव की प्रासंगिकता, भाषा तथा साहित्य का संबंध, संगीत एवं आध्यात्मिकता का गठबंधन, संगीत में भाव तथा लगाव,मंच के नियम,श्रोताओं के साथ मानसिक संबंध, लोक संगीत के संरक्षण एवं संवर्धन आदि प्रमुख विषय कहे जा सकते हैं।[437]

कुशल वक्ता एवं प्रबुद्ध चिंतकों के साथ-साथ बनारस की उपशास्त्रीय गायकी किराना की ख्याल गायकी तथा हरिहरपुर की समस्त परंपराओं के निःस्वार्थ प्रचारक के रूप में आपका नाम अग्रणीय है। बनारस घराने में ठुमरी, टप्पा, दादरा,होरी इस प्रकार की गायकी का अधिक प्रचार प्रसार है। ख्याल परंपरा का प्रसार बनारस में प्राचीन काल से है। शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय तथा हर प्रकार की परंपरा को संरक्षित संदर्भित एवं उन्नतशील करने में पूर्ण रूप से योगदान दिया है।

---

[437] पंडित विजय शंकर मिश्रा द्वारा प्रदत जानकारी

बनारस घराने की गायकी को आज विश्व स्तर पर ख्याति प्राप्त हो रही है इसमें पंडित जी का विशेष योगदान है उनके अनुसार "बनारस की संगीत परंपरा सिर्फ सुनने की नहीं अनुभव करने की होती है"।

पंडित छन्नूलाल मिश्र प्रस्तुतियों में शास्त्रीय तथा उपशास्त्रीय शैली में दुर्लभ एवं परंपरागत बंदिशों का का चयन करते हैं विशेष कर प्राचीन तथा प्रचलित रागों में निबद्ध कर अपनी कलात्मकता के साथ प्रस्तुत करते हैं और निरंतर इसी दिशा में अग्रसर हैं। वर्तमान में पंडित छन्नूलाल मिश्र 88 वर्ष के हो चुके हैं। पंडित जी अपने परिवार एवं कुटुंब में सबसे बड़े पुत्र हैं उनके दोनों छोटे भाई पंडित विश्वनाथ मिश्र एवं पंडित शिवजी मिश्रा संगीत क्षेत्र की सेवा में अग्रसर हैं। पंडित जी की पांच संताने हैं- जिनमें सबसे बड़े पुत्र पंडित रामकुमार मिश्र प्रख्यात तबला वादक हैं तथा चार पुत्रियां संगीत क्षेत्र से जुड़ी हुई हैं तथा पारंपरिक दिशा में सक्रिय एवं कार्यरत हैं। पंडित जी के परिवार की नवीन पीढ़ी नाती नातिन,तथा पौत्र राहुल मिश्र संगीत के क्षेत्र के उभरते सितारे हैं, जो बनारस तथा छन्नूलाल मिश्र जी की प्रसारित परंपरा रूपी इस हवन यज्ञ में अपनी आहुतियां प्रदान कर रहे हैं।

ईश्वर इन प्रतिभावान कलाकार को सुंदर स्वास्थ्य एवं दीर्घायु प्रदान करें ताकि हिंदुस्तानी शास्त्रीय अथवा लोक संगीत की अमूल्य धरोहर को अपनी उत्कृष्ट कलात्मकता एवं मधुरतम गायन शैली से संरक्षित एवं संवर्धित कर सकें।[438]

[438] पंडित साजन मिश्र द्वारा किए गए साक्षात्कार पर आधारित

6.2 - SWOC Analysis

1. Strengths (सशक्त पहलु)
2. Weakness (अपूर्णताएं)
3. Opportunities (संभावनाएं)
4. Challenges (चुनौतियां)

1. (सशक्त पहलु) Strengths

.बनारस के उपशास्त्रीय परंपरा किराना घराने की ख्याल गायन परंपरा एवं हरिहरपुर घराने की समस्त परंपरा का निर्वहन करने में पंडित छन्नूलाल मिश्र ने क्रांतिकारी, ऐतिहासिक तथा उत्कृष्ट भूमिका अदा की है। इस दिशा में उनके द्वारा किए गए कार्य सराहनीय हैं। पंडित छन्नूलाल मिश्रा अपने जीवन में परंपरिकता, अनुशासन, प्रेम, सकारात्मकता एवं दयालुता को अपने जीवन में प्रमुख स्थान प्रदान करते हैं इसलिए उनकी गायकी को लेकर श्रोताओं के अंतर मन में उत्सुकता तथा प्रेम का भाव बढ़ता है, जिससे उनका रुझान स्वतः दिखाई पड़ता है।

.परंपरा एवं भाषा को लेकर पूर्ण रूपेण सजग, साहित्य पर पूर्ण पकड़, आध्यात्मिकता एवं भाव की प्रधानता संगीत के सैद्धांतिक एवं क्रियात्मक पक्ष का संपूर्ण ज्ञान, ताल पर विशेष प्रभुत्व,तानों में नवीनता,क्लिष्ट,स्पष्ट एवं उपज का अनोखा अंदाज सौंदर्य तत्वों की समझ, श्रोताओं के मनोविज्ञान का पूर्व ज्ञान, परिवार से प्राप्त सांगीतिक धरोहर पंडित जी की गायकी के प्राण तत्व हैं जिससे देश के परिपक्व, सुप्रसिद्ध,प्रतिष्ठित एवं अग्रणी गायको की श्रेणी में इनका नाम सम्मिलित

है।.आपकी गायकी संतुलित गायकी है जिसमें हर प्रकार की पूर्णता दृष्टिगत होती है। पंडित जी के व्यक्तित्व की विनम्रता, शालीनता,परिपक्वता, चातुर्यता , संत प्रवृत्ति, स्वविवेक, दयालुता, आदि अनेक गुणों के सुंदर योग ने आपके व्यक्तित्व एवं गायकी को और भी सशक्त रूप प्रदान किया है।

रागों की अति सूक्ष्म जानकारी शास्त्रीय मर्यादा के अंतर्गत रहकर कठिन से कठिनतम तालों का प्रयोग एवं ताल लय पर विशेष प्रभुत्व आपके विलक्षण गुणों को प्रकाशित करता है।

तीनों सप्तकों में आपकी आवाज पहुंचती है तथा उनके स्वर और श्रुतियों के अंतर्गत संगीत की कल्पना आपकी आवाज के माध्यम से दृष्टिगत होती है। तान तथा सरगम की सुंदर अभिव्यक्ति तथा स्वरों पर अद्भुत पकड़ एवं नियंत्रण, भावपूर्ण प्रदर्शन ऐसे अनेक गुण जो वर्तमान के अन्य श्रेष्ठतम कलाकारों के मध्य में उनके महत्वपूर्ण अस्तित्व को दर्शाता है।

. सामान्यतः संगीतज्ञों में मंच संबंधी तकनीकी पक्षों का अभाव पाया जाता है। तथा अपने सांगीतिक पारंपरिक नियमों के पालन करने में श्रोताओं के मानसिक दृष्टिकोण को विशेष ध्यान नहीं रखते, परंतु पंडित छन्नूलाल मिश्र श्रोताओं के साथ मानसिक संबंध एवं तकनीकी पक्ष में सजग एवं सचेष्ट व्यक्ति हैं, आपका प्रदर्शन श्रोताओं की भाषा एवं उनकी मानसिक अवस्था के अनुसार होता है।

. सोशल मीडिया तथा लाइव प्रोग्राम के माध्यम से भी आप अपने श्रोताओं से जुड़े रहते हैं तथा आपके इन्हीं प्रयासों से पारंपरिक प्राचीन धरोहर युवा पीढ़ी तक भी पहुंच रही है। जिससे सुगमता पूर्वक प्राचीन संगीत के प्रति उनकी अवधारणा बदल रही है, तथा नवीन पीढ़ी भी प्राचीन संस्कृति के गुणों से अवगत हो रही है।

.Weaknesses (अपूर्ण पहलू)

. पंडित जी की शास्त्रीय उपशास्त्रीय परंपरा के विकास हेतु पूर्ण ब्योरा सुनिश्चित नहीं है,उनकी वेबसाइट पर शिष्य परंपरा का पूर्ण सूची उपलब्ध नहीं है।

. पंडित छन्नूलाल मिश्र के अस्वस्थ होने के कारण तथा संबंधित कलाकारों के व्यस्त तथा व्यवहार में नकारात्मकता होने के कारण प्रस्तुत शोध के लिए अधिक से अधिक साक्षात्कार संभव नहीं हो सकते हैं परंतु यथासंभव सामग्री जुटाई जा सकी है।

Opportunities (संभावनाएं)

. भारत के अनु क्षेत्र तथा विदेशों में भी पंडित जी को विशेष रुचि के साथ सुना जाता है। कई प्रकार की लुप्त हो रही लोक परंपरा आदि को संरक्षित एवं संवर्धित किया जा सकता है, भारतीय सांगीतिक क्षेत्र में इस तथ्य को लेकर अनेक संभावनाएं हैं। पंडित छन्नूलाल मिश्र म्यूजिक चैरिटेबल ट्रस्ट तथा शिवगंगा संगीत कला केंद्र एवं गुरुकुल से अनेक छात्र जुड़ सकते हैं तथा शिष्यत्व ग्रहण कर के भारतीय संगीत के संरक्षण एवं समर्थन में अपना योगदान दे सकते हैं।

Challenges (चुनौतियां)

बनारस घराने की उपशास्त्रीय परंपरा, एवं भारतीय लोक परंपरा प्रतिष्ठित करना एक बड़ी चुनौती है इसके लिए नवीन पीढ़ी को प्राचीन संगीत से अवगत कराने के लिए मार्गदर्शन अत्यावश्यक कार्य है साथ ही शास्त्रीय, उपशास्त्रीय अथवा लोक संगीत को समाज में अधिक प्रतिष्ठित स्थान प्रदान करने हेतु मिशनरी सेवा में जुड़ना एक दुर्गम कार्य है जिसे साकार करना होगा, नवीन पीढ़ी पश्चात परंपरा के प्रभाव

में अपनी अमूल्य धरोहर से विमुख होती जा रही है ऐसे प्रयासों के माध्यम से समाज में फिर से उस परंपरा का संचार करना होगा।

. विश्वविद्यालय प्रत्यक्ष रूप से इस प्रकार की कार्यों से जुड़ सकते हैं जहां कार्य की संभावना विशेष रूप से विकसित हो सकती है।

6.3 - प्रस्तुत शोध की आगामी संभावनाएं

1.पंडित छन्नूलाल मिश्र का सांगीतिक परिशीलन:बनारस एवं उपशास्त्रीय संगीत के परिप्रेक्ष्य में।

2. पंडित छन्नूलाल मिश्र के ध्वन्यांकित रचनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन: लोक संगीत के विशेष संदर्भ में।

3. पंडित छन्नूलाल मिश्र की ध्वन्यांकित रचनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन: आध्यात्मिक संगीत के विशेष संदर्भ में।

4. हिंदुस्तानी उप शास्त्रीय संगीत में बनारस घराने उपशास्त्रीय परंपरा कल आज और कल: समीक्षा एवं समालोचना।

5. हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में बनारस किराना एवं हरिहरपुर घराना: विविध परिपेक्ष्य अध्ययन एवं मूल्यांकन।

6. हिंदुस्तानी उपशास्त्रीय संगीत में बनारस घराने की विभिन्न गायन शैलियों का अध्ययन -ठुमरी,चैती, होरी, दादरा आदि के विशेष संदर्भ में।

7. संगीत संत पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र:व्यक्तित्व एवं कृतित्व

8. हिंदुस्तानी शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय संगीत के संरक्षण एवं संवर्धन में बनारस का योगदान सर्वेक्षणात्मक एवं संकलनात्मक अध्ययन।

सुझाव

1. प्राचीन परंपरा के पालन के अतिरिक्त सोशल मीडिया वेबसाइट तथा नवीन तकनीक के माध्यम से पंडित जी के शिष्यत्व को ग्रहण करने वाले शिष्यों की एक सूची तैयार करनी होगी जिसमें सभी शिष्य एवं उनके अनुयायियों की एक निश्चित सूची उपलब्ध होनी चाहिए जिससे बनारस की समस्त गायन परंपरा को समृद्ध बनाने में यह तथ्य मार्गदर्शक साबित होंगे।

2. भारत के संस्कृति विभाग से जुड़े समस्त कार्यक्रम विशेष कर विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के लाइव कार्यक्रम आयोजित होने चाहिए तथा सरकार को ऐसे अन्य कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए जिससे युवा पीढ़ी उनके आदर्शों पर चलकर भारतीय शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, आध्यात्मिक तथा लोक संगीत के प्रति बढ़ती उदासीनता तथा लुप्त होती धरोहर को बचाने का प्रयास किया जा सके।

3. पंडित छन्नूलाल मिश्र की जीवन यात्रा संगीतात्मकता तथा कलात्मकता से भरी पड़ी है। इन्होंने अपने सांगीतिक यात्रा में अथाह ज्ञान एवं असीम अनुभव अर्जित किया है। भारतीय संगीत के संरक्षण एवं संवर्धन में इन्होंने हर प्रकार से योगदान दिया है तथा इनका संपूर्ण जीवन संगीत के प्रति समर्पित रहा है इसलिए इन्हें देश के प्रतिष्ठित पुरस्कार 'भारत रत्न' की उपाधि देने का प्रस्ताव रखना चाहिए।

6.4 - अध्ययन का निष्कर्ष

पंडित छन्नूलाल मिश्र की सांगीतिक पृष्ठभूमि की अवधारणा तथा परिशीलन करने के उपरांत यह बात पूर्णतया स्पष्ट हो जाती है कि पंडित जी ने बनारस हरिहरपुर तथा किराना तीनों ही घरानों को एक नवीन दिशा प्रदान की है तथा तीनों ही घरानों के उन्नयन, उत्थान तथा उत्कर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। परंपरागत संगीत को आधार बनाकर हर प्रकार की गायन शैली का प्रस्तुतीकरण करना उनका प्रमुख ध्येय तथा उद्देश्य रहा है। स्वर तथा साहित्य का सुंदर समन्वय इनकी संगीत की आत्मा है। गायन के प्रस्तुतीकरण में श्रोताओं को अलौकिक शांति, आध्यात्मिक अनुभव तथा तृष्णा से तृप्त करवाना उनके संगीत का प्रमुख उद्देश्य रहा है। इनकी

गायकी अध्यात्मवाद से परिपूर्ण है। इनकी बंदिश पारंपरिक तथा ईश्वर से संबंध स्थापित करने में सफल मध्य सिद्ध हुई है। पंडित छन्नूलाल मिश्र अहंकार विहीन,प्रबुद्ध व्यक्तित्व, संत वृत्ती तथा सृजनधर्मी कलाकार होने के साथ-साथ समर्पित रचनाकार, प्रबुद्ध चिंतक, योग्य गुरु तथा बनारस के उपशास्त्रीय गायन शैली तथा किराना ख्याल गायन शैली तथा हरिहरपुर की की समस्त परंपराओं के निःस्वार्थ प्रचारक एवं संयोजित संगठन कर्ता के रूप में संपूर्ण समर्पित कलाकार रूप में उनका प्रभाव विशेष रूप से संगीत जगत में स्थापित हुआ है।

परिशिष्ट सूची

परिशिष्ट - 1

प्रश्नावली

पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्रा जी से पूछे जाने वाले प्रश्नः

1—आपका लगाव आध्यात्मिक संगीत की ओर भी है आपके विचार से भक्ति मे संगीत से क्या तात्पर्य है?

2—क्या आध्यात्मिक गीतों से जनमानस के ऊपर कोई प्रभाव पड़ता है?

3—आधुनिक युग में वैज्ञानिक उपकरण आ जाने से संगीत सुलभ हो गया है एक गुरु के रूप में इस विषय में आपका क्या विचार हैं?

4—आजकल रागों के समय सिद्धांत के मायने लगभग खत्म हो गए हैं तो एक कलाकार के रूप में इस प्रकार के नियमों का आप किस प्रकार से पालन करते हैं।

5—आधुनिक समय में संगीत अथवा गायकी की परिपाटी में बहुत सारे बदलाव आए हैं आपके अनुसार प्राचीन तथा आधुनिक संगीत में क्या विषमताएं हैं।

6—आपके अनुसार शिक्षण संस्थानों की संगीत के उत्थान में कितनी भूमिका है?

7—क्या आप ऐसा मानते हैं कि संचार माध्यमों अथवा नवीन तकनीक के प्रयोग से आधुनिक कलाकार कम परिश्रमी हो गए हैं?

8–आप दैनिक जीवन मंच प्रदर्शन तथा संगीतिक यात्राओं के बीच किस प्रकार तालमेल बिठा पाते हैं?

9–अपने शास्त्रीय उपशास्त्रीय अथवा लोक संगीत में वैश्विक स्तर पर ख्याति अर्जित की है संगीत की अनेक शैलियों पर आपका विशेष अधिकार है आपकी प्रेरणा स्रोत कौन रहे है तथा आपकी सांगीतिक की यात्रा कैसी रही?

10–आपकी गायकी बनारस तथा किराना दोनों ही घरानों का समन्वय है दोनों घरानों के परिचालन में आप किस प्रकार सफल रहे?

विद्वानों, श्रोताओं तथा कलाकारों से पूछे जाने वाले प्रश्न

1–पद्म भूषण पंडित छन्नूलाल मिश्रजी की गायकी की विशेषताओं के विषय में आपका क्या विचार हैं?

2–पंडित जी की गायकी पर बनारस घराने की परंपरा का कितना प्रभाव दिखाई देता है?

3–बनारस एवं किराना घराने की गायकी का समन्वय वैश्विक स्तर पर कितना लोकप्रिय है?

4–पंडित जी की बनारस एवं किराना शैली की समन्वित गायकी में क्या नवीनता एवं विशेषता दिखाई देती है?

5–पंडित छन्नूलाल मिश्रा जी की गायकी आपको किस प्रकार प्रभावित करती हैं?

6–उपशास्त्रीय ,शास्त्रीय अथवा लोक संगीत के क्षेत्र में पंडित जी के योगदान के विषय में विचार व्यक्त कीजिए।

7–पंडित जी की सभी रचनाओं में कौन सी रचना आपको विशेष रूप से प्रिय है?

8–लय अथवा तबले का विशेष ज्ञान कलाकार को गायकी के प्रस्ताव मे किस प्रकार सहयोग करता है?

9–पंडित जी के साथ जुड़े किसी विशेष अनुभव के बारे में विस्तार पूर्वक बताइए।

10– पंडित जी के सानिध्य एवं मार्गदर्शन में चल रही संगीत साधना के विषय में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

11–पंडित जी के गीतों में सौंदर्य पक्ष को किस प्रकार प्रदर्शित किया जाता है?

12–पंडित जी के आध्यात्मिक अथवा लोकगीतों में रागों का प्रयोग किस प्रकार होता है?

परिशिष्ट - 2

साक्षात्कृत सूची

पारिवारिक सदस्य

क्रम संख्या	चित्र	नाम व पद	विशेष साक्षात्कार दिनांक
2.1		पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र	समय-समय पर 2023 - 2025
2.2		नम्रता मिश्रा एसोसिएट प्रोफेसर महात्मा गांधी विद्यापीठ विश्वविद्यालय वाराणसी , पंडित छन्नूलाल मिश्र जी की पुत्री	समय-समय पर 2023 - 2025
2.3		पंडित रामकुमार मिश्र तबला वादक, पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के पुत्र	समय-समय पर 2023 - 2025
2.4		राहुल मिश्र तबला वादक, पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के पौत्र	15-2- 2025

2.5	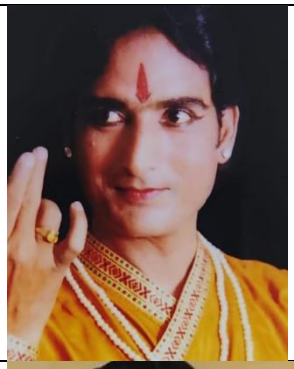	पंडित शिवजी मिश्र, कथक नर्तक, पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के छोटे भाई	12 4 2025
2.6	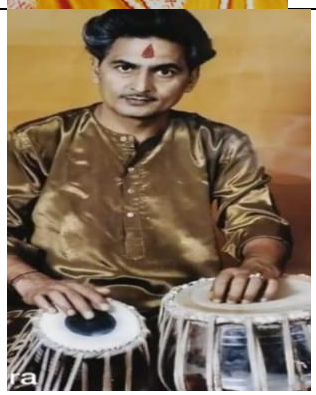	पंडित विश्वनाथ मिश्र तबला वादक पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के छोटे भाई	17 3 2025
2.7		पंडित भोलानाथ मिश्र गायक पंडित छन्नूलाल मिश्र के भाई	15 7 2024
2.8		मोहिनी मिश्रा गायिका पंडित छन्नूलाल मिश्रा जी की नातिन	15 2 2024

2.9		आदित्य मिश्रा तबला वादक पंडित छन्नूलाल मिश्र जी के नाती	17 6 2024

कलाकार /प्रशासक/ शिक्षक वर्ग

क्रम संख्या	चित्र	नाम व पद	विशेष साक्षात्कार दिनांक
2.10		राजेंद्र प्रसन्ना , बांसुरी वादक	26 3 2024
2.11		पंडित विजय शंकर मिश्र तबला वादक	17 3 2025
2.12		आदर्श मिश्रा गायक हरिहरपुर घराना	17 8 2024

2.13		सुरेंद्र कुमार असिस्टेंट प्रोफेसर इलाहाबाद विश्वविद्यालय	15 5 2024
2.14	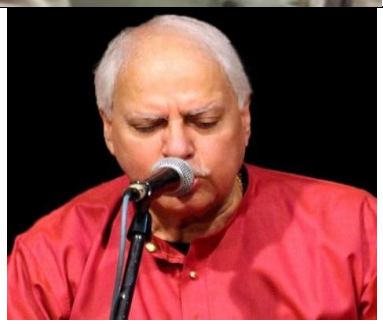	पं.साजन मिश्र, सुप्रसिद्ध गायक बनारस घराना	15 3 2024
2.15		समित मलिक, सुप्रसिद्ध ध्रुपद गायक दरभंगा घराना	15 7 2024
2.17		सौरभ चतुर्वेदी हवेली संगीत गायक	15-12-2024
2.18		आस्था गोस्वामी गायिका वृंदावन	15 5 2024

2.19		संगीता द्विवेदी गायिका एवं शिष्य दिल्ली	15 5 2024
2.20		इंद्रेश मिश्रा असिस्टेंट प्रोफेसर सुभारती यूनिवर्सिटी	15 2 2025
2.21	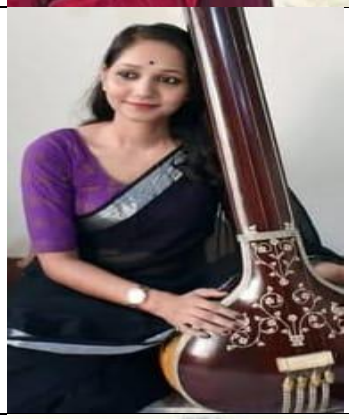	रिंदाना रहस्या, असिस्टेंट प्रोफेसर दिल्ली विश्वविद्यालय	25 4 2025
2.23		लावण्या कीर्ति सिंह काव्या, विभागाअध्यक्ष संगीत एवं नाट्य विभाग ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, बिहार	15 8 2023

2.24		निशा झा, विभागाध्यक्ष संगीत विभाग तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय बिहार	23 3 2024
2.25		ललित कुमार तबला संगतकार बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय	17 8 2023
2.26		आम्रपाली त्रिवेदी असिस्टेंट प्रोफेसर आगरा यूनिवर्सिटी	13.4 2023
2.27		डॉ. सत्य प्रकाश, गायक एवं शिक्षाविद उत्तर प्रदेश	8 3 2024

2.28		अनुज मिश्रा कथक नर्तक लखनऊ घराना	20 1 2024
2.29		अमन जैन गायक एवं शिष्य मध्य प्रदेश	13.8.2024
2.30		पद्म श्री मोहन स्वरूप भाटिया साहित्यकार एवं शिक्षाविद मथुरा उत्तर प्रदेश	20 6 2023
2.31		श्री गोपाल अग्रवाल, संगीत शिक्षक आर्मी पब्लिक स्कूल, प्रसिद्ध गजल तथा भजन गायक	17 1 2025

2.32		आशीष सिंह प्रसिद्ध कथक नर्थक बनारस घराना	20 1 2025
2.33		ध्रुव शर्मा प्रसिद्ध भजन गायक वृंदावन	20 1 2025
2.34		स्वप्ना श्री प्रसिद्ध भजन गायिका वृंदावन	20 1 2025
2.35		हेमंत बृजवासी राइजिंग स्टार विनर मथुरा	22 1 2025
2.36	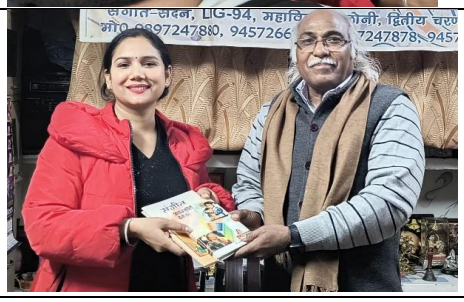	राजेंद्र कृष्ण अग्रवाल संपादक संगीत पत्रिका हाथरस	23 1 2025

2.37		विष्णु प्रिया शिष्या एवं प्रसिद्ध गायिका कोलकाता	25 3 2024
2.38		कुमुद दीवान शिष्या एवं गायिका	15 4 2025
2.39		अभिषेक मिश्रा तबला वादक	26 3 2024
2.40		मधु शुक्ला, संपादक व्यंजन आर्ट एवं कल्चरल सोसायटी प्रयागराज	18 5 2025

2.41	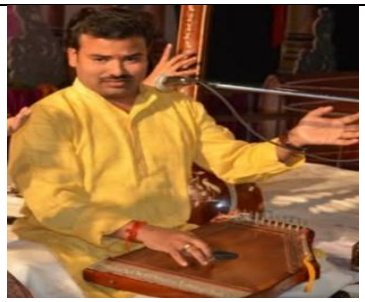	प्रभाकर कश्यप, असिस्टेंटप्रोफेसर चंडीगढ़ विश्वविद्यालय	22 6 2025
2.42		दिवाकर कश्यप, असिस्टेंट प्रोफेसर, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ छत्तीसगढ़	23 6 2025
2.43		पं. किशोर मिश्रा, प्रसिद्ध तबला वादक, बनारस घराना	16 6 2025
2.44		अशोक झा, प्रसिद्ध तबला वादक, बनारस घराना	20 6 2025

2.45		साबिर हुसैन, प्रसिद्ध तबला वादक किराना घराना दिल्ली	11 7 2025
2.46		विजय भारती, प्रसिद्ध लोक गायिका, पटना, बिहार	25 5 2025
2.47		सुदर्शन कुमार प्रसिद्ध गायक भागलपुर बिहार	7 7 2025
2.48	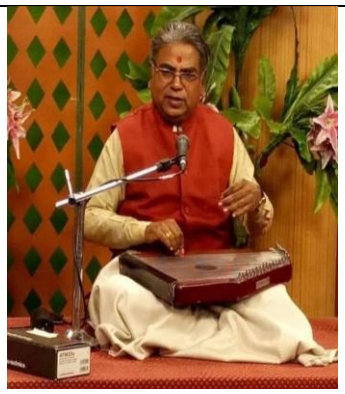	पंडित राम प्रकाश मिश्रा, प्रसिद्ध गायक बनारस घराना, छपरा बिहार	16 7 2025

2.49		कौशिकी चक्रवर्ती सुप्रसिद्ध शास्त्रीय गायिका	11 7 2025
2.50		शंकर महादेवन, सुप्रसिद्ध संगीत निर्देशक एवं गायक	20 6 2025
2.51		पंडित सुनील कुमार प्रसिद्ध गायक दिल्ली	23 3 2024
2.52		उस्ताद मशकूर अली खान प्रसिद्ध गायक किराना घराना	01.02.2026

परिशिष्ट – 3

चित्रावली

(क)

(ख)

प्रस्तुतीकरण एवं कैसेटों की प्रमुख छवियां

Uttar Pradesh Sangeet Natak Academy Honoring Program 2016
Mon, 24-Oct-2016|Sant Gadgeji Maharaj Auditorium,Vipin Khand, Gomti Nagar, Lucknow
Uttar Pradesh Sangeet Natak Academy honored Pt. Channu Lal Mishra as top personality by giving Academy Ratna award. Uttar Pradesh Culture Minister of State (Independent Charge) of the Sangeet Natak Akademi Mrs. Aruna Kumari Kori presented the awards ...
Read more ...

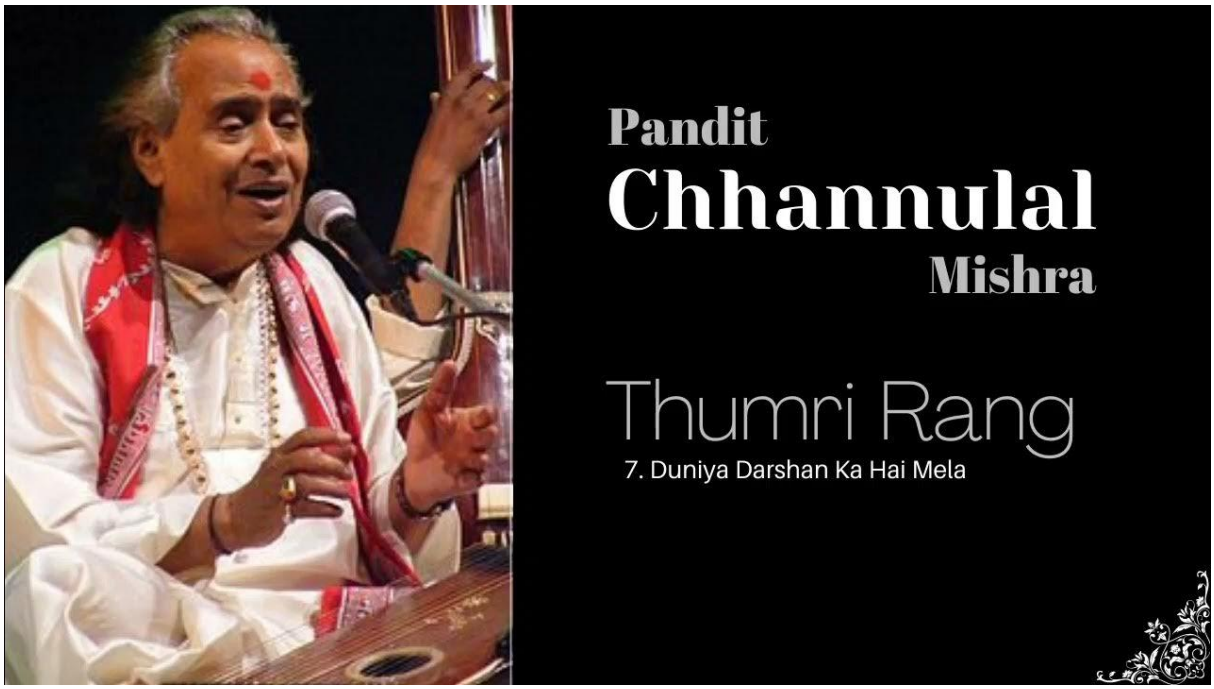
Pandit
Chhannulal
Mishra
Thumri Rang
7. Duniya Darshan Ka Hai Mela

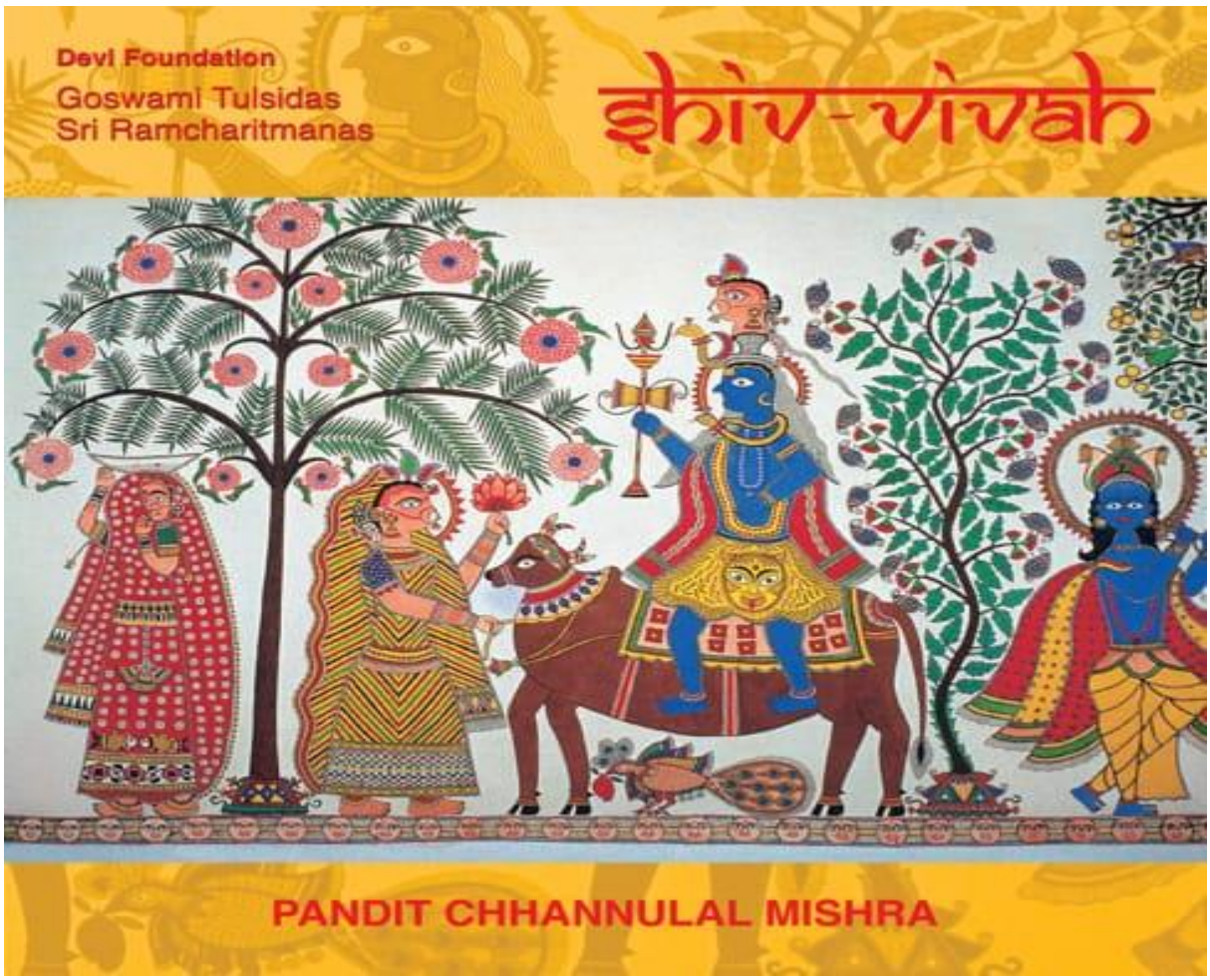
Devi Foundation
Goswami Tulsidas
Sri Ramcharitmanas
shiv-vivah
PANDIT CHHANNULAL MISHRA

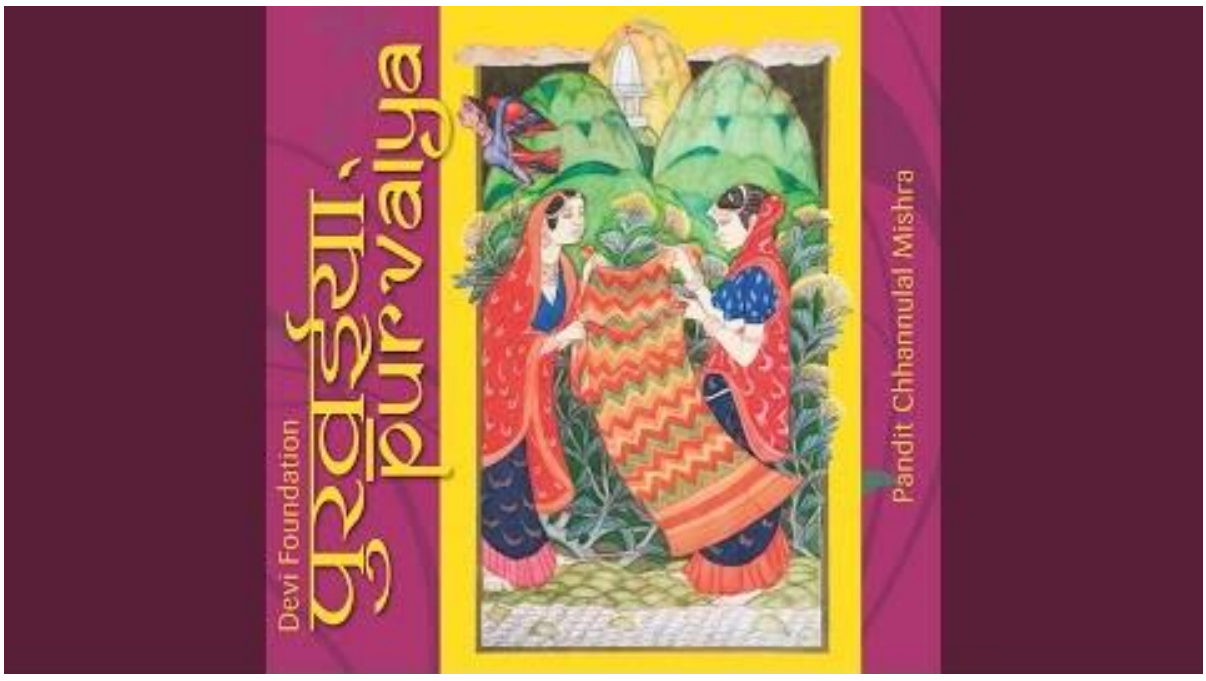
Devi Foundation
पूर्वया purvaiya
Pandit Chhannulal Mishra

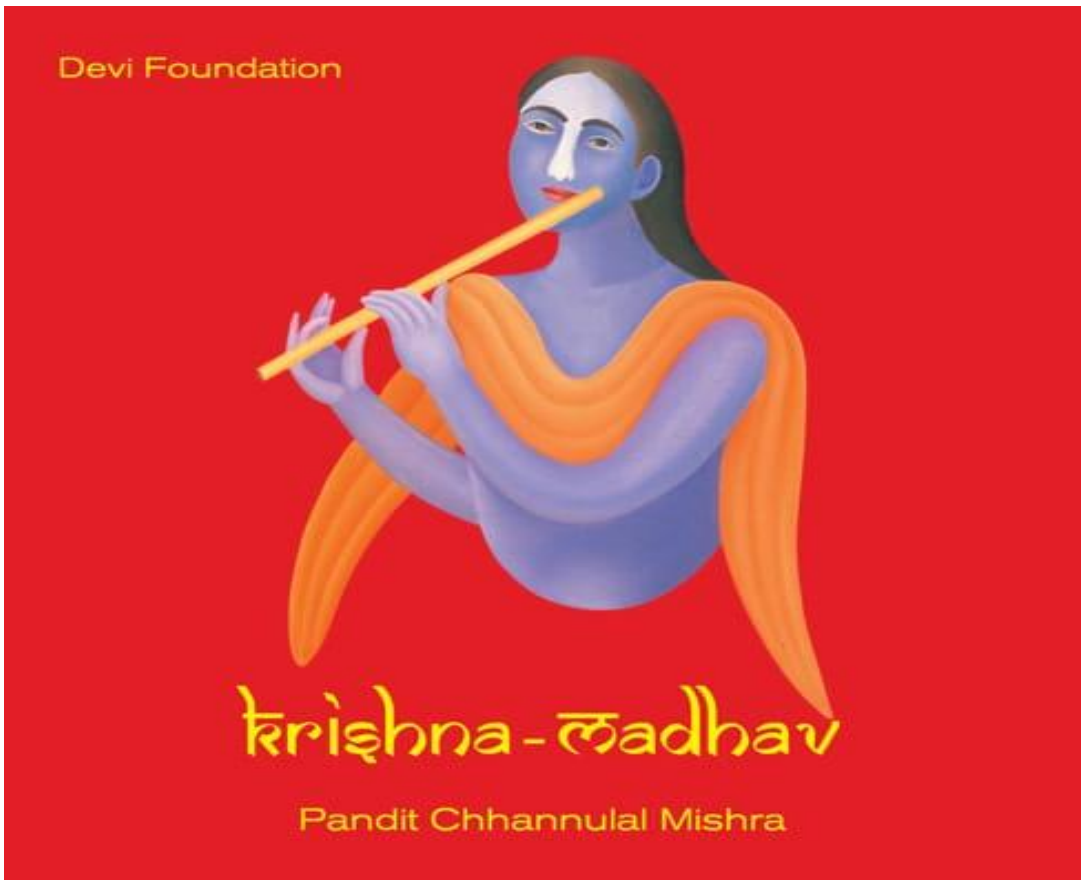
Devi Foundation
krishna-madhav
Pandit Chhannulal Mishra

LIVE CONCERT
SWARUTSAV
MUSIC TODAY
Thumri, Dadra
Chhannulal Mishra
Sejia Se Saiyan Rooth Gaye

Devi Foundation
राम-रंग
ramg
Pandit Chhannulal Mishra

संदर्भ ग्रंथ सूची

- **पुस्तकें**

क्रम संख्या	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशक एवं संस्करण
1	ठाकुर ओमकार नाथ	प्रणव भारती द्वितीय संस्करण	पिलग्रिम्स पब्लिशिंग वाराणसी 2015
2	बावरा डॉ. जोगिंदर सिंह	भारतीय संगीत की उत्पत्ति एवं विकास	परम ज्योति पब्लिकेशन जालंधर 2009
3	द्विवेदी डॉ. रमाकांत	संगीत स्वरित	साहित्य रत्नालय कानपुर 2004
4	गर्ग डॉ. लक्ष्मी नारायण	निबंध संगीत	संगीत कार्यालय, हाथरस उत्तर प्रदेश 2012
5	मिश्र डॉ. बैजनाथ	काशी खंड	चौखंभा और भारती प्रकाशन वाराणसी 2002
6	श्रीवास्तव हरिश्चंद्र	संगीत निबंध संग्रह	संगीत कार्यालय हाथरस 2015
7	सक्सेना मधुबाला	भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्तर	चंडीगढ़ हरियाणा साहित्य अकादमी 1990

8	देशपांडे वामन हरी	घरानेदार गायकी	राजकमल प्रकाशन दिल्ली 1962
9	मदन पन्नालाल	संगीत शास्त्र विज्ञान	अभिषेक पब्लिकेशन 2018
10	परांजपे श्रीधर शरद चंद्र	संगीत बोध	मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी 1972
11	अभ्यंकर शंकर	स्वर भास्कर	आदित्य प्रतिष्ठान पुणे महाराष्ट्र 1999
12	आप्टे वामन शिवराम	संस्कृत हिंदी शब्दकोश	ज्ञान प्रकाशन दिल्ली 2019
13	सागर भागवत	सुधा दशम स्कंध	गीता प्रेस गोरखपुर 2022
14	चंद्र डॉ. मोती	काशी का इतिहास	विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी 2010
15	शुक्ला पंडित कुबेरनाथ	वाराणसी वैभव	बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना 2008
16	त्रिपाठी शिवेंद्र प्रताप	तबला विशारद	कनिष्क पब्लिशर्स दिल्ली 2022
17	कौर डॉ देवेंद्र	संगीत रूप	पर्ल बुक प्राइवेट लिमिटेड मुंबई 2017

18	मुखर्जी विश्वनाथ	बना रहे बनारस	भारतीय ज्ञानपीठ 2009
19	सिंह गजेंद्र नारायण	स्वर्गंध बिहार	हिंदी ग्रंथ अकादमी 1999

20	पर्वतकार डॉ. वनमाला	संगीत में बनारस पुरा काल से संवत 2002 तक	शारदा संस्कृत संस्थान वाराणसी 2012
21	जोहरी डॉक्टर रेणु	भारतीय संगीत जगत में वाराणसी का योगदान	क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी 2004
22	चौबे डॉक्टर सुशील कुमार	संगीत के घरानों की चर्चा	उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ 1984
23	झा सुनील	काशी के घाट	23. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला 2010
24	गर्ग लक्ष्मी नारायण	संगीत विशारद	संगीत कार्यालय हाथरस संस्करण
25	मिश्र पंडित विजय शंकर संकलन एवं संपादन	भारतीय संगीत के नए आयाम प्रथम संस्करण	कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स 2009
26	काव्या लावण्या कीर्ति सिंह	भारतीय संगीतज्ञ गायक वादक एवं नर्तक	कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली 2011

27	माथुर डॉ. निशि	भारतीय संगीत कलाकार वंशानुक्रम और पर्यावरण	पब्लिकेशन स्कीम जयपुर 2001
28	मिश्र कामेश्वर नाथ	काशी की संगीत परंपरा एवं संगीत जगत को काशी का योगदान	ल्युमिनस बुक्स वाराणसी 2018
29	मिश्रा नम्रता	संगीत तीर्थ मथुरा और काशी	राधा पब्लिकेशन 2016
30	जोशी उमेश	भारतीय संगीत का इतिहास	मानसरोवर प्रकाशन महल उत्तर प्रदेश 2022
31	शुक्ला पंडित कुबेरनाथ	वाराणसी वैभव	बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना 2008
32	त्रिपाठी प्रताप शिवेंद्र	तबला विशारद	कनिष्क पब्लिशर्स दिल्ली 2022
33	काणे वी वी	धर्मशास्त्र का इतिहास	प्रयाग सम्मेलन मुद्रालय
34	कपूर तृप्त	उत्तरी भारत में संगीत शिक्षा	न्यू दिल्ली हार्मोन पब्लिशिंग हाउस 1989

	पं. शारंगदेव	*संगीत रत्नाकर*	नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास
	डॉ. अशोक कुमार,	*भारतीय शास्त्रीय संगीत का इतिहास एवं सिद्धांत,*	कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ. 101–107।
35	सिंह डॉ.अशोक कुमार	उत्तर प्रदेश के प्राचीनतम नगर	वनी प्रकाशन 2023
37	वर्मा रामचंद्र	मानक हिंदी कोष	हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग
38	श्री मारूलकर	हिंदुस्तानी संगीत के घराने	राजकमल प्रकाशन
39	मिश्र शंभू नाथ	हिंदुस्तानी भारतीय संगीत की घराना परंपरा	प्रकाशन विभाग भारत सरकार द्वितीय संस्करण2014
40	धर्मपाल	किराना घराना के गायकी एवं बंदिशों का मूल्यांकन	आईबीपी बुक्स
41	सिंह गजेंद्र	नारायण सुरीले लोगों की संगत	राज पब्लिकेशन 2008

42	मिश्र रमेश	दिल्ली घराने का संगीत में योगदा	साहित्य भूमि
43	उपाध्याय आचार्य पंडित बलदेव	काशी की पांडित्य परंपरा	विश्वविद्यालय प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1983
44	जैन एस के	कथक नटवरी नृत्य	राष्ट्रीय प्रकाशन अकादमी मसूरी
45	चौबे सुशील कुमार	हमारा आधुनिक संगीत	मानव संसाधन विकास मंत्रालय उत्तर प्रदेश
46	. नागेंद्र,	अनुसंधान की पद्धति	नई दिल्ली नेशनल पब्लिशिंग हाउस
47.	भरतमुनि	*नाट्यशास्त्र*,	चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी,
48	डॉ. विनय मोहन शर्मा,	*शोध प्रविधि एवं अनुसंधान*	, जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी,
49	डॉ. शत्रुघ्न शुक्ल	ठुमरी की उत्पत्ति, विकास और शैलियाँ	हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन, दिल्ली विश्वविद्यालय 1991

50	: लीला कारवल	ठुमरी परिचय	संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद
51	. अशोक दामोदर रानाडे, ,	*हिन्दुस्तानी संगीत : परंपरा और विकास*	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,
52	डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल	, *भारतीय कला,* लोकभारती प्रकाशन,	प्रयागराज,

- **शोध प्रबंध**

1	तेज गरिमा	बनारस अंग की ठुमरी का सांगीतिक अध्ययन	छत्रपति शाहूजी महाराज यूनिवर्सिटी निर्देशक राठौर मोतीलाल 2006
2	वर्मा मनीष कुमार	संगीत के प्रचार प्रसार में काशी के घाटों एवं मंदिरों का योगदान	बनारस हिंदू विश्वविद्यालय निर्देशिका कुमारी रिचा 2016
3	सादिका	आधुनिक समय में ठुमरी, टप्पा, कजरी, चैती गायन शैलियों की कम होती लोकप्रियता कारण एवं सुझाव	महर्षि दयानंद यूनिवर्सिटी निर्देशिका त्रिखा दीपिका लोगन 2022

4	सिंह गीतांजली	पूरब अंग की ठुमरी गायन का संगीतिक विवेचन बनारस के विशेष संदर्भ में	दिल्ली विश्वविद्यालय निर्देशिका पेंटल गीता 2016
5	दांडेकर सुखदा अजीत	उप शास्त्रीय विधा ठुमरी एक लोकतांत्रिक अध्ययन	महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी बडौदा 2021
6	रिचा रश्मि	किराना घराने के प्रशिक्षण प्रविधि का विश्लेषणात्मक अध्ययन	दिल्ली विश्वविद्यालय निर्देशक शर्मा सुदीप गोस्वामी शैलेंद्र कुमार 2021
7	दुबे अमित कुमार	किराना एवं पटियाला घराने की शास्त्रीय गायन शैली का वर्तमान संगीत गायकी पर प्रभाव एवं महत्व का विश्लेषणात्मक अध्ययन	रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय निर्देशक जैन राजीव 2019
8	कुमारी सुरुचि	विदुषी गिरिजा देवी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय संगीत के संदर्भ में, एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	भट्टाचार्या मधुमिता 2024

शोध पत्र एवं पत्रिकाएं

- सिंह डॉ ज्योति, बनारसी ठुमरी की परंपरा व ठुमरी गायिकाएं: एक अवलोकन भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान राष्ट्रपति निवास शिमला हिमाचल प्रदेश 2017

- मिश्र गरुण बनारस घराने की संगीत परंपरा:एक संक्षिप्त अवलोकन दिल्ली विश्वविद्यालय 2020

- मिश्र इंद्रेश बनारस घराने के यशस्वी संत गायक पद्म विभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र सुभारती यूनिवर्सिटी मेरठ 2010

- रानी डॉ अंजना ठुमरी गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन राजकीय महिला महाविद्यालय करनाल हरियाणा 2024

- मिश्र पंडित भोलानाथ हरिहरपुर घराने की संगीत परंपरा वह उनके वंशज. स्वर लय छंद 2017

- कुमारी डॉ रूबी संगीत में घराना पद्धति का उद्गम एवं विकास ललित नारायण मिथिला यूनिवर्सिटी दरभंगा 2017

- डॉ प्रेम नारायण सिंह बनारस अंग की अति महत्वपूर्ण तथा लोकप्रिय गायन शैली ठुमरी, होरी चैती पर विश्लेषणात्मक अध्ययन एवं संचयन

- वंदना चौबे गायन के विभिन्न घराने एवं विशेषताएं संगीत घराना अंक

- स्ताद चांद खान दिल्ली घराने की विशेषताएं संगीत पत्रिका

- सुलभा ठाकुर किराना घराने की गायकी लय के संदर्भ में संगीत कला विहार

- पारसनाथ सिंह काशी की संगीत परंपरा संगीत कला विहार अक्टूबर 1957

- डॉ सुनीता गुप्ता कला कलाकार तथा संवेदनाएं 2019

- **समाचार पत्र**

- जनसत्ता दैनिक समाचार 15 7 1987

- अमर उजाला 16 1 2023

- द हिंदू 3.10.2019

- नवभारत टाइम्स 14 4 2019

- सिटी रिपोर्टर 25 2 2019
- अमर उजाला 20 1 2023

- TV9 भारत 12 3 2019

- हिंदुस्तान 17 8 2024

Websites

- https://www.thehindu.com/entertainment/music/the-magic-of-pt-chhannulal-mishra/article29584250.ece
- https://in.bookmyshow.com/person/pandit-chhannulal-mishra/7444
- https://indianexpress.com/article/lifestyle/art-and-culture/hindustani-classical-singer-pandit-chhannulal-mishra-conferred-with-padma-vibhushan-7613513/lite/
- https://indianexpress.com/about/pandit-chhannulal-mishra/#:~:text=death%20of%20Chhannulal-,Mishra%E2%80%99s,-daughter
- https://indianexpress.com/article/cities/delhi/ragas-in-the-rain/lite/
- https://www.livehindustan.com/uttar-pradesh/mirzapur/story-padma-vibhushan-pandit-chhannulal-mishra-celebrates-88th-birthday-with-music-and-tulsi-distribution-201723836256217.amp.html
- https://navbharattimes.indiatimes.com/india/padma-bhushan-pandit-chhannulal-mishra-interview-on-banaras-changed-after-modi/amp_articleshow/111180724.cms
- https://raaggiri.com/exclusive-interviews/pandit-chhannulal-mishra-hindustani-classical-singer-interview/
- https://www.thetalentedindian.com/pandit-chhannulal-mishra-reminesing-the-melodious-maestro/
- https://zeenews.india.com/hindi/special/pt-chhannulal-mishra-on-guru-shishya-tradition-an-interview-by-vinay-upadhyay/346220
- https://www.last.fm/music/Pandit+Channulal+Mishra/+wiki
- https://www.thehindu.com/entertainment/music/pt-chhannulal-misha-for-the-love-of-thumri/article30750932.ece

- https://springofrhythm.com/pandit-chhannulal-mishra-a-maestro-weaving-melody-and-tradition/
- https://raaggiri.com/legends/chhannulal-mishra/

.[1] https://share.google/aimode/OviJytEKSIEmT4PPL

- .https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AC%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%B8_%E0%A
- https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AC%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%B8_%E0%A4%98%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%A8%E0%A4%BE
- https://ignca.gov.in/coilnet/kv_0001.htm
- Wikipediahttps://share.google/yxRA74Go4uf1yYW4j
- https://swarajyamag.com/culture/swara-and-its-purity-the-story-of-the-kirana-gharana
- Wikipedia https://share.google/FwQWpw2R3LkonPb5W
- https://youtu.be/sTPGopsK5mU?si=pl37jx-IkP1VgjPx
- https://youtu.be/b4_c8kL1MsA[1] https://youtu.be/bEI0HauNM-8?si=pgN0ykuNDNFax0di
- https://share.google/lVRSTCzRhFw4YR5Y3
- https://www.google.com/search?q=%E0%A4%A1%E0%A5%8

- [1]https://share.google/vBBHq5had2WPd3kR6
- .https://www.google.com/search?q=%E0%A4%85%E0%A4%B2%E0